



संत दादूदयाल का काव्य-संपादन

[अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की
पीएच०डी० उपाधिहेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध]

सार

1996

निर्देशक :

प्रो० शिवकुमार शाण्डिल्य

पीएच० डी०, डी० लिट्

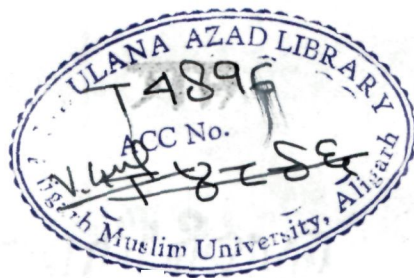
प्रस्तुतकर्त्री :

श्रीमती गलनाज उस्मान

एम० ए० (इतिहास) एम० ए०, एम० फिल० (हिन्दी)

हिन्दी विभाग

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़-202 002



अपने जीवन—काल की अपेक्षा दादूदयाल आज अधिक स्वीकृत और सम्मानित है। सन्त दादूदयाल के जीवन—परिचय, व्यक्तित्व, जीवन—दर्शन तथा पन्थ आदि पर विचार करने से पता चलता है कि वे अपने काव्य—व्यवहार एवं ज्ञान के कारण अपने समय में अत्यन्त लोकप्रिय थे। अपने जीवन के प्रारम्भ में ही वे भारतवर्ष के अनेक प्रान्तों में ख्याति पा गए थे। दादू का जन्म फागुन सुदी आठ बृहस्पतिवार संवत् १६०१ (सन् १५४४ ई०) को और मृत्यु जेठ बदी आठ शनिवार संवत् १६६० (सन् १६०३ ई०) को हुई। यह तिथि संत कबीर के परलोक गमन (सन् १५७५ ई०) से लगभग २८ वर्ष आगे बैठती है। दादू सम्प्रदाय की प्रमुख गद्दी 'नराणा' में आज भी फाल्गुन सुदी ५ से ११ तक सात दिवस का मेला लगता है। इन प्रमाणों के आधार पर सन्त दादू का जीवन काल वि०सं० १६०१ की फाल्गुन शुक्ल ८ से स० १६६० की जेठ सुदी ८ तक मानना समीचीन है। ऐसा मान लेने पर संत दादू के जीवन की अन्य घटनाएँ भी स्वतः प्रमाणित हो जाती हैं। जैसे सन्त दादू का अकबर (१५४०—१६०५ ई०) का समकालीन होना तथा आमेर नरेश राजा भगवानदास (१५७४—१५८६ ई०) एवं राजा मान सिंह (१५८६—१६१५ ई०) के समय में उनका जीवित होना आदि।

दादू—सम्प्रदाय की आस्था के अनुसार इनका जन्म गुजरात प्रदेश के अहमदाबाद में हुआ था।
जनगोपाल के अनुसार —

पच्छिम दिसा अहमदाबादू। ती ठों साध परगटै दादू॥

राघवदास उन्हें उदधि से प्रकट चौदह रत्नों के समान अवतरित मानते हैं।

चौदह रतन प्रगटे उदधि। जिमि दादूदयाल प्रगट भयो॥

सन्त दादू की जाति के सम्बन्ध में मतैक्य नहीं है। कुछ विद्वान उन्हें धुनिया जाति का बताते हैं। परशुराम चतुर्वेदी के मतानुसार दादू के शिष्य रज्जब ने लिखा है :

धुनि ग्रभे उत्पन्नों, दादू योगेन्द्रो महामुनिः।

उत्तिम जोग धारनं, तस्मात् क्यं न्याति कारणम्॥

दादू पंथी किसी बुढन नामक सन्त को उनके गुरु मानते हैं। दादू ने अपनी वाणी में गुरु की महिमा का गान तो बहुत किया है, परन्तु उनका कहीं भी नाम नहीं लिया है। हिन्दू समाज में श्रेयस्कामी

के लिए अपने गुरु, अत्यन्त कृपण, बड़े बेटे तथा पत्नी का नाम लेना वर्जित है :

आत्मनाम गुरोर्नाम नामाति कृपणस्य च ।

श्रेयस्कामो न गृहणितात् ज्येष्ठापत्य कलत्रयो ॥

संत दादूदयाल ने अनुभव के बल पर ही सब कुछ कहा, पंडिताई के आधार पर नहीं। पंडिताई के बल पर तो उस समय उत्तर-दक्षिण के पंडित केवल विचारों में ही उलझे रहे। अधिकतर विद्वान् मानते हैं कि संत दादू भी कबीर की भाँति विवाहित थे। दादू की पत्नी के नाम की प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती। माना जाता है कि ३२ वर्ष की अवस्था में उनके पुत्र गरीबदास का जन्म हुआ। उनके दूसरे पुत्र का नाम मिसकीनदास था। इनकी दो पुत्रियाँ नानाबाई और माताबाई थी। डॉ. त्रिगुणायत का कथन है कि गरीबदास जी की वाणियों से ही जान पड़ता है कि गरीबदास दादूजी के शिष्य थे।

दादू जीवन भर देशाटन करते रहे। इसका प्रभाव उनकी वाणी में भाषाओं की विविधता से मिलता है। उनकी एक यात्रा 'सीकरी यात्रा' के दौरान उन्होंने अकबर से भेंट की थी दूसरी यात्रा के दौरान वे राजस्थान के विभिन्न स्थानों में गए थे। अनुमानतः वे बिहार, काशी एवं बंगाल की ओर भी गए थे। इन यात्राओं में उन्हें विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों को प्रभावित करने तथा उनसे प्रभाव ग्रहण करने का अवसर मिला था। काशी में इनकी स्मृति में 'दादू मठ' असी घाट पर बना हुआ है।

दादू-वाणी का शुभारम्भ संवत् १६१६ से हुआ। इसका प्रवाह अंत समय तक चलता रहा मध्ययुग की राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियाँ सामान्य नहीं थी। दादू बानी के संग्रह का श्रेय उनके शिष्य रज्जबदास जगन्नाथ दास एवं संतदास को जाता है। रज्जबजी ने 'सरबंगी' में दादू वाणी का सादर संग्रह किया। जगन्नाथ दास तथा संतदास के संग्रहों का नाम 'हरडेबाणी' अभी तक उपलब्ध नहीं हो सकी है। रज्जबदास के संग्रह 'अंग बधू' की यह विशेषता है कि उसमें संग्रहीत सभी पदों को विशिष्ट शीर्षकों में वर्गीकृत किया गया है। उसमें साखियों को अंग के अन्तर्गत तथा पदों को 'राग' के अन्तर्गत वर्गीकृत किया गया है। मध्ययुगीन सन्तों की रचनाओं का वर्गीकरण अंगों तथा पदों के अन्तर्गत किया जाता रहा है। साखियों का वर्गीकरण विषयानुसार किया गया है और पदों को संगीत की विभिन्न राग-रागणियों के अनुरूप। दादू के नाम से प्रसिद्ध अनेक साखियों और पदों को प्रक्षिप्त कहा जा सकता है।

दादू वाणी का अब तक उपलब्ध प्रामाणिक पाठ मेरे विचार से वेलवेडियर प्रेस प्रकाशित 'दादू

दयाल की बानी' है। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी द्वारा संपादित 'दादू दयाल ग्रंथावली' वेलवेडियर प्रेस वाली प्रतिभा ही संशोधित पाठ माना जा सकता है। इस प्रति में साखियों को विषयानुसार पहले भाग में ३७ अंगों में वर्गीकृत किया गया है। 'कायाबेली' और 'अनभैवाणी' दूसरे भाग में पदों के साथ संग्रहीत है। सर्वप्रथम सन् १६०४ ई० अर्थात् सं० १६६१ में ज्ञान सागर में प्रकाशित हुआ था। किन्तु यह संस्करण आज उपलब्ध नहीं है। दूसरा संस्करण 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' का सुधाकर द्विवेदी द्वारा संपादित नागरी प्रचारिणी ग्रंथ माला सीरीज सं० ११ एवं सं० १४ के रूप में क्रमशः १६०६ ई० (सं० १६६३) तथा सन् १६०७ ई० (सं० १६६४) में प्रकाशित हुआ। दूसरी प्रति चानसेन छावनी की है जिसका लिपिकाल सं० १६०८ है। शेष तीन के लिपिकाल क्रमशः १६०१, सं० १८८५ तथा १६३४ हैं। दादू बानी का चौथा प्रकाशित संस्करण सं० १६७५ में 'जेल प्रेस' जयपुर का है। इसके संपादक का नाम अज्ञात है। संस्करण के अन्त में छपे कुछ दोहों से प्रतीत होता है कि 'सरजनदल जंग सिंध' ने उसे 'लेखगदोश निवार' करके प्रकाशित कराया है। छठा एवं सटीक 'अनभैवाणी' ग्रंथ जयपुर के स्वामी जीवानंद भारत भिक्षु द्वारा सम्पादित एव श्री दादूसेवक प्रेस, जयपुर से सं० २००३ में प्रकाशित है। लाहौर से प्रकाशित किसी पुस्तक का भी उल्लेख मिलता है। किन्तु वह आज अनुपलब्ध है।

सबसे प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपि दादू द्वारा नराणा की है इसका आकार है १०" X ६" X २"। इस पर चमड़े की जिल्द है। पुष्पिका में लिपिकाल नहीं दिया गया है। प्रति के लिपिकार के गुरु स्मरणादि से भी कुछ अधियता पता नहीं चलता है। दादू दयाल जी के प्रसिद्ध ५२ शिष्यों में से मोहनदास भजनीक, मोहनदास दफ्तरी, मोहनदास मेवाडा तथा मोहनदास दरियाई नामक चार मोहनदासों के उल्लेख हैं।

दादू महाविद्यालय, जयपुर से प्राप्त पांडुलिपि भी प्राचीनता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसका आकार है ६" X ५¼" X २"। पुरानी दफ्ती लगी और कपड़े से मढ़ी है। दादूवाणी की तीसरी प्रति नागरी प्रचारिणी सभा (सं० १४०६) से उपलब्ध हुई है इसका स्थान उदयपुर है। इसका आकार ११" X ६" X २" है। संभवतः इस प्रति का लिपिकाल सं० १७६७ (सन् १७४० ई०) बैशाख बदी ७, मंगलवार है। लिपिकार का नाम मनसाराम है जो बाबा साधू के शिष्य हैं।

चौथी प्रति नागरी प्रचारिणी सभा (१३६४ संख्या) की यह छोटे से गुटके के आकार में है इसका आकार प्रकार ५½" X ३½" X २" है। उपलब्ध हस्तलिखित प्रतियों में पौंचवी पांडुलिपि भी नागरी प्रचारिणी सभा की है। सभा की इस पर १६११ संख्या दी है। यह प्रति पिछली प्रति से कुछ बड़ी और अधिक मोटी

है। इसका आकार है ६" x ४½" x २½"। नागरी प्रचारिणी सभा से प्राप्त '१३६३ क' अक की प्रति है। प्रतिका गुटके के आकार की है। इसका आकार ६" x ३" x ३" है। एक अन्य हस्तलिखित नागरी प्रचारिणी सभा से प्राप्त १७५६ सख्या वाली है। प्रति गुटके की शकल में ६½" x ४½" x २ आकार की है। हस्तलिखित प्रतियों में लिपि नागरी होने पर भी लिखावट में विलक्षणता है। इसमें इसका कारण संभवतः राजस्थानी, गुजराती, सिंधी एवं पंजाबी की प्रमुख विशेषताएँ हैं। प्रायः 'सधुक्कडी' है

प्रस्तुत संपादन में हमने पाठ-निर्धारण, पांडुलिपियों का सहारा तो लिया है किन्तु उनमें उपलब्ध अनेकरूपता के कारण हमारे पाठ का आकार अधिकांशतः वेल्वेडियर प्रेस से प्रकाशित 'दादू दयाल की बानी' रहा। यह वाणी प्रकाशन की दृष्टि से प्राचीन होने के साथ-साथ पाठ-संशोधन एवं काव्य शास्त्रीय दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। संपादन के समय हमने पाया कि प० परशुराम चतुर्वेदी द्वारा संपादित पाठ वैज्ञानिक एवं प्रामाणिक नहीं है। पाठ-संशोधन में हमारा आधार दादू दयाल की वाणी का अर्थ रहा है। अर्थ की स्पष्टता से वाणी की वैज्ञानिकता स्वतः मान्य हो जाती है। हमारी दृष्टि से दादूदयाल की साखियों पर ही रही है। विभागीय अध्ययन परिषद् में विषय-निर्धारण के समय मौखिक रूप से स्पष्ट कर दिया गया था कि एक छात्र उनकी साखियों का तथा दूसरा उसके पदों का संपादन करेगा। वर्तमान अध्ययन में हमने सत दादू दयाल की साखियों के संपादन पर ही दृष्टि रखी है।

दादूदयाल की भाषा चमत्कृत कर देने वाली भाषा है। दादू की भाषा में महाराष्ट्री, शौरसेनी प्राचीन राजस्थानी, गुजराती, सिंधी, पंजाबी, ब्रज आदि भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अरबी, फारसी और तुर्की आदि के शब्द मिलते हैं।

- १ रेफ का पूर्व वर्ण में संयुक्त होना गर्व > गरब
- २ रेफ का पूर्ण वर्ण होना वर्ष > बरस
- ३ हल् 'र्' का पूर्ण वर्ण होना प्रचुर > परचुर
- ४ हल् 'र्' का लोप समुद्र > समुद, समद
- ५ 'य' के स्थान पर 'ज' युग > जुग
- ६ 'क्ष' के स्थान पर 'ख' क्षिति > षिति/खिति
- ७ 'ण' के स्थान पर 'न' अरण्य > अरण्ण, कर्ण > कन्न
- ८ 'ज्ञ' के स्थान पर 'ग्य' या 'ग' आज्ञा > अग्या, अज्ञान > अग्यान, यज्ञ > जग्य
- ९ 'ग' के स्थान पर 'य' सागर > सायर

१० 'श' के स्थान पर 'स' आकाश > अकास

११ 'ख' के स्थान पर (लिपि में) 'ष' खीर > पीर, मुख > मुष

१२ सयुक्त शब्दों को सरल करने के प्रयत्न स्वरूप अपभ्रंश काल में हुए रूपों को भी दादूदयाल की भाषा में प्रयोग है .

सबद > शब्द

पाइक > पदातिक

१३ व्यंजन विपर्यय :

दुष्प > दुख

उत्तम पुरुष :

एक वचन कर्ता — हो (स० ब्रह्म)

मध्यम पुरुष :

एक वचन कर्ता — तूँ, तूँहि (स० त्वम्)

प्रथम पुरुष :

एक वचन कर्ता — सो, इह, इहै उह, उहै, वह

बहुवचन कर्ता — ते, तेउ ये, इहे वे

कर्मकारक :

कहुँ, कहँ, कौ, को

अपादान कारक :

सौ, सो, से, परि, पर, पै

अधिकरण कारक :

मधि, मझि, मॉझ

संख्या वाचक :

निश्चित — पचू (गुरु ११) — पचू पलटि करि

अनिश्चित — बहु (उपगार) गुरुदेव कौ अग ५

अनिश्चय वाचक :

कोइ (गुरु ३२) — कोइ साध विलोवणहार

प्रश्नवाचक :

कौण (गुरु. ११२) — हैगा कौण हवाल

नित्य संबंधी :

सोइ (गुरु. ३१) — मथि करि काढै कोई

क्रिया :**साधारण सामान्य वर्तमान काल की क्रियाएँ -**

	एक वचन	बहुवचन
१.	करौँ, करूँ	करै
२.	करै	करौ
३.	करै	करैं

साधारण भूतकाल -

एक वचन	बहुवचन
१,२,३ पु० चलयौ	चलै कृदन्त रूपों का

भविष्य के लिए अनिश्चयवाचक वर्तमान का भी प्रयोग मिलता है परन्तु भविष्य के साधारण रूप भविष्य संयुक्त काल से निकाले जा सकते हैं :

एक वचन	बहुवचन
१. चलि हौँ	चलि हैं
२. चलि हैं	चलि हौँ

क्रियार्थक संज्ञा के अनेक रूप पाये जाते हैं। आज्ञार्थ के साधारण रूप एक वचन में, 'करहुँ', और बहुवचन में 'करौ' पाये जाते हैं। 'इ' और 'उ' के मिश्रण से 'हि' रूप भी पाया जाता है। पावहि और आवहि के स्थान पर वर्तमान निश्चयार्थ 'पावहु' और 'आवहु' का प्रयोग किया गया है। वर्तमानकालिक क्रदन्त के अंत में अत होता है जैसे देखत, सुनत और गाथा शब्दों में जहाँ दीर्घता की आवश्यकता होती है वहाँ 'अंत' का प्रयोग किया जाता है जैसे — रहंत, कहंत। 'हुत' रूप (सं० भूत) से 'था' की व्युत्पत्ति हुई है। भूतकाल का दूसरा रूप 'हुआ' भी है जिसका पूर्वकालिक क्रदन्त हुते मिलता है। वर्तमान काल का 'है' भी प्रयोग में लाया गया है वैसे भविष्य रूप में 'करिहै', जुझी है' पाये जाते हैं।

अव्यय : समुच्चय बोधक 'और' के स्थान पर 'अवर' का प्रयोग मिलता है।

अधिकाँश शब्द अरबी, फारसी के हैं। मौजूद, खबर, अरवाह, मुकाम, हस्त, दादनी, सजूद, नफ्स, गालिब, क़िब्र, काबिज़ इत्यादि। उन्होंने अपने काल में सिंधी, पंजाबी तथा गुजराती का प्रयोग भी अनेक स्थानों पर किया है।

(दादू) नैन हमारे ढीठ हैं, नाले नीर न जौंहि।

सूकों सरों सहेत वे, करँक भए गलि मॉहि॥

सिंधी :

दादू गाफिल छो वतै, मंझे रबु निहारि।

मंझेई पिउ पाणजौ, मंझेई बीचार॥

गुजराती :

पुहुप प्रेम बरिखै सदा, हरि जन खेलै फाग।

ऐसा कौतिग देखिये, दादू मोटे भाग॥

फारसी :

मौजूद खबर माबूद खबर, अरवाह खबर औजूद।

मुकाम चि चीज हस्त दादनी सजूद॥

संत दादू दयाल का राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी, फारसी भाषाओं पर अपूर्व अधिकार था। इस दृष्टि से उन्हें मध्ययुगीन संतों में तुलसी के अनुरूप इनका स्थान भी सर्वोपरि है।

संत दादूदयाल कबीर की निर्गुण विचारधारा से अत्यंत प्रभावित संतों का दर्शन स्वानुभूति का दर्शन है। दादूदयाल ने जगत् की अनुभूतियों को आत्मसात् करके उसकी उसी रूप में अभिव्यक्ति की उन्होंने अपने ही विचारों के मंथन का आश्रय लिया। परमानन्द और परम सन्तोष प्राप्ति का उनका यही मार्ग था। ब्रह्म, माया, जगत्—संबंधी उनका चिन्तन आत्मानुभूति पर निर्भर है। वे मानते हैं कि अन्त करण की शुद्धि से सब कुछ मिल जाता है। सारे भ्रम और मायाजाल कट जाते हैं। रह जाता है केवल ब्रह्म का प्रकाश।

संत दादू दयाल का विचार है कि ब्रह्म—सम्बन्धी अनुभूति भी ब्रह्म के समान ही होनी चाहिए। जिससे ब्रह्म का यथार्थ—अनुभूत वर्णन किया जा सके।

जब घटि अनभै उपजै, तब किया करम का नाम।

भै भ्रम भाग सबै, पूरण ब्रह्म प्रकास॥

वे मानते हैं कि काया सुनि पचेन्द्रियो का आवास रहता है। 'आत्म सुनि' में प्राण-प्रकाश की प्रतीति होती है और 'परमसुनि' में ब्रह्म से मिलन होता है। इस मिलन से द्वैत-भाव हो जाती है। तादात्म्य की स्थिति से साधक साध्य से एकमेव हो अकेला रह जाता है।

दादू ब्रह्म-तत्त्व को तीनों लोको में गाय के समान और सारे साधुओं को इसी ब्रह्म की गाय के धन के समान मानते हैं। ऐसे ब्रह्म के मार्ग में सदैव अमृत वर्षा होती है।

सतो ने जीवात्मा को परमात्मा का ही अंग माना है। जीव के लिए आत्मा चेतना की शक्ति है जो असीम चैतन्य शक्ति का अंश है। आत्मा और परमात्मा में कोई भेद नहीं है। "अयमात्मा ब्रह्म" में आत्मा को ब्रह्म माना गया है। आत्मा और ब्रह्म दोनों ही अस्तित्व के साक्षी हैं। "जीवो ब्रह्मेव न नापर और "जीव ब्रह्म द्वै नाहि" आदि उक्ति में इसी का प्रमाण है।

श्वेताश्वतर उपनिषद् में माया को ब्रह्म की रचनात्मक शक्ति माना है। इसे सामान्य व्यक्ति समझ नहीं सकता। ब्रह्म माया शक्ति द्वारा वेदों-यज्ञों, ऋतुओं, व्रतों तथा सभी भूत या भावी पदार्थों की सृष्टि करता है। सारा विश्व माया के सहारे सिरजा गया है -

"छन्दासि यज्ञा वहवो व्रतानि भूत भव्य यच्च वेदा वदन्ति।

अस्मान्यायी सृजते विश्व मे तत्, तस्मिश्चायो कायान्निक॥

डॉ० राधा कृष्णन के अनुसार "ससार के पदार्थ जिसमें व्यक्ति प्राणी भी सम्मिलित है ऐसा अनुमान करते हैं कि वे सभी पृथक् और निजी अस्तित्व वाले हैं और आत्मपोषण और रक्षा के कार्य में सलग्न प्रतीत होते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि वे सभी एक ही स्रोत से प्रादुर्भूत हैं जिससे वे सभी तत्त्व ग्रहण करते हैं। यह विश्वास भाषा का परिणाम है।"

दादू माया को मृगजाल मानते हैं जिसकी झिलमिलाहट, उनके अनुसार झूठी है। इसी झूठी झिलमिलाहट या चिलक-चमक को देखकर उसे सत्यवत् समझा जाता है। माया का अविद्या माया के रूप में विकास शंकराचार्य के पश्चात् अनेक आचार्यों द्वारा विशिष्टाद्वैत, शुद्धद्वैत, द्वैत व द्वैताद्वैत आदि सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हुए हुआ। सतो ने माया को सासारिक प्रलोभन माना है। साधारण जीव इन प्रलोभनों में लिप्त होता जाता है। इसी कारण वह आवागमन के चक्र से मुक्त नहीं हो पाता। दादू मानते हैं कि क्षणिक माया को पाकर गर्व करना अनुचित है। माया का सुख वस्तुतः कुछ ही दिनों का होता है।

दादू पथ का व्यापक प्रचार एवं प्रसार हुआ। आरंभ में इसे परब्रह्म सम्प्रदाय की सज्ञा दी गई

और बाद में दादू जी के शिष्यों में कबीर पंथ, नानक पंथ आदि समानता के आधार पर इसे दादू-पंथ नाम से अभिहित किया। संत दादू तिरो भाव के पश्चात् इस पंथ से कई संप्रदायों का विकास हुआ जैसे — गरीब दासी, मिस्कीन दासी और रज्जवाल संप्रदाय।

दादू पंथ व्यापकता की दृष्टि से नानक-पंथ, कबीर-पंथ से कम नहीं है। विकास के अनेक चरणों में होकर इसने बहुत से महत्वपूर्ण परिवर्तन किये। कबीर पंथ के अनुयायी अधिकतर गरीब वर्ग के हैं और कबीर का प्रचार और प्रसार महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों के नाम से हो रहा है। दादू पंथ की दार्शनिक चेतना अपने आप में दृढ़ है। इस दृष्टि से भी यह कहना अधिक उपयुक्त है कि यह पंथ व्यापकता और महत्व की दृष्टि से कबीर और नानक पंथ दोनों से ही बहुत आगे हैं। इस पंथ की विचारधारा में सांप्रदायिक कट्टरपन कहीं भी छू नहीं गया है। संभवतः इसके पीछे संत दादू की दरियादिली तथा दयालुता का आधार है।



संत दादूदयाल का काव्य-संपादन

[अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की
पीएच०डी० उपाधिहेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध]

1996

निर्देशक :

प्रो० शिवकुमार शाण्डिल्य

पीएच० डी०, डी० लिट्

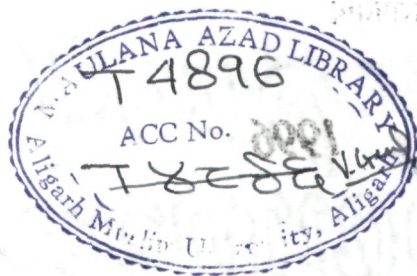
प्रस्तुतकर्त्री :

श्रीमती गुलनाज उस्मान

एम० ए० (इतिहास) एम० ए०, एम० फिल० (हिन्दी)

हिन्दी विभाग

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़-202 002



T4896



Prof. Shiv Kumar Shandilya
M.A., Ph.D, D.Lit.
Chairman

Department of Hindi
Aligarh Muslim University,
Aligarh

Residence
1A, Qila Road
Aligarh - 202002 (India)
Phone - 0571-400968

Certificate

Certified that **Mrs. Gulnaz Usman** has submitted her thesis entitled "**Sant Dadu Dayal Ka Kavya Sampadan**" in fulfilment of the **Ph.D. degree in Hindi** of the University under my supervision. It is her original research work. Mrs. Gulnaz Usman has fulfilled all the conditions laid down under Academic Ordinances of Aligarh Muslim University, Aligarh.

ForWARDED.
S.K. Shandilya
15/10/96
Chairman
Department of Hindi
A.M.U., ALIGARH

S.K. Shandilya
15/10/96
Prof. S.K. Shandilya
Supervisor

विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ

	प्राक्कथन	i-iv
१	सम्पादन - सिद्धान्त	१-३६
१.१	संत दादूदयाल : जीवन-परिचय	१
१.१.२	जन्मतिथि	१
१.१.३	जन्मस्थान	२
१.१.४	जाति	२
१.१.५	गुरु	३
१.१.६	शिक्षा	३
१.१.७	विवाह और संतति	४
१.१.८	देश भ्रमण और देहान्त	५
१.२	दादू वाणी परिचय	५
१.२.१	उपलब्ध रचनाएँ	७
१.२.२	प्रकाशित संग्रह ग्रन्थ	७
१.२.३	हस्तलिखित प्रतियाँ	६
१.३	पांडुलिपियां की लिपिगत विशेषताएँ	१२
१.३.१	स्वर विपर्यय	१३
१.३.२	व्यंजन विपर्यय	१३
१.३.३	स्वर व्यंजन निपर्यय	१३
१.३.४	संयुक्ताक्षर विपर्यय	१४
१.३.५	परम्परागत पद रूप	१४
१.४	दादूदयाल की भाषा	१५
१.४.१	सर्वनाम	१७
१.४.२	विशेषण	१८
१.४.३	क्रिया	१६
१.४.४	अव्यय	२०
१.४.५	अरबी, फारसी, तुर्की आदि के शब्द	२१
१.४.६	गुजराती, सिंधी, पंजाबी का प्रयोग	२१
१.५	दादू-पंथ : सिद्धान्त एवं मान्यताएँ	२४
१.५.१	ब्रह्म का स्वरूप	२४
१.५.२	जीव	२६
१.५.३	माया	२६
१.५.४	जगत	३२
१.५.५	व्यापकता और महत्व	३६

२.	संत दादूदयाल कौ काव्य (बाणी)	१-१८५
१.	गुरदेव कौ अँग	१
२.	सुमिरण कौ अँग	११
३.	बिरह कौ अँग	२१
४.	परचा कौ अँग	३२
५.	जरणौ कौ अँग	५६
६.	हैरौन कौ अँग	५६
७.	लै कौ अँग	६१
८.	निहकर्म पतिव्रता कौ अँग	६४
९.	चितावणी कौ अँग	७१
१०.	मन कौ अँग	७२
११.	सूखिम जनमा कौ अँग	८१
१२.	माया कौ अँग	८२
१३.	साच कौ अँग	६४
१४.	भेख कौ अँग	१०७
१५.	साध कौ अँग	१११
१६.	मधि कौ अँग	११६
१७.	सारग्राही कौ अँग	१२४
१८.	विचार कौ अँग	१२६
१९.	बेसास कौ अँग	१२६
२०.	पीव पिछोणण कौ अँग	१३३
२१.	संभ्रथाई कौ अँग	१३७
२२.	सबद कौ अँग	१४०
२३.	जीवत मृतक कौ अँग	१४२
२४.	सूरतन कौ अँग	१४६
२५.	काल कौ अँग	१५२
२६.	सजीवनि कौ अँग	१५८
२७.	पारिखि कौ अँग	१६२
२८.	उपजाणि कौ अँग	१६५
२९.	दया त्रिवैरता कौ अँग	१६६
३०.	सुंदरि कौ अँग	१७०
३१.	किसतूरिया म्रिग कौ अँग	१७२
३२.	निंघा कौ अँग	१७३
३३.	निगुणा कौ अँग	१७५
३४.	बिनतो कौ अँग	१७७

३५.	साखी भूत कौ अँग	१८२
३६.	बेली कौ अँग	१८४
३७.	अविहड़ कौ अँग	१८५
३.	उपसंहार	१८७
	आधार एवं सहायक ग्रंथ	१९१



संत साहित्य को लेकर अनेक शोध प्रबन्ध लिखे जा चुके हैं। इनमें से कुछ तुलनात्मक और कुछ आलोचनात्मक दृष्टि से किए गए शोध-कार्य हैं। इन सबमें विभिन्न दृष्टियों से संत साहित्य का अध्ययन किया गया है। संत काव्य के वैज्ञानिक संपादन की ओर व्यवस्थित रूप से कार्य नहीं किया गया। आधुनिक साहित्य की अनुपस्थिति में मूल्यांकन की प्रामाणिकता पर भी प्रश्नचिह्न लग जाता है।

निर्गुण संत काव्य में संतों की निर्मल दृष्टि इस प्रकार व्याप्त है जिस प्रकार माला के धागे में फूलों की गंध व्याप्त हो जाती है। संतों ने कहीं भी अपनी दृष्टि को संकुचित नहीं होने दिया। संतों ने समाज में फैले हुए बाह्यडम्बरों को त्यागकर ईश्वर की भक्ति में लीन होने की प्रेरणा दी। मानव मात्र में इसी भावना के प्रचार प्रसार का अथक परिश्रम किया। उनका स्पष्ट मत था कि मानव जाति एक है। भेद-भाव व्यर्थ है।

अध्ययन-काल से ही मेरी रुचि निर्गुण संत-काव्य की ओर रही है। संत दादूदयाल के काव्य के संपादन का मेरा यह प्रथम विनम्र प्रयास है। अलीगढ़ विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हिन्दी विभाग के पद पर कार्यरत अपने पति से मैंने इस सम्बन्ध में परामर्श किया तो उन्होंने मेरी रुचि संत-काव्य में जानकर मुझे संत-साहित्य के मर्मज्ञ एवं भाषाविद् प्रो० शिवकुमार शाण्डिल्य से मिलवाया। उनसे तथा प्रो० शैलेश जैदी, के परामर्श से मैंने संत कवि दादूदयाल पर शोध करने का विचार प्रकट किया। संत दादूदयाल जैसे सौम्य प्रकृति के संत पर कबीर की अपेक्षा कम काम हुआ है जबकि उनका काव्य कबीर के काव्य से कम महत्वपूर्ण नहीं है। उन्होंने परामर्श दिया कि भविष्य में शोधार्थियों को सही दिशा मिल सकें इसलिए पहले दादूदयाल के उपलब्ध-पाठों की वैज्ञानिकता पर विचार करना आवश्यक है। शुद्ध पाठ शोध के लिए नितान्त आवश्यक है। संत दादूदयाल का हृदय मानव मात्र के प्रति अनन्त प्रेम से भरपूर था, इसी कारण उन्हें दयाल कहा जाता था महामानव दादूदयाल मध्ययुग के राजस्थान के अग्रणी संतों में से हैं।

संत दादूदयाल की साखियों एवं पदों पर आधारित रचनाओं के अनेक संग्रह संपादित, गैर संपादित, राग-रागिनियों के प्रकाश में वर्गीकृत तथा टीका सहित प्रकाशित हो चुके हैं। प्रकाशित संग्रह इस प्रकार हैं —

१. **बम्बई संस्करण** : यह संग्रह १९०४ ई० में ज्ञान सागर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ। किन्तु अब अप्राप्य है।

२. **सभा संस्करण** : यह संग्रह काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी से सुधाकार द्विवेदी के संपादन में ग्रंथ माला सीरीज के अन्तर्गत सं० ११ एवं ४ के रूप में क्रमशः १९०६ एवं १९०७ ई० में प्रकाशित हुआ।
३. **अजमेर संस्करण** : यह संग्रह सन् १९०७ ई० में पं० चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी के संपादन में वैदिक यंत्रालय अजमेर से प्रकाशित हुआ।
४. **जयपुर संस्करण** : यह संग्रह जेल प्रेस, जयपुर से १९१८ ई० में प्रकाशित हुआ।
५. **इलाहाबाद संस्करण 'अ'** : यह संग्रह १९२८ ई० में वेलवेडियर प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।
६. **जयपुर संस्करण 'ब'** : यह संग्रह स्वामी जीवानन्द भारत भिक्षु द्वारा संपादित दादूसेवक प्रेस, जयपुर से १९४६ ई० में प्रकाशित हुआ।
७. **जयपुर संस्करण 'स'** : यह संग्रह स्वामी मंगलदास द्वारा सम्पादित होकर मंगल प्रेस, जयपुर से १९५१ ई० में प्रकाशित हुआ।

प्रस्तुत सम्पादन में उपर्युक्त सभी प्रकाशित प्रतियों का लाभ उठाया गया है। हस्तलिखित प्रतिलिपियों का विवरण यद्यपि यथास्थान कर दिया गया है किन्तु कोई ऐसी हस्तलिखित प्रति अभी तक उपलब्ध नहीं हो पाई जिससे उपर्युक्त प्रकाशित संस्करण में कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन रेखांकित किया जा सके। फलस्वरूप दादूदयाल की शैली, चिन्तन दृष्टि एवं शब्द भण्डार को दृष्टि में रखते हुए सम्पादन करते समय अपने विवेक को ही आधार बनाया गया है और जहाँ भी असहमतियाँ हैं उन्हें यथास्थान पाद टिप्पणी में संकेतिक कर दिया गया है। प्रयास किया गया है कि प्रस्तुत सम्पादन को अधिक से अधिक वैज्ञानिक बनाया जा सके किन्तु निर्णायक रूप में यह घोषित नहीं किया जा सकता कि यह सम्पादन अन्तिम है और इसके बाद किसी संशोधन-परिवर्द्धन की सम्भावना शेष नहीं रहती।

निर्गुण संत साहित्य एवं प्रेमचन्द के प्रख्यात विद्वान प्रो० शैलेश जैदी को हार्दिक नमन से पूर्व मैं अपनी स्नेहमयी भाभी स्व० श्रीमती शबनम जैदी के प्रति श्रद्धापूर्वक नमन करना अपना परम कर्तव्य मानती हूँ। यह उन्हीं की प्रेरणा का फल है कि मेरे पति हिन्दी में पी-एच०डी० प्राप्त करके इस पद तक पहुँच पाए और वे मेरी सारस्वत प्रगति के भी अभिन्न अंग हैं। प्रो० शैलेश जैदी भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, ने सदैव मुझे प्रोत्साहित किया। उनकी प्रेरणा मेरे सारस्वत कार्य का सम्बल है। उनके स्नेह के प्रति भी सदैव श्रद्धानत रहूँगी।

शोध प्रबन्ध के रूप में संत दादूदयाल की वाणी के संपादित पाठ को मैंने प्रो० शिवकुमार शाण्डिल्य, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के मार्ग-दर्शन में प्रस्तुत किया है। संपादन के दौरान प्रारम्भ में कुछ कठिनाईयाँ आयीं किन्तु गुरुवर प्रो० शाण्डिल्य की आत्मीयता, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन ने मुझे कभी भी परेशानी का अनुभव नहीं होने दिया। उन्होंने अधिक से अधिक सामग्री एकत्रित करने में मुझे पूर्ण सहयोग दिया। डा० साहब का पूर्ण वात्सल्य, सौहार्द, सहानुभूति, अनुकम्पा सदैव मेरे साथ रही है। मैं जब भी अपने शोध-कार्य के विषय में उनसे मिली, सदैव एक नवीन प्रेरणा और एक नवीन स्फूर्ति लेकर लौटी। उनकी कृपा और आशीर्वाद के अभाव में इस कार्य को सुगमतापूर्वक संपन्न कर पाना मेरे लिए संभव नहीं था। उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर पाना मेरी वाणी के सामर्थ्य से परे है। मैं उनके स्नेह एवं सौहार्द के प्रति सदैव आभारनत हूँ। उनके परिवार से भी जो स्नेह मुझे इस बीच मिला, वह अद्वितीय है। भाभी श्रीमती श्यामलता शर्मा, एम०ए० साहित्य रत्न से मुझे सदैव निश्छल स्नेह मिला। इनके प्रति भी श्रद्धापूर्वक नमन करना मैं अपना परम कर्तव्य मानती हूँ। गुरु पुत्र, गिरीश, संजीव, संदीप, सुधीर ने भी योगदान किया जो सदैव स्मरण रहेगा। मेरी भाभियों श्रीमती मीनाक्षी शाण्डिल्य और श्रीमती राधा शाण्डिल्य से भी मुझे विशेष सम्मान मिला है। प्रिय बेटा और प्यारे नन्हे बेटे समीर की चंचल शोखियाँ भुला पाना असंभव ही है।

प्रो० नईम अहमद, गुरुवर प्रो० के०पी० सिंह, प्रो० नज़ीर मोहम्मद, प्रो० अजब सिंह, प्रो० अय्यूब खॉं प्रेमी, प्रो० बुद्धसेन नीहार, प्रो० के०एम० मिश्रा, डॉ० उदयशंकर श्रीवास्तव, डा० आरिफ नज़ीर, डॉ० अब्दुल अलीम, डा० भरत सिंह, डॉ० एस०एन० शर्मा, डॉ० रमेश रावत, श्री मो० कलीम सिद्दीकी, श्री एहतशाम जाफरी आदि का परामर्श मेरे शोधकार्य में सहायक रहा है। इन सबके प्रति मेरा आभार-प्रदर्शन।

शोध सामग्री संकलन एवं पुस्तक चयन में मुझे सदैव श्रीमती परवेज़ फातिमा, सेमीनार इंचार्ज, हिन्दी विभाग से न केवल सहयोग प्राप्त हुआ अपितु इन्होंने समय-समय पर मार्ग की अनेक कठिनाईयाँ का समाधान किया। मैं परम शक्तिमान अल्लाह से कामना करती हूँ कि उनका जीवन सदैव समृद्धि पूर्ण रहे।

आदरणीय डॉ० मौहम्मद उस्मान खॉं प्राध्यापक, हिन्दी विभाग अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की मैं अत्यन्त आभारी हूँ जो मेरे पति होने के साथ-साथ मार्गदर्शक भी है। वे मेरी शाश्वत साधना के अभिन्न अंग हैं। उनके सतत् प्रोत्साहन एवं सहयोग से मैंने एम०ए०, एम०फिल० (हिन्दी) की उपाधि प्राप्त करके

पी-एच०डी० में अपना पंजीकरण कराया। उनका प्यार भरा व्यवहार एवं सहयोग जो शोध-सामग्री-चयन एवं शोध-कार्य पूर्ण करवाने के लिए मिला उसके लिए मेरे पास शब्द नहीं है। फिर अनकहीं बातों का अपना अलग ही अस्तित्व एवं महत्व होता है। उनके प्रति आभार प्रकट करना अभिन्नता के अद्वैत को द्वैत में बदलना है। उनके साथ-साथ मेरे स्व० ससुर श्री मुमरेज़ ख़ान, ममतामयी सास और बहनों जैसी ननदों श्रीमती ज़ीनत बेगम, श्रीमती अफ़रोज़ बेगम, श्रीमती आयशा बेगम और बड़े भाईयों जेठ मौ० फ़ारुख, मौ० याक़ूब और भाभियों श्रीमती सबिया बेगम, श्रीमती शबनम ख़ान ने न केवल जीवन संघर्ष में मुझे आधार प्रदान किया, प्रत्युत सत्य, साहस, कर्तव्य-पालन, सहयोग, सौहार्द और सहानुभूति की कामना के साथ ही आत्मविश्वासपूर्वक जीना भी सिखाया। छोटे भाई समान देवर मौ० अहसान उर्फ़ रौनक, मौ० इरफ़ान और उसकी पत्नी श्रीमती नसरीन मेरे ननदोई श्री इरशाद अहमद, श्री अब्दुल रज्ज़ाक एवं श्री अब्दुल लतीफ़, ने सदैव मेरा मनोबल बढ़ाकर मुझे हर संभव सहायता पहुँचाई। मेरे भतीजे, साजिद खान, सैयद अली जाफ़र (शोनू) सलमान खान, कामरान खान और भतीजी सीमा खान, ईलिया ज़ाफ़र (शोबी), हुमा खान, शीरीन खान भौंजे, सुलतान, बबलू, गुड्डू, भौंजी तबस्सुम (बेबी) का भी योगदान चिर स्मरणीय रहेगा। मेरी प्रभु से यही कामना है कि वह इन्हें सुखी एवं सम्पन्न रखें।

आदरणीय पूज्य पिताजी श्री इरशाद अहमद खान, प्राचार्य श्रीकृष्ण डिग्री कालेज, बालैनी (मेरठ) एवं शक्तिदायिनी माता श्रीमती कुलसूम बेगम का लाड़-प्यार सदैव याद आता रहा है। मेरी प्रगति का ये सम्बल रहे हैं। इनके आशीर्वादों का परिणाम प्रस्तुत शोध कार्य है। विजय अंकल और आंटी की भी मैं मन से बहुत आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरा मनोबल बढ़ाकर मुझे प्रोत्साहित किया। भाई डॉ० नईम अख़्तर खान, शमीम अख़्तर खान, भाभी श्रीमती फिरदौस, भतीजे शोएब खान, एतमाद खान, जीजाजी डॉ० अंसार अहमद खान एवं बहन डॉ० श्रीमती शहनाज खान, डॉ० राहत परवीन, हीना कौसर और प्रिय भौंजी शह-शिफा खान के प्रति मैं मन से आभारी हूँ। इनके अपार स्नेह को मैं कभी नहीं भूल पाऊँगी।

अन्त में मैं शोध प्रबन्ध के टंकक श्री प्रदीप शर्मा अलीगढ़ को भी धन्यवाद देने का लोभ संवरण नहीं कर सकूँगी जिनका सहयोग बराबर मेरी अपेक्षाओं के अनुरूप मिलता रहा।

विद्वज्जन - कृपाकांक्षिणी

गुलनाज़ उस्मान

गुलनाज़ उस्मान

१.१ संत दादूदयाल : जीवन-परिचय

भक्तों एवं सन्तों की प्रमाणित जीवनी प्राप्त कर पाना कठिन है। दादूदयाल के जीवन-काल में तथा उनके महाप्रयाण के बाद, लम्बे समय तक दादू के काव्य को व्यापक एवं सम्मानित स्वीकृति मिली। आज भी उनका काव्य कबीर, रैदास, नानक, तुलसी जैसे श्रेष्ठ कवियों की श्रेणी में रखा जाता है। अपने जीवन-काल की अपेक्षा दादूदयाल आज अधिक स्वीकृत और सम्मानित है। सन्त दादूदयाल के जीवन-परिचय, व्यक्तित्व, जीवन-दर्शन तथा पन्थ आदि पर विचार करने से पता चलता है कि वे अपने काव्य-व्यवहार एवं ज्ञान के कारण अपने समय में अत्यन्त लोकप्रिय थे। अपने जीवन के प्रारम्भ में ही वे भारतवर्ष के अनेक प्रान्तों में ख्याति पा गए थे। विभिन्न वर्णों के लोगों ने दादू द्वारा निर्दिष्ट जीवन-दर्शन को अपना लिया था। आज भी देश के विभिन्न प्रान्तों में दादू-द्वारे तथा दादू-मठ विद्यमान हैं। उनकी वाणियों को आज भी गुरुग्रन्थ साहब और रामचरित मानस की भाँति पवित्र माना जाता है और उसे पूजा जाता है।

१.१.२ जन्मतिथि :

यह सर्वथा मान्य है कि दादू का जन्म फागुन सुदी आठ बृहस्पतिवार संवत् १६०५ (सन् १५४८ ई०) को और मृत्यु जेठ बदी आठ शनिवार संवत् १६६० (सन् १६०३ ई०) को हुई। यह तिथि संत कबीर के परलोक गमन (सन् १५७५ ई०) से लगभग २८ वर्ष आगे बैठती है। दादू के निकटतम शिष्य स्वामी जनगोपाल ने सं० १६०१ को उनका जन्मकाल माना है। दादू जन्मलीला परची में उन्होंने दादू के विषय में लिखा है -

संवत सोला-से-इकोत्तर। सन्त एक उपज्यो पहुमीं पर॥

पश्चिम दिसा अहमदाबादू। ती छँ साध परगटै दादू॥^१

सन्त साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान श्री क्षितिमोहन सेन ने भी संत दादू के इसी जन्म-समय (ई० सन् १५४४) को मान्यता दी है।^२

१. जनगोपाल कृत - दादू जन्मलीला परची, पृ० २-७.

२. क्षितिमोहन सेन - मिडिल्ल मिस्टीसिज्म, ११, इण्डिया एज ५०-१.

यही तिथि दादू संप्रदाय में भी मान्य है। कारण दादू सम्प्रदाय की प्रमुख गद्दी 'नराणा' में आज भी फाल्गुन सुदी ५ से ११ तक सात दिवस का मेला लगता है। इन प्रमाणों के आधार पर सन्त दादू का जीवन काल वि०सं० १६०१ की फाल्गुन शुक्ल ८ से सं० १६६० की जेठ सुदी ८ तक मानना समीचीन है। ऐसा मान लेने पर संत दादू के जीवन की अन्य घटनाएँ भी स्वतः प्रमाणित हो जाती है। जैसे सन्त दादू का अकबर (१५४०-१६०५ ई०) का समकालीन होना तथा आमेर नरेश राजा भगवानदास (१५७४-१५८६ ई०) एवं राजा मान सिंह (१५८६-१६१५ ई०) के समय में उनका जीवित होना आदि।

१.१.३ जन्म स्थान :

दादू-सम्प्रदाय की आस्था के अनुसार इनका जन्म गुजरात प्रदेश के अहमदाबाद में हुआ था। जनगोपाल के अनुसार :-

पच्छिम दिसा अहमदाबाद। ती ठाँ साध परगटै दादू।^१

राघवदास उन्हें उदधि से प्रकट चौदह रत्नों के समान अवतरित मानते हैं।

चौदह रतन प्रगटे उदधि। जिमि दादूदयाल प्रगट भयो।^२

परशुराम चतुर्वेदी के अनुसार दादूदयाल के शिष्य जनगोपाल ने अपनी (दादू जन्म लीला परची) और माधव दास ने 'भक्तकाल' में जो दादू का परिचय दिया है, वह अत्यन्त काल्पनिक और चमत्कारपूर्ण घटनाओं से भरपूर है। उसके आधार पर ऐतिहासिक तथ्य खोज निकालना सम्भव नहीं है।^३ इतना तो निश्चित है कि इनकी मृत्यु अजमेर के निकट नराणा नामक गाँव में हुई वहाँ दादू द्वारा बना हुआ है। उनके जन्मदिन और मृत्यु के दिन पर हर साल वहाँ मेला लगता है। नराणा उनकी साधना और समाधि-भूमि है। दादू पंथियों के लिए यह स्थान तीर्थ के समान है।

१.१.४ जाति :

सन्त दादू की जाति के सम्बन्ध में मतैक्य नहीं है। कुछ विद्वान उन्हें धुनिया जाति का बताते हैं। परशुराम चतुर्वेदी के मतानुसार दादू के शिष्य रज्जब ने लिखा है :

धुनि ग्रभे उत्पन्नो, दादू योगेन्द्रो महामुनिः।

उत्तिम जोग धारनं, तस्मात् क्यं न्याति कारणम्।^४

-
१. स्वामी जनगोपाल - जनम लीला परची, पृ० २-६.
 २. भक्तिमाल राघवदास (हस्तलिखित प्रति नं० २), पृ० १८.
 ३. परशुराम चतुर्वेदी - उत्तरी भारत की सन्त परम्परा, पृ० ४०६.
 ४. परशुराम चतुर्वेदी - दादूदयाल ग्रन्थावली, पृ० ३.

इन्हें पिंजारा भी बताया गया है। पिंजारा रूई धुनने वाली जाति-विशेष है। इस कारण इन्हें धुनिया भी कहा जा सकता है। कुछ विद्वान् इन्हें 'मोची' जाति का बताते हैं। कुछ इन्हें मुसलमान मानते हैं। सुधाकर द्विवेदी इन्हें मोची और क्षितिज मोहन सेन बाउलों के वन्दना वाक्य – "श्री गुरु दाऊद बन्दि दादू यारनाम" के आधार पर इनका वास्तविक नाम दाऊद मानकर उन्हें मुसलमान स्वीकार करते हैं।^१ इनकी वाणी में कहीं ऐसा संकेत नहीं मिलता। जाँति-पॉंति की व्यवस्था मध्यकाल में सुदृढ़ थी। सन्त जाँति-पॉंति व्यवस्था के विरोधी थे। दादू भी जाति को महत्व नहीं देते थे। उन्होंने कहा है –

दादू कुल हमारै केसेवा, संगत सिरजनहार।

जाति हमारी जगतगुरु, परमेश्वर परिवार।।

दादू एक सगा संसार मैं, जिन हम सिरजेसोई।

मनसा-वाचा-क्रमनॉं, और न दूजा कोई।।^२

इसमें सन्देह है कि वे हिन्दू थे। इनके पुत्र का नाम राम विलास था।

१.१.५ गुरु :

जनगोपाल कृत 'दादू जन्मलीला परची' के अनुसार ग्यारह वर्ष की अवस्था में भगवान ने एक वृद्ध के रूप में दर्शन देकर इन्हें तत्त्व ज्ञान का उपदेश दिया था :

तीजे पहर निकट की संधा, खेलत डोले लड़कन मंझा।

जब बीते एकादस बरसू, बुड्डे रूप दियो हरिदरसू।^३

दादू पंथी किसी बुढन नामक सन्त को उनके गुरु मानते हैं। दादू ने अपनी वाणी में गुरु की महिमा का गान तो बहुत किया है, परन्तु उनका कहीं भी नाम नहीं लिया है। हिन्दू समाज में श्रेयस्कामी के लिए अपने गुरु, अत्यन्त कृपण, बड़े बेटे तथा पत्नी का नाम लेना वर्जित है :

आत्मनाम गुरोर्नाम नामाति कृपणस्य च।

श्रेयस्कामो न गृहणियात् ज्येष्ठापत्य कलभयो।।

१.१.६ शिक्षा :

सन्तों ने मसि-कागद, नहीं छुआ, धर्म दर्शन का शास्त्रीय अध्ययन भी नहीं किया, परन्तु उनको

-
१. धीरेन्द्र वर्मा – हिन्दी साहित्य कोश, भाग-२, पृ० २३२.
 २. परशुराम चतुर्वेदी – दादूदयाल ग्रन्थावली, पृ० ६७.
 ३. जनगोपाल – दादू जनम लीला परची, पृ० ३६-३७.

निरक्षर मानना उपयुक्त नहीं है। सन्तों ने परमार्थ को अपनाया वे स्पष्टतः लिखते हैं :

पढ़े न पावै परम गति, पढ़ै न लघै यार।

पढ़े न पहुँचे प्राणिया, दादू पीव पुकार।।

कागज काले करि मुये, केते वेद पुरान।

एकै आखिर पीव का, दादू पेढ़ सुजान।।^१

अतः सन्तों के समान ही सन्त दादू भी सही अर्थों में शिक्षित थे। उन्होंने अनुभव के बल पर ही सब कुछ कहा, पंडिताई के आधार पर नहीं।^२ पंडिताई के बल पर तो उस समय उत्तर-दक्षिण के पंडित केवल विचारों में ही उलझे रहे।

१.१.७ विवाह और संतति :

अधिकतर विद्वान् मानते हैं कि सन्त दादू भी कबीर की भाँति विवाहित थे। दादू की पत्नी के नाम की प्रमाणिक जानकारी नहीं मिलती। माना जाता है कि ३२ वर्ष की अवस्था में उनके पुत्र गरीबदास का जन्म हुआ। उनके दूसरे पुत्र का नाम मिस्कीनदास था। इनकी दो पुत्रियाँ नानाबाई और माताबाई थी।^३ डॉ. त्रिगुणायत का कथन है कि गरीबदास जी की वाणियों से ही जान पड़ता है कि गरीबदास दादूजी के शिष्य थे। अन्य एक पुत्र और दो पुत्रियों के बारे में उन्होंने कोई आक्षेप नहीं लगाया है जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वे बाकी की तीनों सन्तानों से सहमत हैं।^४ इसी प्रकार अपनी असहमति व्यक्त करते हुए डॉ० मेनारिया ने लिखा है — “दादू जी एक सन्त थे और गरीबदास जी एक शिष्य की हैसियत से इनकी गद्दी पर बैठे। अतः दादूपंथी कुछ सन्तों ने दादू गरीबदास के गुरु शिष्य-सम्बन्ध पर जोर दिया है वह उचित ही है।^५ इस कथन के आधार पर दादू और गरीबदास के पिता-पुत्र सम्बन्ध को असंगत और मनगढन्त माना गया है। दादू ने कहा है —

दादू रोजी राम है, राजिक रिजक हमार।

दादू उस परसाद सौ, पोख्या सब परिवार।।^६

-
१. स्वामी मंगलदास — श्री दादूदयाल जी की अनभैवाणी सांच कौ अंग, पृ० २६६-६७.
 २. हिन्दी साहित्य की भूमिका, डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ० ११७.
 ३. धीरेन्द्र वर्मा — हिन्दी साहित्य कोश, भाग-२, पृ० २३२.
 ४. परशुराम चतुर्वेदी — हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय, पृ० ७३.
 ५. डॉ० मोतीलाल मेनारिया — राजस्थान का पिंगल साहित्य, पृ० १५६.
 ६. परशुराम चतुर्वेदी — दादूदयाल ग्रन्थावली, पृ० २१४.

१.१.८ देश भ्रमण और देहान्त :

दादू जीवनभर देशाटन करते रहे। इसका प्रभाव उनकी वाणी में भाषाओं की विविधता से मिलता है। उनकी एक यात्रा 'सीकरी यात्रा' के दौरान उन्होंने अकबर से भेंट की थी दूसरी यात्रा के दौरान वे राजस्थान के विभिन्न स्थानों में गए थे। अनुमानतः वे बिहार, काशी एवं बंगाल की ओर भी गए थे। इन यात्राओं में उन्हें विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों को प्रभावित करने तथा उनसे प्रभाव ग्रहण करने का अवसर मिला था। काशी में इनकी स्मृति में 'दादू मठ' असी घाट पर बना हुआ है।^१

संवत् १६१६ से १६३१ तक सांभर में दादू ने पहली बार अपने पंथ के सम्बन्ध में विचार किया। इसी के बाद नियमित रूप से उनके शिष्यों तथा अनुयायियों में सत्संग प्रारम्भ हुआ। यही 'परब्रह्म सम्प्रदाय' की स्थापना हुई। उसके बाद वे पुनः भ्रमण पर निकले। अन्त में १६५६ में दादू नराणा आकर ठहर गए। अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक वे नराणा (नरैना) में ही रहे। मरने से पूर्व उन्होंने कहा था कि मेरी लाश को जंगल में फिकवा देना जिससे जंगल के प्राणी उससे अपना पेट भरें।

१.२ दादू-वाणी-परिचय :

दादू-वाणी का शुभारम्भ संवत् १६१६ से हुआ। इसका प्रवाह अंत समय तक चलता रहा मध्ययुग की राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियाँ सामान्य नहीं थी। जब-जब देश में धार्मिक सांस्कृतिक संक्रमण बढ़ा तब-तब सन्तों ने धर्म का सही रूप प्रकाशित करने का प्रयत्न किया सन्त समन्वय में विश्वास करते थे। उन्होंने अपनी वाणियों द्वारा धर्म और रूढ़ि के नाम पर फैले भ्रम को दूर करने का प्रयास किया सामाजिक सुधार की दिशा में सन्तों ने कोई कमी नहीं छोड़ी। आज की धार्मिक-सांस्कृतिक सामाजिक इन्हीं सन्तों की वाणियों का प्रभाव है।

मध्ययुगीन भारतीय संतों में दादू का नाम बहुत प्रसिद्ध है। भारतीय चिन्तन परम्परा में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। दादू-वाणी में अध्यात्मिकता और धार्मिकता के साथ-साथ कवित्व भी मिलता है। उनकी वाणी में जहाँ एक वैराग्य और भक्ति की भावना के दर्शन होते हैं, वहीं दूसरी ओर मनुष्य को क्रियाशील जीवन बिताने की भी प्रेरणा मिलती है।

संभवतः सर्वप्रथम, सांभर में उनकी वाणी का प्रवाह आरम्भ हुआ। कालान्तर में शिष्यों की जिज्ञासाओं के समाधान हेतु उन्होंने पद-बद्ध रचना की। दादू अपने अध्यात्मिक अनुभवों को वाणी प्रदान करते जाते।

१. कृष्णवल्लभ दबे, सन्त कवि दादू पृ० ६३.

इसी प्रक्रिया में कविता का सर्जन हुआ। दादू ने स्वयं अपनी रचनाओं का संग्रह नहीं किया था।

दादू बानी के संग्रह का श्रेय उनके शिष्य रज्जबदास जगन्नाथ दास एवं संतदास को जाता है। रज्जबजी ने 'सरबंगी' में दादू वाणी का सादर संग्रह किया। जगन्नाथ दास तथा संतदास के संग्रहों का नाम 'हरडेबाणी' अभी तक उपलब्ध नहीं हो सकी है। रज्जबदास के संग्रह 'अंग बधू' की यह विशेषता है कि उसमें संग्रहीत सभी पदों को विशिष्ट शीर्षकों में वर्गीकृत किया गया है। उसमें साखियों को अंग के अन्तर्गत तथा पदों को 'राग' के अन्तर्गत वर्गीकृत किया गया है। मध्ययुगीन सन्तों की रचनाओं का वर्गीकरण अंगों तथा पदों के अन्तर्गत किया जाता रहा है। साखियों का वर्गीकरण विषयानुसार किया गया है और पदों को संगीत की विभिन्न राग-रागणियों के अनुरूप।¹ अनुपलब्ध रचनाओं के मिल जाने पर दादूवाणी पूर्ण हो सकेगी। रचनाओं में प्रक्षिप्त रचनाओं का निर्णय करना भी कठिन है।

दादू की बानियों अधिकतर पदों एवं साखियों के रूप में पाई जाती है। क्षितिज मोहन सेन के अनुसार उनके सभी पदों की संख्या २० हजार से ऊपर होगी। पर ऐसा कहना अत्युक्ति ही होगा उपलब्ध बानियों की संख्या अधिक से अधिक पाँच हजार के आस-पास होगी इनमें भी पुनरुक्ति मिलती है। हिन्दी साहित्य कोश में दादूदयाल की एक मात्र कृति 'अनभैवाणी' का ही उल्लेख है। इसमें उनकी साखियों और पदों को संग्रहीत किया गया है। उनकी दूसरी कृति 'काया बेली' भी इसी के साथ प्रकाशित है।² दादू के नाम से प्रसिद्ध अनेक साखियों और पदों को प्रक्षिप्त कहा जा सकता है।

दादू वाणी का अब तक उपलब्ध प्रामाणिक पाठ मेरे विचार से वेलवेडियर प्रेस प्रकाशित 'दादू दयाल की बानी' है। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी द्वारा संपादित 'दादू दयाल ग्रंथावली' वेलवेडियर प्रेस वाली प्रतिभा को ही संशोधित पाठ माना जा सकता है। इस प्रति में साखियों को विषयानुसार पहले भाग में ३७ अंगों में वर्गीकृत किया गया है। 'कायाबेली' और 'अनभैवाणी' दूसरे भाग में पदों के साथ संग्रहीत है।

दादू दयाल की वाणियों दो छंदों – दोहों (साखियों) और पदों में मिलती है। पद प्रायः राग-रागणियों के आधार पर वर्गीकृत है, दादू के सारे पदों की संख्या प्रायः २० हजार कही जाती है, जिसमें उनके पद, साखियों के अलावा अन्य वाणियों भी समाविष्ट है।³ परन्तु यह अत्युक्ति ही प्रतीत होती है। उपलब्ध संग्रहों

१. रामवक्ष – दादूदयाल, पृ० २२.

२. परशुराम चतुर्वेदी – उत्तरी भारत की सन्त परम्परा, पृ० ४२०.

३. धीरेन्द्र वर्मा – हिन्दी साहित्य कोश, भाग-२, पृ० २३३.

में सुधाकर द्विवेदी का नागरी प्रचारिणी सभा संस्करण, दल गंजन सिंह का जयपुर संस्करण, बालेश्वरी प्रसाद का वेलवेडियर प्रेस संस्करण, चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी का अजमेर संस्करण और स्वामी मंगलदास का लक्ष्मीराम ट्रस्ट, जयपुर संस्करण आदि है।¹

दादूदयाल की रचनाओं के संकलन-संपादन का कार्य बीसवीं शताब्दी के आरंभ में शुरू हुआ।

१.२.१ उपलब्ध रचनाएँ

१.२.२ प्रकाशित संग्रह ग्रन्थ :

दादू बानी के संग्रह प्रकाशित एवं हस्तलिखित रूप में उपलब्ध हैं। उपलब्ध के आधार पर इसका सर्वप्रथम संस्करण सन् १९०४ ई० अर्थात् सं० १९६१ में ज्ञान सागर प्रेस बम्बई से प्रकाशित हुआ था।^२ किन्तु यह संस्करण आज उपलब्ध नहीं है। दूसरा संस्करण 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' का सुधाकर द्विवेदी द्वारा सम्पादित नागरी प्रचारिणी ग्रंथ माला सीरीज सं० ११ एवं सं० १४ के रूप में क्रमशः १९०६ ई० (सं० १९६३) तथा सन् १९०७ ई० (सं० १९६४) में प्रकाशित हुआ। प्रथम भाग 'श्री दादूदयाल की बानी' तथा द्वितीय भाग 'दादूदयाल का सबद' शीर्षक है। इस संग्रह का आधार रेवलैंड ट्रेल साहब तथा बाबू राधाकृष्णदास से प्राप्त प्रतियाँ हैं। भूमिका (पृ० ४) के आधार पर उन्हें कोई प्रति संभवतः रेवलैंड ग्रीब्ज से भी थी। इसके प्रथम भाग के अन्त में तीन पंक्तियाँ छपी हैं। ये किसी हस्तलिखित प्रति के लेखक द्वारा अपनी ओर से लिखी गई जान पड़ती हैं।

सं० १९६४ में 'वैदिक प्रेस' अजमेर से पं० चंदिका प्रसाद त्रिपाठी द्वारा संपादित संस्करण प्रकाशित हुआ। इस संस्करण में भी दो भाग हैं इसके प्रथम भाग में साखियाँ और दूसरे भाग में 'सबद' संग्रहीत हैं। यह संस्करण 'श्री स्वामी दादूदयाल की वाणी' नाम से प्रकाशित हुआ जिसमें 'अंगबधू' सटीक भी दिया गया है। उन्होंने लगभग आठ पुरानी हस्तलिखित पुस्तकों से तथा बीस वर्ष के श्रम एवं अन्य पंडितों के सहयोग से तैयार किया है। इन्होंने आवश्यक पठान्तर एवं टिप्पणी देने के साथ ही भूल सुधार भी किया है संग्रहीत प्रतियों में पोंच के परिचय भी दिए गए हैं सबसे पुरानी पांडुलिपि उदयपुर की है जिसका लिपिकाल सं० १८३६ है।

दूसरी प्रति चानसेण छावनी की है जिसका लिपिकाल सं० १९०८ है। शेष तीन के लिपिकाल क्रमशः १९०१, सं० १८८५ तथा १९३४ हैं। संस्करण में सूची, शब्दकोश, विषयानुक्रमणिका, दृष्टान्त प्रसंग

१. धीरेन्द्र वर्मा — हिन्दी साहित्य कोश, भाग-२, पृ० २३३.

२. डॉ० आर०ए० — सिक्सटिंथ सेंचुरी इटसेक्ट्र, पृ० ७६.

आदि देकर इसे सर्वांगपूर्ण बनाने का प्रयास किया गया है। इस संस्करण के बाद में प्रकाशित प्रायः सभी संस्करणों में उसकी न्यूनाधिक सहायता भी ली गई।

दादू बानी का चौथा प्रकाशित संस्करण सं० १६७५ में 'जेल प्रेस' जयपुर का है। इसके संपादक का नाम अज्ञात है। संस्करण के अन्त में छपे कुछ दोहों से प्रतीत होती है कि 'सरजनदल जंग सिंध' ने उसे 'लेखगदोश निवार' करके प्रकाशित कराया है। संस्करण से संकेत मिलता है कि इसकी मूल प्रति 'कालाडेरा का सुखद' सुखदेव जी ने पठनार्थ लिखी थी। प्रकाशित पाठ भ्रष्ट एवं अशुद्ध है। मेरे विचार से 'वेलवेडियर प्रेस' प्रयाग से सन् १६२८ ई० (सं० १६८५) में प्रकाशित संस्करण सर्वाधिक शुद्ध पाठ है। संपादकीय टिप्पणी के अनुसार यह 'दो प्राचीन लिपियों' के आधार पर मुद्रित है तथा उसे तैयार करते समय तीन प्रकाशित पुस्तकों से भी सहायता ली गई है जो क्रमशः काशी, लाहौर एवं अजमेर से छपी है। सिंधी, पंजाबी, फारसी एवं गुजराती पद्यों के पाठ को शुद्ध करने का सजग प्रयत्न किया गया है। इस संस्करण की पाद टिप्पणियाँ स्पष्ट और बोधगम्य है। साखी भाग अंगों में विभक्त है जबकि पदों में इस प्रकार का क्रम नहीं है।

छठा एवं सटीक 'अनभैवाणी' ग्रंथ जयपुर के स्वामी जीवानंद भारत भिक्षु द्वारा सम्पादित एवं 'श्री दादूसेवक प्रेस, जयपुर से सं० २००३ में प्रकाशित है इसके तीन खंड हैं। प्रथम दो में दादूदयाल जी की साखियां हैं तीसरे में पदों का संग्रह है। इसके प्रकाशन कार्य के लिए कार्यालय में ११ टीकाएँ संग्रहीत हैं और उन्होंने इनमें कई का कुछ न कुछ विशेष परिचय भी दिया है। वास्तव में इस संस्करण के संपादन में भिन्न-भिन्न प्राचीन टीकाग्रंथों की सहायता ही प्रधान रही हैं।^१ संपादन में साम्प्रदायिक दृष्टि स्पष्ट प्रतीत होती है। इसी प्रकार का संस्करण जिसे 'सटीक' बतलाया गया है। श्री स्वामी मंगलदास जी (दादू महाविद्यालय जयपुर) द्वारा संपादित होकर (मंगल प्रेस) जयपुर में छपा और इसमें अधिकतर टिप्पणियां ही दी गई दीख पड़ती है। परन्तु यहाँ इतना अवश्य कह दिया गया है कि शीघ्रता के कारण मूल पाठ राय साहब चंद्रिका प्रसाद जी के संस्करण से ले लिया गया तथा इस मूल पाठ में जो त्रुटियाँ उस समय की रही थी वे इस संस्करण में भी रह गई।^२ इसमें प्राचीन पांडुलिपियों से सहायता नहीं ली गई। दादू वाणी के स्वरूप पर विचार नहीं किया गया। यह संस्करण सं० २००८ (अथवा सन् १६५१ ई०) में प्रकाशित हुआ है। इस प्रकार उक्त रचनाओं के संपादन की ओर किया गया नवीनतम प्रयास प्रतीत होता है।

१. अनभैवाणी — (भारत भिक्षु, संस्करण) भूमिका पृ० १३-१५.

२. श्री दादूदयाल जी की वाणी (मंगलदास स्वामी सं०), पृ० ३.

लाहौर से प्रकाशित किसी पुस्तक का भी उल्लेख मिलता है। किन्तु वह आज अनुपलब्ध है।

१.२.२ हस्तलिखित प्रतियाँ :

दादू वाणी की हस्तलिखित प्रतियाँ बड़ी संख्या में मिलती हैं किन्तु इनकी प्रामाणिकता संदिग्ध है।

क. सबसे प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपि दादू द्वारा नराणा की है इसका आकार है १०" × ६" × २"। इस पर चमड़े की जिल्द है। बाहर सूत की पतली रस्सी बंधी है। इसकी पृष्ठ संख्या ४०३ है आरम्भ में १½ पन्ने छोड़े गए हैं। बाद में ३६ पन्ने छोड़कर लिखना आरम्भ किया गया। बीच में केवल प्रति के लेखादि का आंशिक परिचय तथा आगे वाले अंश की प्रारम्भिक सूचना दी गई है। बाद में २१वें पन्ने तक लिखकर २३ पन्ने सादे छोड़े गये हैं। स्याही साधारणतः काली है, किन्तु अंकों एवं शीर्षकादि के लिए लाल रंग का भी प्रयोग है। कागज मोटा और मजबूत है। नमी से पन्ने एक-दूसरे से चिपक गये हैं। लिखावट स्पष्ट है। प्रति के पुराने होने में कोई सन्देह नहीं है। प्रति के बीच में २६ सादे पन्नों के कारण लिखित अंश को दो खंडों में विभक्त कर सकते हैं जिनमें से प्रथम के अर्न्तगत पंचबानियों में समाविष्ट की जाने वाली जैसी रचनायें हैं और दूसरे में जनगोपाल की 'श्री दादू जन्मलीला परची' तथा उन्ही के द्वारा रचित 'श्री धू चरित्र' भी है, पहले खंड के १३७वें पन्ने पर ही 'दादूबानी' समाप्त हो जाती है। इसके आगे कबीर, नामदेव, रैदास, हरदास गोरख आदि नाथों, नामक रामानंद आदि संतों तथा फरीद आदि सूफी कवियों की रचना संगृहीत की गई है। खंड के अन्त में लिखा है —

पुस्तक नाम सम्पूर्ण हूवो। गुर गोविन्द कौ पायौ दुवो॥

सब संसा घटि बाढ़ो प्रेम। पुस्तक लिख्यौ नाम तत खेम॥

गुरु जोगेस्वर है चंद्रदास। दादा गुर सो मोहन दास॥

पड़ दादा गुर स्वामी दादू। जिनकै भगति चली है आदू॥

मेरे उनकौ हैं नित मेम। पुस्तक लिख्यौ नाम तस खेम॥

पुष्पिका में लिपिकाल नहीं दिया गया है। प्रति के लिपिकार के गुरु स्मरणादि से भी कुछ अधि यता पता नहीं चलता है। दादू दयाल जी के प्रसिद्ध ५२ शिष्यों में से मोहनदास भजनीक, मोहनदास दफ्तरी मोहनदास मेवाडा तथा मोहनदास दरियाई नामक चार मोहनदासों के उल्लेख हैं। किन्तु इससे चंद्रदास के गुरु का पता नहीं मिलता। इसी प्रकार चंद्रदास, खेमदास अथवा रामदास के विषय में भी

कोई विवरण नहीं मिलता इतना अनुमानतः दादूदयाल जी के परलोक गमन सं० १६६० तथा इस प्रति के लिपिकाल सं० १७१०, ५० वर्षों के बीच मोहनदास, चंद्रदास एवं खेमदास जीवित रहे होंगे। यह प्रति नराणे के दादू द्वारा में सुरक्षित है इसे दादू वाणी की प्राचीनतम प्रति माना जाता है। दादू काव्य के संपादन में भी इस प्रति को सर्वाधिक महत्व दिया है।

ख. 'दादू महाविद्यालय, जयपुर' से प्राप्त पांडुलिपि भी प्राचीनता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसका आकार है : ६" x ५ 1/4" x २" है पुरानी दफती लगी और कपड़े से मढ़ी है। भीतरी कागज मोटा है किन्तु नराणे वाली प्रति से भिन्न है। छूते ही यह टूटने लगता है। जिल्द भी कई स्थानों से कट गई है। प्रति में काली स्याही का प्रयोग है। शीर्षकादि एवं खड़ी पाइपों में लाल रंग का प्रयोग है। नागराक्षरों में लिखी है तथा प्रत्येक पृष्ठ में १८ पंक्तियाँ हैं। इसमें दादू वाणी के अतिरिक्त अन्य रचनाएँ भी संगृहीत हैं। आरम्भ के कुछ पन्ने नहीं हैं। अनुमानतः सबसे पहले सभी रचनाएँ सुन्दरदास की रही होगी। बाद में अनंतर दादूदयाल जी की साखियों का संगृह है। आरम्भ के २३ पन्ने गायब हैं। दादूवाणी के पन्ने पर नई संख्याएँ दी गई हैं। आगे के पृष्ठों पर प्रयागदास की साखियाँ १३०वें पन्ने से कबीर साहब की साखियाँ हैं। दादूदयाल के पदों के अनन्तर फिर कबीर साहब के पद आये हैं। बावनी समाप्त हो जाने पर जनगोपाल की जनम लीला परची 'स्वामी दादूदयाल की लीलाग्रन्थ' के नाम से मिलती है। इसके बाद नामदेवजी की परचई, 'तिलोचनजी की प्रचई', 'सुखदेव जी की लीला' तथा 'विवेक चितावनी' नामक रचनाओं को स्थान दिया गया है। अंतिम रचना भी सुन्दर दास जी की ही है। पुष्पिका भी गुटके के अन्त में दी गई है। "संवत् ११७६८८ का मिति सांवण वदि ११४८ बार मंगलवार ॥स्वामी प्रयागदास जी॥ माधोदास जी॥ लिखमीदास जी॥ तत्र सिख जगन्नाथ दास॥ सहर डीडपुर मधे॥ पोथी लिखित जगन्नाथ दास॥ स्वामी प्रयागदास जी के असतलि लिखत जगनाथ दास दादूपंथी॥ बाचै जिसको राम राम ॥श्री॥ श्री॥ स्वामी प्रयागदास के शिष्य जगनाथदास ने, इसे डीडपुर वा डीडवाणे में प्रयागदास के शिष्य जगनाथ दास आगे पर सं० १७६८ (सन् १७११ ई०) की श्रावण वदी १४ मंगलवार को लिखकर समाप्त किया होगा। दादूदयाल के प्रसिद्ध ५२ शिष्यों की सूची भी है।

ग. दादूवाणी की तीसरी प्रति नागरी प्रचारिणी सभा, (सं० १४०६) से उपलब्ध हुई है इसका स्थान उदयपुर है। इसका आकार ११" x ६" x २" है। ऊपर मोटी तख्ती की जिल्द है जिसपर बूटेदार चमकीला कपड़ा मढ़ा है। कागज काफी मोटा और मंजनशील है। इसके लेखन में गहरी काली और पक्की स्याही

का प्रयोग है। स्याही चमकीली शीर्षकों एवं अंकों में लाल रंग का प्रयोग है। प्रत्येक पृष्ठ पर ३२ पंक्तियाँ हैं।

इस प्रति में भी 'दादूवाणी' के अतिरिक्त अन्य संतों की रचनाएँ संग्रहीत हैं। पहले पन्ने से ६१ पन्ने तक दादूदयाल जी की साखियाँ हैं। पद ६२ पन्ने से १०८ वे पन्ने तक पहुँचते हैं। दादूवाणी के बाद क्रमशः कबीर नामदेव, रैदास एवं हरिदास की बानियाँ हैं। इस प्रकार यह 'पंचबानी' १६६वें पन्ने पर जाकर समाप्त होती है। २००वें पन्ने से क्रमशः गरीबदास, बाबा साधु, वखना, जनगोपाल, सुन्दरदास, चैन खेमदास आदि की भी रचनाएँ हैं। सबके अंत में रज्जब की कुछ बानियाँ ३८३ पन्ने के प्रथम पृष्ठ तक जाती हैं।

संभवतः इस प्रति का लिपि—काल सं० १७६७ (सन् १७४० ई०) बैशाख बदी ७, मंगलवार है। लिपिकार का नाम मनसाराम है जो बाबा साधू के शिष्य है।

घ. चौथी प्रति नागरी प्रचारिणी सभा (१३६४ संख्या) की यह छोटे से गुटके के आकार में है इसका आकार प्रकार $5\frac{1}{2}'' \times 3\frac{1}{2}'' \times 2''$ है। इसके ऊपर भी मोटी दफती है, जिस पर बूटेदार लाल कपड़ा मढ़ा है। कागज मटमैले रंग का है जो अधिक पुराना नहीं है। यह नागरी अक्षरों में काली स्याही में लिखी है। कुछ पन्ने आंशिक रूप में फट गये होंगे जिन्हें पूरा करने के लिए दूसरा कागज चिपकाया गया है। प्रति के पन्नों पर पेंसिल से पीछे लिखी गई संख्याएँ प्रतीत होती हैं। लिखावट अधिक सुन्दर नहीं है। सर्वप्रथम दादूदयाल की रचनाएँ हैं जो ३०४ वें पन्ने पर समाप्त होती हैं। अनन्तर सुन्दरदास की रचनाएँ हैं। ४८७ वें पन्ने से ५४६ पन्ने तक 'नासकेतव्याख्या' लिखा गया है। और ५४७ पन्ने पर कुछ 'भेंट के सवैये' अन्त में 'अजामेल ग्रंथ' दिया है जो ५५५ वें पन्ने के पूर्वाद्ध पर समाप्त हो जाता है। अंत में पुष्पिका फिर से लिखे हुए अंश में 'उदयपुर प्रतियों की अंकित तिथि लिखी है। सं० १८३६ मिती मंगलवार शुक्ल पक्ष लिपिकर्ता का कोई परिचय नहीं दिया गया है। केवल इतना ही पता चलता है कि यह प्रति किसी बाबा भालिमदास जी के यहाँ सूरत बंदरगाह में थी उन्हीं के यहाँ से इसे किसी करणदास ने १० रु० मूल्य देकर खरीदा था।

ड. उपलब्ध हस्तलिखित प्रतियों में पाँचवी पांडुलिपि भी नागरी प्रचारिणी सभा की है। सभा की इस पर १६११ संख्या दी है। यह प्रति पिछली प्रति से कुछ बड़ी और अधिक मोटी है। इसका आकार है $6'' \times 8\frac{1}{2}'' \times 2\frac{1}{2}''$ है। कागज सफेद और कुछ चमकीला है स्याही काली है। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ

हैं। दफती मोटी है जिसपर पुराना कपड़ा मढ़ा है अक्षर स्पष्ट नहीं है। प्रति में अनेक रचनाएँ हैं। दादूवाणी केवल २५५ वें पन्ने तक जाती हैं ५७६ वें पन्ने तक सुन्दरदास की विविध रचनाएँ हैं। बाद में 'हरिचंद सतग्रंथ' एवं 'प्रहलाद चरित्र' लिखे गए हैं। इनमें रज्जब के कवित्त, भीखजन की बावनी, बालक राम के कवित्त, छीतरदास के सवैये। फिर क्रमशः 'अमृत धारा', 'विचार माला', 'भरथरी चरित्र', 'सहजज्ञान' एवं 'धूचरित्र' के पहले कुछ फुटकर रचनाएँ भी जो ७७६ से ७८६ वें पन्ने तक जाती हैं। ८१वें पृष्ठ पर 'धूचरित्र' समाप्त हो जाता है। प्रति का लिपिकाल सं० १८७४ (सन् १८१७) आश्विन सुदी १५ शुक्रवार है। परन्तु लिपिकर्ता के विषय केवल खालसा सम्प्रदाय के साधु किशोरदास के शिष्य मंगनीराम के शिष्य की ही चर्चा है। स्पष्ट ही इसके लिपिकर्ता की कोई ख्याति गुरु-परम्परा नहीं है।

च. नागरी प्रचारणी सभा से प्राप्त '१३६३ क' अंक की प्रति है। प्रतिका गुटके के आकार की है। इसका आकार ६" X ३" X ३" है। प्रयोग किया गया कागज पीलापन लिए हुए है। स्याही बहुत काली है। शीर्षक अंक विरामादि सभी लाल रंग में हैं। दफती और उस पर मढ़ा कपड़ा भी मैला है। ८५वें पन्ने तक किसी वैधक ग्रंथ की प्रतिलिपि है। इसका साखी वाला अंश नये पन्ने सं० २ से आरम्भ होकर ३६२ पन्ने तक तथा पद ५६६ पन्ने तक जाता है। ५१०वे पन्ने के बाद पृष्ठ पर पंक्तियों की संख्या ७ के स्थान पर ६ हो जाती है। पन्नों की संख्याएँ २५५ के अनंतर पेंसिल से लिखी प्रतीत होती हैं। लिपिकर्ता का नाम 'कीसन' है।

छ. एक अन्य हस्तलिखित नागरी प्रचारणी सभा से प्राप्त १७५६ संख्या वाली है। प्रति गुटके की शक्ल में ६½" X ४½" X २" आकार की है। मोटी दफती है। ऊपर मैला कपड़ा चढ़ा है। स्याही काली है। अंक शीर्षकादि लाल रंग में है। पंक्तियों के दायें बायें १० पंक्तियाँ हैं पन्ने न्यूनाधिक दीमक ने नष्ट कर दिये हैं। पहले पन्ने से दादू वाणी आरम्भ होती है। साखी भाग २१७ वें पन्ने तक जाता है। पद वाला अंश ३६३ वें पन्ने पर समाप्त हो जाता है। सुंदरदास का 'ज्ञान समुन्द्र' नामक ग्रंथ भी अधूरा मिलता है। प्रति के लिपिकाल का निर्णय कठिन है।

१.३ पांडुलिपियों की लिपिगत विशेषताएँ

हस्तलिखित प्रतियों में लिपि नागरी होने पर भी लिखावट में विलक्षणता है। इसमें इसका कारण संभवतः राजस्थानी, गुजराती, सिंधी एवं पंजाबी की प्रमुख विशेषताएँ हैं। प्रायः 'सधुक्कड़ी' है कुछ उदाहरण

ये हैं –

१.३.१ स्वर विपर्यय

‘अ’ का ‘इ’ : तरना = तिरना, सबन = सबनि

‘आ’ का ‘ए’, ‘इ’ का ‘अ’ = किताब > कतेब

‘ओ’ का ऊ, ऊ का ओ, उ का इ = दोन्हूँ > दून्हू

पंचो > पंचू, भूमि > भौमि, कौतुग > कौतिग

कहीं-कहीं पर गुजराती प्रभाव से ऐ को औ लिखा गया है।

१.३.२ व्यंजन विपर्यय

क > ग, सेवक = सेवग, चातक > चात्रिग

ख को अधिकतर ‘ष’ के रूप में लिखा गया है जैसे,

खेल = षेल एवं राखिये = राषिए आदि।

‘ज’ ‘झ’ जूझे = झूझे एवं सूर्य = सूरिझ में है।

ब > य, विवेक = वमेक

श > स, संशप > संसा

न > ण, जानै > जाणै

१.३.३ स्वर व्यंजन विपर्यय

इ > य पिंड, प्यंड

य > इ, मध्य > मधि

य > इ

इ > हि, इक > हिक

ही > ई, झूठी ही > झूठोई

व > ऊँ, लवण > लूँण

अव > औ, अवधूत > औधूत।

इव > ओ

इय > ई प्रियतम > प्रीतम, दिवस > दौस

१.३.४ संयुक्ताक्षर विपर्यय :

अर् > र् = कर्म > क्रय, समर्थ > सम्रथ, सर्प > श्रप, गर्व > ग्रब

‘र्’ > ‘अर्’ ‘रो’ = श्रम > सुरम, सरस्वती > सुरसती, श्रोता > सुरता

कहीं कहीं संयुक्ताक्षरों में से ब का लोप तत्त्व > तत, स्वाद > साद

आरम्भिक ‘स’ का लोप = स्कंध > कंध, स्थापन > थापन

आरम्भ में अ का आगमन = स्थिर > अस्थिर, स्थल > अस्थल

१.३.५ परम्परागत पद रूप

अधि झ मध्य, सुरम झ श्रम, सुरता झ श्रोता, कौतिग झ कौतुग, उपजणि झ उपजन, आवध झ आयुध, विषोगझ वियोग, सर्गुण झसगुण
अनुस्वारादि के प्रयोग

नाँम, रहिमॉन, ग्यॉनी, प्रॉणी, ऑन, रॉम, रॉणा, कौँण। विसर्ग का प्रयोग बहुत कम है। उसके स्थान पर बहुधा ‘ह’ का प्रयोग है, जैसे निहकर्मो, निष्कर्मो झ निहकर्मो, निश्चल झ निहचल आदि।

नागरी ध्वनियों में से ड्., झ ल, ह, आदि के रूपों में कहीं कहीं हल्का परिवर्तन है। ऊँ के विविध रूप हैं। विराम चिन्हों के लिए खड़ी पाई, कभी-कभी बेल की आकृति का भी प्रयोग मिलता है।

प्रस्तुतस संपादन में हमने पाठ—निर्धारण, पांडुलिपियों का सहारा तो लिया है किन्तु उनमें उपलब्ध अनेकरूपता के कारण हमारे पाठ का आकार अधिकांशतः वेल्वेडियर प्रेस से प्रकाशित ‘दादू दयाल की बानी’ रहा। यह वाणी प्रकाशन की दृष्टि से प्राचीन होने के साथ-साथ पाठ—संशोधन एवं काव्य शास्त्रीय दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। संपादन के समय हमने पाया कि पं० परशुराम चतुर्वेदी द्वारा संपादित पाठ वैज्ञानिक एवं प्रामाणिक नहीं है। पाठ—संशोधन में हमारा आधार दादू दयाल की वाणी का अर्थ रहा है। अर्थ की स्पष्टता से वाणी की वैज्ञानिकता स्वतः मान्य हो जाती है।

प्रस्तुत संपादन में हमारी दृष्टि संत दादूदयाल की साखियों पर ही रही है। विभागीय अध्ययन परिषद् में विषय—निर्धारण के समय मौखिक रूप से स्पष्ट कर दिया गया था कि एक छात्र उनकी साखियों का तथा दूसरा उसके पदों का संपादन करेगा। वर्तमान अध्ययन में हमने संत दादू दयाल की साखियों के संपादन पर ही दृष्टि रखी है।

१.४ दादूदयाल की भाषा

दादूदयाल की भाषा चमत्कृत कर देने वाली भाषा है। दादू की भाषा में महाराष्ट्री, शौरसेनी, प्राचीन राजस्थानी, गुजराती, सिंधी, पंजाबी, ब्रज आदि भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अरबी, फारसी और तुर्की आदि के शब्द मिलते हैं।

व्याकरण सम्बन्धी कतिपय विषमताएँ :

१. रेफ का पूर्व वर्ण में संयुक्त होना :

गर्व > गरब

वर्ण > वरन

सर्प > श्रप/स्रप

मर्यादा > मरजाद

नर्क > नरक

२. रेफ का पूर्ण वर्ण होना :

वर्ष > बरस

पर्वत > परबत

३. हल् 'र्' का पूर्ण वर्ण होना :

प्रचुर > परचुर

प्रवेश > परवेस

प्रतीति > परतीति

प्रवीण > परवीन

द्रव्य > दरव

प्रतिज्ञा > परतग्या

४. हल 'र्' का लोप :

समुद्र > समुद, समद

प्रहर > पहर

प्रमाण > परमान

५. 'य' के स्थान पर 'ज' :

युग > जुग

यौवन > जोवन

६. 'क्ष' के स्थान पर 'ख' :

क्षिति > षिति/खिति

क्षमा > षिमों/खिमों

७. 'ण' के स्थान पर 'न' :

एण > एन, वाण > वान

अरण्य > अरण्ण, कर्ण > कन्

हरिण > हिरण

दर्पण > दरपण

८. 'ज्ञ' के स्थान पर 'ग्य' या 'ग' :

आज्ञा > अग्या, अज्ञान > अग्यान, यज्ञ > जग्य

९. 'ग' के स्थान पर 'य' :

सागर > सायर

१०. 'श' के स्थान पर 'स' :

शब्द > सबद, सबद सदद बददयौ

आकाश > अकास

११. 'ख' के स्थान पर (लिपि में) 'ष' :

खीर > षीर, मुख > मुष

१२. संयुक्त शब्दों को सरल करने के प्रयत्न स्वरूप अपभ्रंश काल में हुए रूपों का भी दादूदयाल की भाषा में प्रयोग है :

सबद > शब्द

पाइक > पदातिक

निहचल > निश्चल

१३. व्यंजन विपर्यय :

दुष्प > दुःख

गोरबरधन > गोबर्धन

छंद के कारण स्वरों और व्यंजनों के रूपों में परिवर्तन भी मिलते हैं।

१.४.१ सर्वनाम

दादूदयाल की भाषा में व्यक्तिवाचक सर्वनामों के प्रयोग इन रूपों में हुए हैं –

उत्तम पुरुष -

एक वचन	:	कर्ता – हो, (सं० ब्रह्म)
		विकृत – मोहि, मुझ
		सम्बन्ध – मेरो, मेरी, मेरे
बहुवचन	:	कर्ता – हम (सं० आवाम् वयम्)
		विकृत – हमहिं
		सम्बन्ध – हमारी

मध्यपुरुष -

एक वचन	:	कर्ता – तू, तूहि (सं० त्वम्)
		विकृत – तोहि, तुझ
		सम्बन्ध – तेरो, तेरी, तेरे
बहुवचन	:	कर्ता – तुम
		विकृत – तुमहि,
		सम्बन्ध – तुम्हारौ, तुम्हारे, तुम्हारी

प्रथम पुरुष -

एक वचन	:	कर्ता – सो,	इह, इहै	उह, उहै, वह
		विकृत – ताहि, ता	याहि, या	वाहि, वा
		सम्बन्ध – ताको, इत्यादि	पाकौ इत्यादि	
बहुवचन	:	कर्ता – ते, तेउ	ये, इहे	वे
		विकृत – तिनि, तिनै, तिन,	इनि, इन	(उनि, उन)
		सम्बन्ध – तिनकौ	इनकौ	उनकौ

ताहि का हस्वरूप 'तिही' 'तिहि' है। इसलिए वह 'जिहि' (बहुवचन, जिनि, जिनै) के अनुरूप है, जो 'जो' से आया है।

प्रश्नवाचक को 'कौ' या 'को' है जिससे विकृत होकर 'किहि' बना जो बहुवचनांत में 'किनि' हो जाता है। दूसरे रूपों में 'कितना' और उसका वर्ग तथा 'कैसो' आदि भी मिलते हैं :

कारक चिह्न -

कर्मकारक	:	कहुँ, कहँ, कौँ, कोँ
अपादान कारक	:	(१) सौ, सो, से (२) परि, पर पै (३) तै, ते (इनका प्रयोग अधिकतर तैं, ते रूप में हुआ है)
अधिकरण कारक	:	(१) मधि (२) मझि, मॉझ (३) महि, मॉहि, मॉही, महिँ
सम्बन्ध कारक	:	(१) कौ, के की

१.४.२. विशेषण

	नेड़ा (गुरु ६२) : नेड़ा ही अस्थान
	अमर अभै (गुरु ५६) : अमर अभै पद पाइये
	साचा (गुरु ५४) : साचा गुर मिल्या
	रस माता (गुरु ५१) : राम रस माता
गुण वाचक :	बिलोवणहार (गुरु ३२) : साध विलोवणहार
	गंभीर (गुरु ४६) गरुवा गुरु गंभीर
	मोट महाबली (गुरु ३५) : दादू मोट महाबली
	गरवा (गुरु ४८) : गुर गरवा मिल्या
	दीन (गुरु ४६) : दीन गरीबी गहि रह्या

संख्या वाचक :

निश्चित : पंचूं (गुरु. ११) – पंचूं पलटि करि
 पंच (गुरु. २२) – प्यंगुल पंचविन
 एक (गुरु. ८२) – कोइ एक सुलझै
 एक (गुरु. ६१) – एक सँ लैलीन
 दह (गुरु. ६५) दह दिसि
 तीन (सुमि. ५) – तीन लोक
 पहली (सुमि. ४) – पहली स्रवन
 दुति (सुमि. ४) – दुती रसन
 तृतीय (सुमि. ३) – तृतीय हिदै

अनिश्चित : बहु (उपगार) गुरुदेव कौ अंग ५, सब (गुरु ६५) ७ सब सूझन लाग

अनिश्चय वाचक :

कोइ (गुरु. ३२) – कोइ साध विलोवणहार
 जेहि (गुरु. १३३) – जिहि सुमिरिणि आया भूल
 अनंत (गुरु. १४२) – एकै सबद अनंत सिख

प्रश्नवाचक :

कौण (गुरु. ११२) – हैगा कौण हवाल
 किस (गुरु. ११४) – जाहिगें किस देस

नित्य संबंधी :

सोइ (गुरु. ३१) – मथि करि काढै कोई
 सो (गुरु. १०४) – कहैगा सो बहैगा
 (गुरु. १०५) – सतगुर कहै सो कीजिए

१.४.३ क्रिया -

१. साधारण सामान्य वर्तमान काल की क्रियाएँ :

	एक वचन	बहुवचन
(१)	करौं, करूँ	करै

(२)	करै	करौ
(३)	करै	करैं

२. साधारण भूतकाल

एकवचन	बहुवचन
१,२,३ पु० चलयौ	चलैं कृदन्त रूपों का
स्त्री० चली	चलीं तीनों पुरुषों में प्रयोग

३. भविष्य के लिए अनिश्चयवाचक वर्तमान का भी प्रयोग मिलता है परन्तु भविष्य के साधारण रूप भविष्य संयुक्त काल से निकाले जा सकते हैं :

एक वचन	बहुवचन
(१) चलि हों	चलि हैं
(२) चलि हैं	चलि हों
(३) चलहि	चलिहैं

४. क्रियार्थक संज्ञा के अन रूप पाये जाते हैं।
५. आज्ञार्थ के साधारण रूप एक वचन में, 'करहुँ' और बहुवचन में 'करौ' पाये जाते हैं। 'इ' और 'उ' के मिश्रण से 'हि' रूप भी पाया जाता है। पावहि और आवहि के स्थान पर वर्तमान निश्चयार्थ 'पावहु' और 'आवहु' का प्रयोग किया गया है।
६. वर्तमानकालिक क्रदन्त के अंत में अत होता है जैसे देखत, सुनत और गाथा शब्दों में जहाँ दीर्घता की आवश्यकता होती है वहाँ 'अंत' का प्रयोग किया जाता है जैसे — रहंत, कहंत। 'हुत' रूप (सं० भूत) से 'था' की व्युत्पत्ति हुई है। भूतकाल का दूसरा रूप 'हुआ' भी है जिसका पूर्वकालिक क्रदन्त हुते मिलता है।
७. वर्तमान काल का 'है' भी प्रयोग में लाया गया है वैसे भविष्य रूप में 'करिहै', जुझी है' पाये जाते हैं।

१.४.४ अव्यय -

समुच्चय बोधक 'और' के स्थान पर 'अवर' का प्रयोग मिलता है।

१.४.५. अरबी, फ़ारसी, तुर्की आदि के शब्द -

दादू दयाल की भाषा में ऐसे शब्दों की संख्या बहुत अधिक है। अधिकांश शब्द अरबी, फ़ारसी के हैं तथा बहुत कम तुर्की के।

इन शब्दों को देखकर स्पष्ट ही प्रतीत हो जायेगा कि इन शब्दों का प्रयोग लगभग तत्सम रूप में कम हुआ है, परन्तु उन्हें तोड़-मरोड़कर छंदों के अनुरूप बनाया गया है। मौजूद, ख़बर, अरवाह, मुक़ाम, हस्त, दादनी, सजूद, नफ़्स, ग़ालिब, किब्र, काबिज़, गुस्मः, मनी, ऐश, दुई, दरोग, हिर्स, हुज्जत, नामे, नेकी, नेस्त, हैवान आलिम, गुमराह, गाफिल, शरीअत, अब्ल, हलाल, हराम, नेकी, बदी, दर्से, दानिशमंद, इश्क, इबादत, बंदगी, यगानगी, इख़लास, मेहर, मुहब्बत, ख़ैर, खूबी, नाम, यके, नूर, खूबे, खूबों, दीदनी, हैरों, चीज़, खुर्दनी, मस्तों, कुल्ल, फ़ारिग, तर्के दुनियाँ, अल्लह, अलो, आशिक, दरुने, फरियाद, आब, आतश, अर्श, कुरसी, सूरते, सुबहान, सिर, सिफ़त, कर्दः, बूदन, मारिफत, मकान, अरवाह, सिजदा, कुनद, औजूद, दादनी, आशिकों, रब्ब, दीवाण, तख़त, रबाणी, महल, आलम, कब्ज़, जॉ, रफ़्तंद, खुरदनी, दीदार यारे मा, दिलदार।

१.४.६. गुजराती, सिंधी, पंजाबी का प्रयोग -

दादू दयाल के काल में आशागत विविधता बहुत है। उन्होंने अपने काल में सिंधी, पंजाबी तथा गुजराती का प्रयोग भी अनेक स्थानों पर किया है। कहीं-कहीं तो पूरी की पूरी सांख्यिकी ही इन भाषाओं में लिखी मिलती हैं। कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं :

पंजाबी :

विरह कौ अंग, पृ० ३०

(दादू) नैन हमारे ढीठ हैं, नाले नीर न जॉहिं।

सूकों सरों सहेत वे, करैक भए गलि मॉहिं।।१३६।।

सिंधी :

परचा कौ अंग, पृ० ३३-३४

दादू गाफिल छो वतै, मंझे रबु निहारि।

मंझेई पिउ पाणजौ, मंझेई बीचार।।२२।।

दादू गाफिल छोंवतैं, आहै मंझि मुकाम ।
 दरिगह में दीवोंण तति, पसे न बैठौ पोंण ॥२३॥
 दादू गाफिल छो वतैं, आहै मंझि अलाह ।
 पिरी पोंण जौ पाण सैं, लहे सभोई साव ॥२४॥
 दादू गाफिल छोंवतैं, अंदर पीरी पस ।
 तखत रवाणी विचि में, पेरे तिन्हीं वसु ॥२५॥

परचा कौ अंग, पृ० ४८

अठे पहर अरस मैं, लुडंदा आहीन ।
 दादू पसे तिन्हके, असाँ खवरि डिन्ह ॥२३३॥
 अठे पहर अरस, वंजीजे गाहिन ।
 दादू पसे तिन्हके, कितेई आहिन ॥२३४॥

गुजराती :

जरणाँ कौ अंग, पृ० ५८

(दादू) तुम जीवों के औगुण तजे, सु कारण कौण अगाध ।
 मेरौ जरणाँ देखि करि, मति कौ सीखै साध ॥३०॥

जरणाँ < गुजराती, जरंबु = पचाना, हजम करना, धारण करना, गुप्त रखना, शांति, क्षमा आदि ।

फारसी :

परचा कौ अंग, पृ० ४१-४२

(दादू) मौजूद खबर माबूद खबर, अरवाह खबर औजूद ।
 मुकाम चि चीज हस्त दादनी सजूद ॥१३०॥
 नफस गालिब किवर काबिज, गुस्सः मनी ऐश ।
 दुई दरोग हिरस हुजति, नौवें नेकी नेस्त ॥१३१॥
 इश्क इबादति बंदगी, इगॉनों यगांनगी इखलास ।
 मिहरि मुहबति खैर, खूबी नौव नेकी पास ॥१३२॥

हैवान आलिम गुम्राह गाफिल, अब्बल शरीअत पंद ।
 हलाल हराम नेकी बदी, दर्से दानिशमंद ।।१३३।।
 इके नूर खूबे खूबों दीदनी हैरान ।
 अजब चीज़ खुरदनी प्याले मस्तान ।।१३३।।
 दादू कुलि फ़ारिग तर्के दुनियों, हर रोज़ हर दम यादि ।
 अलह आले इसक आसिक दरूनै फिरियादि ।।१४०।।
 दादू आब आतस अर्श कुरसी, सूरते सुबहॉन ।
 सिरर सिफ़तां करद बूदम, मारिफत मुकाम (मकान) ।।१४१।।

परचा को अंग, पृ० ५३

दादू बेखुद ख़बर हुसियार बासिद, खुद ख़वर पैमाल ।
 वेकीमते मस्तॉन ग़लितॉ, नूर प्याले ख़्याल ।।३०६।।

संत दादू दयाल का राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी, फारसी भाषाओं पर अपूर्व अधिकार था ।
 इस दृष्टि से उन्हें मध्ययुगीन संतों में तुलसी के अनुरूप उनका स्थान भी सर्वोपरि है ।

१.५ दादू-पंथ : सिद्धान्त एवं मान्यताएँ :

संत दादूदयाल कबीर की निर्गुण विचारधारा से अत्यंत प्रभावित संतों का दर्शन स्वानुभूति का दर्शन है। दादूदयाल ने जगत् की अनुभूतियों को आत्मसात् करके उसकी उसी रूप में अभिव्यक्ति की उन्होंने अपने ही विचारों के मंथन का आश्रय लिया। परमानन्द और परम सन्तोष प्राप्ति का उनका यही मार्ग था। ब्रह्म, माया, जगत्-संबंधी उनका चिन्तन आत्मानुभूति पर निर्भर है। वे मानते हैं कि अन्तःकरण की शुद्धि से सब कुछ मिल जाता है। सारे भ्रम और मायाजाल कट जाते हैं। रह जाता है केवल ब्रह्म का प्रकाश।

१.५.१ ब्रह्म का स्वरूप :

संत दादू दयाल का विचार है कि ब्रह्म-सम्बन्धी अनुभूति भी ब्रह्म के समान ही होनी चाहिए जिससे ब्रह्म का यथार्थ-अनुभूत वर्णन किया जा सके।

जब घटि अनभै उपजै, तब किया करम का नाम।

भै भ्रम भागे सबै, पूरण ब्रह्म प्रकास॥^१

सालिक के खेत को कोई बिरला ही समझ सकता है। उस परमेश्वर लीला का बखान असंभव है।

पर ब्रह्म परापरं, सो मम देव निरंजनम।

निराकारं निर्मल तस्य दादू वंदनम॥^२

वह सर्वव्यापी निरंजन और निराकार है। वह परम ज्योति रूप है।

ब्रह्म सुनि तहं ब्रह्म है, निरंजन निराकार।

नूर तेज तहं जोति है, दादू देखणहार॥^३

वे मानते हैं कि काया सुनि पचेन्द्रियों का आवास रहता है। 'आत्म सुनि' में प्राण-प्रकाश की प्रतीति होती है और 'परमसुनि' में ब्रह्म से मिलन होता है। इस मिलन से द्वैत-भाव हो जाती है। तादात्म्य की स्थिति से साधक साध्य से एकमेव हो, अकेला रह जाता है।

१. दादूवाणी — पृ० १२३

२. दादूवाणी — पृ० १

३. दादूवाणी — पृ० १०८

काया सुनि पंच का वासा, आतम सुनि, पाण प्रकासा।

परम सुनि ब्रह्म सो मेला, वागे दादू आप अकेला।।

साधक व साध्य एक रूप हो जाते हैं। इसी 'परमसुनि' को उन्होंने कहीं-कहीं 'सहज सुनि' भी माना है।

जहाँ साधक श्वांस, प्राण, मन व वृत्ति से उसके चिंतन में रत हो जाता है। वहाँ वह भी हो जाता है। यही ब्रह्म प्राप्ति का वास्तविक स्थान है।

प्राण कंवल मुखि राम हि, मन पवना मुखि राम।

दादू सुरति मुसि राम काहे, ब्रह्म सुनिनिज गाम।।^१

उनका ब्रह्म-तत्त्व काल, अग्नि-दहन की क्षमताओं से परे है। यह न क्षय होता है, न ही आसक्त यह 'शीत', 'धाम', या 'जल' में नष्ट हो सकता। मिट्टी में मिलकर नष्ट भी नहीं और न ही शून्य में विलीन होता है। दादू का ब्रह्म उत्पत्ति, आकार, काया, जीव, काल, कर्म, सीत धाम धूप, छाव, वर्ण, मोह, माया धरणी, आकार, चंद, सूर, रजनी, दिवस, पवन व कला आदि कुछ नहीं है। वह सभी में रहित है।

“ऐसा तत्व अनुपम भाई, मरै न जीवै काल न खाई।

पावकि जरे न मारयो मरई, काव्यो कटै न दारयो टरई

आखिर सिरै न लागे कोई, सीत धाम जल डूबिन जाई

नारि मिले न गगन विलाई, अघट एक रस रहना समाई।

ऐसा तत्व अनुपम कहिये, सो गहि दादू काहे न रहियो।।^२

दादू ब्रह्म-तत्त्व को तीनों लोकों में गाय के समान और सारे साधुओं को इसी ब्रह्म की गाय के धन के समान मानते हैं। ऐसे ब्रह्म के मार्ग में सदैव अमृत वर्षा होती है। ऐसे अमृतोपम मार्ग को त्याग अन्य मार्ग की खोज अनावश्यक है।

ब्रह्म गाह तिथ लोक में, साधू अस्थन पान।

सुख मारग अमृत पटे, कत ढूँढे दादू आन।।^३

१. दादू वाणी — पृ० ४४

२. दादू वाणी — पृ० ५७३

३. दादू वाणी — पृ० २६५

वे इस पूर्ण ब्रह्म से ही प्रेम करते हैं :

“पूरण ब्रह्म पियारा”^१

“पूरण ब्रह्म अखिल अविनासी, विहि तजि अन तन जाई।।”^२

वे मानते हैं कि इस पूर्ण ब्रह्म के परम प्रकाश में ही उसके वास्तविक स्वरूप के दर्शन होते हैं।

“पूरन ब्रह्म परम परकास, तहं जिन देखें दादू दास।।”^३

दादू मानते हैं कि ब्रह्म को ब्रह्म समान बनकर ही समझा जा सकता है।

“दादू जावै ब्रह्म के मनि और न भावे।।”^४

वेदों के “ब्रह्माचित ब्रह्मदेव भवति” में भी यही स्वर सुनाई पड़ता है। दादू ‘एक अपार’ के है। दूसरा कोई उन्हें मन में नहीं भाता।

“मैं पंथी एक अपार के, मनि और न भावे।”^५

१.५.२ जीव :

संतों ने जीवात्मा को परमात्मा का ही अंग माना है। जीव के लिए आत्मा चेतना शक्ति है, जो असीम चैतन्य शक्ति का अंश है। आत्मा और परमात्मा में कोई भेद नहीं है। “अयमात्मा ब्रह्म”^६ में आत्मा को ब्रह्म माना गया है। आत्मा और ब्रह्म दोनों के अस्तित्व के साक्षी हैं। “जीवों ब्रह्मेव व नापरः” और जीव ब्रह्म द्वै नाहि”^७ आदि उक्ति में इसी का प्रमाण है।

दादू जामण मरणं सानि करि, यहु पिंड उपाया।

साई दीया जीव कूँ ले जग में आया।।”^८

१. दादू वाणी — पृ० ४६५
२. दादू वाणी — पृ० ५६२
३. दादू वाणी — पृ० ६०६
४. दादू वाणी — पृ० १६१
५. दादू वाणी — पृ० ५५३
६. वृहदाख्यक — पृ० ११६
७. दादू वाणी — पृ० १२
८. दादू वाणी — पृ० ४११

काया के वश में सब जीव रहा करते हैं।

काया के वसि जीव सब^१

काया में ही गुणों से चौराखी लाख जीव बंधे रहते हैं।

‘काया के सब गुण सक बंधे, चौरासी लख जीव’^२

जीव सारे कर्मों को गला कर अनासक्त बन जाने पर राम की पूर्णता का अनुभव करता है।^३

“जीव मिले जब कर्म कों, राम रहना भरपूर”

जीव सांसारिक विषय-वासनाओं में लिप्त होकर उसी में जल-भुनकर नष्ट हो जाते हैं। वे अनंत की अग्नि नहीं देख पाते।^४

जहाँ कनक अरु कामिनी जीव पतंगे जाँहि।

आगि अनंत सूझे नहीं, जलि जलिमूये माँहि॥

जीव माया के आगे ही करबद्ध खड़े रहते हैं।

दादू माया आगे जीव सब, ठोड़े रहे कर जोडि।^५

यह माया उनकी वेरिन है :

“दादू माया वैरिन जीव की”^६

दादू जल और सागर के समान ही आत्मा और परमात्मा को एक मानते हैं :

“परआत्म सों आत्मा, ज्यों जल-उदधि समाना।”^७

वे मानते हैं कि :

“सब घट एकै आत्मा”^८

१. दादू वाणी — पृ० ४११
२. दादू वाणी — पृ० ४११
३. दादू वाणी — पृ० २२६
४. दादू वाणी — पृ० २३२
५. दादू वाणी — पृ० २३७
६. दादू वाणी — पृ० २३८
७. दादू वाणी — पृ० १७१
८. दादू वाणी — पृ० ४२१

जीव सांसारिक बंधन में रहता है जबकि ब्रह्म उससे मुक्त है :

“दादू बंध्या जीव है छूटा ब्रह्म समान”^१

ब्रह्म अविनाशी है :

“अविनासी साहिब सति है, जे उपजे विनसे नाहि।”^२

“काया उछलै काया हॉड़ी मॉहि।

दादू पाका मिलि रहै, जीव ब्रह्म द्वै नाहि।।”^३

वे जीव और ब्रह्म के भेद को जल और गगन के भेद के समान मानते हैं जिसमें वस्तुतः अभेद है :

“दादू जल में गगन गगन में जल है, पुनिवे गगन निराले।

ब्रह्म जीव इहिं विधि रहै, ऐसा नेद विचारे।।”^४

मीठे सों मीठा भया, खारे सों खारा।

दादू ऐसा जीव है, यहु रंग हमारा।।”^५

वे मानते हैं कि सांसारिक वासनाओं में लिप्त जीव साधु की संगति में देव तुल्य और ब्रह्म-संगति में ब्रह्म हो जाता है :

सब जीव प्राणी भूत है, साधू मिले तब देव।

ब्रह्म मिले तब ब्रह्म है, दादू अलख अभेद।।”^६

दादू जानों ब्रह्म को ब्रह्म सरीखा सोई।”^७

“तनमन बिलै यों कीजिए, ज्यों पाणी में लूण।

जीव ब्रह्म एकै भया, तब दूजा कहिये कूण।।”^८

१. दादू वाणी — पृ० ४१२
२. दादू वाणी — पृ० ३४८
३. दादू वाणी — पृ० ४१२
४. दादू वाणी — पृ० ३२७
५. दादू वाणी — पृ० ११६
६. दादू वाणी — पृ० ४१२
७. दादू वाणी — पृ० १६१
८. दादू वाणी — पृ० ११५

१.५.३ माया :

श्वेताश्वतर उपनिषद में माया को ब्रह्म की रचनात्मक शक्ति माना है। इसे सामान्य व्यक्ति समझ नहीं सकता। ब्रह्म माया शक्ति द्वारा वेदों—यज्ञों, ऋतुओं, वृत्तों तथा सभी भूत या भावी पदार्थों की सृष्टि करता है। सारा विश्व माया के सहारे सिरजा गया है —

“छन्दासि यज्ञाः वहवो ब्रतानि भूत भव्य यच्च वेदा वदन्ति।

अस्मान्यायी सृजते विश्व में तत्, तस्मिंश्चायो कायासन्निक।।^१

डॉ० राधा कृष्णन के अनुसार : “संसार के पदार्थ जिसमें व्यक्ति प्राणी भी सम्मिलित है, ऐसा अनुमान करते हैं कि वे सभी पृथक् और निजी अस्तित्व वाले हैं और आत्मपोषण और रक्षा के कार्य में संलग्न प्रतीत होते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि वे सभी एक ही स्रोत से प्रादुर्भूत हैं जिससे वे सभी तत्त्व ग्रहण करते हैं। यह विश्वास भाषा का परिणाम है।”^२

कबीर माया को पापिनी वेश्या मानते हैं जो जीव को पथ-भ्रष्ट करके जीव में विषय वासनाओं की लालसा जगाती है। वेश्या किसी की नहीं होती। इसी प्रकार माया किसी की सगी नहीं होती।

कबीर माया पापड़ी, लालै लाया लोग।

पूरी किनहूँ न भो गई, इकस रहै बिजोगा।।^३

देवी भागवत—पुराण के आठवें अध्याय में इसी माया शक्ति की चर्चा है, जिसमें चन्द्र को, माया देवी हेमवती शिवा—उमा का, सविस्तृत उपदेश उल्लेखनीय है।

सांख्य—दर्शन में माया को प्रकृति माना गया है।

दादू माया को मृगजाल मानते हैं जिसकी झिलमिलाहट, उनके अनुसार झूठी है। इसी झूठी झिलमिलाहट या चिलक—चमक को देखकर उसे सत्यवत् समझा जाता है :

यहु सब माया मृगजल, झूठा झिलमिल होई।

दादू चिलका देखि करि, संत करि जाना सोई।।^४

१. श्वेताश्वतर — पृ० ४, ६

२. डॉ० राधाकृष्णन — इंडियन फिलासफी, भाग—२, पृ० १६२

३. कबीर ग्रन्थावली, माया को अंग, पृ० ३३

४. दादू वाणी — पृ० २१६

माया का अविद्या माया के रूप में विकास शंकराचार्य के पश्चात् अनेक आचार्यों द्वारा विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत, द्वैत व द्वैताद्वैत आदि सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हुए हुआ। ये सिद्धान्त जीवन के लिए शंकर के मायावाद की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध हुए। भक्ति के क्षेत्र में यह विचार जीवन के अनंत व्यापी आदर्शों के आधार पर विश्व-मंगल-विधान का कारण बना। मध्ययुगीन संत साहित्य में यही स्वर सुनाई पड़ता है।

संतों ने माया को सांसारिक प्रलोभन माना है। साधारण जीव इन प्रलोभनों में लिप्त होता जाता है। इसी कारण वह आवागमन के चक्र से मुक्त नहीं हो पाता।

दादू मानते हैं :

उपजै विनसै गुण धरै, यहु माया का रूप।

दादू देखत थिर नहीं, खिण छाहि खिण धूप॥^१

संसार की सारी वस्तुएँ माया जन्य हैं :

जै नॉहि सो ऊपजै, है सो उपजै नाहि।

अलख आदि अनादि है, उपजै माया मॉहि॥^२

दादू माया का गुण बल करै, आपा उपजै आई।

राजस वामस सातगी, मन चंचल है जाई॥^३

माया ने जीवों को पागल बना रखा है। यह जीवों की वैरिन है :

“माया वैरिण जीव की”^४

दादू मानते हैं कि क्षणिक माया को पाकर गर्व करना अनुचित है। माया का सुख वस्तुतः कुछ ही दिनों का होता है :

दादू माया सुख पॉच दिन, गब्यों कहा गवारा।

सुपिनै पायों राजधन, जातन लागै बार॥^५

१. दादू वाणी — पृ० ३४६
२. दादू वाणी — पृ० ३४६
३. दादू वाणी — पृ० ४१६
४. दादू वाणी — पृ० २३८
५. दादू वाणी — पृ० २१६

माया का विस्तार कोई परम तत्त्व नहीं है :

“दादू माया विस्तरी, परम तत्त्व यह नांहि ।”^१

माया सर्पिणी है जो जीव को खाती है :

“सांपणि एक सब जीव को, आगे पीछे खाई”^२

दादू खाये साँपणि, क्यों करि जीवै लोग ।

राम मत्र जन गारुड़ी, जीवै इहि संजोग ।।^३

“दादू माया कारणि जग मरे”^४

माया –जनित सब संसार मिथ्या है :

दादू झूठी काया, झूठा घर, झूठा चहु परिवार ।

झूठी माया देखि करि, फूल्यों कहा गंवार ।।^५

गृह, धन, दारा, सूत, जोबन, माता, पिता, बन्धु, सज्जन, आपा—पर भेद—भाव को त्यागकर परब्रह्म निरंजन का स्मरण व भजन उचित है :

माया देखे मन खुसी, हिरदै होई विकास ।

दादू यह गति जीवकी, अंत न पूर्ण आस ।।^६

दादू ने मन को माया का निवास माना है । माया मन में उपजती है और मन में विलीन हो जाती है । मन यदि राम में रत रहता है यही राम विलीन भी होकर रहता है :

मन ही माया ऊपजै, मन ही माया जाई ।

मन ही रावा राम सों, मन ही रहना समाइ ।।^७

१. दादू वाणी — पृ० ३६२
२. दादू वाणी — पृ० २३१
३. दादू वाणी — पृ० २३२
४. दादू वाणी — पृ० २३२
५. दादू वाणी — पृ० २२६
६. दादू वाणी — पृ० २२१
७. दादू वाणी — पृ० २१५

जहं मन माया ब्रह्म का, गुण इंद्रि आकार।

तह मन बिरचै सब निधें, रचि रहु सिरजनहार।।^१

संतों के लिए यही श्रेष्ठ भाव हैं। दादू मानते हैं कि जो 'स्वाद' को छोड़कर और आसक्ति को तजकर, ईश्वर का गुणगान करते रहते हैं, उन्हीं का उद्धार संभव है :

“सोई संत जन ऊबरै, स्वाद छाडि गुण गाई”^२

ब्रह्मा, विष्णु व महेश भी माया के बश में रहते हैं :

सूर नर मुनिवर बसि किये, ब्रह्मा, विष्णु महेश।

सकल लोक के सिर खड़ी, साधु के पग ठेठ।।

१.५.४ जगत :

नासदीप सूक्त में उल्लेख है कि सर्वप्रथम 'तपस्' की महान् शक्ति से 'एक' की उत्पत्ति हुई। और फिर उस 'एक' में लीला विस्तार की कामना, बीज रूप में उत्पन्न हुई :

कामस्तदग्रे समवर्तवाधि मनसो रेतः प्रथम यदसीत्^३

इसी से सारी सृष्टि का विकास संभव हो सका। पुरुष-सूक्ति में भी उस एक पुरुष या परमात्मा को ही स्रष्टि का रचने वाला कहा गया है :

पुरुष एवैद सर्ववदभूत यच्च भाव्य^४

उसी की महिमा को सर्वत्र माना गया है।

“एतावानस्य महिमातो ज्यायश्चि पुरुष”^५

१. दादू वाणी — पृ० २२५
२. दादू वाणी — पृ० २२५
३. ऋग्वेद — ८, ७, १७, ४
४. ऋग्वेद — पुरुष, सुक्त-२
५. ऋग्वेद — पुरुष, सुक्त-३

विराट पुरुष से समस्त सृष्टि की उत्पत्ति एवं विकास हुआ। ऋग्वेद में सृष्टि की उत्पत्ति व विकासादि का वर्णन इस प्रकार भी किया गया है – जैसे – ‘हिरण्यगर्भ’^१ ‘आप या जल’^२ और यज्ञादि^३ से सृष्टि की उत्पत्ति हुई। भागवत पुराण, प्रथम खंड, तृतीय स्कंध में सृष्टि-रचना का वर्णन है। माया ईश्वर द्वारा सृष्टि का निर्माण करती है। इस रचना का वर्णन विदुर और मैत्रेय के संवाद में भी वर्णित है।^४

सृष्टि-रचना के निश्चित तत्वों का निर्धारण सांख्य दर्शन में पहली बार मिलता है। ये तत्व संख्या में पचीस माने गये, जिनका उत्पत्ति क्रम इस प्रकार है :

“प्रकृति, महत्, अहंकार, पंचतन्मात्र (रूप-रस गंध-स्पर्श-शब्द), एकादश इंद्रिय, पंच महाभूत और पुरुष” न्याय दर्शन में जड़ जगत् को भूतों से अर्थात् “क्षिति (पृथ्वी), जल, पावक (तेज) व समीर” से बना हुआ माना जाता है। वेदांत में सृष्टि के विकास की चर्चा विस्तार से की गई है। तैत्तिरीय उपनिषद् में इसका विस्तार क्रम इस प्रकार दिया गया है :

“तस्माद्वाएतस्तादात्मानं आकाशः संभूतः। आकाशः। द्वायुः। वायोरग्निः”। अग्नेरायः। रापद्भवः पृथिवी। पृथिव्याः। औषधि-योःन्नम्। अन्नात् पुरुषः।।”^५

उस आत्मा से आकाश उत्पन्न हुआ। आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी, पृथ्वी से औषधियाँ, औषधियों से अन्न और अन्न से पुरुष का सर्जन हुआ। इसी उपनिषद् में सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में कहा गया है कि उस आत्मा ने कामना की, कि मैं बहुत रूपों वाला बनूँ और प्रजा उत्पन्न करूँ। उसने तप करके सबको उत्पन्न किया। उत्पन्न करके वह उसी में प्रविष्ट हो गया:

“सोऽकामयत्। बहुस्यां प्रजायेसेति।। तपोऽतप्यत्। सतपस्तप्त्वा।

इदं सर्वम्-वृजत्। यदि दंकिंच। तत् सृष्ट्वा देवानु प्रविशत्।

तदनुप्रविश्य सच्चत्यच्चा भवत्।।”^६

१. ऋग्वेद – पृ० १०, १२, २
२. ऋग्वेद – पृ० १०, ८२, ६
३. ऋग्वेद – पृ० १०, ६०
४. भागवत पुराण – प्रथम खण्ड, तृतीय स्कंध १/३
५. तैत्तिरीय उपनिषद्, ब्रह्मा नंद वल्ली – २
६. तैत्तिरीय उपनिषद्, ब्रह्मा नंद वल्ली – २

सृष्टि विकास के संबंध में गुरु शंकराचार्य का मानना है कि मायावी ईश्वर ने माया-शक्ति से इस वैचित्र्यपूर्ण सृष्टि की लीला दिखाई। इसे अज्ञानवश सत्य समझ लिया जाता है। वस्तुतः ब्रह्म या ईश्वर मात्र ही सत्य है। यह जगत् मिथ्या है। आचार्य रामानुज ने माना है कि सर्वशक्तिमान् ईश्वर अपनी इच्छा से नाना विषयात्मक संसार उत्पन्न करता है, जो वस्तुतः सत्य है न कि मिथ्या। माधवाचार्य ने भी जगत् को सत्य माना है। उसके अस्तित्व का स्वयं प्रत्यक्ष प्रमाण है।

संत दादू ने सृष्टि-तत्त्व की उत्पत्ति के संबंध में यह स्वीकार किया है कि साँई ने पहले-पहल अपने-आप से ओंकार को उत्पन्न किया और ओंकार से पंच तत्त्वों को। पंच तत्त्वों से फिर 'घट' की उत्पत्ति हुई और 'घट' से संपूर्ण सृष्टि का विस्तार हुआ। उन्होंने 'मैं' आदि वण-विचारों की उत्पत्ति को भी माना है। उनका यह स्पष्ट मत है कि उस समर्थ साँई ने यह सब एक 'सबद' से पैदा किया :

“पहली कीया आप थे उत्पति ओंकार।
 ओंकार थे ऊपजै, पंच वत्त आकार॥
 पंचतत्त थे घट भया, बहु निधि सब विस्तार।
 दादू घट थे ऊपजै मैं तं चरण विचार॥
 एक सबद सब कुछ किया, ऐसा समरथ सोई।
 आगे पीछे तो करे, जो बलहीणा होई॥^१

वे जगत् की इस उत्पत्ति का कारण साँई की परमार्थ-भावना मानते हैं। वे कहते हैं कि उस साँई ने परमार्थ के लिए ही सब कुछ किया, अपने स्वार्थ के लिए कुछ नहीं किया। वह सृष्टा जगत् की क्रीड़ा को रचकर स्वयं क्रीड़ा करता है। वह दान भाव से सुख प्राप्त करता है न कि प्राप्ति की भावना से :

“दादू परमारथ, को सब आप स्वारथ नाहिं।
 परमेशुर परमारथी, के कलि माहिं॥
 खलिक खेलै खेल करि बूझे विरला कोई।
 लेकर सुखिया ना भया, दं करि सुखिया होई॥^२

-
१. दादू वाणी — पृ० ३६२
 २. दादू वाणी — पृ० ५७६

दादू साहित्य में शंकर-मत का अधिक प्रभाव है। सारे संत प्रायः एकमत होकर जगत् को असत्य, मिथ्या व निःसार मानते हैं। केवल ईश्वर, सॉई, ब्रह्म या राममात्र सत्य है, अन्य सब असत्य हैं। जगत् भी उनके लिए असत्य है। संत दादू ने भी इस जगत् (संसार) को स्वप्नसम माना है :

सुविने सब कुछ देखिय, जागै तो कछु नाहिं।
ऐसा यहु संसार है, समझि देखि मन मांहि॥
दादू ज्यों कुछ सुविनै देखिय, तैसा यहु संसार॥^१

वे संसार (जगत्) को प्रपंचात्मक मानते हैं :

पाखंड की यह पृथ्वी, परपंच का संसार^२
“दादू मोह संसार को, विहरै तन मन प्राण”^३

वे संसार से स्नेह करना अनुचित मानते हैं :

दादू इस संसार सों निमख न कीजै नेह।
जनम मरण आवरण, छिन-छिन दीझै देह॥^४

जो व्यक्ति संसार के मोह से मुक्त होकर अविनाशी के आसरे में जाता है, उसे काल भी नहीं खा सकता :

दादू तजि संसार सक, रहै निराला होइ।
अविनासी के आसरे, काल न लागे कोइ॥^५

वे मानते हैं कि सारा संसार (जगत्) कर्म की कुल्हाड़ी से अपने वनरूपी अंग को अपने ही हाथों निरंतर काटता रहता है :

“कर्म कुहाडा अंग बन काटत बारंबार।
अपने हाथों आप कों, काटत है संसार॥^६

-
१. दादू वाणी — पृ० १२०
 २. दादू वाणी — पृ० २२७
 ३. दादू वाणी — पृ० २२८
 ४. दादू वाणी — पृ० २२८
 ५. दादू वाणी — पृ० ४०५
 ६. दादू वाणी — पृ० २२६

१.५.५ व्यापकता और महत्व :

दादू जी ने यह नहीं चाहा था कि उनके नाम पर कोई पंथ चले। दादू जी के जन्म के समय राजस्थान में धार्मिक विघटन जोरों पर था। उन्होंने अपनी वाणी से तत्कालिक एवं परवर्ती समाज को व्यवस्था प्रदान की। साथ ही नई दार्शनिक चेतना भी दी। इस चेतना ने सामाजिक और सांस्कृतिक विघटन को समाप्त करके नई दिशा प्रदान की।

दादू पंथ का व्यापक प्रचार एवं प्रसार हुआ। आरंभ में इसे परब्रह्म सम्प्रदाय की संज्ञा दी गई और बाद में दादू जी के शिष्यों में कबीर पंथ, नानक पंथ आदि समानता के आधार पर इसे दादू-पंथ नाम से अभिहित किया।

संत दादू तिरो भाव के पश्चात् इस पंथ से कई संप्रदायों का विकास हुआ जैसे – गरीब दासी, मिस्कीन दासी, और रज्जवाल संप्रदाय।

दादू पंथ व्यापकता की दृष्टि से नानक-पंथ, कबीर-पंथ, से कम नहीं है। विकास के अनेक चरणों में होकर इसने बहुत से महत्वपूर्ण परिवर्तन किये। कबीर पंथ के अनुयायी अधिकतर गरीब वर्ग के हैं और कबीर का प्रचार और प्रसार महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों के नाम से हो रहा है।

दादू पंथ की दार्शनिक चेतना अपने आप में दृढ़ है। इस दृष्टि से भी यह कहना अधिक उपयुक्त है कि यह पंथ व्यापकता और महत्व की दृष्टि से कबीर और नानक पंथ दोनों से ही बहुत आगे हैं। इस पंथ की विचारधारा में सांप्रदायिक कट्टरपन कहीं भी छू नहीं गया है। संभवतः इसके पीछे संत दादू की दरियादिली तथा दयालुता का आधार है।

2. संत दादूदयाल कौ काव्य (बाणी)

१. गुरदेव कौ अँग :

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमस्कार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं^१ पारंगतह^२ ॥१॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
 वंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः ॥२॥

पर ब्रह्म परासरं, सो (सः) मम (माम) देव निरंजनं ।
 निराकारं निर्मलम्, तस्य दादू वंदनं ॥३॥

(दादू) गैव मोहि गुर (देव) मिल्या (मिलिया), पाया हम परसाद ।
 मसतकि(मस्तकि) मेरे कर धरया, दप्या (देख्या) अग्म (अगम) अगाध ॥४॥

दादू सतगुर^३ सहज मैं, कीया बहु उपगार ।
 नृधन (निरधन) धनवंत करि लीया (लिया) गुर मिलया दातार ॥५॥

(दादू) सतगुर सौं सहजैं मिल्या, लीया कंठि (कंठ) लगाइ ।
 दया भई दयाल को, तब दीपक दीया जगाइ ॥६॥

दादू देखु दयाल की, गुरु दिखाई बाट ।
 ताला कूची (कूंजि) लाई करि, खोले सबै कपाट ॥७॥

(दादू) सतगुर अंजन बाहिकरि, नैन पटल सब खोले ।
 बहिरे कानौ सुणणे (सुणण) लागे (लगे), गुंगे मुखसौं बोले ॥८॥

सतगुर दाता जीव का, श्रवन सीस कर नैन ।
 तनमन सौंज^४ संवारि सब, मुख रसनां अरु बैन ॥९॥

रौम-नौम उपदेस करि, अगम-गवण यहु सैन^५ ।
 दादू सतगुर सब दीया (दिया) आप मिलाया अैन^६ ॥१०॥

सतगुर कीया फेरि करि, मनका औरै रूप ।
 दादू पंचूं पलटि करि, कैसे भये अनूप ॥११॥

साचा सतगुरु (सतगुर) जे मिले, सब (सबइ) साज सवारै ।
 दादू नांव चढ़ाई करि, ले (लेइ) पार उतारै ॥१२॥

१. प्रणाम से/माया से, प्रणाम करने में ।

२. पार गए हुए, निपुण ।

३. पूर्ण पुरुष

४. साज-सामग्री, साधन

५. होशियारी

६. अथन, घर

सतगुर पसु माणस करै, मांणस थैं सिध सोइ ।
 दादू सिद्धतैं (सिद्धतैं) देवता, देव निरंजण होई ॥१३॥
 दादू काढ़े काल मुखि, अंधे लोचन देइ ।
 दादू अैंसा गुरु मिल्या, जीव ब्रह्म करि लेइ ॥१४॥
 दादू काढ़े कालमुखि श्रवणहु (सरयणहु) सबद सुणाइ ।
 दादू अैंसा गुरु मिल्या मृतक (मिरतक) लीया (लिया) जगाइ ॥१५॥
 दादू काढ़े कालमुखि, गूंगे लीये (लिये) बुलाइ ।
 दादू अैंसा गुरु मिल्या, सुखमै^१ रहै समाइ ॥१६॥
 दादू काढ़े कालमुखि, मिहरि^२ दयाकरि आइ ।
 दादू अैंसा गुरु मिल्या, महिमा कही न जाइ ॥१७॥
 (दादू) सतगुर काढ़े केस गहि, डूबत इहि संसार ।
 दादू नांव चढ़ाइ करि, कीये पैली पार ॥१८॥
 भौ-सागर मैं डूबतां, सतगुरु काढ़े आइ ।
 दादू षेवट (खेवट) गुरु मिल्या, लीये नांव चढ़ाइ ॥१९॥
 दादू उस गुरदेव की, मैं बलिहारी जौंउ ।
 (जहौं) आसण अमर अलेख था, ले राखे उस ठौंउ ॥२०॥
 आत्म मॉहै ऊपजै, दादू पोंगुल^३ ग्योंन ।
 कृतिम जाइ उलंघि करि, जहौं निरंजन थौंन ॥२१॥
 आत्मबोध बंझ^४ का बेटा, गुरुमुख उपजै आइ ।
 दादू प्यंगुल^५ पंचविन^६, जहौं राम तहौं (तहैं) जाइ ॥२२॥
 साचा सहजै ले मिलै, सबद गुरु का ज्ञौंन ।
 दादू हमकौ ले चल्या, (जहौं) प्रीतम का अस्थान ॥२३॥
 दादू सब्द विचारि करि लागि रहै मन लाइ ।
 ज्ञौंन गहैं गुरदेव का, दादू सहज समाइ ॥२४॥
 (दादू) कहै सतगुर सबद सुणौंइ, (करि) भावै जीव जगाइ ।
 भावै अंतर आप कहि, अपणै अंग लगाइ ॥२५॥
 (दादू) बाहरि सारा देखिये, भीतरि कीया चूर ।
 सतगुर सबदौ मारिया, जाण न पावै दूरि ॥२६॥
 (दादू) सतगुर मारे सबद सौं, निरखि निज ठौर ।
 रांम अकेला रहि गया, चीत न आवै, और ॥२७॥

१. सुषुम्ना नाड़ी	२. दया	३. कमजोर
४. बौझ	५. कमजोर	६. पाँच के बिन

दादू हमको लुप भया, साध सबद गुरग्यांन ।
 सुधि बुधि सोधी समझि करि, पाया पद निरबान ॥२८॥
 दादू सबद बाण गुर साधके, दूरि दिसंतर जाइ ।
 जिहि लागे सो उबरे (ऊबरै) सूते लीये (लिये) जगाइ ॥२९॥
 सतगुर सबद मुख सौं कह्या, क्या नेड़े क्या दूरि ।
 दादू सिख श्रवणहु (स्रावनहु) सुरयां, सुमिरण लागा सूर ॥३०॥
 सबद दूध घृत रांमरस, मथि करि काढै कोई ।
 दादू गुर गोव्यंद विनि (बिन) घटि-घटि समझि न होई ॥३१॥
 सबद दूध घृत रांमरस, कोई साध बिलोवणहार^१ ।
 दादू अमृत काढिले, गुरमुख गहै विचारि ॥३२॥
 घीव, दूध मैं रमि रहया, व्यापक सबही ठौर ।
 दादू वकता बहुत है, मथि काढै ते और ॥३३॥
 कांमधेन^२ घट घीव है, दिन-दिन दुर्बल होई ।
 गोरू^३ ग्योन न उपजै, मथि नहीं पाया सोइ ॥३४॥
 साचा सम्रथ गुर मिल्या, तिन तत दीया (दिया) बताइ ।
 दादू मोटा^४ (मोट) महाबली, घट घृत मथि करि खाइ ॥३५॥
 मथि करि दीपक कीजिए, सब घट भया परकास ।
 दादू दीवा हाथ करि, गया निरंजन पास ॥३६॥
 दीवै दीवा कीजिये, (गुर) मुखि सारग जाइ ।
 दादू अपणै पीव का, दरसन देखै आइ ॥३७॥
 दादू दीया है भला, दीया (दिया) करौ सब कोइ ।
 घर मैं धर्या न पाइये, जेकर दीया न होइ ॥३८॥
 (दादू) दीया का गुण तेल है, दीया मोटी बात ।
 दीया जग मैं चांदणां, दीया चालै साथ ॥३९॥
 निर्मल गुर का - ज्ञान गहे, निर्मल भगति विचारि ।
 निर्मल पाया प्रेम रस, छूटे सकल विकार ॥४०॥
 निर्मल तन मन आत्मां, निरमल मनसा सार ।
 निरमल प्राणी पंच करि, दादू लंघै पार ॥४१॥
 परापरी पासै रहै, कोई न जाणै ताहि ।
 सतगुर दिया दिखाइ करि, दादू रहया ल्यौ लाइ ॥४२॥

१. विलोडन करने वाला	२. सद्य, अभिलाषापूरक, दैवीय गो
३. धरती	४. बड़ा

जिनि हम सिरजे सो कहां सतगुर देहु दिखाइ।
 दादू दिल अरवाह^१ कौं, तहाँ मालिक^२ ल्यौ लाइ॥४३॥
 मुझही मैं मेरा धणी^३, परदा खोलि दिखाइ।
 आत्म सौं प्रआत्मां, प्रगट आंणि मिलाइ॥४४॥
 भरि भरि प्याला प्रेमरस, अपणैं हाथ पिलाइ।
 सतगुरकै सदकै^४ कीया, दादू बलिबलि जाइ॥४५॥
 सरवर भरिया दहदिसा^५, पंखी प्यासा जाइ।
 दादू गुर परसाद बिन, क्यूं जल पीवै आइ॥४६॥
 मानसरोवर^६ मांहि जल, प्यासा पीवैं आइ।
 दादू दोस न दीजिये, घर घर कहण न जाइ॥४७॥
 दादू गुर गरवा मिल्या, ताथैं सब गमि होइ।
 लोहा पारस परसतां^७, सहज समोना सोइ॥४८॥
 दीन गरीबी गहि रह्या, गरवा (गरुव) गुरु (गुर) गंभीर।
 सूखिम सीतल सुरति मति, सहज दया गुर धीर॥४९॥
 सोधी दाता पलक मैं, तिरै तिरावण जोग।
 दादू ऐसा प्रम (परम)गुर, पाया किहि संजोग॥५०॥
 (दादू) सतगुर ऐसा कीजिये, रामरस—माता।
 पार उतारै पलक मैं, दरसन का दाता॥५१॥
 दैव किरका^८ दरद का टूटा जोड़ै तार।
 दादू साधै सुरति कौं, सो गुर पीर^९ हमार॥५२॥
 दादू घाइल है रहै, सतगुर के मारे।
 दादू अंग लगाइ करि, भौसागर तारे॥५३॥
 दादू साचा गुर मिल्या, साचा दिया दिखाइ।
 साचे सौं साचा मिल्या, साचा रह्या समाइ॥५४॥
 साचा सतगुर सोधिले, साचे लीजी साध।
 साचा साहिब^{१०} सोधिले, करि (दादू) भगति अगाध॥५५॥
 सनमुख सतगुर साधसौं, साईं सौं राता।
 दादू प्याला प्रेम का, महारस माता॥५६॥
 साईं सौं साचा रहै, सतगुर सौं सूरा।
 साधू सौं सनमुख रहै, सो (सोइ) दादू पूरा॥५७॥

१. जीवात्मा (रूह का बहुवचन)। २. स्वामी। ३. पति। ४. न्यौछावर।
 ५. दसों दिशाएँ। ६. कैलाश पर्वत पर स्थित एक सरोवर जहाँ हंस युक्त पुरुष मोती चुगते हैं। ७. लोहा पारस का स्पर्श करता है। ८. किनका, अन्न कण ९. धार्मिक गुरु १०. स्वामी, ईश्वर

सतगुर मिलै त पाइये, भगति मुकति भंडार।
 दादू सहजै देखिये, साहिब का दीदार^१॥५८॥
 (दादू) सांई सतगुर सेविये, भगति मुकति फल होइ।
 अमर अभैपद पाइये, काल न लागै कोइ॥५९॥
 इकलख चंदा आणि घर सूरज कोटि मिलाइ।
 दादू गुर गोव्यंद बिन, तोभी (तबहु) तिमर न जाइ॥६०॥
 अनेक चंद उदै करै, असंधि सूर प्रकास (परकास)।
 एक निरंजन नांव बिन, दादू नहीं उजास॥६१॥
 (दादू) विखम दुहेला जीवकूं सतगुर थैं आसांण।
 जब देखै (दरवै) तब पाईये(खाइये), नेड़ा ही अस्थान॥६२॥
 (दादू) नैन न देखै नैन कौं, अंतर भी कुछ नाहिं।
 सतगुर दरपन करि दीया (दिया), अरस-परस मिलि मांहि॥६३॥
 घट-घट रांम (रामहि) रतन है, दादू लखै न कोइ।
 सतगुर सबदों पाइये, सहजै ही गमि होइ॥६४॥
 जबही कर दीपक दीया (दिया), तब सब सूझन लाग।
 यौ दादू गुरज्ञानथें (गुरग्यॉन थैं), राम कहत जन जाग॥६५॥
 (दादू) मन माला तहां फेरिये, जहां दिवस न परसै रात।
 तहां गुर बांनं दिया (दिया), सहजै जपिये तात॥६६॥
 (दादू) मन माला (माल) तहाँ फेरिये, जहाँ प्रीतम बैठे पास।
 आगम गुरथैं गमि भया, पाया नूर^२ निवास॥६७॥
 (दादू) मन माला तहाँ फेरिये, जहां आपै एक (इक) अनंत।
 सहजै सौं सतगुर मिल्या, जुग-जुग फाग बसंत॥६८॥
 (दादू) सतगुर माला मन दीया (दिया), पवन सुरतिसौं पोइ।
 बिन हाथ्यौं निसदिन जपै, परम जाप यौं होइ॥६९॥
 (दादू) मन फकीर^३ मौहैं हुवा, भीतरि कीया भेख।
 सबद गहै गुरदेव का, मोंगै भीख अलेख॥७०॥
 (दादू) मन फकीर सतगुर कीया, कहि समझाया ज्ञान(ग्यॉन)।
 निहचल आसन बेसि करि, अकल^४ पुरस^५ का ध्यॉन॥७१॥
 (दादू) मन फकीर जगथैं भया, सतगुर लीया लाइ।
 अहनिस लागा एक सौं, सहज सुनि रस खाइ॥७२॥

१. दर्शन २. दिव्य प्रकाश, अल्लाह, ईश्वर ३. मँगता
 ४. निर्गुण, कला रहित ५. पुरुष, परमेश्वर

(दादू) मन फकीर अैसेँ भया, सतगुर के परसाद ।
 जहाँ का था लागा तहाँ, छूटे बाद-बिबाद ॥७३॥
 ना घरि रह्या न वन गया, ना कुछ कीया (किया) कलेस ।
 दादू मनही मन मिल्या, सतगुर के उपदेस ॥७४॥
 (दादू) यहु मसित यहु देहुरा, सतगुर दीया (दिया) दिखाइ ।
 भीतर सेवा बंदगी, बाहरि काहे जाइ ॥७५॥
 (दादू) मंझे चेला मंझि गुरू, मंझे ही उपदेस ।
 बाहरि ढूँढे बावरे, जटा बँधाये केस ॥७६॥
 मनका मस्तक मूँडिये, काम क्रोध के केस ।
 दादू विषै विकार सब, सतगुर के उपदेस ॥७७॥
 दादू परदा भरम का, रह्या सकल घट छाड़ ।
 गुर गोव्यंद कृपा करै, (तो) सहजै ही मिटि जाइ ॥७८॥
 (दादू) जिहि मति साधू उधरे, सो मन लीया सोधि ।
 मन लै मारग मूल गहि, (यह) सतगुर का प्रमोध ॥७९॥
 (दादू) सोई मारग मन गह्या, (जिहि) मारग मिलिए जाइ ।
 बेद कुरानौ ना कह्या, सो गुर दीया (दिया) दिखाइ ॥८०॥
 मन भवन यहु विष भर्या, निर्विख (निरबिख) क्यूँ ही न होइ ॥
 दादू मिल्या गुर गारङ्गी^१, निर्विष (निरबिख) कीया सोइ ॥८१॥
 (दादू) जीव जंजालौं पड़ि गया, उलझया नौमन^२ सूत ।
 कोई एक सुलझै सावधान, गुर बाइक (बायक) औघूत ॥८२॥
 चंचल चहुँ दिस जात है, , गुर वाइक सौं बंधि ।
 दादू संगति साधकी, पारब्रह्म^३ सौं संधि ॥८३॥
 गुर अंकुस मानै नहीं, उदमद^४ माता^५ अंध ।
 दादू मन चेतै नहीं, काल न देखै फंध ॥८४॥
 (दादू) मारया बिन मानै नहीं, यहु मन हरि की आणि ।
 (ग्याँन) ज्ञान खडग गुरदेव का, ता संग सदा सुजाण ॥८५॥
 जहाँ थैं मन उठि चलै, फेरि तहाँ ही राखि ।
 तहाँ दादू लैलीन^६ करि, साध कहैं गुर साधि ॥८६॥
 (दादू) मनही सँ मल उपजै (ऊपजै), मनही सँ मल धोइ ।
 सीख चली गुर साध की, तौ तूँ निर्मल होइ ॥८७॥

१. साँपों का विष उतारने वाला २. नौ मन, बहुत अधिक
 ३. परमेश्वर ४. उन्माद में ५. मस्त
 ६. सम्पूर्ण रूप से खोकर

(दादू) कछिव अपणैं करि लीये, मन इद्री निज ठौर।
 नांइ^१ निरंजन^२ लागि रहु, प्राणी परहरि और॥८८॥
 मन कै मतै सब कोइ बेलै, गुरमुख बिरला कोइ।
 दादू मन मॉनै नहीं, सतगुर का सिख सोई॥८९॥
 सब जीवों कौं मन ठगै, मन कौ बिरला कोई।
 दादू गुर के ग्यान सँ, सोई सनमुख होइ॥९०॥
 (दादू) एक सँ लैलीन हूणों, सवै सयानप येह।
 सतगुर साधू कहत हैं, परमतत्त जीय (जपि) लेह॥९१॥
 सतगुर सबद ववेक विनि, संजस रह्या न जाइ।
 दादू ग्यान विचार विन, विषै हलाहल खाइ॥९२॥
 घरि-घरि घटि कोल्हू चलै, अमी महारस जाइ।
 दादू गुर के ग्यान बिन, विषै हलाहल खाइ॥९३॥
 सतगुर सबद उलंघि करि, जिन कोई सिख जाइ।
 दादू पग-पग काल है, जहाँ जाइ तहाँ पाइ॥९४॥
 सतगुर वरजै सिख करै, क्यूँ करि बँचै काल।
 दह दिस देखत वहि गया, पाणी फोड़ी पाल^३॥९५॥
 (दादू) सतगुर कहै सुसिख करै, सब सिधि कारज होइ।
 अमर अभै पद पाईये (पाइये), काल न लागे कोइ॥९६॥
 (दादू) जे साहिब कौ भावै नहीं, सो हमधैं जिनि होई।
 सतगुर लाजै आपणों, साध न मानैं कोई॥९७॥
 (दादू) हूँ^४ की ठाहर^५ है कहौ, तनकी ठाहर तूँ^६।
 री की ठाहर जी कहौ, ज्ञान गुरु का यूँ॥९८॥
 दादू पंच संवादी^७ पंच दिस^८, पंचे पंचों बाट^९।
 तब लग कहा न कीजिये, गहि (गुरु) दिखाई बाट॥९९॥
 दादू पंचौ एक मत, पंचौ पुर्या साध।
 पंचौ मिलि सन्मुख भये, तब पंचौ गुर की बात॥१००॥
 (दादू) ताता लोहा तिणै^{१०} सँ, क्यूँ करि पकड़या जाइ।
 गहण गति सूझै नहीं, गुर नहीं बूझै आइ॥१०१॥
 (दादू) औगुण गुणकरि मानै (गुर) के, सोई सिप सुजौण।
 सतगुर औगुण क्यूँ करै, समझै सोई सयान॥१०२॥

१.	नाम	२.	निराकार	३.	किनारा
४.	अहंकार	५.	स्थान (सं. स्था)	६.	परमेश्वर
७.	पौंचों ज्ञानेन्द्रियों संवादी हैं	८.	पौंचों दिशाओं में भागने वाली	९.	पौंचों पौंच रास्ते में जाती हैं
१०.	तिनके				

सोने सेती बैर क्या, मारै घण कै घाइ ।
 दादू काटि कलंक सब, राखै कंठि लगाइ ॥१०३॥
 (दादू) कहै सिख भरोसै आपणै(अपणै), कै (हवै) बोली हुसियार ।
 कहैगा सो बहैगा, (हम) पहली करै पुकार ॥१०४॥
 (दादू) सतगुर कहै सो कीजिये, जे तूँ सिष्य सुजाग ।
 जहँ लाया तहँ लागि रहु, वूझै कहा अजाण ॥१०५॥
 गुर पहली मन साँ कहै, पीछै नैन की सैन ।
 दादू सिख समझै नहीं, कही समझावै बैन ॥१०६॥
 कहै लखै सो मानवी, सैन लखै सो बैन ।
 मन की लखै सो देवता, दादू अगम अगाध ॥१०७॥
 (दादू) कहि-कहि मेरी जीभ रही, सुणि-सुणि तेरे कान ।
 सतगुर वपुरा क्या करे, जे चेला मूढ़ अजान ॥१०७॥
 (दादू) एक सबदि सब कुछ कह्या, सतगुर सिख समझाइ ।
 जहाँ लाया तहाँ लागै नहीं, फिरि-फिरि बूझै आइ ॥१०८॥
 (दादू) ग्यान लीया सब सीखि सुणि, मन का मैल न जाइ ।
 गुरु विचारा क्या करै, (सिख) विषै हलाहल खाइ ॥१०९॥
 सतगुर की समझै नहीं, अपणै उपजै नाहि ।
 तौ दादू क्या कीजिये, बुरी बिथा मन मोहि ॥११०॥
 गुर अपँग पंग पँख बिन, सिख साखा/का भार ।
 दादू खेवट नाव बिन, क्यूँ उतरैंगे पार ॥१११॥
 दादू संसा जीव का, सिख साखौं (साखा) का साल ।
 दुन्यूं कूँ भारी पड़ी, हैगा कौण हवाल ॥११२॥
 अंधे अंधा मिलि चले, दा बंधि कतार ।
 कूप पड़े हम देखतौं, अंधे अंधा लार ॥११३॥
 सोधी नहीं सरीर की, ओरों कौ (कूँ) उपदेस ।
 दादू अचरिज देखिया, ये जाहिंगे किस देस ॥११४॥
 (दादू) सोधी नहीं सरीर की, कहै अगम की बात ।
 जान कहावै बापुड़े, आवध लीये हाप ॥११५॥
 (दादू) माया माहें काढि करि, फिरि माया में दीन्ह ।
 दोऊ जब समझै नहीं, येको काज न कीन्ह ॥११६॥
 (दादू) सो गुरु किस काम का, गहि भ्रमावै आँन ।
 तत बतावै त्रिमला, सो गुर साध सुजौन ॥११७॥
 तूँ मेरा हूँ तेरा, गुर सिख कीया मंत ।
 दुन्यू भूले जात हैं, दादू विसरया कंत ॥११८॥

दुहि दुहि पीवै ग्वाल गुर, सिख है छेली गाइ ।
 यहु औसर यूं ही गया, दादू कहि समझाइ ॥११६॥
 सिख गोरू^१ गुर ग्वाल है, रख्या रच्छ्या करि-करि लेइ ।
 (करि)दादू राखै जतन सौं, आणि धणी कूँ देइ ॥१२०॥
 झूठे अंधे गुर घणें, भरम दिढावै आइ ।
 दादू साचा गुर मिलै, जीव ब्रह्मा है जाइ ॥१२१॥
 झूठे अंधे गुर घणें, बंधे विषै विकार ।
 दादू साचा गुर मिलै, सनमुख सिरजनहार ॥१२२॥
 झूठे अंधे गुर घणें, भरम दिढावै काम ।
 बंधे माया मोह सौं, दादू मुख सौं राम ॥१२३॥
 झूठे अंधे गुर घणे, भटकै घरि-घरि वारि ।
 कारिज को सीझै नहीं, दादू माथै मारि ॥१२४॥
 दादू भगत कहावै आपकूं, भगति न जाणै भेव ।
 सुपिने हू समझे नहीं, कहां वसै गुरदेव ॥१२५॥
 (दादू) भरम करम जग बंधिया, पंडित दीया भुलाइ ।
 दादू सतगुर ना मिलै, मारग देइ बताइ ॥१२६॥
 दादूपंथ बतावैं पापैका, भरम करम बेसास ।
 निकटि निरंजन जे रहै, क्यूं न बतावै(बतावै) तास ॥१२७॥
 दादू आपा उरझे उरझिया, दीसै सब संसार ।
 आपा सुरझै सुरझिया, यहु गुर ग्यान विचार ॥१२८॥
 साधू का अंग नृमला (निरमला) तामैं मल न समाइ ।
 प्रम (परम) गुरु प्रगट कहै, ताथैं दादू ताइ ॥१२९॥
 राम नाम गुर सबद सौं, रे मन पेलि भरंम ।
 निहकरमी सौं मन मिल्या, दादू काटि करंम ॥१३०॥
 (दादू) बिन पाइन का पंथ है, क्यूं करि पहुँचै प्रॉन ।
 विकट घाट औघट परे, माहि सिखर असमॉन ॥१३१॥
 मन-ताजी^२ चेतनि^३ चढै, ल्यौ^४ की करै लगाम ।
 सबद गुरु का ताजिणां, कोई पहुंचै साध सुजान ॥१३२॥
 साधू सुमिरण सो कह्या, (जिहि) सुमिरिणि आया भूल ।
 दादू गहि गंभीर गुर, चेतनि आनंद मूल ॥१३३॥

(दादू) आप सुबारथ सब सगे, प्राण सनेही नाहिं ।
 प्राण सनेही राम है, कै साधू कलि मांहि ।।१३४।।
 सुख का साथी जगत सब, दुख का नहीं कोइ ।
 दुख का साथी साईयों, दादू सतगुर होइ ।।१३५।।
 सगे हमारे साध हैं, सिर परिसिरजनहार ।
 दादू सतगुर सो सगा, दूजा धंध विकार ।।१३६।।
 दादू कै दूजा नहीं, एकै आतम रॉम ।
 सतगुर सिर पर साध सब, प्रेम भगति विश्राम ।।१३७।।
 दादू सुध बुध आत्मों, सतगुर परसे आइ ।
 दादू भिंगी कीट ज्यूं देखत ही होइ जाइ ।।१३८।।
 दादू भिंगी^१ कीट ज्यूं, सतगुर सेती होइ ।
 आप सरीखे करि लीये, दूजा नॉही कोइ ।।१३९।।
 दादू कछिव^२ राखै दृष्टि मैं, कुंजौ^३ कै मन मॉहि ।
 सतगुर राखै आपणों, दूजा कोई नॉहिं ।।१४०।।
 वचूँ के माता पिता, दूजा नहीं कोइ ।
 दादू निपजै भाव सौं, सतगुर कै घटि होइ ।।१४१।।
 एकै सबद अनंत सिख, जब सतगुर बोलै ।
 दादू जड़े कपाट सब, दे कूंची षोलै ।।१४२।।
 विनही कीया होइ सब, सनमुख सिरजनहार ।
 दादू करि-करि को मरै, सिख साखा सिरि भार ।।१४३।।
 सूरिज-सनमुख आरसी, पावक कीया प्रकास ।
 दादू साई साध विचि, सहजै निपजै दास ।।१४४।।
 दादू पंचो ए परमोधि लै, इनहीं कूँ उपदेस ।
 यहु मन अपणा हाथ करि, तौ चेला सब देस ।।१४५।।
 अमर भए गर (गुर) ग्यांन सौं, केते इहि कलि मॉहि ।
 दादू गुर के ग्यांन बिन, केते मरि-मरि जॉहि ।।१४६।।
 वोखद खाइ न पछि रहै, विखम व्याधि क्यूँ जाइ ।
 दादू रोगी बावरा, दोस वैद कूँ लाइ ।।१४७।।
 वैद विथा कहैं देखि करि, रोगी रहै रिसाइ ।
 मन मॉहै लीया रहै, दादू व्याधि न जाइ ।।१४८।।

१. भृंगी । एक कीड़ा जो दूसरे कीड़े पर बैठकर चीं...चीं... का स्वर करता रहता है । कुछ समय बाद दूसरा कीड़ा भी उसी की आवाज में बोलने लगता है ।
 २. कच्छप
 ३. कौंच पक्षी (कछुवा दृष्टि से और क्रौंच सुदृष्टि से अपने बच्चों को पालता है ।)

दादू वैद विचारा क्या करै, जे रोगी रहै न साच ।
मीठा, खारा, चरपरा, मोंगे मेरा बाछ ॥१४६॥

दुलंभ दरसन साध का, दुलंभ गुर उपदेस ।
दुलंभ करिबा कठिन है, दुलंभ परस अलेख ॥१५०॥

(दादू) अवचिल मंत्र, अमर मंत्र, अखे मंत्र अभै मंत्र,
राम मंत्र निज सार सजीवनि मंत्र, सवीरज मंत्र,
सुंदर मंत्र सिरोमनि मंत्र, नृमल मंत्र निराकार ॥

अलख मंत्र, अकल मंत्र, अगाध मंत्र अपार मंत्र,
अनंत मंत्र राया नूर, मंत्र, तेज मंत्र, जोति मंत्र,
प्रकास मंत्र, पर्म (परम) मंत्र पाया ॥ उपदेस दख्या^१ ॥१५१॥

दादू सब ही गुर किया, पसु पंपी वणराइ ।
पंच तत^२ गुण तीनि^३ मैं, सबही मोंहि खुदाइ^४ ॥१५२॥

जे पहली सतगुरि कह्या, सो नैनहु देप्या आइ ।
अरस-परस मिली एक रस, दादू रहे समाइ ॥१५३॥

२. सुमिरण कौ अँग

दादू नमो नमो निरंजन, नमस्कार गुर देवतह ।
वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ॥१॥

(दादू) नमो नमो निरंजन, नमस्कार गुरदेवतः ।
वंदनं सर्व साधवाः, प्रणामं पारंगतः ॥२॥

एकै अखिर पीव का, सोई सति (सत) करि जौणि ।
राम नाम सत गुर कह्या, सो दादू परवौणि ॥३॥

पहली श्रवन (स्रवन) दुती रसन, तृतीय ह्रिदै गाइ ।
चतुरदसी चेतनि भया, तब रोम-रोम ल्यौ लाइ ॥४॥

दादू नीका नाव है, तीन लोक ततसार ।
राति-दिवस रटिवो करी, रे मन इहै विचार ॥५॥

दादू नीका नौव है, हरि हिरदै न ब्रिसारि ।
मूरति मन मोंहै वसै, सोंसैं सोंस सँभारि ॥६॥

-
- | | |
|---------------|----------------------------------|
| १. दक्षिणा | २. आकाश, अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी |
| ३. सत्- रज-तम | ४. ईश्वर |

दादू साँसैं साँस सँभारतौ, इकदिन मिलिहै आइ।
 सुमिरण पैँडा^१ सहज का, सो गुरि दीया दिखाइ॥७॥
 दादू नीका नाँव है, सो तू हिरदै साखि।
 पाखंड परपंच दूरि करि, (सुनि) साधु जन की साखि॥८॥
 दादू नीका नाँव है, आप कहैं समझाइ।
 और अंरभ सब छाड़ दे, राम नाम ल्यो लाइ॥९॥
 राम-भजन का सोच क्या, करतौ होइ स होइ।
 दादू रॉम सँभालिए, फिरि बूझिए न कोइ॥१०॥
 (दादू कहै) रॉम तुम्हारे नाँव विन, जे मुख निकसै और।
 तौ इस अपराधी जीव कूँ, तीनि लोक कत ठौर॥११॥
 (दादू) छिन-छिन राप (राम) सँभालतौ, जे जीव जाइ त जाव।
 आतम के आधार कूँ, नाँही आँन उपाव॥१२॥
 एक महूरत मन रहै, नाँव निरंजन पास।
 दादू तबही देखतौ, सकल करम का नास॥१३॥
 सहजै ही सब होइगा, गुण इन्द्री का नास।
 दादू राम सँभालतौ, कटे करम के पास॥१४॥
 एक राम के नांव विन, जीव की (कि) जलणि न जाइ।
 दादू केते पचि मुए, करि-करि बहुत उपाइ॥१५॥
 (दादू) एक राम की टेक गहि, दूजा सहजि सुभाइ।
 राम नाँम छाड़ै नहीं, दूजा आवै जाइ॥१६॥
 दादू राम अगाध है, परमिति नाहीं पार।
 अवरन वरन न जानिये, दादू नाँइ^२ अधार॥१७॥
 दादू राम अगाध है, अविगति लखे न कोई।
 नृगुण (त्रिगुण) श्रगुण (सरगुण) का कहै, नाँइ विलंब न होइ॥१८॥
 दादू राम अगाध है, बेहद^३ लख्या न जाइ।
 आदि अंति नहीं जाणिये, नाँउ निरंतन गाइ॥१९॥
 दादू राम अगाध है, अकल अगोचर एक।
 दादू नाँइ विलंबये, साधू कहैं अणैक अनेक॥२०॥

दादू एकै अलह राम है, संग्रथ सौंइ सोइ ।
 मैदे के पकवांन सब, र्बातों ह्मेइ स होइ ॥२१॥
 रॉम-नॉम गुर सबद सौं, रे मन पेलि भरम ।
 निहकरमी सौं मन मिल्या, दादू कारि करम ॥२२॥
 दादू श्रगुण (सरगुण) नृगुण (त्रिगुण) द्वै रहे, जैसा हो तैसा लीन्ह ।
 हरि सुमिरण ल्यौ लाइये, का जॉणौ का कीन्ह ॥२३॥
 दादू सिरजनहार के, केते नॉव अनंत ।
 चिति आवै सो लीजिए, यूँ साधू सुमिरैं संत ॥२४॥
 दादू जिनि प्रॉण प्यँड हमकूँ दीया, अंतरि सेवै ताहि ।
 जे आवै औसाण^१ सिरि, सोई नॉव संबाहि ॥२५॥
 दादू औसा कौण अभागिया, कछू दिढ़ावै और ।
 नॉव बिनां पग धरन कूँ, कहौ कहाँ है ठौर ॥२६॥
 दादू निमख न न्यारा कीजिए, अंतर थैं उरि नाम ।
 कोटि पतित पावन भये, केवल कहतों राम ॥२७॥
 दादू जे तैं इब^२ जाण्यो नही, राम-नाम निज सार ।
 फिरि पीछै पछिताहिगा, रे मन मूढ़ गँवार ॥२८॥
 दादू रॉम सँभालि ले, जब लग (लגי) सुखी सरीर ।
 फिरि पीछे पछिताहिगा, जब तन-मन धरै न धीर ॥२९॥
 दुख-दरिया^३ संसार है, सुख का सागर राम ।
 सुख-सागर चलि जाईए, दादू तजि बेकॉम ॥३०॥
 दरिया यहु संसार है, तामै राम-नाम निज नाव ।
 दादू ढील न कीजिये, यहु औसर यहु डाव^४ ॥३१॥
 दादू मेरे संसा को नही, जीवण-मरण का रॉम ।
 सुपिणै ही जिनि बीसरैं, मुखि हिरदै हरिनाम ॥३२॥
 दादू दुखिया जब (तब) लगै, जब लग नॉव न लेह ।
 तब ही पावन परम सुख, मेरी जीवनि एह ॥३३॥
 कछू न कहावै आपकूँ, सौंई कूँ सेवै ।
 दादू दूजा छाड़ि सब, नॉउ निज लेवै ॥३४॥

१. अवसान, अन्तिम समय २. अब ३. समुद्र
 ४. दाव

जे चित चिहँटै^१ रामसौ, सुमिरण मन लागै ।
 दादू आतम—जीव का, संसा सब भागै ॥३५॥
 दादू पीव का नॉव ले, तौ मिटै सिरि (सिर) साल ।
 घड़ी महरत चालणों^२, कैसी आवै काल ॥३६॥
 दादू औसरि जीवतों, कहा न केवल राम ।
 अंतकाल हम कहेंगे (जब) जम वैरी सौं काम ॥३७॥
 दादू ऐसे मंहगे मोल का, एक स्वॉस (सॉस) जे जाइ ।
 चौदह लोक समान सो, काहे रेत मिलाइ ॥३८॥
 सोई सास (सॉस) सुजॉण नर, सॉई सेती लाइ ।
 करि साटा^३ सिरजनहार सौं, ज्यूँ मंहगे मोल विकाइ ॥३९॥
 जतन करै नहीं जीवका, तन—मन पवना फेर ।
 दादू मंहगे मोल का, दोइ (द्वै) दोबटी^४ एक(इक) लेर^५ (सेर) ॥४०॥
 (दादू) रावत^६ राजा राम का, कदे न विसारी नॉव ।
 आतम रॉम सँभालिये, (तौ) सूवस (सुबास) काया गॉव ॥४१॥
 (दादू) अहनिसि सदा सरीर मैं, हरि चिंतत दिन जाइ ।
 प्रेम मगन लैलीन मन, अंतर—गति ल्यौलाइ ॥४२॥
 निमख एक न्यारा नहीं, तनमन मंझि समाइ ।
 एक अंगि लागा रहै, ताकूँ काल न खाइ ॥४३॥
 दादू प्यंजर प्यंड सरीर का, सुवटा^७ सहजि समाइ ।
 रमिता^८ सेती रमि रहै, विमलि विमलि जस गाइ ॥४४॥
 अविनासी सौं एक द्वै (ह्वै) निमख न इत—उत जाइ ।
 बहुत बिलाई^९ क्या करै, (जे) हरि—हरि सबद सुणाइ ॥४५॥
 (दादू जहाँ) रहों तहाँ राम सौं, भावै कंदलि जाइ ।
 भावै गिर परवृति रहों, भावै गृह (गेह) बसाइ ॥४६॥
 भावै जाइ जलहरि रहों, भावै सीस नवाइ ।
 जहाँ—तहाँ हरि नॉव सौं, हिरदै हेत लगाइ ॥४७॥
 (दादू) राम कहे सब रहत है, नख—सिख सकल सरीर ।
 राम कहे बिन जात है, समझी सनवों बीर ॥४८॥

१.	तल्लीन हो जाये	२.	चलना	३.	सट्टा
४.	धोती	५.	सेर भर अन्न	६.	राजपुत्र
७.	तोता	८.	रमणशील	९.	बिल्ली

दादू राम कहें सब रहत है, लाहा^१ मूल^२ सहेत ।
 राम कहें बिन जात है, मूरिख मनवों चेत ॥४६॥
 (दादू) रॉम कहें सब रहत है, आदि अंति (अंत) लों सोइ ।
 राम कहे बिन जात है, यहु मन बहुरि न होइ ॥५०॥
 (दादू) रॉम कहे सब रहत है, जीव-बह्मा की लार^३ ।
 रॉम कहे बिन जात है, रे मन हो हुसियार ॥५१॥
 दादू रॉम कहे सब रहत है, नख सख सकल सरीर ।
 राम कहें बिन जात है, समझी मनवों बीर ॥५२॥
 हरि भजि साफल^४ जीवणों, पर उपगार सँमाहि ।
 दादू मरण तहाँ भला, जहाँ पसु पंखी खाइ ॥५३॥
 (दादू) रॉम सबद मुखि ले रहे, पीछे लागा जाइ ।
 मनसा-वाचा-क्रमनों, तिहि तति सहज समाइ ॥५४॥
 (दादू) रचि-मचि लागै नाँव सौं, राते माते होइ ।
 देखेंगे दीदार कूँ, सुख पावेंगे सोइ ॥५५॥
 दादू सेवैं सब भला, बुरा न कहिये कोइ ।
 सारों^५ माँहै सो बुरा, जिहि घटि नांव न होइ ॥५६॥
 दादू जियरा राम विन, दुखिया इहि संसार ।
 उपजै विनसै खपि मरै, दुख-सुख बारंबार ॥५७॥
 रॉम नाम रूचि ऊपजै, लेवै हित चित लाइ ।
 दादू सोई जीयरा^६, काहे जम पुरि जाइ ॥५८॥
 (दादू) नीकी बरियों आइ करि, राम जपि(जप) लीन्हा ।
 आतम साधन सोधि करि, कारिज भल कीन्हा ॥५९॥
 (दादू) अगम वस्त पांनै पड़ी, राखी मंझि छिपाइ ।
 छिन-छिन सोई संभालिये, मति वे वीसरि जाइ ॥६०॥
 दादू उजल नृमला (त्रिमला), हरि रंगि राता होइ ।
 काहे दादू पचि मरै, पांणी सेती धोइ ॥६१॥
 सरीर सरोवर राम जल, मांहैं संजम सार ।
 दादू सहजै सव गये, मनके मैल बिकार ॥६२॥

१.	लाभ, ब्याज	२.	मूल धन	३.	पंक्ति
४.	सफल	५.	सब	६.	प्राण

दादू राम—नामं जलं कृत्वा, स्नानं सदा जितः ।
 तन—मन—आत्म नृमल पंचभू पापं गतः ॥६३॥
 दादू उत्तिम इंज्री — निग्रहं, मुच्यते माया मनः ।
 परम पुरिख पुरातनं, चिंतते सदा तनः ॥६४॥
 दादू रामरसनामं जलं कृत्वा, स्नानं सर्वदा जितः ।
 तनं—मनं—आत्म निर्मलं, पंचभूतेन पापं गतः ॥६५॥
 दादू उत्तम इन्द्रिय—निग्रहं उच्यते माया मनः ।
 परम पुरुष पुरातनं, चिंतयते सर्वदा तनः ॥६६॥
 दादू सब जग विष भरया, त्रिविख नाही (बिरला) कोइ ।
 सोइ त्रिविख होइगा, (जाकै) नौउ निरंजन होइ ॥६७॥
 दादू त्रिविख नौव सौ, तन—मन सहजै होइ ।
 रौम निरोगा करैगा, दूजा नाही कोइ ॥६८॥
 ब्रह्मा भगति जब ऊपजै, (तब) माया भगति बिलाइ^१ ।
 दादू नृमल (त्रिमल) मल गया, ज्यू रबि तिमर नसाइ ॥६९॥
 दादू विषै—विकार सौं, जब लग मन राता ।
 तब लग चीति (चिति) न आबई, त्रिभुवण पति दाता ॥७०॥
 (दादू) का जाणौं कब होइगा, हरि सुमिरण इकतार ।
 का जाणौं कब छाड़िहै, यह मन विषै विकार ॥७१॥
 है सो सुमिरण होता नहीं, नहीं सो कीजै कौम ।
 दादू यह तन यूँ गया, क्यूँ करि पाईये (पाये) राम ॥७२॥
 (दादू) राम—नाम निज वोखदी, काटै कोटि विकार ।
 विखम ब्याधि थैं ऊबरै, काया—कंचन सार ॥७३॥
 (दादू) राम नाम निज मोहनी, जिनि मोहै करतार ।
 सुर—नर—संकर—मुनिजनां, ब्रह्मा सिष्टि विचार ॥७४॥
 निरविकार निज नौवले, जीवनि इहै उपाइ ।
 दादू कृतम (कृतिम) काल है, ताकै निकटि न जाइ ॥७५॥
 मन पवना गहि सुरति सौं, दादू पावै स्वाद ।
 सुमिरण मोंहै सुप घणा, छौंड़ि देहु बकवाद ॥७६॥
 नाम (नौव) सपीड़ा^२ लीजिये, प्रेम भगति गुण गाइ ।
 दादू सुमिरण प्रीति सौं, हेत सहित ल्यौ लाइ ॥७७॥

प्राण कंवल मुखि राम कहि, मन पवनों मुखि राम ।
 (दादू) सुरति मुखि राम कहि, ब्रह्मा सुनि निज ठौम ॥७८॥
 (दादू) कहतौ सुनतौ राम कहि, लेतौ-देतौ राम ।
 खातौ-पीतौ राम कहि, आतम (आत्म) कवल विश्राम(विश्राम) ॥७९॥
 रौम-नौम मैं पैसि करि, रौम नौम ल्यौ लाइ ।
 यहुइ (यहइ) कंत त्रियलोक में, अनत काहे कौ जाइ ॥८०॥
 (दादू) ज्यूं जल पैसे दूध मैं, त्यूं पाणी मैं लूण ।
 औसे आतम राम सौं, मन हठ साधै कूण ॥८१॥
 ना घर भला न बन भला, जहाँ नहीं निज नौउ ।
 दादू उनमनि मन रहै, भला त सोई ठौउ ॥८२॥
 त्रिगुण नाम मई, हिरदै भाव प्रव्रतनं ।
 भर्म कर्म, कलिविखं, माया, मोह कंपितं ॥८३॥
 कालं जालं सोचितं, भयानकं जमं किंकरं ।
 हरिखं मुदितं सतगुरं, दादू अविगत दरसनं ॥८४॥
 त्रिगुण नाममयी, हृदये भाव प्रवर्तनं ।
 भ्रम-कर्म कलिविखं(किलविखं), माया-मोह कंपितं ॥८५॥
 कालं-जालं शोचितं, भयानक यम किंकरं ।
 हर्ष मुरितं सतगुरं, दादू अविगति दर्शनं ॥८६॥
 दादू सब सुख श्रग^१(सरग) पयाल^२ (पाताल) के, तोलि तराजू वाहि ।
 हरि-सुख एक पलक का, ता समि कह्या न जाइ ॥८७॥
 दादू राम नाम सबको कहै, कहिबे बहुत बमेक ।
 येक अनेकौ फिरि मिले, एक समाना एक ॥८८॥
 (दादू) अपणी-अपणी हद मैं, सबको लेवै नौव ।
 जे लागे बेहद^३ सौ, तिनकी मैं बलि जौव ॥८९॥
 दादू कौन पटंतर दीजिए, दूजा नाही कोइ ।
 राम सरीखा राम है, सुमरयांही सुख होइ ॥९०॥
 अपणी जाणै आप गति, ओर न जौणै कोइ ।
 सुमरि-सुमरि रस पीजिए, दादू आणंद होइ ॥९१॥

-
१. स्वर्ग
 २. पाताल
 ३. असीम

दादू सबही वेद-पुरानं पढ़ि, नेटि नांइ (नॉव) निरधार।

सब कुछ इनही माहि है, क्या करिए विस्तार॥६२॥

पढ़ि-पढ़ि थाके पंडिता, किनहु न पाया पार।

कथि-कथ थाके मुनि जनों, दादू नॉइ (नॉव) अधार॥६३॥

(दादू) निगमहि अगम विचारिये, तौऊ पार न आवै।

ताथें सेवग क्या करै, सुमिरण ल्यौ लावै॥६४॥

दादू अलिफ^१ एक अलाह का, जे पढ़ि जाणै कोइ।

कुराण कतेबा इलम सब, पढ़ि करि पूरा होइ॥६५॥

दादू यह तन पिंजरा, माहें मन सूवा।

एकै नॉव अलाह का, पढ़ि हाफिज^२ हूवा॥६६॥

(दादू) नांव लीया (लिया), तब जाणिये, ये तनमन रहै समाइ।

आदि-अंति-मधि एक रस कबहुं छूटि (भूलि) न जाइ॥६७॥

(दादू) एकै दसा अनिन^३ की, दूजी दसा न जाइ।

आपा भूले आन सब, एकै रहै समाइ॥६८॥

दादू पीवै एक रस, बिसरि जाइ सब और।

अविगति यहु गति कीजिये, मन राखौ इहि ठौर॥६९॥

आतम चेतनि कीजिए, प्रेम रस (रस्य) पीवै।

दादू भूलै देह गुण, ऐसे जन जीवै॥७०॥

कहि-कहि केते थाके दादू, सुणि-सुणि कहु क्या लेई।

लूण मिलै गलि पाँणिया, तासनि चित यूँ देही॥७१॥

दादू हरिरस पीवतों, इती बिलंम न लाइ।

बारंबार संभालिये, मतिवै बीसरि जाइ॥७२॥

नॉव न आवै तन दुखी, आयें सुख संतोष।

दादू सेवग राम कों, ताकै हरखि न सोक॥७३॥

दादू जागत सुपिना है गया, चिंतामणि^४ जब जाइ।

तबही साचा होत है, आदि-अंति उर लाइ॥७४॥

मिलै त सब सुख पाइए, बिछुरे बहु दुख होइ।

दादू दुख-सुख राम कों, दूजा नाही कोइ॥७५॥

१. अरबी वर्णमाला का पहला वर्ण, अल्लाह का के नाम का पहला वर्ण

२. जिसने कुरान शरीफ कंठस्थ कर ली हो

३. अन्य

४. इच्छापूरक मणि

दादू हरि का नाँव जल, मैं मीन ता मॉहि ।
 संगि सदा आनंद करै, बिछुरत ही मरि जॉहि ॥१०६॥
 दादू राम बिसारि करि, जीवै किहि आधार ।
 ज्यू चात्रिग जल बँद कौ, करै पुकार—पुकार ॥१०७॥
 हम जीवै इहि आसिरै, सुमिरण के आधार ।
 दादू छिटकै हाथ थैं, तो हम कूँ वार न पार ॥१०८॥
 दादू नाँव निमति रामहि भजे, भगति निमति भजि सोइ ।
 सेवा निमति सोइ भजे, सदा सजीबनि होइ ॥१०९॥
 (दादू) राम रसॉइण नित चवै, हरि है हीरा साथि ।
 सो धन मेरे साईयाँ, अलख खजीना^१ हाथि ॥११०॥
 हिरदै राम रहै जा जनकै, ता कूँ ऊरौ^२ कौण कहै ।
 अठसिधि^३ नवनिधि^४ ताकै आगैं, सनमुख सदा रहै ॥१११॥
 बंदित तिन्यू लोक^५ 'बापुरौ'^६, कैसैं दरस लहै ।
 नाँव निसाण^७ सकल जग ऊपरि दादू देखत है ॥११२॥
 दादू सब जग नीधना, धनवंता नहीं कोइ ।
 सो धनवंता जाणिए, जाकै राम पदारथ होइ ॥११३॥
 दादू आणंद आतमां, अबिनासी कै साथि ।
 प्राणनॉथ हिरदै बसै, (तौ) सकल पदारथ हाथि ॥११४॥
 (दादू) संग ही लागा सब फिरै, रामनाम कै साथि ।
 प्राणनाथ हिरदै बसै, (तौ) सकल पदारथ हाथि ॥११५॥
 (दादू) भावै तहाँ छिपाईए (छिपाइये) साच न छाना होइ ।
 सेस रसातलि गगन धू, प्रगट कहिए सोइ ॥११६॥
 (दादू) कहाँ था नारद मुनिजनां, कहाँ भगत प्रहलाद ।
 प्रगट तीन्यू लोक मैं, सकल पुरारैं साध ॥११७॥
 (दादू) कहाँ सिव बैठा ध्यान धरि, कहाँ कबीरा नॉम ।
 दादू छाँना^८ क्यूँ रहै, जेर कहेंगें रॉम ॥११८॥
 कहाँ लीन सुखदेव था, कहाँ पीप रैदास ।
 दादू साचा क्यूँ छिपै, सकल लोक प्रकास ॥११९॥

१.	खजाना	२.	अन्य	३.	अड़सठ तीर्थ
४.	नवनिधियाँ	५.	पृथ्वी, आकाश, पाताल		
६.	बेचारा	७.	झंड़ा	८.	अलग—अलग

दादू कहों था गोरख भरथरी, अनंत सिधौं का मंत ।
 प्रगट गोपीचंद है, दत्त कहै सब संत ॥१२०॥
 अगम-अगोचर राखिये, करि-करि कोटि जतन ।
 दादू छौंनों क्यूँ रहै, जिस घटि रॉम रतन ॥१२१॥
 दादू श्रग (सरग) पयाल मैं, साचा लेवै नौउ ।
 सकल लोक सिरि देखिए, प्रगट सबही ठौउ ॥१२२॥
 दादू सुमिरण का सौंसा रह्या, पछितावा मनमौहि ।
 दादू मीठा रॉमरस, **सगला**^१ पीया नाहि ॥१२३॥
 दादू जैसा नांव था, तैसा लीया नाहि ।
हौंस^२ रही या जीव मैं, पछितावा मनमाहिं ॥१२४॥
 दादू सिरि करवत **बहै**^३, बिसरै आतम रॉम ।
 माहि कलेजां काटिये, जीव नहीं विश्राम ॥१२५॥
 दादू सिरि करवत बहै, राम रिदै थै जाइ ।
 माहि कलैजा काटिए, काल दसौं दिसि खाइ ॥१२६॥
 दादू सिरि करवत वहै, अंग परस नहीं होइ ।
 माहि कलेजा काटिए, यहु बिथा न जाणै कोइ ॥१२७॥
 दादू सिरि करवत वहै, नैनहुं निरखै नाहिं ।
 माहि कलेजा काटिए, (यहु) साल रह्या मन माहिं ॥१२८॥
 जेता पाप सब जग करै, तेता नॉम बिसारै होइ ।
 दादू रॉम संभालिए, तौ एता डारै धोइ ॥१२९॥
 दादू जब ही बिसारिए, तब ही मोटी मार ।
 खंड-खंड करि नाखिये, बीज पड़े तिहि वार ॥१३०॥
 दादू जबही रॉम बिसारिए, तबही झंपै काल ।
 सिर ऊपरि करवत वहै, आइ पड़े जम जाल ॥१३१॥
 दादू जबही रॉम बिसारिये, तबही मंझ बिनास ।
 पगि-पगि परलै प्यंड पड़ै, प्राणी जाइ निरास ॥१३२॥
 दादू जबही राम बिसारिए, तबही **हानी**^४ होइ ।
 प्राण प्यंड श्रवस (सरवस) गया, सुखी न देख्या कोइ ॥१३३॥

 १. सम्पूर्ण

३. सिर पर करौत चलाना

२. हुमस, तीव्र इच्छा

४. हानि

साहिब जी के नाँउ में, बिरहा पीउ पुकार।
 तालाबेली^१ रोवणों, दादू है दीदार।।१३४।।
 साहिब जी के नाँव में, भाव भगति बेसास।
 लै समाधि लागा रहै, दादू सौई पास।।१३५।।
 साहिब जी के नाँव में मति-बुधि-ग्यों बिचार।
 प्रेम-प्रीति सनेह-सुख,, दादू जोति अपार।।१३६।।
 साहिब जी के नाँव में सब कुछ भरे भंडार।
 नूर^२ तेज अनंत है, दादू सिरजनहार।।१३७।।
 जिसमें सब कुछु सो लीया, निरंजन का नाँउ।
 दादू हिरदै राखिए, मैं बलिहारी जौऊ।।

३. बिरह कौ अंग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह।।१।।
 रतिवंती आरति करै, राम सनेही आव।
 दादू औसरि इब मिलै, यहु विरहनि का भाव।।२।।
 पीव पुकारै बिरहनीं, निस दिन रहै उदास।
 रॉम रॉम दादू कहै, तालाबेली प्यास।।३।।
 मन-चित चात्रिग ज्यूं रटै, पीव-पीव लागी प्यास।
 दादू दरसन कारनै, पुरवहु^३ मेरी आस।।४।।
 (दादू) बिरहिणि दुख कासनि कहै, कासनि^४ देइ संदेस।
 पंथ निहारत पीव का, बिरहिणि पलटे केस।।५।।
 (दादू) विरहनि दुख कासनि कहै, जानत है जगदीस।
 दादू निसदिन बिहरिहै, बिरहा करवत सीस।।६।।
 बिरहनि रोवै राति-दिन, झूरै (झुरै) मन ही मॉहि।
 दादू औसर चलि गया, प्रीतम पाया नॉहि।।७।।
 दादू विहनि क्रूलै^५ (कुरलै) कुंज^६ ज्यूं, निसदिन तलफत जाइ।
 राम सनेही कारनै, रोवत रैनि बिहाइ।।८।।

-
१. तड़प २. प्रकाश, अल्लाह को प्रकाश रूप कहा गया है।
 सैकड़ों सूर्यों के प्रकाश के समान प्रकाश वाला
 ३. पूरी करे ४. किससे ५. विलाप करती है
 ६. क्रौंच पक्षी

पासैं, बैठा सब सुणै, हमकूँ ज्वाब न देइ ।
 दादू तेरे सिरि चढ़ै, जीव हमारा लेइ ॥६॥
 सबको सुखिया देखिए, दुखिया नाही कोइ ।
 दुखिया दादू दास है, अैन परस नही होइ ॥१०॥
 साहिब मुखि बोलै नहीं, सेवग फिरै उदास ।
 यहु वेदन जीय मैं रहे, दुखिया दादू दास ॥११॥
 (पिव) पीव बिन पल-पल जुग भया, कठिन दिवस क्यूँ जाइ ।
 दादू दुखिया रॉम विन, काल-रूप सब खाइ ॥१२॥
 दादू इस संसार मैं, मुझसा दुखी न कोइ ।
 राम-मिलन कै कारनै, मैं जल-भरिया रोइ ॥१३॥
 ना बहु मिलै न मैं सुखी, कहु क्यूँ जीवनि होइ ।
 जिनि मुझ कूँ घाइल कीया (किया), मेरी दारू^१ सोइ ॥१४॥
 दरसन कारनि विरहनी (बिरहिणी), वैरागणि होवै ।
 दादू विरह विद्योगनी (वियोगनी), हरि मारग जोवै ॥१५॥
 अति गति आतुर मिलन कौं, जैसैं जल बिन मीन ।
 सो देखै दीदार कूँ, दादू आतमलीन ॥१६॥
 राम बिछोही बिरहनी, फिर मिलन न पावै ।
 दादू तलफै मीन ज्यूँ, तुझ दया न आवै ॥१७॥
 (दादू) जब लग सुति सिमटै नहीं, मन निहचल नहीं होहि ।
 तब लग पिव परसै नहीं, बन्दी बिपति इह मोहि ॥१८॥
 (ज्यूँ) अमली कै चिति अमल है, सुरे कै संग्राम ।
 त्रिधन के चिति धन बसै, त्यूँ दादू के मनि राम ॥१९॥
 (ज्यूँ) चात्रिग के चिति जल बसे, ज्यूँ पॉणी बिन मीन ।
 जैसे चंद चकोर है, अैसे (दादू) हरि सौं कीन ॥२०॥
 (ज्यूँ) कुंजर कै मनि बन बसै, अनल पंखि आकास ।
 (यौं) दादू का मन राम सौं, ज्यूँ बैरागी बनखंडि वास ॥२१॥
 भौरा लुबधी बास का, मोह्या नाद कुरंग ।
 (यूँ) दादू का मन राम सौं, ज्यूँ दीपक जोति पतंग ॥२२॥
 श्रवणां (स्रवणां) राते नाद सौं, नैनों राते रूप ।
 जिभ्या राती स्वाद स्यूँ, (त्यूँ) दादू एक अनूप ॥२३॥

देह पियारी जीव कूँ, निस दिन सेवा मॉहि ।
 दादू जीवण मरणलौं, कबहूँ छाड़ै नांहि ।।२४।।
 देह पियारी जीव कूँ, जीव पियारा देह ।
 दादू हरिरस पाईये(पाइये), जे अैसा होइ सनेह ।।२५।।
 (दादू) हरदम मैं दीवान, सेज हमारी पीव है ।
 देखौं सो सुबहान^१, ए इसक हमारा जीव है ।।२६।।
 दादू हरदम मॉहि दिवान, कहूँ दरुनै^२ दरद सँ ।
 दरद दरुनै जाइ, जब देखूँ दीदार^३ कौं ।।२७।।
 दादू दरु (नै) दरदबंद^४, यहु दिलि दरद न जाइ ।
 हम दुखिया दीदार के, मिहरबान^५ दिखलाइ ।।२८।।
 भूए पीउ पुकारतौं, वैद न मिलिया आइ ।
 दादू थोड़ी बात थी, जे दुर्क^६ दरस दिखाइ ।।२९।।
 दादू मैं भिख्यारी मँगिता, दरसन देहु दयाल ।
 तुम दाता दुख-भंजिता, मेरी करहु संभाल ।।३०।।
 क्या जीए मैं जीवणों, बिन दरसन बेहाल ।
 दादू सोई जीवणों, (जे) प्रगट प्रसन लाल ।।३१।।
 इहि जगि जीवन सो भला, जब लग हिरदै रॉम ।
 रॉम बिना जे जीवणों, सो दादू बेकॉम ।।३२।।
 दादू कहु दीदार की, सॉई सेती बात ।
 कब हरि दरसन देहुगे, यहु औसर चलि जात ।।३३।।
 बिथा तुम्हारे दरस की, मॉहि ब्यापै दिन रात ।
 दुखी न कीजै दीण (दीन) कूँ, दरसन दीजै तात ।।३४।।
 दादू (इस) हियड़े ए साल, पीय बिन क्यूँ ही न जाइसी ।
 जब देखूँ मेरा लाल, (तब) रोम-रोम सुख आइसी ।।३५।।
 तू (है) तैसा प्रकास (परकास) करि, अपणों आप दिखाइ ।
 दादू कूँ दीदार दे, बलि जॉउ बिलम न लाइ ।।३६।।
 (दादू) पीव जी देखै मुझकौ, हों भी देखूँ जीव ।
 हूँ देखूँ देखत मिलै, तौ सुख पावै जीव ।।३७।।

१.	कवित्र	२.	भीतरी, अन्तरतम	३.	दर्शन
४.	घायल	५.	कृपालु	६.	तनिक

(दादू) तन-मन तुम परि वारणै^१ करि दीजै कै बार।
जे औसी बिधि पाईए, तौ लीजै सिरजनहार॥३८॥

(दादू) दीन दुनी सदिकै^२ करौं, टुक देखण दे दीदार।
तन-मन भी छिन-छिन करौं, भिस्त^३ दोजग^४ की (भी) बार॥३९॥

(दादू) हम दुखिया दीदार के, तूँ दिल थैं दूरि न होइ।
भावै हमकूँ जालि दे, हूणों होइ स होइ॥४०॥

(दादू कहे) जे कुछ दिया हम कूँ, सो सब तुम ही लेहु।
तुम्ह बिन मन मानैं नहीं, दरस आपणों देहु॥४१॥

दूजा कछू मोंगै नहीं, हमकूँ दे दीदार।
तूँ है तबलग एकटग, दादू के दिलदार॥४२॥

(दादू कहे) तूँ है तैसी भगति दे, तूँ है तैसा प्रेम।
तूँ है तैसी सुरति दे, तूँ है तैसा खेम॥४३॥

दादू सदिकै करौं सरीर कौं, बेर बेर बहु भंत।
भाव-भगति हित प्रेम ल्यौ, खरा पियारा कंत॥४४॥

दादू दरसन की रली, हमकूँ बहुत अपार।
का जानूँ कबहूँ मिलै, मेरा प्राण आधार॥४५॥

दादू कारनि कंत कै, खरा दुखी बेहाल।
मीराँ मेरामिहरि करि, दे दरसन दरहाल^५॥४६॥

दादू तालाबेली^६ प्यास बिन, क्यूँ रस पीया जाइ।
बिरहा दरसन दरद सौं, हमकूँ देइ खुदाइ॥४७॥

तालाबेली पीड़ सौं, बिरहा प्रेम-पियास।
दरसन सेती दीजिये, बिलसै दादू दास॥४८॥

(दादू कहैं) हमकूँ अपणों आपदे, इसक^७ महबति^८ दरद^९।
सेज-सुहाग सुख-प्रेम-रस, मिलि खेलैं लाप्रद^{१०}॥४९॥

(दादू) प्रेम भगति माता रहै, तालावेली अंग।
सदा सपीड़ा मन रहैं, राम रमै उन संग॥५०॥

दादू प्रेम-मगन रस पाइए, भगति-हेत रुचि भाव।
बिरह बिसास निज नांव सौं, देव-दया करि आव॥५१॥

१.	न्यौछावर	२.	धर्म और संसार न्यौछाव करूँ
३.	बहिश्त, स्वर्ग	४.	दोजख, नरक
५.	तड़प	६.	प्यार
७.	दरद, दुख	८.	मुहब्बत
९.		१०.	बेपर्दा

गई दसा सब बाहुडै^१, जे तुम्ह प्रगटहु आइ।
 दादू ऊजड़ सब बसै, दरसन देव दिखाइ॥५२॥
 (दादू कहे) हम कसिये क्या होइगा, खिड़द तुम्हारा जाइ।
 पीछे ही पछिताहुगे, ताथैं प्रगटहु आइ॥५३॥
 दादू तौ पीव पाईए(पाइये), करि मंझे बिलाप।
 सुणिहै कबहूँ चित धरि, प्रगट होवै आप॥५४॥
 दादू (तौ) पीव पाइये, भावै प्रीति लगाइ।
 हेजै हरी बुलाइऐ, मोहन मंदिर आव॥५५॥
 दादू तौ पीव पाईये(पाइये), करि साई की सेव।
 काया मॉहि लखाइसी, घट ही भीतरि देव॥५६॥
 दादू (तौ) पीव पाईये, कुसमल^२ है सो जाइ।
 त्रिमल मन करि आरसी, मूरति मॉहि लखाइ॥५७॥
 भीयाँ^३ मेंडा^४ आव घरि बाढ़ी बंता लोइ।
 डुखंडे^५ मुहिडे^६ (बढ़ि) गए, भरां बिछोहे रोइ॥५८॥
 है सो निधि न पाइऐ, नहीं सु है भरपूरि।
 दादू मन मानै नहीं, ताथैं मरिए झूरि॥५९॥
 जिस घटि इसक अलाह का, तिस घटि लोही^७ न मास।
 दादू जीधरे जक नहीं, ससकै सांसै सांस॥६०॥
 रती रबु^८ न बीसरै, मरै संभालि-संभालि।
 दादू सुहदा^९ थीरहै, आसिक^{१०} अलह नालि^{११}॥६१॥
 (दादू) आसिक रबदा^{१२}, सिर भी डेवै लाइ।
 अलह कारिणि आपकों, साँडे^{१३} अंदरि भाहि॥६२॥
 भोरै-भोरैं तन करैं, बंडे^{१४} करि कुरबाण।
 मीठा-कौड़ा ना लगै, दादू तहूँ साँण^{१५}॥६३॥
 (दादू) जब लग सीस न साँपिये, तब लग इसक न होइ।
 आसिक मरणैं ना डरै, पीया (पिया) पियाला सोइ॥६४॥
 तैं डीनों^{१६} ई सभु, जे डीये^{१७} दीदार के।
 उँजे^{१८} लहदी^{१९} अभु, पसाई^{२०} पाण^{२१} के॥६५॥

१. लौटे २. फूल, पुष्प ३. स्वामी, ४-६. हे मेरे स्वामी ! मेरे घर (मन में) आओ। मैं लोक में सुहागिन फिर रही हूँ। मेरे दुख बढ़ गये हैं और मैं वियोग में रो रही हूँ। ७. लहू ८. ईश्वर ९. सीधा १०. प्रेमी ११. साथ १२. रब का १३. मेरा (पं.) १४. चरित्रहीन (पं.) १५. साथ १६. दिया १७. दिये (सिं.) १८. रूप १९. दिखाओ २०. पूरी हो २१. लालसा

बिचो उभो डूरिकरि^१, अंदरि बीया न पाइ।
 दादू रता टिकदों^२ मन महवति^३ लाइ॥६५॥
 दादू इसक महवति मस्त मन; तालिब दर दीदार।
 दोस्त दिल हरदम हजरू, यादिगार हुसियार॥६६॥
 आसिक एक अलाह के, फारिक^४ दुनिया दीन।
 तारिक इस औजूद थैं, दादू याक अकीन॥६७॥
 आसिकों^५ रह^६ कबज करदों, दिल वजों रक्तंद^७।
 अलह आले नूर दीदम, दिलह दादू बंद॥६८॥
 दादू इसक अवाज सौं, ऐसैं कहै न कोइ।
 दरद महवति पाइए, साहिब हासिल होइ॥६९॥
 (दादू) कहों आसिक अलाह के, मारे अपनै हाथ।
 कहों आलम औजूद सौं, कहैं जबों की बात॥७०॥
 दादू इसक अलाह का, जे कबहूँ प्रगटे आइ।
 (तौ) तन-मन-दिल-अरवाह^८ का, सब पड़दा जलि जाइ॥७१॥
 अरबाहे सिजदा कुनंद^९, औजूद रा चिकार^{१०}।
 दादू नूर दादनी^{११}, आसिकों दीदार॥७२॥
 बिरह अगनि तन जारिए, ग्यांन अगनि दौं लाइ।
 दादू नख-सख प्रजलै, तब राम बुझावै आइ॥७३॥
 बिरह अग्नि (अगनि) मैं जारिबा, दरसण कै तार्ई।
 दादू आतुर रोइबा, दूजा कछू नॉही॥७३॥
 साहिब स्यों कछु बल नहीं, जिनि हठ साधै कोइ।
 दादू पीड़ पुकारिए, रोवतों होइ स होइ॥७४॥
 ग्योंन-ध्योंन सब छाड़िदे, जप-तप साधन-जोग।
 दादू बिरहा ले रहे, छाड़ि सकल रसभोग॥७५॥
 जहों विरह तहों और क्या, सुधि-बुधि नॉठे ग्योंन।
 लोक-वेद-मारग तजे, दादू एकै ध्यान॥७६॥
 बिरही जन जीवै नहीं, कोटि कहै समझाइ।
 दादू गहला^{१२} हवै रहे (कै) तलफि-तलफि मरि जाइ॥७७॥

१. दूर २. रुका ३. मुहब्बत ४. इच्छुक ५. आशिक ६. राह
 ७. घुसे ८. आत्माओं ९. करना चाहिए १०. न कि मात्र शरीर से
 ११. अर्न्तदृष्टि देने वाला नूर १२. भारी

दादू तलफै पीड़ सौ, बिरही जन तेरा ।
 ससकै सौई कारणै, मिली साहिब मेरा ॥७८॥
 दादू बिरही पीड़ सौ, पड़या पुकारै मीत ।
 रॉम बिनो जीवै नहीं, पीव-मिलन की चीत ॥७९॥
 पड़या पुकारै पीड़ सौ, दादू बिरही जन ।
 राम-सनेही चिति बसै, और न भावै मन ॥८०॥
 जिस घटि बिरहा राम का, तिस नींद न आवै ।
 दादू तलफै बिरहनी, उस पीड़ जमावै ॥८१॥
 सारा सूरु नींद भरि, सब कोई सोवै ।
 दादू घाइल दरदबंद, जागै अर रोवै ॥८२॥
 पीड़ पुराणी ना पड़े, जे अंतरि बेध्या होइ ।
 दादू जीवण-मरण लौं, पड़या पुकारै सोइ ॥८३॥
 जे कबहूँ बिरहनि मरे, तौ सुरति बिरहनी होइ ।
 दादू पीव पीव जीवतौ, मूवा भी टेरै सोइ ॥८४॥
 अपणी पीड़ पुकारिए, पीड़ पराई नाहिं ।
 पीड़ पुकारै सो भला, (जाकै) करक कलेजै माहि ॥८५॥
 ज्यू जीवत मृतक कारनै, गत करि नाखै आप ।
 यूँ दादू कारनि राम कै, विरही करै बिलाप ॥८६॥
 दादू तलपि-तलपि विरहनि मरै, करि-करि बहुत बिलाप ।
 बिरह अगनि में जरि गई, पीव न पूछै बात ॥८७॥
 (दादू) कहाँ जौउ कौन पै पुकारौं, पीव न पूछै बात ।
 पीव बिन चैन न आवई, क्यूँ मरौं दिन रात ॥८८॥
 (दादू) बिरह-बिवोग न सहि सकौं, मोपै सह्या न जाइ ।
 कोई कहो मेरे पीव कौं, दरस दिखावै आइ ॥८९॥
 (दादू) बिरह बिवोग न सहि सकौं, निसदिन सालै मोहि ।
 कोइ कहाँ मेरे पीव कौ, कब मुख देखौं तोहि ॥९०॥
 (दादू) विरह बिवोग न सहि सकौं, तनमन धरै न धीर ।
 कोई कहौ मेरे पीव कौं, मेटे मेरी पीर ॥९१॥
 (दादू) साधु दुखी संसार में, तुम बिन रह्या न जाइ ।
 औरौं कौं आनंद है, सुख सौं रैन बिहाइ ॥९२॥
 दादू लाइक हम नहीं, हरि के दरसण जोग ।
 बिन देखे मरि जाहिंगे, पीव के बिरह बिवोग ॥९३॥

दादू सुख साईं सौं और सबै ही दुख ।
 देखैं दरसण पीव का, तिनही लागें सुख ॥६४॥
 चंदन सीतल चंद्रमा, जल सीतल सब कोइ ।
 दादू बिरही रॉम का, इनसूँ कदे न होइ ॥६५॥
 दादू घाइल **दरदबंद**^१, अंतरि करै पुकार ।
 साँई सुणै सब लोक मैं, दादू यहु अधिकार ॥६६॥
 दादू जागै जगतगुर, जगु सगला सोवै ।
 बिरही जागै पीड़ सौं, जे घाइल होवै ॥६७॥
 विरह अगिन का दाग दे, जीवत मृतक **गोर**^२ ।
 दादू पहली घर कीया, आदि हमारी ठौर ॥६८॥
 दादू देखैं का अचिरज नहीं, अणदेखैं का होइ ।
 देखे ऊपरि दिल नहीं, अणदेखैं कौं रोइ ॥६९॥
 (दादू) पहली आगम बिरह का, पीछैं प्रीति प्रकास ।
 प्रेम-मान लैलीन मन, तहाँ मिलन की आस ॥७०॥
 बिरह बिवोगी मन भला, साँई का वैराग ।
 सहज संतोखी पाइए, दादू मोटे भाग ॥७१॥
 (दादू) त्रिखा बिना (तनि) प्रीति न उपजै, सीतल निकटि जल धरिया ।
 जनम लगै जीव पुणिग न पीवै, नृमल दह दिसि भरिया ॥७२॥
 (दादू) खुध्या बिना (तनि) प्रीति न उपजे, बहुबिधि भोजन नेरा ।
 जनम (लगै) जीव रती न चाखै, पाक पूर बहुतेरा ॥७३॥
 (दादू) तपति बिना (तनि) प्रीति न उपजै, संगही सीतल छाया ।
 जनम लग जीव जाणै नाही, तरवर त्रिभुवण राया ॥७४॥
 (दादू) चोट बिना (तनि) प्रीति न उपजे, वोखद अंगि रहंत ।
 जनम (लगै) जीव पलक न परसे, बुंटी अमर अनंत ॥७५॥
 (दादू) चोट न लागी बिरह की, पीड़ न उपजी आइ ।
 जागि न रूनों **धाह**^३ दे, सोवत गई बिहाइ ॥७६॥
 दादू पीड़ न ऊपजी, ना हम करी पुकार ।
 ता थैं साहिब ना मिल्या, दादू बीती बार ॥७७॥
 अंदरि पीड़ न ऊभरै, बाहरि करे पुकार ।
 दादू सो क्यूँ करि लहै, साहिब का दीदार ॥७८॥

मन ही माँहै झूरणों^१, रोवै मन ही माँहि ।
 मन ही माँही धाह दे, दादू बाहरि नाहिं ।।१०६।।
 बिन ही नैनो रोवणों, बिन मुख पीड़ पुकार ।
 बिन ही हाथूँ पीटणा, दादू बारंबार ।।११०।।
 प्रीति न उपजै बिरह बिन, प्रेम भगति क्यूँ होइ ।
 सब झूठी (दादू) भाव बिन, कोटि करै जे कोइ ।।१११।।
 दादू बातों बिरह न ऊपजै, बातों प्रीति न होइ ।
 बातों प्रेम न पाइए, जिनि रे पतीजे कोइ ।।११२।।
 दादू तौ पिव पाइये, कसमल है सो जाइ ।
 निरमल मन करि आरसी, मूरति माँहिं लखाइ ।।११३।।
 दादू तौ पिव पाइये, करि मंझे बीलाप ।
 सुनि है कबहुँ चित धरि, परघट होवै आप ।।११४।।
 दादू तौ पिव पाइये, करि साई की सेव ।
 काया माँहि लखाइसी, घट ही भीतर देव ।।११५।।
 दादू तौ पिव पाइये, भावै प्रीति लगाइ ।
 हेजै हरी बुलाइये, मोहन मंदिर आइ ।।११६।।
 (दादू) जाके जैसी पीड़ है, सो तेसी करै पुकार ।
 को सुखिम को सहज मैं, को मृतक तिहिं बार ।।११७।।
 दरदहि बूझै दरदबंद, जाकी दिलि होवै ।
 क्या जाणै (दादू) दरद की, नींद भरि सोवै ।।११७।।
 (दादू) कर बिण सर बिण कमाण बिण, मार खँचि कसीस ।
 लागी चोट सरीर मैं, नखसख सालै सीस ।।११८।।
 (दादू) मलका मारै भेद सौं, सालै मंझि परौण ।
 मारणहारा जाणि है, के जिहिं लागा बाँण ।।११९।।
 (दादू) सो सर हमकूँ मारि ले, जिहिं सरि मिलिए जाइ ।
 निसदिन मारग देखिए, कबहुँ लागै आइ ।।१२०।।
 जिहि लागी सो जागिहै, बेध्या करै पुकार ।
 दादू पंजरि पीड़ है, सालै बारंबार ।।१२१।।
 (दादू) बिरही ससके पीड़ सौं, ज्यूँ घाइल रिण माँहि ।
 प्रीतमि मारै बाण भरि, दादू जीवै नाँहि ।।१२२।।

(दादू) बिरह जगावै दरद कौं, दरद जगावे जीव ।
जीव जनावै सुरति कौं, पंच पुकारै पीव ॥१२३॥

(दादू) सहजें मनसा मन सधै, सहजें पवना सोइ ।
सहजें पंचू थिर भए, (जे) चोट विरह की होइ ॥१२४॥

दादू मारे प्रेम सौं, बेधे साध सुजाण ।
मारणहारों कूँ मिले, दादू बिरही बाण ॥१२५॥

दादू मारणहारों रहि गया, जिहि लागी सो नाहिं ।
कबहुँ सो दिन होइगा, यहु मेरे मन माहिं ॥१२६॥

प्रीतमि मारे प्रेम सँ, तिनकूँ क्या मारै ।
दादू जारे विरह के, तिनकूँ क्या जारै ॥१२७॥

काया माहैं, क्यूँ रह्या, बिण देखे दीदार ।
दादू बिरही बावरा, मरै नहीं तिहि बार ॥१२८॥

विन देखें जीवै नहीं, बिरहे का सहिनाँण^१ ।
दादू जीवै जब लगे, तब लग बिरह न जाँण ॥१२९॥

रोम-रोम रस प्यास है, दादू करहिं पुकार ।
राम-घटा-दल उमंगि करि, वरखहु सिरजनहार ॥१३०॥

प्रीति जु मेरे पीव की, पैठी पंजर माँहि ।
रोम-रोम पीव पीव करै, दादू दूसर नाँहि ॥१३१॥

सब घट श्रवना (स्रवणों) श्रुति सौं, सब घट रसनों बैन ।
सब घट नैना हवै रहे, दादू बिरहा अँन ॥१३२॥

राति-दिवस का रोवण, एहर पलक का नाहिं ।
रोवत रोवत मिलि गया, दादू साहिब माँहि ॥१३३॥

दादू नैन हमारे बावरे, रोवै नहीं दिन-राति ।
सौँई सँग न जागही, पीव क्यूँ पूछै बात ॥१३४॥

(दादू) नैनहु नीर न आईया, क्या जाणै ए रोइ ।
असैं ही करि रोइए, साहिब नैनौं जोइ ॥१३५॥

(दादू) नैन हमारे ढीठ हैं, नाले^२ नीर न जाँहि ।
सूकाँ^३ सराँ^४ सहेत वे, करँक^५ भए गलि माँहि ॥१३६॥

१. निशान, चिन्ह, सज्ञान (पहचान)

२. साथ

३. सखे

४. तालाबों के,

५. सूखा पत्थर, चमड़ा

(दादू) विरह प्रेम की लहरिमैं, यहू मन पंगुल होइ ।
राम—नाम मैं गलि गया, जौणैं विरला कोइ ।।१३७।।

विरह—अगनि मैं गलि गए, मन के मैल—बिकार ।
तार्थैं पंगुल हवै रह्या, दादू दर दीवार ।।१३८।।

(दादू) जब बिरहा आया दरद सौं, तब मीठा लागा रौम ।
काया लागी काल हवै, कड़वे लागे कौम ।।१३९।।

जब राम अकेला रहि गया, तन—मन गया बिलाइ ।
दादू बिरहनि जब सुणे, दरस—परस मिली जाइ ।।१४०।।

दादू पड़दौ पलक का, एता अंतर होइ ।
दादू बिरही रौम बिन, क्यूँ करि जीवै सोइ ।।१४१।।

जे हम छाड़ै रौम कौं, तौ रौम न छाड़ै ।
दादू अमली^१ अमल^२ थै, मन क्यूँ करि काढ़ै ।।१४२।।

बिरहा पारस जब मिलै, तब बिरहनि विरहा होइ ।
दादू परसै विरहनी, पीव पीव टेरै सोइ ।।१४३।।

आसिक मासूक हवै गया, इसक कहावै सोइ ।
दादू उस मासूक का, अलह आसिक होइ ।।१४४।।

रौम बिरहनी हवै रह्या, बिरहनि हवै गई रौम ।
दादू बिरहा बिरहा बापुरा, ऐसै करिगा कौम ।।१४५।।

बिरह—बिचार ले गया, दादू हमकूँ आइ ।
जहां अगम अगोचर रौम था, तहाँ बिरह बिना को जाइ ।।१४६।।

बिरहा बपुरा आइ करि, सोवत जगावै जीव ।
दादू अँगि लगाइ करि, ले पहुँचावै पीव ।।१४७।।

विरहा मेरा मीत है, बिरहा बैरी नौहि ।
बिरहे कूँ बैरी कहै, सो दादू किस मॉहि ।।१४८।।

बिरह अगिन मैं ललि गए, मन के मैल—विकार ।
दादू विरही पीव का, देखैगा दीदार ।।१४९।।

(दादू) इसक अलह की जाति है, इसक अलह का अंग ।
इसक अलह औजूद है, इसक अलह का रंग ।।१५०।।

दादू प्रीतम के अंग परसिए, मुझ देखण का चाव ।
तहाँ ले सीस नवाइए, जहाँ धरे थे पाव ।।१५१।।

१. अमल करने वाला २. अमल, पालन

(दादू) बाट विरह की सोधि करि, पंथ-प्रेम का लेहु।
ले के मारगि जाइए, दूसर पौव न देहु।।१५१।।

विरहा (बेगा) भगति सहज मैं, आगैं पीछैं जाइ।
थोरे माँहैं बहुत है, दादू रहु ल्यौ लाइ।।१५२।।

बिरहा वेगा ले मिले, तालावेली पीर।
दादू मन घाइल भया, सालै सकल सरीर।।१५३।।

आग्या अपरंपार की, बसि अंबर भरतार।
हरे पटंवर पहरि करि, धरती कीए सिंगार।।१५४।।

बसुधा सब फूलै-फलै, प्रिथमी अणंत अपार।
गगन गरजि जलथल भरे, दादू जैजैकार।।१५५।।

(दादू) काला मुँह करि काल का, साँई सदा सुकाल।
मेह तुम्हारै घरि घणों, वरसहु दीनदयाल।।१५६।।

४. परचा कौ अंग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह।
वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह।।१।।

दादू निरंतरि पीव पाइया, जहाँ पंखी उनमनि^१ (उनमन) जाइ।
सपतौ मंडल भेदिया, अष्टै रह्या समाइ।।२।।

दादू निरंतरि पीव पाइया, जहाँ निगम न पहुँचै वेद।
तेज सरूपी पीव बसै, (कोई) बिरला जाणै भेद।।३।।

(दादू) निरंतरि पीव पाइया, तीनि लोक भरपूरि।
सब सेजों साँई बसै, लोग बतावैं दूरि।।४।।

(दादू) निरंतरि पीव पाइया(पाइया), जहाँ आनंद बारहमास।
हंस सौं प्रम (परम) हंस खेलै सेवग-स्वामी पास।।५।।

(दादू) रंग भरि खेलौं पीव सौं, तहाँ बाजै बेन रसाल।
अकल पाट परि बैठा (स्वामी), प्रेम पिलावै लाल।।६।।

(दादू) रंग भरि खेलूं पीव सौं, सेती दीनदयाल।
निस-बासुरि नहीं (तहाँ) वसै, मानसरोवर पाल।।७।।

(दादू) रंग भरि खेलौं पीव सौं, तहाँ कबहूँ न होइ बिबोग।
आदि पुरिख अंतरि मिल्या, कछू पूरिबला^२ (पुरबले) संजोग।।८।।

(दादू) रंग भरि खेलों पीव सौं, तहाँ बारह मास वसंत ।
सेवग सदा अनंद है, जुगि जुगि देखूँ कंत ॥६॥

(दादू) काया अंतरि पाइया, त्रिकुटी^१ करे तीर ।
सहजै आप लखाईया, व्याप्या सकल सरीर ॥१०॥

(दादू) काया अंतरि पाइया, निरंतरि निरधार ।
सहजै आप लखाईया, ऐसा सम्रथ सार ॥११॥

(दादू) काया अंतरि पाइया, अनहद बेन वजाइ ।
सहजै आप लखाईया, सुनि-मंडल^२ में जाइ ॥१२॥

(दादू) काया अंतरि पाईया, सब देवनि का देव ।
सहजै आप लखाईया, ऐसा अलख अभेव ॥१३॥

(दादू) भँवर कंवल रस बेधिया, सुख-सरवर रस पीव ।
तहाँ हंसा मोती चुणै, पीव देखें सुख जीव ॥१४॥

दादू भँवर कँवल-रस वेधिया, गहे चरन कर हेत ।
पीव जी परसत ही भया, रोम-रोम सब सेत^३ ॥१५॥

(दादू) भंवर कंवल-रस वेधिया, अनत न भरमै जाइ ।
तहाँ वास बिवलंबिया, मगन भया रस खाइ ॥१६॥

(दादू) भंवर कंवल-रस वेधिया, गही जु पीव की वोट ।
तहाँ दलि भँवरा रहै, कौण करै सर चोट ॥१७॥

(दादू) खोजि तहाँ पीव (पिव) पाइए, सबद ऊपनै पास ।
तहाँ एक इकत है, तहाँ जोति-प्रकास ॥१८॥

(दादू) खोजि तहाँ पीव (पिव) पाइए, (जहाँ) चंदन ऊगै सूर ।
निरंतरि निरधार है, तेज रह्या भरपूर ॥१९॥

(दादू) खोजि तहाँ पीव (पिव) पाईए(पाइए), (जहाँ) विण जिभ्या गुण गाइ ।
आदि पुरिख अलेख है, सहजै रह्या समाइ ॥२०॥

दादू खोजि तहाँ पीव पाइए, जहाँ अजरा-अमर उमंग ।
जुहां (जुरौं)-मरण भौ भाजिसी, रखै अपने संग ॥२१॥

दादू गाफिल^४ छोवतै^५ मंझे^६ रबु निहारि ।
मंझेई पीय पाणजौ^७, मंझेई विचारि ॥२२॥

१. माथे का भौंहों के मध्य का भाग । योगी अपनी दोनों पुतलियों से यहाँ ध्यान केन्द्रित करके समाधि लगाते हैं । २. शून्य (आकाश-मण्डल), अल्लाह का घर ३. श्वेत, रक्तहीन ४. गफलत में, खोया-खोया ५. क्यों घूमता ६. भीतर ७. पाओगे

दादू गाफिल छोंवतैं, आहे मंझि मुकांम।
दरिगह मैं दीवोंण तति, पसे न बेठो पोंण॥२३॥

दादू गाफिल छोंवतैं, आहे मंझि अलाह।
पिरी पोंण जौ पाणसैं, लहे सभोई साव॥२४॥

दादू गाफिल छोंवतैं, अंदरि पीरी पसु।
तखत रवाणी विचि मैं, मेरी तिन्ही बसु॥२५॥

हरि चिंतामणि चिंततों, चिंता चित की जाइ।
चिंतामणि चित मैं मिल्या, (तहों) दादू रह्या लुभाइ॥२६॥

अपने नैनों आपकों, जब आतम देखै।
तहों दादू पर आतमों, ताहीकौ पेखै॥२७॥

(दादू) बिन रसना जहां बोलिए, तहों अंतरजामी आप।
विन श्रवणों (श्रवणों)सोंई सुणै, जे कुछ कीजै जाप॥२८॥

ग्यों लहरि जहों थैं उटै, वाणी का प्रकास।
अनभै जहों थैं ऊपजै, सबदै कीया (किया) निवास॥२९॥

सो घर सदा विचारका, तहों निरंजन वास।
तहों तूँ दादू खोजि ले, ब्रह्मा जीव के पास॥३०॥

जहों तन—मन का मूल है, उपजै ओऊँकार।
अनहद सेजा सबद का, आतम करै विचार॥३१॥

भाव—भगति ले ऊपजै, सो ठाहर^१ निज सार।
तहों दादू निधि पाईए (पाइये), निरंतरि निरधार॥३२॥

एक ठौर सूझे सदा, निकटि निरंतरि ठोंउ।
तहों निरंजन मूरि लै, अजरावर तिहि नोंउ॥३३॥

साधूजन क्रीला करें, सदा, सुखी तिहि गोंउ।
चलि दादू उस ठौर की, मैं बलिहारी जोंउ॥३४॥

दादू पसु पिरंनि^२ के, वे ही^३ मंझि कलूब^४।
बेठो आहे विचि मैं, पाणिजौ महबूब॥३५॥
नैनहुँ वाला निरखि करि, दादू घाले हाथ।
तबही पावै रामधन, निकटि निरंजन नाथ॥३६॥

नैनहुँ बिन सूझे नहीं, भूला कतहुँ जाइ।
 दादू धन पावै नहीं, आया मूल गँमाइ॥३७॥
 जहाँ आतम तहाँ राम है, सकल रह्या भरपूर।
 अंतरगति ल्यौ लाइ रहु, दादू सेवग-सूर॥३८॥
 पहली लोचन दीजिए, पीछें ब्रह्म दिखाइ।
 दादू सूझे सार सब, सुख मैं^१ रहे समाइ॥३९॥
 आँधि कै आनंद हुआ (मिल्या), नैनहुँ सूझन लाग।
 दरसन देखै पीव का, दादू मोटे भाग॥४०॥
 दादू मिही महल वारीक है, गाँव न ठाँव न नाँव।
 तासौं मन लागा रहै, मैं बलिहारी जाँउ॥४१॥
 (दादू) खेल्या चाहै प्रेम-रस, आलम अंगि लगाइ।
 दूजे कूँ ठाहर नहीं, पुहप न गंध समाइ॥४२॥
 नाही है करि नाँव ले, कछू न कहाई रे।
 साहिब जी की सेज परि, दादू जाई रे॥४३॥
 जहाँ रॉम तहाँ मैं नहीं, मैं तहाँ नाही रॉम।
 दादू महल वारीक है, द्वै कूँ नाही ठाँम॥४४॥
 मैं नाही तहाँ मैं गया, येकै दूसर नाहिं।
 नाही को ठाहर घणी, दादू निज घर माँहि॥४५॥
 मैं नाँहि तहँ मैं गया, आगे एक अलाव।
 दादू ऐसी बंदगी, दूजा नाँहि आव॥४६॥
 दादू आपा जब लगे, तब लग दूजा होइ।
 जब यहु आपा मिटि गया, तब दूजा नाही कोइ॥४७॥
 (दादू) मैं नाँहि तब एक है, मैं आइ तब दोइ।
 मैं-तैं पड़दा मिटि गया, तब ज्युँ था त्यूँ ही होइ॥४८॥
 दादू है कूँ भै घणों, नाँही कूँ कुछ नाँहि।
 दादू नाही होइ रहु, अपने साहिब माँहि॥४९॥
 तब मन नाही मैं नहीं, नहीं काया नहीं जीव।
 दादू एकै देखिए, दहदिसि मेरा पीव॥५०॥
 (दादू) पाँणी माँहै पैसि करि देखै दिष्टि उघाड़ि।
 जला विंब सब भरि रह्या, ऐसा ब्रह्मा बिचारि॥५१॥

दादू तीनि सुनि आकार की, चौथी त्रिगुण नौउ ।
 सहज सुनि मैं रमि रह्या, जहाँ तहाँ सब ठौउ ॥५२॥
 (दादू) पंच तत^१ के पंच है, आठ तत के आठ ।
 आठ तत का एक है, तहाँ निरंजन हाट ॥५३॥
 (दादू) जहाँ मन माया ब्रह्मा था, गुण इंद्री आकार ।
 तहाँ मन बिरचै सवनि सौं, रचि रहु सिरजनहार ॥५४॥
 काया सुनि पंच का बासा, आतम सुनि प्राण प्रकासा ।
 प्रम (परम) सुनि ब्रह्मा सँ मेला, आगे दादू आप अकेला ॥५५॥
 दादू जहाँ थैं सब ऊपजे, चंद सूर आकास ।
 पौणी पवन पावक कीए, धरती का प्रकास ॥५६॥
 काल करंम जीव ऊपजे, माया मन घट सास ।
 तहाँ रहिता रमिता रॉम है, सहज सुनि सब पास ॥५७॥
 (दादू) सहज सुनि सब ठौर है, सब घट सब ही मॉहि ।
 तहाँ निरंजन रमि रह्या, कोई गुण व्यापै नॉहि ॥५८॥
 दादू तिस सरवर के तीर, सो हंसा मोती चुणै ।
 पीवै नीझर नीर, सो है हंसा सो सुणै ॥५९॥
 दादू तिस सरवर के तीर, संगी सबै सुहावणे ।
 तहाँ बिन कर बाजे बेन, जिभ्याहीणे गावणे ॥६०॥
 दादू तिस सरवर के तीर, चरन कंवल चित लाईया(लाइया) ।
 तहाँ आदि निरंजन पीव, भागि हमारै आईया ॥६१॥
 (दादू) सहज सरोवर आतमा, हंसा करै किलोल ।
 सुख सागर सूभर भर्या, मुक्ताहल मन मोल ॥६२॥
 (दादू) हरि-सरवर पूरण सवै, जित तित पौणी पीव ।
 जहाँ तहाँ जल अँचत्तों, गई त्रिखा सुख जीव ॥६३॥
 सुख सागर सूभर भरया ऊजल नृमल (त्रिमल) नीर ।
 प्यास बिना पीवै नहीं, दादू सागर तीर ॥६४॥
 सुनि सरोवर हंस मन, मोती आप अनंत ।
 दादू चुगि चुगि चंच भरि, यौं जन जीवैं संत ॥६५॥
 सुनि सरोवर मीन मन, नीर निरंजन देव ।
 दादू यहु रस बिलसिए, अँसा अलख अभेव ॥६६॥

सुनि सरोवर मन भँवर, तहाँ कँवल करतार ।
 दादू प्रमल (परिमल) पीजिये, सनमुख सिरजनहार ।।६७।।
 सुनि सरोवर सहज का, तहाँ मरजीवा मन ।
 दादू चुणि-चुणि लेइगा, भीतरि रँम रतन (रतन्न) ।।६८।।
 (दादू) मंझि सरोवर विमलजल, हंसा केलि करौहि ।
 मुकताहल मोती चुगे, तिहिं हंसा डर नॉहि ।।६९।।
 अखंड सरोवर अथग जल, हंसा सरवर नॉहि ।
 निरभे पायो आप घर (इब) उड़ि अनंत न जॉहि ।।७०।।
 दादू दरिया प्रेम का, तामैं झूलैं दोइ ।
 एक आतम पर आतमों, येक मेक रस होइ ।।७१।।
 दादू हिण^१ दरियाव^२ माणिक^३ मंझेई^४ ।
 दुबी^५ डेई^६ पाँण^७ मैं, डिटो^८ हंझेई^९ ।।७२।।
 पर आतम सौ आतमों, ज्यूँ हंस सरोवर मॉहि ।
 मिलि-मिलि खेले पीव सों, दादू दूसर नॉहि ।।७३।।
 दादू सरवर सहज का, तामें प्रेम तरंग ।
 तहाँ मन झूलै आतमों, अपणें सोई सँग ।।७४।।
 दादू देखूँ (निज) पीव कूँ, दूसर देखूँ नॉहि ।
 सबै दिसा सों सोधि करि, पाया घट ही मॉहि ।।७५।।
 दादू देखूँ (निज) पीव कूँ, और न देखूँ कोइ ।
 पूरा देखूँ पीव कूँ बाहरि-भीतरि सोइ ।।७६।।
 दादू देखूँ (निज) पीव कूँ, देखत ही दुख जाइ ।
 हों तौ दुखीं पीव कों, सबमें रह्या समाइ ।।७७।।
 दादू देखूँ (निज) पीव कूँ सोई देखण जोग ।
 प्रगट देखूँ पीव कूँ, कहाँ बतावैं लोग ।।७८।।
 दादू देखूँ दयाल कूँ, सकल रह्या भरपूरि ।
 रोम-रोम मैं रमि रह्या, तूँ जिनि जाणैं दूरि ।।७९।।
 दादू देखूँ दयाल कूँ, बाहरि-भीतरि सोइ ।
 सबदिसि देखूँ पीव कूँ, दूसर नाही कोइ ।।८०।।

१. इस २. दरिया में ३. रत्न (माणिक्य) ४. बीच में
 ५. डुबकी लगाकर ६. लगाने से ७. अपने आप में
 ८. दिखाई दिया ९. हंस (जीव)

दादू देखूँ दयाल कूँ, सनमुख सौँई सार।
 जिधरि देखूँ नैनभरि, तिधरि सिरजनहार॥८१॥
 दादू देखूँ दयाल कूँ रोकि रह्या सब ठौर।
 घटि-घटि मेरा साईयों (साइयों), तूँ जिनि जानैँ और॥८२॥
 सदा लीन आनंद में, सहज रूप सब ठौर।
 दादू देखे एक कूँ, दूजा नाही और॥८३॥
 तन मन नौहिं मैं नहिं, नहीं माया नहिं जीव।
 दादू एकै देखिये, दह दिसि मेरा पीव॥८४॥
 (दादू) पौंणीं मोंहें पैसि करि, देखै दृष्टि उधार।
 जल ब्यंब सब भरि रह्या, ऐसा बह्म बिचार॥८५॥
 (दादू) जहाँ तहाँ साथी संगि है, मेरे सदा अनंद।
 नैन बैन ह्रिदै रहै, पूरन परमानंद॥८६॥
 जागत जगपति देखिए पूरन परमानंद।
 सोवत भी सौँई मिलै, दादू अति आनंद॥८७॥
 दह दिस दीपक तेज के, बिन बाती बिन तेल।
 चहुँ दिस सूरिज देखिए, दादू अद्भुत खेल॥८८॥
 सूरिज कोटि प्रकास है, रोम-रोम की लार।
 दादू जोति जगदीस की, अंत न आवै पार॥८९॥
 ज्यूँ रवि एक अकास है, जैसे सकल भरपूर।
 दादू तेज अनंत है, अलह आले नूर॥९०॥
 सूरिज नहीं तहाँ सूरिज देख्या, चंद नही तहाँ चंदा।
 तारे नहीं तहाँ झिलिमिली देख्या, दादू अति आनंदा॥९१॥
 बादल नहीं तहाँ बरिखत देख्या, सबद नहीं गरजंदा^१।
 बीज^२ नहीं तहा चमकत देख्या, दादू परमानंदा॥९२॥
 ऐसा अचरिज देखिया, बिन बादल बरिखै मेह।
 तहाँ चित चात्रिग है रह्या, दादू अधिक सनेह॥९३॥
 (दादू) जोति चमकै झिलिमिलै, तेजपुंज प्रकास।
 अमृत झरै रस पीजिए, अमर बेलि अकास॥९४॥
 (दादू) अविनासी अंग तेज का, ऐसा तत अनूप।
 सो हम देख्या नैनभरि, सुंदर सहज सरूप॥९५॥

प्रम तेज प्रगट भया, तहाँ मन रह्या समाइ ।
 दादू खेलै पीव सौं, नहीं आवै नहीं जाइ ॥६६॥
 निराधार निज देखिए, नैनहु लागा बंद ।
 तहाँ मन खेलै पीव सौं, दादू सदा अनंद ॥६७॥
 ऐसा एक अनूप फल, बीज^१ बाकुला^२ नॉहि ।
 मीठा त्रिमल एकरस, दादू नैनहुँ मॉहि ॥६८॥
 दादू हीरे हीरे तेज के, सो त्रिखै (निरखै) त्री लोइ ।
 कोइ एक देखै संत जन, और न देखै कोइ ॥६९॥
 नैन हमारे नूरमें, तहाँ रहे ल्यौ लाइ ।
 दादू उस दीदार कूँ, निसदिन नृखत (निरखत) जाइ ॥७०॥
 दादू नैनहु आगैं देखिए, आतम अंतरि सोइ ।
 तेजपुंज सब भरि रह्या, झिलिमिली झिलिमिली होइ ॥७१॥
 दादू अनहद बाजे बाजिए, अमरापुरि^३ वास ।
 जोति सरूपी जगमगे, त्रिखै (निरखै) निज दास ॥७२॥
 प्रम तेज तहाँ मन रहे, प्रम नूर निज देखै ।
 प्रम जोति तहाँ आतम खेलै, दादू जीवन लेखै ॥७३॥
 दादू अलख अलाह का, कहु कैसा है नूर ।
 दादू बेहद हद नहीं, सकल रह्या भरपूर ॥७४॥
 वार पार नहीं नूर का, दादू तेज अनंत ।
 कीमति नहं करतार की, ऐसा है भगवंत ॥७५॥
 त्रिसंध (निरसंध) नूर अपार है, तेज पुंज सब मॉहि ।
 दादू जोति अनंत है, आगे पीछै नॉहि ॥७६॥
 (दादू) खंड-खंड निज नां भया, इकलस^४ एकै नूर ।
 ज्यूँ था त्यूँही तेज है, जोति रही भरपूर ॥७७॥
 प्रम तेज प्रकास है, प्रम नूर निवास ।
 प्रम जोति आनंद मैं, हंसा^५ दादू दास ॥७८॥
 नूर सरीखा नूर है, तेज सरीखा तेज ।
 जोति सरीखी जोति है, दादू खेलै सेज ॥७९॥
 तेज-पुंज की सुंदरी, तेज-पुंज का कंत ।
 तेज-पुंज की सेज परि, दादू चणया बसंत ॥८०॥

१. बीज २. बकल, छिलका ३. इन्द्रपुरी ४. अकेला, एकसा

५. मुक्त पुरुष

(दादू) अमृत धारा देखिए, पार ब्रह्म वरिखंत ।
तेज पुंज झिलिमिली करै, (को) साधू जन पीवंत ॥१११॥

रस ही में रस बरिखिहै, धारा कोटि अनंत ।
तहाँ मन निहचल राखिए, दादू सदा बसंत ॥११२॥

घन बादल बिन बरिखि है, नीझर त्रिमल धार ।
दादू भीजै आतमों, को साधू पीवणहार ॥११३॥

महारस मीठा पीजिए, अविगत अलख अनंत ।
दादू त्रिमल देखिए, सहजै सदा झरंत ॥११४॥

कॉमधेन दुहि पीजिए, अकल अनूपम एक ।
दादू पीवै प्रेम सौं, त्रिमल धार अनेक ॥११५॥

कामधेन दुहि पीजिए, ताकूँ लखै न कोइ ।
दादू पीवै प्यास सों, महारस मीठा सोइ ॥११६॥

कॉमधेन दुहि पीजिए, अलख रूप आनंद ।
दादू पीवै हेत सौं, सुखमन लागा वंद ॥११७॥

कामधेन दुहि पीजिए, अगम अगोचर जाइ ।
दादू पीवै प्रीति सौं, तेज-पुंज की गाइ ॥११८॥

कामधेन करतार है, अमृत सरवे सोइ ।
दादू बछरा दूध कूँ, पीवै तो सुख होइ ॥११९॥

ऐसी एकै गाइ है, दूझे बारहमास ।
सो सदा हमारे सँगहै दादू आतम पास ॥१२०॥

नरवर साखा मूल बिन, धरती पर नॉही ।
अवचिल अमर अनंत फल, सो दादू खॉही ॥१२१॥

तरवर साखा मूल बिन, धर-अंबर न्यारा ।
अबिनासी आनंद फल, दादू को प्यारा ॥१२२॥

तरवर साखा-मूल बिन, रज बीरज रहिता ।
अजरा अमर अतीत फल, सो दादू गहिता ॥१२३॥

तरवर साखा मूल बिन, उत्पति परलै नॉहिं ।
रहिता रंमिता रामफल, दादू नैनहु मॉहिं ॥१२४॥

प्राण तरवर सुरति जड़, ब्रह्मा भोभि ता मॉहिं ।
रस पीवै फूलै फलै, दादू सूकै नॉहिं ॥१२५॥

(दादू) ब्रह्म सुंनि तहाँ क्या रहै, आतम के असथान ।
काया असथलि क्या रहे, सतगुर कहै सुजान ॥१२६॥

(दादू) काया के असथलि रहे, मन राजा पंच परधान ।
पचीस प्रकीरति तीनि गुण, आपा ग्रब (गर्ब) गुमान ।।१२७।।

आतम के अस्थलि रहैं, ग्यों ध्यों वेसास ।
सहज सील संतोष सत, भाव भगति निधि पास ।।१२८।।

ब्रह्मा सुनि तहाँ ब्रह्मा है, निरंजन निरकार ।
नूर तेज तहाँ जोति है, दादू देखणहार ।।१२९।।

(दादू) मौजूद^१ खबर माबूद^२ खबर, अरवाह^३ खबर औजूद ।
मुकाम^४ चि चीज हस्त दादनी^५ सजूद^६ ।।१३०।।

मौजूद मुकामे हसि हस्त ।
नफस^७ गालिव किवर काबिज^८ गुस्सः मनी^९ ऐश ।
दुई दरोग हिरस हुजति, नॉवे ने की नेस्त ।।१३१।।

दादू अरवाह मुकामे हसि ।।
इसक इबादति बंदगी, इगॉनों (यगांनगी) इखलास ।
मिहरि मुहबति खैर खूबी, नॉव नेकी पास ।।१३२।।

दादू माबूद मुकामे हसि ।।
इके नूर खूवे खूवां, दीदनी हैरान ।
अजब चीज खुरदनी, प्याले मस्तान ।।१३३।।

(दादू) पहली प्रॉण पसू नर कीजे, साच-झूठ संसार ।
नीति अनीति भली बुरी सुभ-असुभ निरधार ।।१३४।।

(दादू) सब तजि देखि बिचारि करि, मेरा नॉही कोइ ।
अनदिन राता रॉम सॉ, भव-भगति रत होइ ।।१३५।।

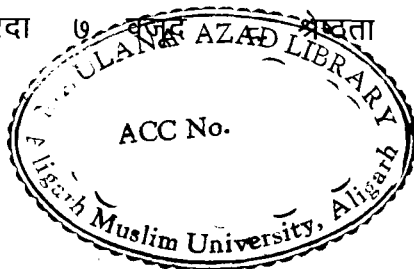
(दादू) अंबर धरती सूर-ससि, (सांई) सब ले लावै अँग ।
जस-कीरति करुणा करै, तनमन लागा रँग ।।१३६।।

(दादू) प्रम तेज तहाँ गया, नैनहु देख्या आइ ।
सुख-संतोष पाया घणों, जोति ही जोति समाइ ।।१३७।।

(दादू) अरथ चारि असथान का, गुर-सिख कह्या समझाइ ।
मारग सिरजनहार का, भागि बड़े सो जाइ ।।१३८।।

दादू हेवान आलम, गुमाह गाफिल, अवलि सरीयत यंद ।
हलाल हरॉम नकी बदी, दुरस दांसमंद ।।१३९।।

१. जीवित २. अल्लाह ३. आत्माओं ४. मन्जिल ५. देने योग्य
६. सिजदा ७. वजूद ८. श्रेष्ठता ९. मन में



दादू कुलि फारिग त्रक (तर्क) दुनियाँ, हर रोज़ हरदम यादि ।
अलह आले इसक आसिक, दरुनै फिरियादि ।।१४०।।

दादू आब^१ आतस^२ अरस^३ (अर्श) कुरसी^४, सूरते सुबहॉन^५ ।
सिरर^६ सिफतां^७ करद बूदम, मारिफत^८ मुकाम(मकान) ।।१४१।।

दादू हक^९ हासिल^{१०} नूर^{११} दीदम^{१२}, करारे मकसूद ।
दीदारे दरिया(यार) अरवाह आमंद, मौजूदे मौजूद^{१३} ।।१४२।।

दादू चहार मंजल^{१४} बयान गुप्त^{१५}, दस्त करदोबूद^{१६} ।

मीरों^{१७} मुरीदों^{१८} खबर करदां, राहे माबूद^{१९} ।।१४३।।

आसिकों मस्तान आलम, खुरदनी^{२०} दीदार ।
चंद^{२१} दह^{२२} चिकार^{२३} दादू, यार मों दिलदार ।।१४४।।

दादू दया दयाल की, सो क्यूँ छानी होइ ।
प्रेम—पुलक पुलकत रहे, सदा सुहागनि सोइ ।।१४५।।

दादू बिगसि—बिगसि दरसन करै, पुलकि—पुलकि रस पॉन ।
मगन गलित माता रहै, अरस—परस मिलि प्रॉन ।।१४६।।

(दादू) देखि—देखि सुमिरन करै, देखि—देखि लैलीन ।
देखि—देखि तनमन विलै, देखि—देखि चित दीन्ह ।।१४७।।

(दादू) त्रिखि—त्रिखि^{२४} निज नॉव लै, त्रिखि—त्रिखि रस पीव ।
त्रिखि—त्रिखि पीव कौं मिलै, त्रिखि—त्रिखि सुख जीव ।।१४८।।

तन सौं सुमिरण सब करै, आतम सुमिरण एक ।
आतम आगै एकरस, दादू बड़ा बमेक ।।१४९।।

(दादू) माटी के मूकाम^{२५} का, सबको जाणै जाय ।
एक आध अरवाह का, बिरला आपै आय ।।१५०।।

(दादू) जब लग अस्थल देह का, तब लग सब ब्यापै ।
त्रिभै अस्थल आतमा, आगै रस आपै^{२६} ।।१५१।।

(दादू) जब नाही सुरति सरीर की, बिसरै सब संसार ।
आतम न जॉणै आपकौ, (तब) येक रहत निरधार ।।१५२।।

१. जल २. अग्नि ३. नौवों आसमान ४. आठवों आसमान

५. सुबहान, अल्लाह ६. भेद ७. महिमा ८. विज्ञान

९—१० वॉछित फल प्राप्त किया ११—१२ प्रकाश के दर्शन प्रियतम के लिए

१३. हस्ती की हस्ती और जान की जान (हैं) १४. चार १५. बयान किया

१६. जो पाया १७. सतगुरु १८. शिष्यों को १९. ईश्वर की राह

२०. खाने योग्य २१. कतिपय २२. दस २३. निकम्मा २४. देख—देखकर

२५. स्थान, पड़ाव २६. आप होता है

(दादू) तन सौं सुमिरण कीजिए, तब लग तन नीका।
आगैं आपै आयहैं तहों क्या जीय का॥१५३॥

कम दृष्टी देखै बहुत करि, आतम दृष्टि एक।
ब्रह्म दृष्टी परचै भया, तब दादू बैठा देख॥१५४॥

ऐई नैना देह के, ऐई आतम होइ।
ऐई नैना ब्रह्म के, दादू पलटे दोइ॥१५५॥

घट प्रचै सब घट लखै, प्रॉण प्रचै प्रॉण।
ब्रह्म प्रचै पाईए, दादू है हैरान॥१५६॥

दादू जल पाखाण ज्यौं सेवै सब संसार।
दादू पॉणी लूण ज्यौं कोई बिरला पूजणहार॥१५७॥

अलख नॉव अंतरि कहै, सब घटि हरि—हरि होइ।
दादू पॉणी लूण ज्यौं नॉव कहीजै सोइ॥१५८॥

छाड़ै सुरति^१ सरीर कूँ, तेज—पुँज मैं आइ।
दादू अैसेँ मिलि रहै, ज्यौं जल जलहि समाइ॥१५९॥

सुरति रूप सरीर का, पीव के परसेँ होइ।
दादू तनमन एकरस, सुमिरण कहिए सोइ॥१६०॥

जहां आतम रॉम संभालिए, तहों दूजा नाही और।
देही आगैं अगम है, दादू सूखिम ठौर॥१६१॥

रॉम कहत रामहि रह्या, आप विसरजन होइ।
मन पवन पंचों मिलै, दादू सुमिरण सोइ॥१६२॥

तन—मन बिलै यों कीजिए, ज्यौं घृत लागै घाम।
आतम कंवल तहों बंदगी, दादू प्रगट रॉम॥१६३॥

दादू तनमन बिलै यों कीजिए, ज्यौं पानी मैं लूण।
जीव—ब्रह्म एकै भया, तब दूजा कहिए कूँण॥१६४॥

(कोमल) कंवल तहों पैसि करि, जहाँ न देपै कोइ।
मन थिर सुमिरण कीजिए, तब दादू दरसन होइ॥१६५॥

नक्सख सब सुमिरण करें, अैसा कहिए जाय।
अंतरि बिगसै आतमों, सब दादू प्रगटै आय॥१६६॥

अंतरगति हरि—हरि कहे, (तब) मुख की हाजति^२ नॉहि।
सहजै धुनि लागी रहै, दादू मनहीं मॉहिं॥१६७॥

(दादू) सहजै सुमिरण होत है, रोम-रोम रमि रॉम।
चित चिहँट्या^१ चित सौं, यूँ लीजै हरिनाम॥१६८॥

दादू सुमिरण सहज का, दीन्हों आप अनंत।
अरस-परस उस एक सौं, पेखैं सदा बसंत॥१६९॥

दादू सबद अनाहद हम सुण्यां, नख सख सकल सरीर।
सब घटि हरि हरि है सहजै ही मन धीर॥१७०॥

हुण^२ दिल लगा हिक सौं^३, मेकूँ एहा ताति।
दादू कम खुदाइ दे, बेठा डीहै^४ राति॥१७१॥

(दादू) माला सब आकार की, कोई साधू समिरै रॉम।
करणी (करणि) गर तैं क्या कीया, औसा तेरा नॉम॥१७२॥

सब घट मुख रसना करै, रटै राम का नॉव॥
दादू पीवै रामरस, अगम-अगोचर ठॉव॥१७३॥

(दादू) मन चित अस्थिर कीजिए, तौ नखसख सुमिरण होइ।
श्रवण-नेत्र-मुख-नासिका, पंचूँ पूरे सोइ॥१७४॥

रॉम जपै रूचि साध कूँ, साध जपै रूचि रॉम।
दादू दून्यू एकटग, यहु आरंभ यहु कॉम॥१७५॥

आतम-आसण रॉम का, तहों बसै भगवॉन।
दादू दून्यू परसपर, हरि आतम का थॉन॥१७६॥

जहों रॉम तहों संतजन, जहों साधू तहों रॉम।
दादू दून्यू एकटे, अरस-परस बिश्रॉम॥१७७॥

(दादू) हरि साधू यूँ पाईए, अविगत के आराध।
साधू संगसित हरि मिलै, हरि संगति थैं साध॥१७८॥

(दादू) रॉम नॉम सौं मिलि रहै, मन के छाड़ि विकार।
दिल ही मांहैं देखिए, दून्यू का दीदार॥१७९॥

साध समॉना रॉम मै, रॉम रह्या भरपूरि।
दादू दून्यू एकरस, क्यूँ करि कीजै दूरि॥१८०॥

(दादू) सेवग सौँई का भया, (तब) सेवग का सब कोइ।
सेवग सांई कूँ मिल्या, (तब) सौँई सरीखा होइ॥१८१॥

मिसरी मॉहैं मेलि करि, मोलि बिकाणों बंस।
यूँ दादू महंगा भया, पार ब्रह्म मिलि हंस॥१८२॥

१. उचटा २. अब (सिं.) ३. एक से (सिं.) ४. देखे (सिं.)

मीठे मॉहें राखिए, सो भी मीठा होइ ।
 दादू मीठा हाथि ले, रस पीवै सब कोइ ।।१८३।।
 मीठे सौं मीठा भया, खारे सौं खारा ।
 दादू ऐसा जीव है, यहु रँग हमारा ।।१८४।।
 मीठे मीठे करि लीये, मीठे मॉहें बाहि^१ ।
 दादू मीठा है रह्या, मीठे मॉहि समाइ ।।१८५।।
 रॉम बिना किस काँम का, नहीं कौड़ी का जीव ।
 सॉई सरीखा है गया, दादू परसै पीव ।।१८६।।
 मीरों^२ कीया मिहरि^३ सौं, पड़दे थैं लापरद^४ ।
 राखि लीया दीदार मैं, दादू भूला दरद ।।१८७।।
 दादू नैन बिन देखिवा, अंग बिन पेखिवा ।
 रसन बिन बोलिवा, ब्रह्म सेती ।
 श्रवन बिन सुनिवा, चरन बिन चालिया,
 चित बिन चितिया, सहज एती ।।१८८।।
 दादू देख्या एक मन, सो मन सब ही मॉहिं ।
 तिहि मन सौं मन मानियों, दूजा भावै नॉहिं ।।१८९।।
 (दादू) जिहि घटि दीपक राम का, तिहि घटि तिमर न होई ।
 उस उजियारै जोति कै, सब जग देखै सोइ ।।१९०।।
 दादू दिल अरवाह का, सो अपणों ईमान ।
 सोई स्याबति^५ करि लीया, जहाँ देखै रहिमान ।।१९१।।
 अलह आप ईमान है, दादू के दिल मॉहिं ।
 सोई स्याबति राखिए, दूजा कोई नॉहिं ।।१९२।।
 प्राँण पवन ज्यूँ पतला, काया करै कमाइ ।
 दादू सब संसार मैं, क्यूँ ही गह्या न जाइ ।।१९३।।
 (दादू) नूर तेज ज्यौं जोति है, प्राण-प्यँड यौं होइ ।
 दृष्टि-मुष्टि आवै नहीं, साहिब के बसि सोइ ।।१९४।।
 काया सूखिम करि मिलै, ऐसा कोई एक ।
 दादू आतम लै मिलै, ऐसे बहुत अनेक ।।१९५।।
 (दादू) आड़ा आतम तन घरै, आप रहे ता मॉहि ।
 आपै खेलै आपसों, जीऊ सेती नॉहिं ।।१९६।।

१. प्रवाहित किये २. महान, सतगुरु ३. कृपा ४. बेपर्दा
 ५. पूर्ण

(दादू) अनभै थैं आनंद भया, पाया त्रिभै नॉव ।
 निहचल नृमल नृवाण पद, अगम—अगोचर ठॉव ।।१६७।।
 (दादू) अनभै वाणी अगम कूँ, ले गई संगि लगाइ ।
 अगह गहै अकह कहै, अभेद भेद लहाइ ।।१६८।।
 जे कुछ वेद, कुराँण थैं, अगम—अगोचर बात ।
 सो अनभै सॉचा कहै, यहु दादू अकह कहात ।।१६९।।
 जब घटि अनभै ऊपजै, (तब) कीया (किया) क्रम का नास ।
 भै—भ्रम भागे सबै, पूरण ब्रह्म प्रकास ।।१७०।।
 (दादू) अनभै काटै रोग कूँ, अनहद^१ उपजै आइ ।
 सेझे का जल नृमला, पीवै रुचि ल्यौ लाइ ।।१७१।।
 दादू वॉणी ब्रह्म को, अनभै घटि प्रकास ।
 रॉम अकेला रहि गया, सबद निरंजन पास ।।१७२।।
 जे कबहूँ समझै आतमों, (तौ) दिढ़ गहि राखै मूल ।
 दादू सेझा रॉम रस, अमृत काया कूल ।।१७३।।
 दादू मुझ ही मॉहैं मैं रहूँ, मैं मेरा घर—बार ।
 मुझ ही मॉहैं मैं बसौँ, आप कहैं करतार ।।१७४।।
 (दादू) मैं ही मेरा अरस^२ मैं, मैं ही मेरा थॉन ।
 मैं ही मेरी ठौर मैं, आप कहै रहिमान ।।१७५।।
 (दादू) मैं ही मेरे आसिरै, मैं मेरे आधार ।
 मेरे तकिऐ मैं रहूँ, कहै सिरजनहार ।।१७६।।
 (दादू) मैं ही मेरी जाति मैं, मैं ही मेरा अँग ।
 मैं ही मेरा जीव मैं, आप कहै परसंग ।।१७७।।
 सबै दिसा सो सारिखा, सबै दिसा मुख—बैन ।
 सबै दिसा श्रवनों सुनै, सबै दिसा कर—नैन ।।१७८।।
 सबै दिसा पग सीस है, सब दिसा मन—चैन ।
 सबै दिसा सनमुख रहै, सबै दिसा अंग—अैन ।।१७९।।
 बिन श्रवनौ सब कुछ सुनै, बिन नैनौ सब देखै ।
 बिन रसना—मुखसव (कुछ) बोलै, यहु दादू अचिरज पेखै ।।१८०।।
 सब अंग सबही ठौर सब, सबंगी (सर्वंगी) सब सार ।
 कहै गहै देखै सुणे, दादू सब दीदार ।।१८१।।

कहै सब ठौर, गहै सब ठौर, रहै सब ठौर, जेति प्रवानै ।
 नैन सब ठौर बेन सब ठौर, ऐन सब ठौर, सोई भल जानै ।।२१२।।
 सीस सब ठौर श्रवन सब ठौर, चरन सब ठौर, कोई यहु मानै ।
 अंग सब ठौर, संग सब ठौर, सबै सब ठौर दादू ध्योंनै ।।२१३।।
 तेज ही कहणों, तेज ही गहणों, तेज ही रहणों सारे ।
 तेज ही बैना तेज ही नैनों, तेज ही अेन हमारे ।।२१४।।
 तेज ही मेला, तेज ही खेला, तेज अकेला, तेज ही तेज सँवारे ।
 तेज ही लेवै तेज ही देवै, तेज ही खेवै^१, तेज ही दादू तारे ।।२१५।।
 नूर ही का घर, नूर ही का घर, नूर ही का बरु मेरा ।
 नूर ही मेला, नूर ही बेला, नूर अकेला, नूर ही मंझि बसेरा ।।२१६।।
 नूरहि का अँग नूरहि का सँग, नूरहि का रंग मेरा ।
 नूरही राता, नूर ही माता, नूर ही खाता, दादू तेरा ।।२१७।।
 (दादू) नूरी दिल अरवाह का, तहाँ बसै माबूद^२ ।
 तहाँ बंदे की बंदगी, जहाँ रहै मौजूद ।।२१८।।
 (दादू) नूरी दिल अरवाह का तहाँ खालिक^३ भरपूर ।
 आले नूर अलाह का, खिजमतिगार हजूर ।।२१९।।
 (दादू) नूरी दिल अरवाह का, तहाँ देख्या करतार ।
 तहाँ सेवग सेवा करै, अनंतकला रविसार ।।२२०।।
 (दादू) नूरी दिल अरवाह का, तहाँ निरंजन बासैं ।
 तहाँ जन तेरा एक पग, तेज पुँज प्रकासं ।।२२१।।
 (दादू) तेज कवल दिल नूर का, तहाँ राम रहिमान^४ ।
 तहाँ करि सेवा बंदिगी, जे तूँ चतुर सयानं ।।२२२।।
 तहाँ हजूरी बंदगी, नूरी दिल मैं होइ ।
 तहाँ दादू सिजदा करै, जहाँ न देखै कोइ ।।२२३।।
 (दादू) देही माँहैं दोइ दिल, इक खाकी इक नूर ।
 खाकी^५ दिलि सूझे नहीं, नूरी मंझि हजूर ।।२२४।।
 (दादू) हौद^६ हजूरी^७ दिल ही भीतरि, गुसल^८ हमारा सारं ।
 ओजू साजि अलह के आगैं, तहाँ निवाज गुजारं ।।२२५।।

१. खेता है २. ईश्वर ३. सृष्टिकर्ता ४. कृपालु ५. मृदा निर्मित
 ६. कुंड ७. हजूर का ८. स्नान

(दादू) काया मसीति^१ करि, पंच जमाती, तन ही मुला इमाम^२।
आप अलेख इलाही आगैं, तहाँ सिजदा करै सलामं॥२२६॥

(दादू) सब तन तसबी^३ कहै करीमं, अैसा करि ले जापं।
रोजा एक दूरि करि दूजा, कलमा आपै आपं॥२२७॥

(दादू) अठे पहर अलह के आगैं, इक टग रहिबा ध्यानं।
आपै आप अरस के ऊपरि, जहाँ रहै रहिमानं॥२२८॥

अठे पहर इवावती जीवण मरण निबाहि।
साहिब दरि सेवै खड़ा, दादू छाड़ि न जाइ॥२२९॥

अठे पहर अरस में ऊभोई^४ (उभोई) आहे।
दादू पसे तिन्हके, अला गल्हाए॥२३०॥

अठे पहर अरस में, बैठौ पिरि पसंनि।
दादू पसे तिन्हके, जे दीदार लहंनि॥२३१॥

अठे पहर अरस में, जिन्ही रूप रहंनि।
दादू पसे तिन्हके, गुभयूँ^५ गाल्ही^६ कंनि^७॥२३२॥

अठे पहर अरस में, लुड़ंदा^८ आहीन^९।
दादू पसे तिन्हके, असौ खवरि डीन्ह^{१०}॥२३३॥

अठे पहर अरस के, वंजीजे^{११} गाहीन^{१२}।
दादू पसे तिन्हके, कितेई आहीन॥२३४॥

प्रेम पियाला नूरदा, आसिक भरि पीया।
दादू दर दीदार^{१३} मैं, मतिवाला कीया॥२३५॥

इसक सलोना आसिकों, दरिगह थैं दीया।
दरद महवति प्रेमरस, प्याला भरि पीया॥२३६॥

दादू दिल दीदार दा मतिवाला कीया।
जहाँ अरस इलाही (आप) था, अपणा करि लीया॥२३७॥

दादू प्याला नूरदा, आसिक अरस पीवंनि।
अठे पहर अलाहदा, मुंह छिठे^{१४} जीवंनि॥२३८॥

आसिक अमली साध सब, अलख दरीबे जाइ।
साहिब दर दीदार में, सब मिलि बैठे आइ॥२३९॥

१. वजू २. इमाम ३. माला ४. खड़ा ५. गुप्त ६. बात
७. करते हैं ८. झुलते हैं ९. हैं १०. देते हैं ११. जो जाकर
१२. रहते हैं १३. दर्शन १४. देखता है

राते—माते प्रेमरस, भरि—भरि देइ खुदाइ ।
 मस्तान मालिक करि लीये, दादू रहे ल्यौ लाइ ॥२४०॥
 (दादू) भगतिनिरंजन राम की, अवचिल अविनासी ।
 सदा सजीवनि आतमा, सहजें प्रकासी ॥२४१॥
 (दादू) जैसा राम अपार है, तैसी भगति अगाध ।
 इन दून्हू की मिति^१ नहीं सकल पुकारैं साध ॥२४२॥
 (दादू) जैसा विगत राम है, तैसी भगति अलेख ।
 इन दून्हू कीमिति नहीं, सहस मुखा कहे सेख ॥२४३॥
 (दादू) जैसा नृगुण रॉम है, तैसी भगति निरंजन जॉणि ॥
 इन दून्हू कीमिति नहीं, संत कहैं परवॉणि ॥२४४॥
 जैसा पूरा राम है, तैसी पूरण भगति समॉन ।
 इन दून्हू कीमिति नहीं, दादू नाहीं ऑन ॥२४५॥
 दादू जब लग रॉम है, तब लग सेवग होइ ।
 अखंडित सेवा एकरस, दादू सेवग सोइ ॥२४६॥
 दादू जैसा राम है, तैसी सेवाजांणि ।
 पायैगा सो रकैगा, दादू सो परवाणि ॥२४७॥
 (दादू) सॉई सरीखा सुमिरण कीजै, सॉई सरीखा गावै ।
 सॉई सरीखी सेवा कीजे, तो सेवग सुख पावै ॥२४८॥
 (दादू) सेवग सेवा करि डरै, हम थैं कछू न होइ ।
 तूँ है तैसी बंदगी, करि नहीं जाणै कोइ ॥२४९॥
 (दादू) जे साहिब मानै नहीं, तौऊ (तोउ) न छाड़ै सेव ।
 इहि आलंबनि^२ जीविए, साहिब अलख अभेव ॥२५०॥
 आदि अंति आगै रहे, एक अनूपम देव ।
 निराकार निज नृमला, कोइ न जाणै भेव ॥२५१॥
 अविनासी अपरंपरा, वार — पार नहीं छेव ।
 सो नूँ दादू देखिलै, उर अंतर करि सेव ॥२५२॥
 घट परचे सेवा करै, प्रतखि दखै देव ।
 अविनासी दरसन करै, दादू पूरी सेव ॥२५३॥
 (दादू) भीतरि पैसि करि, घट के जड़ै कपाट ।
 सॉई की सेवा करै, दादू अविगत घाट ॥२५४॥

पूजनहारे पासि हैं, देही माँहें देव ।
 दादू ताकूँ छाड़ि करि, बाहरि माँडी^१ सेव ।।२५५।।
 दादू रमिता राम सौं, खेलै अंतर माँहि ।
 उलटि समानों आपमै, सो सुख कतहूँ नॉहि ।।२५६।।
 (दादू) जे जन बेधो प्रीत सौं, सो जन सदा सजीव ।
 उलटि समानों आप मै, अंतर नॉहि पीव ।।२५७।।
 (दादू) प्रगट खेलै पीव सँ, अगम अगोचर ठाँउ ।
 एक पलक का देखणों, जीवण मरण का नॉउ ।।२५८।।
 (दादू) आतम माँहै राम है, पूजा ताकी होइ ।
 सेवा – वंदन आरती, साध करैं सब कोइ ।।२५९।।
 प्रचै सेवा आरती, प्रचै भोग लगाइ ।
 दादू उस प्रसाद की, महिमा कही न जाइ ।।२६०।।
 माँहि निरंजन देव है, माँहें पूजा होइ ।
 माँहि उतारै आरती, दादू सेवा सोइ ।।२६१।।
 दादू माँहें कीजै आरती, माँहें पूजा होइ ।
 माँहें सतगुर सेविए, बूझै बिरला कोइ ।।२६२।।
 सति सौँच ।।
 सतिराम आतमा बैश्रनों, सुबुधि भोमि, संतोष थॉन,
 मूल मंत्र मनमाला गुरतिलक सति सँजम, सील सुच्या,
 ध्यॉन धोवती^२, काया कलस प्रेमजल,, मनसा मंदिर,
 निरंजनदेव, आतमा पाती, पुहप प्रीति, चेतना चंदन, नवधा^३ नॉव
 भाव पूजा, मति पात्र, सहज सुमृपन^४, सबद घंटा, आनंद
 आरती, दयाप्रसाद, अनिन ए दसा, तीर्थ सत संग,
 दान उपदेस, व्रत सुमिरण, खट गुण ग्यॉन, अजपा जाप^५,
 अनभै आचार, भ्रजादा राम फल दरसन, अभि अंतरि सदा
 निरंतरि, सति सौँजदादू व्रतते आतमा उपदेस, अंतरगति पूजा ।।२६३।।
 पीव सौं खेलों प्रेम-रस, तौ जीयरै जक^६ होइ ।
 दादू पावे सेज सुख, परदा नॉही कोइ ।।२६४।।
 सेवग बिसरै आपकू, सेवा बिसरि न जाइ ।
 दादू पूछै राम कूँ, सो तत कहि समझाइ ।।२६५।।

१. मंडित की २. धोती नामक योगिक क्रिया ३. नवधा भक्ति
 ४. समर्पण ५. मानसिक जाप ६. चैन

ज्यूँ रसिया रस पीवतों, आपा भूलै और।
 दादू रहि गया येकरस, पीवत पीवत ठौर॥२६६॥
 जहाँ सेवग तहाँ साहिब बैठा, सेवग सेवा मॉहिं।
 दादू सौई सब करै, कोई जाणै नॉहिं॥२६७॥
 (दादू) सेवग साई बस किया, सौँप्या सब परिवार।
 तब साहिब सेवा करै, सेवग के दरबार॥२६८॥
 (दादू) तेज पुंज कूँ बिलसणों, मिलि खेलै इकवोंव।
 भरि भरि पीवै राम—रस, सेवा इसका नॉव॥२६९॥
 अरस—परस मिलि खेलिए, तब सुख आनंद होइ।
 तन—मन—मंगल चहुंदिसि (भया), दादू देखै सोइ॥२७०॥
 मस्तकि मेरे पाव धरि, मंदिर मांहेँ आव।
 सौई सोवै सेज परि, दादू चंपै पॉव॥२७१॥
 जे चारिउँ पद पलंग के, साई के सुख सेज।
 दादू इन पर बैसि करि, साई सेती हेज॥२७२॥
 प्रेम—लहरि की पालिकी, आतम वैसे आइ।
 दादू खेलै पीव सौँ यहु सुख कह्या न जाइ॥२७३॥
 (दादू) देव—निरंजन पूजिए, पाती पंच चढ़ाइ।
 तन—मन—चंदन चरचिए सेवा सुरति लगाइ॥२७४॥
 भगति—भगति सबको कहै, भगति न जाणै कोइ।
 दादू भगति भगवंत की, देह निरंतर होइ॥२७५॥
 देही मॉहेँ देव है, सब गुण थेँ न्यारा।
 सकल निरंतरि भरि रह्य, दादू का प्यारा॥२७६॥
 जीव पियारे रॉम कूँ, पाती पंच चढ़ाइ।
 तन—मन—मनसा सौँपि सब, दादू विलंम न लाइ॥२७७॥
 सबद सुरति लै सौँनि चित, तन—मन—मनसा मॉहिं।
 मति बुधि पँचूँ आतमां, दादू अनत न जॉहिं॥२७८॥
 (दादू) तन मन पवना पंच गहि, ले राखै निज ठौर।
 जहाँ अकेला आप है, दूजा नॉही और॥२७९॥
 (दादू) यहु मन सुरति समेटि करि पंच^१ अपूठे^२ ऑणिं^३।
 निकटि निरंजन लागि रहु, संगि सनेही जॉणि॥२८०॥

१. पॉचों इन्द्रियों को २. पीछे ३. ले जाओ, डाल दो

मन-चित-मनसा-आतमा, सहज सुरति ता मॉहि ।
 दादू पूँचूँ पूरि ले, जहाँ धरती-अंबर नॉहि ।।२८१।।
 दादू भीगे प्रेमरस, मन पँचूँ का साथ ।
 मगन भए रसमैं रहै, सनमुख त्रिभुवन नाथ ।।२८२।।
 (दादू) सबदैँ सबद संभाइले, पर आतम सौँ प्रॉन ।
 यहु मन मन सौँ बंधि लै, चितहि चित समॉन ।।२८३।।
 (दादू) सहजैँ सहज समॉइले, ग्यॉनै बंध्या ग्यॉन ।
 सुत्रै सुत्र सभाइलै, ध्यानै बंध्या ध्यॉन ।।२८४।।
 दादू इष्टैँ इष्ट सभॉइलै, सुरतै-सुरति समाइ ।
 सॅमझै सॅमझि सभाइलै, (लै) सौँ लै लै ल्हाइ ।।२८५।।
 दादू भावै भाव सभाइलै, भगते भगति समॉन ।
 प्रमैँ प्रेम सभाइलै, प्रीतै प्रीतिरस पॉन ।।२८६।।
 (दादू) सुरतै सुरति समाइ रहु, अरु बैनौँ सौँ बैन ।
 मनही सौँ मन लाइ रहु, अरु नैनौँ सँ नैन ।।२८७।।
 जहाँ रॉम तहाँ मन गया, मन तहाँ नैनौँ जाइ ।
 जहाँ नैनौँ तहाँ आतमॉ, दादू सहजि समाइ ।।२८८।।
 प्रॉण न खेलै प्रॉण सौँ, मन न खेलै मंन ।
 सबद न खेलै सबद सौँ, दादू रॉम रतंन ।।२८९।।
 चित न खेलै चित सौँ, बैन न खेलै बैन ।
 नैन न खेलै नैन सौँ, दादू प्रगटै ऐन ।।२९०।।
 पाक^१ न खेलै पाक सौँ, सार न खेलै सार ।
 खूब न खेलै खूब सौँ, दादू अग(म) अपार ।।२९१।।
 नूर न खेलै नूर सौँ, तेज न खेलै तेज ।
 जोति न खेलै जोति सौँ, दादू एकै सेज ।।२९२।।
 पंच पदारथ मन रतंन, पवनौँ माणिक होइ ।
 आतम हीरा सुरति सौँ, मनसा मोती पोइ ।।२९३।।
 अजब अनूपम हार है, सॉई सरीखा सोइ ।
 दादू आतम राम गलि, जहाँ न देखै कोइ ।।२९४।।
 (दादू) पंचौँ संगी संगि ले, आए आकासा ।
 आसण अमर अलेख का, त्रिगुण नित वासा ।।२९५।।

प्राणपवन मन मगन है, संगि सदा निवासा ।
 परचा परम दयाल सौं, सहजै सुखदासा ॥२६६॥
 (दादू) प्राण पवन मनमणि बसे, त्रिकुटी की संधि ।
 पैंचै यंद्री पीव सौं, ले चरनों बंधि ॥२६७॥
 प्राण हमारा पीव सौं, यूँ लागा सहिए ।
 पुहप-वास घृत-दूध मैं, इब^१ कासौं कहिए ॥२६८॥
 पौहण लोह विचि वासदेव, अैसें मिलि रहिए ।
 दादू दीन दयाल सौं, संग ही सुख लहिए ॥२६९॥
 (दादू) ऐसा बड़ा अगाध है, सूखिम जैसा अँग ।
 पुहप वास थैं पतला, सो सदा हमारै संग ॥३००॥
 (दादू) जब दिलि मिली दयाल सौं, तब अंत कुछ नौहिं ।
 ज्यूँ पाला^२ पाँणी कूँ मिल्या, त्यू हरिजन हरि मॉहिं ॥३०१॥
 (दादू) जब दिलि मिली दयाल सौं, तब सब पड़दा दूरि ।
 अैसे मिलि एकै भया, बहु दीपक पावक पूरि ॥३०२॥
 (दादू) जब दिलि दयाल सौं, तब अंतरि नाँही रेख ।
 नाना विधि बहु भूखनों, कनक कसौटी एक ॥३०३॥
 (दादू) जब दिलि मिली दयाल सौं, तब पलक न पड़दा कोइ ।
 डाल मूल फल बीज मैं, सब मिलि एकै होइ ॥३०४॥
 (दादू) फल पाका बेली तजी, छिटकाया मुख मॉहि ।
 साहिब अपनों करि लीया, सो फिरि ऊगे नौहि ॥३०५॥
 (दादू) काया कटोरा दूध मन, प्रेम-प्रीति सौं पाइ ।
 हरि साहिब इहिबिधि अँचवे, बेगा वार न लाइ ॥३०६॥
 टगाटगी^३ जीवणमरण, ब्रह्म बराबरि होइ ।
 प्रगट खेले पीव सौं, दादू विरला कोइ ॥३०७॥
 दादू निबराना रहै, ब्रह्म सरीखा होइ ।
 ले समाधि रस पीजिए, दादू जबलग दोइ ॥३०८॥
 (दादू) बेखुद^४ खवर हुसियार वासिद^५, खुद खवर पैमाल^६ ।
 वे कीमंते मस्तौन गलितौं, नूर प्याले ख्याल ॥३०९॥

१. अब २. सर्दी में ओस का जमाव ३. एकतार ४. बेखबर

५. होशियार है ६. ज़लील

दादू माता प्रेम का, रस विन रह्या न जाइ ।
 अंत न आवै जब लगै, तब लग पीवत जाइ ॥३१०॥
 पीया तेता सुख भया, बाकी बहु बैराग ।
 असै जन थाकै नहीं, दादू उनमनि लाग ॥३११॥
 निकटि निरंजन लागि रहु जब लग अलख अभेव ।
 दादू पीवै रॉम रस, निहकामी निज सेव ॥३१२॥
 (दादू) रॉम रटणि छाड़ै नहीं, हरि लै लागा जाइ ।
 बीचै ही अटकै नहीं, कला कोटि दिखलाइ ॥३१३॥
 दादू हरि रस पीवतॉ, कबहूँ अरुचि न होइ ।
 पीवत प्याला नित नवा, पीवणहारा सोइ ॥३१४॥
 जैसै श्रवना दोइ है, ऐसे हूँहि^१ अपार ।
 राम कथा—रस पीजिए, दादू बारंबार ॥३१५॥
 जैसै नैना दोइ है, असै हूँहि अनंत ।
 दादू चंद चकोर ज्यूँ, रस पीवै भगवंत ॥३१६॥
 (दादू) ज्यूँ रसना मुख एक हो, असै हूँहि अनेक ।
 तोरस पीवै सेस ज्यूँ, यौं मुख मीठा एक ॥३१७॥
 ज्यूँ घट आतम एक है, असै हूँहि असंख ।
 भरि भरि राखै रामरस, दादू एकै अंक ॥३१८॥
 ज्यूँ ज्यूँ पीवै रामरस, त्यूँ त्यूँ बढै पियास ।
 असै कोई एक है, बिरला दादू दास ॥३१९॥
 राता — माता राम का, मतिवाला मैमंत ।
 दादू पीवत क्यूँ रहै, जे जुग जॉहि अनंत ॥३२०॥
 दादू नृमल जोति जल, वरिखा बारह मास ।
 तिहि रसि राता प्रॉणियों, माता प्रेम—पियास ॥३२१॥
 रोम रोम रस पीजिए, एती रसनों होइ ।
 दादू प्यासा प्रेम का यौं बिन त्रिपति न होइ ॥३२२॥
 तन ग्रह छाड़ै लाजपति, जब रसिमाता होइ ।
 तब लग दादू सावधान, कदे न छाड़ै कोइ ॥३२३॥
 ऑगनि एक कलाल^२ कै, मतिवाला रस मॉहि ।
 दादू देख्या नैन भरि, ताके दुबध्या नॉहि ॥३२४॥

पीवत चेतनि जब लगै, तब लग लेवै आइ।
 जब माता दादू प्रेमरस, तब काहे कूँ जाइ॥३२५॥
 दादू अंतर आतमा, पीवे हरि जल नीर।
 सौँज सकल लै उद्धरै, निर्मल होइ सरीर॥३२६॥
 दादू मीठा राम-रस, एक घूँट करि जाँउ।
 पुणिग न पीछै कूँ रहै, सब हिरदै माहि सँमाउ॥३२७॥
 (दादू) चिड़ी चंच भरि ले गई, नीर निघटि नहीं जाइ।
 अैसा वासण नौँ घडया, सब दरिया माँहि समाइ॥३२८॥
 दादू अमली रॉम का, रस बिन रह्या न जाइ।
 पलक एक पावै नहीं, (तौ) तब हीँ तलपि मरि जाइ॥३२९॥
 दादू राता राम का, पीवै प्रेम अघाइ।
 मतिवाला दीदार का, माँगै मुकति बलाइ॥३३०॥
 उजल भंवरा हरि कंवल, रस रूचि बारह मास।
 पीवै नृमल वासनों, सो दादू निज दास॥३३१॥
 नैनों सौँ रस पीजिए, दादू सुरति सहेत।
 तनमन मँगल होत है, हरि सौँ लागा हेत॥३३२॥
 पीवै पिलावै रामरस, माता है, हुसियार।
 दादू रस पीवै घणों, औरों कौँ उपगार॥३३३॥
 नौँनों विधि पीया रामरस, केती भौँति अनेक।
 दादू बहुत वमेक सौँ, आतम अविगत एक॥३३४॥
 परचे (प्रचे) का पै (पय) प्रेम-रस, जे कोई पीवै।
 मतिवाला माता रहै, यौँ दादू जीवै॥३३५॥
 प्रचे का पै प्रेम रस, पीवै हित-चित लाइ।
 मनसा-चाचा-क्रमना, दादू काल न खाइ॥३३६॥
 प्रचै पीवै रॉम-रस, राता सिरजन हार।
 दादू कछू व्यापै नहीं, ते छूटे संसार॥३३७॥
 दादू अमृत भोजन राम-रस, काहे न बिलसै खाइ।
 काल विचारा क्या करै, जे रमि रमि राम समाइ॥३३८॥
 (दादू) जीव अजा विधू^१ काल है, छेली जाया सोइ।
 तब कुछ बस नाही कालका, (जब) मीनी^२ का मुख होइ॥३३९॥

(दादू) मन लौरू^१ के पंख है, उनमनि चढ़ै अकासि।
 पग रह पूरे साच के, रोकि रह्या हरि पासि॥३४०॥

तनमन वृष बंबूल का, काँटे लागे सूल।
 दादू भाखण है गया, काहू का असथूल॥३४१॥

दादू सँखा^२ सबद है, सुनहा^३ सँसा मारि।
 मन मींडक^४ सौं मारिए, संक्या^५ श्रप (सर्प) निवारि॥३४२॥

दादू गौंझी^६ ग्योंन है, भँजन है सब लोक।
 राम दूध सब भरि रह्या, ऐसा अमृत पोख॥३४३॥

दादू झूठा जीव है, गढिया गोब्यंद बैन।
 मनसा मूँगी पँख सँ, सूरिज सरीखे नैन॥३४४॥

सौई दीया दत घणों, तिसका वारभार।
 दादू पाया रामधन, भाव—भगति दीदार॥३४५॥

५. जरणों को अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह।
 वंदनं श्रब साधवा, प्रणामं पारंगतह॥१॥

(कोई) साधू राखै रॉम धन, गुर बाइक वचन विचार।
 गहिला दादू क्यँ रहै, प्रकट हाथि गँवार॥२॥

(जिनि) खोवै दादू राम धन, रिदै राखि जिनि जाइ।
 रतन जतन करि राखिए, चिंतामणि चित लाइ॥३॥

(दादू) मन ही मॉहै समझि करि, मन ही मॉहि समाइ।
 मन ही मॉही राखिए, बाहरि कहि न जणोंइ॥४॥

दादू समझि समाइ रहु, बाहरि कहि न जणोंइ।
 दादू अद्भुत देखिया, (तहों) ना को आवै जाइ॥५॥

कहि कहि का दिखलाइए, सौई सब जाणै
 दादू प्रगट काँ कहै, कछु समझि सयाणै॥६॥

(दादू) मन ही मॉहै ऊपजै, मन ही मॉहि समाइ।
 मन ही मॉहै राखिए, बाहरि कहि न जणाइ॥७॥

लै बिचार लागा रहै, दादू जरता जाइ।
 कबहूँ पेट न आफरै^१, भावै तेता खाइ॥८॥
 सोई सेवग सब जरै, जेती उपजै आइ।
 कहि न जणावै औरकों, दादू मॉहि समाइ॥९॥
 सोई सेवग सब जरै, जेता रस पीया।
 दादू गूँझ^२ गंभीर का, प्रकास न कीया॥१०॥
 सोई सेवग सब जरै, जे अलख लखावा।
 दादू राखै रामधन, जेता कछु पावा॥११॥
 सोई सेवग सब जरै, प्रेम-रस खेला।
 दादू सो सुख कस कहै, जहाँ आप अकेला॥१२॥
 सोई सेवग सब जरै, जेता घटि प्रकास।
 दादू सेवग सब लखै कहि न जणावै दास॥१३॥
 अजरजरै रसनाझरै, घट मॉहि समावै।
 दादू सेवग सो भला, जे कहि न जणावै॥१४॥
 अजर जरै रसना झरै, घट अपना भरि लेइ।
 दादू सेवग सो भला, जारै जौण न देइ॥१५॥
 अजर जरै रसना झरै, जेता सब पीवै
 दादू सेवग सो भला, राखै रस जीवै॥१६॥
 अजर जरै रसना झरै, पीवत थाकै नॉहिं।
 दादू सेवग सो भला, भरि राखै घट मॉहिं॥१७॥
 जरणों^३ जोगी जुगि-जुगि जीवै, झरणों^४ भरि-भरि जाइ।
 दादू जोगी गुरमुखी, सहजै रहै समाइ॥१८॥
 जरणा जोगी जगि रहै, झरणों परलै होइ।
 दादू जोगी गुरमुखी, सहजि समौना सोइ॥१९॥
 जरणों जोगी थिर रहै, झरणों घट फूटै।
 दादू जोगी गुरमुखी, काल थैं छूटै॥२०॥
 जरण जोगी जगपती, अविनासी अवधूत।
 दादू जोगी गुरमुखी, निरंजन का पूत॥२१॥
 (दादू) जरै सुनाथ निरंजन बाबा, जरै सुअलख अभेव।
 जरै सुजोगी सबकी जीवनि, जरै सुजगमैं देव॥२२॥

१. अफरता है २. गूढ़, गुप्त ३. धारण करना ४. झुलने वाला

जरै सु आप उपावणहारा^१, जरै सु जगपति सौई ।
 जरै सु आप अनूप है, जरै सु मरणों नाहीं ।।२३।।
 दादू जरै सु अविचल रॉम है, जरै सु अमर—अलेख ।
 जरै सु अविगत आप है, जरै सु जगमैं एक ।।२४।।
 जरै सु अविगत आप है, जरै सु अपरंपार ।
 जरै सु अगम—अगाध है, जरै सु सिरजनहार ।।२५।।
 (दादू) जरै सु निज निरंकार है, जरै सु निज त्रिधार ।
 जरै सु निज त्रिगुणमई, जरै सु निज ततसार ।।२६।।
 (दादू) जरै सु पूरण ब्रह्म है, जरै सु पूरणहार ।
 जरै सु पूरण परम गुर, जरै सु प्रॉण हमार ।।२७।।
 (दादू) जरै सु जोति सरूप है, जरै सु तेज अनंत ।
 जरै सु झिमिली नूर है, जरै सु पुंज रहंत ।।२८।।
 (दादू) एक बोल भूलै हरी, सुकोई न जॉणें प्रॉण ।
 औगुण मन ऑणें नतिं, और सब जाणै हरि जॉण ।।२९।।
 (दादू) तुम जीवों के औगुण तजे, सु कारण कौण अगाध ।
 मेरौ जरणों देखि करि, मति कौ सीखै साध ।।३०।।
 (दादू) जैसे सु प्रम प्रकास है, जरै सु प्रम उजास ।
 जरै सु प्रम उदीत है, जरै सु प्रम बिलास ।।३१।।
 (दादू) जरै सु प्रम प्रगास है, जरै सु प्रम बिगास ।
 जरै सु प्रम प्रगास है, जरै सु प्रम निवास ।।३२।।
 पवना पॉणी सब पीया, धरती अर आकास ।
 चंद—सूर—पावक मिले, पंचों एक गरास ।।३३।।
 चवदह तीन्हू लोक सब, दूंगे^२ सासैं सास ।
 दादू साधू सब जरै, सतगुर के बेसास ।।३४।।

६. हैरॉन कौ अंग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ॥१॥
 रतन एक बहु पारखू^१, सब मिलि करै विचार ।
 गूंगे गहले बावरे, दादू बार न पार ॥२॥
 (दादू), केते पारिख-जौहरी, पंडित-ग्याता ध्योंन ।
 जाण्यां जाइ न जाणिए, का कहि कथिए ग्योंन ॥३॥
 केते पारिख पचि मुए, कीमति कही न जाइ ।
 दादू सभि हैरॉन है, गूंगे का गुड़ खाइ ॥४॥
 सबही ग्योंनी पंडिता, सुर-नर रहे उरझाइ ।
 दादू गति गोब्यंद की, क्यूँ ही लखी न जाइ ॥५॥
 (दादू कहै) जैसा है तैसा नाँव तुम्हारा ज्यूँ है त्यूँ कहि सौई ।
 तूँ आपै जाणै आपकूँ, तहाँ मेरा गम नाहीं ॥६॥
 केते पारिख अंत न पावै, अगम-अगोचर मॉही ।
 दादू कीमति कोई न जाणै, खीर-नीर की नाँई ॥७॥
 जीव-ब्रह्म सेवा करै, ब्रह्म बराबरि होइ ।
 दादू जाणै ब्रह्म कौं, ब्रह्म सरीखा सोइ ॥८॥
 बार-पार को ना लहै, कीमति लेखा नाँहि ।
 दादू एकै नूर है, तेज पुंज सब मॉहि ॥९॥
 दस्त-पाव नहीं सीस मुख, श्रवन-नेत्र कहूँ कैसा ।
 दादू सब देखै सुणै, कहै गहै है अैसा ॥१०॥
 पाया पाया सब कहै, केतक देहु दिखाइ ।
 कीमति किन हूँ नाँ कही, दादू रहु ल्यौ लाइ ॥११॥
 अपना भंजन भरि लीया, उहाँ उताही^२ जाणि ।
 अपणी-अपणी सब कहैं, दादू बिड़द^३ वखाणि ॥१२॥
 पार न देवै आपणों गोपि गूझ मन मॉहि ।
 दादू कोई ना लहै, केते आवै जाँहि ॥१३॥
 (दादू) गूंगे का गुर का कहौं, मन जानत है खाइ ।
 राम-रसाइन पीवतौं, सो सुख कह्या न जाइ ॥१४॥

(दादू) एक जीभ केता कहूँ, पूरण ब्रह्म अगाध।
बेद कतेबाँ मिति नहीं, थकित भए सब साध॥१५॥

दादू मेरा एक मुख, कीरति अनत अपार।
गुण केते परमिति नहीं, रहे विचारि-विचारि॥१६॥

सकल सिरोमणि नाँव है, तूँ है तैसा माँहि।
दादू कोई ना लहै, केते आवै जाँहि॥१७॥

दादू केते कहि गए, अंत न आवै वोर।
हम भी कहते जात हैं, केते कहसे और॥१८॥

(दादू) मैं का जानौं का कहौं उस बलिए की बात।
का जाँनूँ कैसे रहे, मो पै लख्या न जात॥१९॥

दादू केते चलि गए, थके बहुत सुजान।
बाता नाँव न नीकले, दादू सब हैरौन॥२०॥

(दादू) ना कही दिठा नाँ सुणौं, ना को अखणहार।
ना को उथौं थैं^१ फिरया, ना उर बार न पार॥२१॥

(दादू) नहीं मृतक नहीं जीवतों, नहीं आवै नहीं जाइ।
नहीं सूता नहीं जागता, नहीं भूखा नहीं खाइ॥२२॥

न तहाँ चुप न बोलणों मैं-तैं नहीं कोइ।
दादू आपा पर नहीं, न तहाँ एक न दोइ॥२३॥

येक कहौं तौ दोइ है, दोइ कहौं तो येक।
यों दादू हैरौन है, ज्यों है तूँ ही देख॥२४॥

देखि दिवाने है गए, दादू खरे सयौन।
वार-पार को नाखै, दादू है हैरौन॥२५॥

दादू करणहार जे कुछ कीया, सोइ हूँ करि जाँणि।
जे तूँ चतुर सयाण जाँणराइ, तो याही परबाँणि॥२६॥

(दादू) जिनि मोहनि बाजी रची, सो तुम पूछौ जाइ।
अनेक एक थैं क्यूँ कीया, साहिब कहि समझाइ॥२७॥

घर परिचै सब घट लखै, प्रॉण परीचै प्रॉण।
ब्रह्म परीचै पाइये, दादू है हैरौन॥२८॥

चर्म द्रिस्टि देखै बहुत, आतम द्रिस्टि येकि।
ब्रह्मा द्रिस्टि परिचै भया, दादू बैठा देखि॥२९॥

येई नैनों देह के येई आतम होइ।
येई नैनों ब्रह्म के, दादू पलटे दोइ॥३०॥

७. लै कौ अँग

दादू न्मो न्मो नरंजन, नमसकार गुरदेवतह।
वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह॥११॥

(दादू) लै लागी तब जाणिए, जे कबहूँ छूटि न जाइ।
जीवत यौ लागी रहै, मूवा मॉहि समाइ॥१२॥

दादू जे नर प्रॉणी लै गता, सोई गत है जौंइ।
जे नर प्रॉणी लै (लय) रता, सो सहजै रहै समौंइ॥१३॥

सब तजि गुण आकार के, निहचल चित ल्यौ लाइ।
जहाँ आतम तहाँ पर आतमौ, दादू सहजि समाइ॥१४॥

तन मन पवनापंच गहि निरंजन ल्यौ लाइ।
ऑतम चेतनि प्रेम-रस, दादू रहै समाइ॥१५॥

अरथ अनूपम आप है, और अनरथ भाई।
दादू ऐसी जौंणि करि, तास्युँ ल्यौ लाई॥१६॥

ग्यॉन-भगति मन मूल गहि, सहज प्रेम ल्यौ लाइ।
दादू सब आरंभ तजि, जिनि काहूँ सँगि जाइ॥१७॥

(दादू) जोग समाधि सुख सुरति सौ, सहजै सहजै आव।
मुकता द्वारा महलका, इहै भगति का भाव॥१८॥

(दादू) सहज सुंनि मन राखिए, इन दून्युँ के मॉहिं।
ले समाधि रस पीजिए, तहाँ काल भैं नॉहिं॥१९॥

(दादू) बिन पाइन का पंथ है, क्यूँकरि पहुँचै प्रॉण।
बिकट घाट औघट खरे, मॉहिं सिखर असमौंन॥१०॥

मन ताजी चेतनि चढ़ै, ल्यौ की करै लगाम।
सबद गुरु का ताजणौ, कोई पहुँचै साध सुजान॥११॥

सिर परि राखि कबीर कौं निरंजन ल्यौ लाइ।
दादू मरग जुगौं, एक पलक में जाइ॥१२॥

किहि मारिगि है आईया, किहि मारगि है जाइ।
दादू कोई ना लहै केते करै उपाइ॥१३॥

सुनिहि मारगि आईया, सुनिहि मारगि जाइ ।
 चेतनि पैडों सुरति का, दादू रहु ल्यौ लाइ ।।१४।।
 (दादू) पार ब्रह्म पैंडा दीया, सहज सुरति ले सार ।
 मन का मारग माँहि घर, सँगी सिरजनहार ।।१५।।
 रॉम कहै जिस ग्यॉन सौं, अमृत रस पीवै ।
 दादू दूजा छाड़ि सब, लै लागीं जीवै ।।१६।।
 राम रसाइण पीवतों, जीव ब्रह्म है जाइ ।
 दादू आतम राम सौं , सदा रहे ल्यौ लाइ ।।१७।।
 पहली था सो अब भया, अब सो आगै होइ ।
 दादू तीन्यूँ ठौड़^१ की, बिरला बूझै कोइ ।।१८।।
 सुरति समाइ सनमुख रहै, जुगि-जुगि जन पूरा ।
 दादू प्यासा प्रेम का, रस पीवै सूरा ।।१९।।
 (दादू) जहाँ जगत गुर रहत है, तहाँ जे सुरति समाइ ।
 तौ इन ही नैनौं उलटि करि, कौतिग दखै आइ ।।२०।।
 दादू अंणौ विखण के पिरी, भिरे उलथौं मंझि ।
 जिसै बैठो माँ पिरी, निहारी दौ हंझ^२ ।।२१।।
 (दादू) उलटि अपूठा^३ आप मैं, अंतरि सोधि सुजॉण ।
 सो दिग तेरी बावरे, तज बाहर की बाँणि ।।२२।।
 सुरति अपूठी फेरि करि, आतम मॉहै ऑण ।
 लागि रहै गुरदेव सौ दादू सोई सयॉण ।।२३।।
 जहाँ आतम तहाँ रॉम है, सकल रह्या भरपूर ।
 अंतरगति ल्यौ लाइ रहु, दादू सेवग-सूर ।।२४।।
 (दादू) अंतरगति ल्यौ लाइ रहु, सदा सुरति सौं गाइ ।
 यहु मन नाचै मगन हवै, भावै ताल बजाइ ।।२५।।
 दादू गावै सुरति सौ, वाणी वावै^४ ताल ।
 यहु मन नाचै प्रेम सौं, आगै दीन-दयाल ।।२६।।
 अंतरगति ल्यौ लाइ रहु सदा सुरति सौं गाइ ।
 यहु मन नाचै मगन है, भावै ताल बजाइ ।।२७।।

१. स्थान २. नेत्रों को भीतर फेरकर प्रियतम के दर्शन कर । जहाँ मेरा प्रियतम
 बैठा है (सि.) उस हंस को देख ३. पीछे ४. बजाती है

दादू सब वातनि की एक है, दुनिया थैं दिल दूरि।
 सौई सेती सँग करि, सहज सुरति लै पूरि॥२८॥
 (दादू) एक सुरति सौं सब रहै, पंचौ उनमनि लाग।
 यहु अनमै उपदेस यहु, यहु परम जोग बैराग॥२९॥
 (दादू) सहजै सुरति समाइलै पार ब्रह्म कै अँग।
 अरस परस मिलि एक है सनमुख रहिबा सँग॥३०॥
 सुरति सदा सनमुख रहै, जहाँ तहाँ लै लीन।
 सहज रूप सुमिरण करै, निहकमी (निहकमी) दादू दीन॥३१॥
 सुरति सदा स्यावति रहै तिनके मोटे भाग।
 दादू पीवै राम-रस, रहै निरंजन लाग॥३२॥
 दादू सेवा सुरति सौं, प्रेम-प्रीति सौं लाइ।
 जहाँ अविनासी देव है, तहाँ सुरति बिना को जाइ॥३३॥
 (दादू) जय्यै वै व्रत गगन तैं टूटै, कहीं धरनि कहीं ठौम।
 लागी सुरति अँग थैं छूटै, सो कत जीवै रौम॥३४॥
 सहज जोग सुख मैं रहै, दादू नृगुण (निर्गुण) जौणि।
 गंगा उलटी फेरि करि जमुना मोंहै औणि॥३५॥
 (दादू) पर आतम सौं आतमों, ज्यौ जल जलहि समौन।
 तन मन पौणी लूण ज्यौ, पावै पद नृवाँण^१॥३६॥
 मन ही सौं मनसेविए, ज्यौ जल जलहि समाइ।
 आतम चेतनि प्रेमरस, दादू रहु ल्यौ लाइ॥३७॥
 छाड़े सुरति सरीर कौं, तेज-पुँज मैं आइ।
 दादू अैसे मिलि रहे, ज्यौ जल जलहि समाइ^२॥३८॥
 यों मन तजे सरीर कूँ, ज्यौ जागत सोइ जाइ।
 दादू बिसरै देखतों, सहजि सदा ल्यौ लाइ॥३९॥
 (दादू) जिहि आसणि पहली प्राण (था), तिहि आसण ल्यौलाइ।
 जे कछू था सोइ भया, कछू न व्यापै आइ॥४०॥
 तन-मन अपणों हाथि करि, ताही स्यौ ल्यौ लाइ।
 दादू नृगुण राम सौ, ज्यौ जल जलहि समाइ॥४१॥
 एक मना लागा रहै, अंति मिलेगा सोइ।
 दादू जाके मनि बसे, ताकूँ दरसन होइ॥४२॥

१. निर्वाण २. आत्मा परमात्मा में समा गई। जल=आत्मा का प्रतीक।

दादू निबहे त्यों चलै, धीरै धीरज मॉहि ।
 परसैगा पीव एक दिन, दादू थाकै नॉहि ॥४३॥
 जब मन मृतग है रहै इंद्री बल भागा ।
 काया के सब गुण तजे, निरंजन लागा ॥४४॥
 आदि अंति मधि एकरस, टूटै नहीं धागा ।
 दादू एकै रहि गया, तब जॉणी जागा ॥४५॥
 जब लग सेवग तन धरै, तब लग दूसर आइ ।
 एकमेक है मिलि रहै, तौ रस पीवण थें जाइ ॥४६॥
 ऐ दून्युं ऐसी कहैं, कीजे कौण उपाइ ।
 नों मैं एक न दूसरा, दादू रहु ल्यों लाइ ॥४७॥

८. निहकमी पतिव्रता कौ अंग

दादू न्मो न्मौ नरंजन, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ॥१॥
 एक तुम्हारै आसिरै दादू इंहि बेसास ।
 राम भरोसा तौ रहे, नहीं करणी की आस ॥२॥
 रहणी राजस^१ ऊपजै, करणी आपा होइ ।
 सबथैं दादू नृमला, सुमिरण लागा सोइ ॥३॥
 मन अपणा लै लीन करि, करणी सब जँजाल ।
 दादू सहजै नृमला, आपा मेटि संभाल ॥४॥
 दादू सिधि हमारे सॉईयाँ, करामाति करतार ।
 रिधि हमारे रॉम है, आगम अलख अपार ॥५॥
 गोब्यंद गुसॉई तुम्हें अम्हें चा गुरु, तुम्हें अम्हें चा ग्यॉन ।
 तुम्हे अम्हें चा^२ देव, तुम्हे अम्हें चा ध्यॉन ॥६॥
 तुम्हें अम्हें ची पूजा, तुम्है अम्हें ची पाती ।
 तुम्हें अम्हें चा तीर्थ, तुम्हें अम्हें चा जाती ॥७॥

१. राजस भाव २. हमारे, मेरे

तुम्हें अम्हें चा नाद, तुम्हें अम्हें चा भेद ।
 तुम्हें अम्हें चा पुराण तुम्हें अम्हें चा बेद ॥८॥
 तुम्हें अम्हें ची जुगति, तुम्हें अम्हें चा जोग ।
 तुम्हें अम्हें चा बैराग, तुम्हें अम्हें चा भोग ॥९॥
 तुम्हें अम्हें ची जीवनि, तुम्हें अम्हें चा जप ।
 तुम्हें अम्हें चा साधन, तुम्हें अम्हें चा तप ॥१०॥
 तुम्हें अम्हें चा सील, तुम्हें अम्हें चा संतोष ।
 तुम्हें अम्हें ची मुकति, तुम्हें अम्हें चा मोख ॥११॥
 तुम्हें अम्हें चा सिव तुम्हें अम्हें ची सकति ॥
 तुम्हें अम्हें चा आगम, तुम्हें अम्हें ची उकति ॥१२॥
 तूँ सति, तूँ अविगति, तूँ अपरंपार तूँ निराकार ।
 तुम्हें चा नाम, दादू चा विश्रॉम, देहु देहु अबलंवन रॉम ॥१३॥
 (दादू) रॉम कहूँ ते जोड़िवा, रॉम कहूँ ते साखि ।
 राम कहूँ ते गाइबा, राम कहूँ ते साखि ॥१४॥
 दादू कुल हमारै केसवा, सगात सिरजनहार ।
 जाति हमारी जगतगुर, परमेश्वर परिवार ॥१५॥
 दादू एक सगा संसार मैं, जिनि हम सिरजे सोइ ।
 मनसा-वाचा-क्रमनॉ, और न दूजा कोइ ॥१६॥
 सॉई सनमुख जीवतॉ, मरतॉ सनमुख होइ ।
 दादू जीवन-मरन का, सोच करै जिनि कोइ ॥१७॥
 (दादू) साहिब मिल्या त सब मिल्या, भेंटै भेंटै होइ ।
 साहिब रह्या त सब रह्या, नहीं त नॉही कोइ ॥१८॥
 साहिब रहतॉ सब रह्या, साहिब नातॉ नाइ ।
 दादू साहिब राखिये, दूजा सहज सुभाइ ॥१९॥
 सब सुख मेरे साईयॉ, मँगल अति आनंद ।
 दादू सजन सब मिले, जब भेटे परमानंद ॥२०॥
 दादू रीझै रॉम परि, अनंत न रीझै मन ।
 मीठा भवै एक रस, दादू सोई जन ॥२१॥
 दादू मेरे हिरदै हरि बसै, दूजा नाहीं और ।
 कहौ कहाँ धौ राखिए, नहीं आन कूँ ठौर ॥२२॥
 दादू नाराइन नैना बसै, मन ही मोहन राइ ।
 हिरदै माँहैं हरि बसै, आतम अँगि समाइ ॥२३॥

परमकथा उस एक की, दूजा नहीं आँन।
 दादू तन-मन लाइ करि, सदा सुरति रसपान॥१२४॥
 दादू तन-मन मेरा पीव सौं, येक सेज सुख सोइ।
 गहिला लोक न जॉणई, पचि-पचि आपा खोइ॥१२५॥
 (दादू) एक हमारे उरि बसे, दूजा मेल्ह्या^१ दूरि।
 दूजा देखत जाइगा, एक रह्या भरपूरि॥१२६॥
 निहचल का निहचल रहै, चंचल का चलि जाइ।
 दादू चंचल छाड़ि सब, निहचल स्थू ल्यो लाइ॥१२७॥
 साहिब रह्या त सब रह्या, साहिब जातों जाइ।
 दादू साहिब राखिए, दूजा सहज सुभाइ॥१२८॥
 मन चित मनसापलक मैं, सोई दूरि न होइ।
 निहकामी त्रिखै (निरखै) सदा, दादू जीवनि सोइ॥१२९॥
 जहाँ नौव तहाँ नीति (चाहिए), सदा राम का राज।
 निर विकार तनमन भया, दादू सीझै^२ काज॥१३०॥
 जिसकी खूवी खूव है सोई खूव सँभारि।
 दादू सुंदरि पीव सौं, नख-सख साजि सँवारि॥१३१॥
 (दादू) पंच अभूखन पीव करि, सोलह सब ही ठाँव।
 सुंदरि यहु सिंगार करि, ले ले पीव का नौव॥१३२॥
 यहु व्रत सुंदरि ले रहै, तौ सदा सुहागनि होइ।
 दादू भावे पीव कूँ, ता समि और न कोइ॥१३३॥
 साहिबजी का भावतों, कोई करै कलि मॉहि।
 मनसा-वाचा-क्रमनों, दादू घटि-घटि नॉहि॥१३४॥
 आन्या मॉहैं ऊठै (उठै) बैठै, आग्या आवे जाइ।
 आग्या मॉहैं लेवै देवै, आग्या पहरै खाइ॥१३५॥
 आग्या माहैं बाहरि भीतरि, आग्या रहै समाइ।
 आन्या माहैं तनमन राखे, दादू रहै ल्यो लाइ॥१३६॥
 दादू पतिबरता गृह आपणै, करै खसम^३ की सेव।
 ज्यूँ राखे त्यूँ ही रहै, आयागकारी टेव॥१३७॥
 (दादू) नीच ऊँच कुल सुंदरी, सेवा सारी होइ।
 सोई सुहागनि कीजिए, रूप न पीजै धोइ॥१३८॥

जब तन मन सौँप्या राम कौं, तासनि क्या बिभचार ।
सहज सील संतोष—सत, भाव—भगति लै सार ॥३६॥

पर पुरिखा सब परहरै, सुंदरि देखै जागि ।
अपण पीव पिछाणि करि, दादू रहिए लागि ॥४०॥

(दादू) आन पुरिख हूँ बहनड़ी, परम पुरिख भरतार ।
हूँ अबला समझौं नहीं, तूँ जाणै करतार ॥४१॥

जिसका तिसकुँ दीजिए, सौँई सनमुख आइ ।
दादू नखसख सौँपि सब, जिनि यहु बँट्या जाइ ॥४२॥

सारा दिल सौँई सौँ राखे, दादू सोई सयौन ।
जे दिल बंटहि आपणी, सो सब मूढ़ अयौन^१ ॥४३॥

(दादू) सारौ सौँ दिल तोड़ि करि, सौँई सँ जोड़ै ।
सौँई सेती जोड़ि करि, काहे कूँ तोड़ै ॥४४॥

साहिब देवै राख्यो, सेवग दिल चोरै ।
दादू सब धन साह का, भूला मन भोरै ॥४५॥

दादू मनसा-बाचा-क्रमनो^२, अंतरि आवे एक ।
ताकुँ प्रतखि रौम जी, बातें और अनेक ॥४६॥

दादू मनसा-बाचा-क्रमनां, हिरदै हरि का भाव ।
अलख पुरिख आगे पड़ा, ताके त्रिभुवण राव ॥४७॥

दादू मनसा-बाचा-क्रमनो, हरि जी सँ हित होइ ।
साहिब सनमुख सँगि है, आदि निरंजन सोइ ॥४८॥

दादू मनसा-बाचा-क्रमनो, आतुर कारनि रौम ।
सँग्रथ सौँई सब करे, प्रगट पूरे कौम ॥४९॥

नारी पुरिखा देखि करि, पुरिखा नारी होइ ।
दादू सेवग रौम का, सीलवंत है सोइ ॥५०॥

पर पुरिखा रत बाँझणी^३, जौणे जे फल होइ ।
जनम बिगोवे आपणो दादू नृफल (निरफल) सोइ ॥५१॥

नारी सेवग तब लगै, जब लग सौँई पास ।
दादू परसें आँन कूँ, ताकी कैसी आस ॥५२॥

दादू तजि भरतार कूँ, पर पुरिखा रत होइ ।
ऐसी सेवा सब करै, कौमणगारी^४ सोइ ॥५३॥

१. जो अपने दिल को बाँटते हैं, वे सब मूर्ख और अज्ञानी हैं २. मन-वचन-कर्म से ३. बाँझ ४. टोटका करने वाली

कीया मन का भावता, मेटी आग्या कार।
 क्या ले मुख दिखलाईए, दादू उस भरतार॥५४॥
 दादू करोंमॉति कलैंक है, जाकै हिरदै एक।
 अति आनंद विभचारणी, जाके खसम अनेक॥५५॥
 (दादू) पतिभरता कै एक है, विभचारणी के दोइ।
 पतिभरता विभचारणी, मेला क्यूँ करि होइ॥५६॥
 (दादू) पतिभरता के एक है, दूजा नॉही ऑन।
 विभचारनि के दोइ हैं, परघर एक समॉन॥५७॥
 (दादू) पुरिष हमारा एक है, हम नारी बहूनों।
 जे जे जैसी ताहि सों, खेलै निसहि सॅग॥५८॥
 दादू रहता राखिए, बहता देइ बहाइ।
 बहते संगि न जाइए, रहते स्यूँ ल्यौ लाइ॥५९॥
 जिनि बाझे काहू करम सों, दूजे आरंभि जाइ।
 दादू एकै मूल गहि, दूजा देइ बहाइ॥६०॥
 बावें^१ देखिन दाहिणें तनमन सनमुख राखि।
 दादू नृमल तत गहि, सति सबद यहु साखि॥६१॥
 दूजा नैन न देखिए, श्रबनौ सुणै न जाइ।
 जिभ्या ऑन न बोलिए, अँगि न और सुहाइ॥६२॥
 चरनहु अनत न जाइए, सब उलटा मॉहि समाइ।
 उलटि अपूठा^२ आपमैं, दादू रहु ल्यौ लाइ॥६३॥
 (दादू) दूजै अंतर होत है, जिनि ऑणै मन मॉहि।
 तहाँ ले मन कूँ राखिए, जहाँ कछू दूजा नॉहि॥६४॥
 भरँम तिमर भाजे नहीं, रे जीय ऑन उपाइ।
 दादू दीपक साजिं ले, सहजै ही मिटि जाइ॥६५॥
 (दादू) सो बेदन नहीं बावरे, ऑन कीया जे जाइ।
 सब दुख भंजन साईयों, ताहीं स्यूँ ल्यौ लाइ॥६६॥
 (दादू) वोखद^३ मूली कछू नहीं, ए सब झूठी बात।
 जे वोखद ही जीविए तौ काहे कूँ मरि जात॥६७॥
 (दादू) मूल गहै सो निहचल बैठा, सखमैं रहे समाइ।
 डाल पॉन भ्रमत फिरै, वेदों दीया बहाइ॥६८॥

साहिब का दर छाड़ि करि, सेवग कही न जाइ ।
 दादू बैठा मूल गहि, डालौं फिरै बलाइ ॥६६॥
 दादू जब लग मूल न सींचिए, तब लग हरया न होइ ।
 सेवा त्रिफल सब गई, फिरि पछितौनों सोइ ॥७०॥
 दादू सींचे मूल के, सब सींच्या बिस्तार ।
 दादू सींचे मूल बिन, बादि गई बेगारि ॥७१॥
 सब आया उस येक मैं, डाल पौन फल-फूल ।
 दादू पीछें क्या रह्यो जब निज पकड़या मूल ॥७२॥
 खेत न निपजे बीज बिन, जल सींचे क्या होइ ।
 सब त्रिफल दादू रौम बिन, जानत है सब कोइ ॥७३॥
 (दादू) जब मुख मॉहै मेलिए, तब सब ही त्रिपता होइ ।
 मुख विन मेलै आँन दिसि, त्रिपति न मानै कोइ ॥७४॥
 जब देव निरंजन पूजिए, तब सब आया उस मॉहि ।
 डाल पौन-फल-फूल सब, दादू न्यारे नॉहि ॥७५॥
 दादू टीका रौम कूँ, दूसर दीजै नॉहि ।
 ग्यौन-ध्योंन-तप-भेख-पख^१, सब आया उस मॉहि ॥७६॥
 (दादू) साधू राखैं राम कूँ, संसारी माया ।
 संसारी पालव^२ गहै, मूल साधू पाया ॥७७॥
 दादू जे कुछ कीजिए, अविगत बिन आराध ।
 कहिबा, सुणिबा, देखिबा, करिबा सब अपराध ॥७८॥
 सब चतुराई देखिए, जे कछु कीजै आँन ।
 दादू आपा सौंपि सब, पीव को लेहु पिछौनि ॥७९॥
 दादू दूजा कछू नहीं, एक सति करि जौणि ।
 दादू दूजा क्या करै, जिनि येक लीया पहचौणि ॥८०॥
 केई^३ बाँछै^४ मुकति फल, केई अमरापुरि^५ बास ।
 केई बाँछै प्रम गति, दादू रौम मिलन की आस ॥८१॥
 तुम हरि हिरदे हेत सों, प्रगटो प्रमानंद (परमानंद)
 दादू देखे नैन भरि, सब केता होइ अनंद ॥८२॥
 दादू प्रेम-पियाला रौम-रस, हम कूँ भावै येह ।
 रिधि-सिधि माँगे मुकति फल, चाहे तिनकूँ देह ॥८३॥

१. पक्ष, आधार २. पल्लव, पत्ते ३. कोई ४. चाहता है
 ५. इन्द्रपुरी

कोटि बरस क्या जीवणों, अमर भए क्या होइ।
 प्रेम-भगति रस-रॉम बिन, का जीवन दादू सोइ॥८४॥
 कछू न कीजै कौमनों, श्रगुण-नृगुण होइ।
 पलटि जीव थे ब्रह्मगति, सब मिलि मॉनै मोहि॥८५॥
 घट अजरावर है रहै, बंधन नॉहीं कोइ।
 मुक्ता^१ चौरासी^२ मिटै, दादू संसै सोइ॥८६॥
 निकटि निरंजन^३ लागि रहु, जबलग अलख-अमेव।
 दादू पीवै रॉम-रस, निहकामी निज सेव॥८७॥
 दादू सालोक^४ संगति रहै, सॉमीप^५ सनमुख सोइ॥
 सारूप^६ सारीखा भया, साजोज^७ एकै होइ॥८८॥
 (दादू) रॉम रसिक बॉछै नहीं, परम पदारथ चारि^८।
 अठ सिधि नौ निधि क्या करे, राता सिरजन हार॥८९॥
 फल कारनि सेवा करे, जॉचै त्रिभुवण राव।
 दादू सो सेवग नहीं, खेले अपणों डाव^९॥९०॥
 सहकॉमी सेवा करें, मॉगे मुगध गॅवार।
 दादू अैसे बहुत हैं, फल के भूचणहार^{१०}॥९१॥
 तन-मन लै लागा रहै, राता सिरजन हार।
 दादू कछू मॉगे नहीं, ते बिरले संसार॥९२॥
 दादू सॉई कूँ संभालता, कोटि बिघन टलि जॉहि।
 राई मान बिसंधरा^{११}, केते काठ जलॉहि॥९३॥
 रॉम नॉम गुर सबद सँ रे मन पेलि भरम।
 निहकरमी सँ मन मिल्या, दादू काटे करम॥९४॥
 सहजै ही सब होइगा गुण इन्द्री का नास।
 दादू राम सँभालतॉ, कहै करम के पास॥९५॥
 एक महूरत मन रहै, नॉव निरंजन पास।
 दादू सब ही देखतॉ, सकल करम का नास॥९६॥
 एक रॉम के नॉव बिन, जिव की जलण न जाइ।
 दादू केते पचि मुए, करि-करि बहुत उपाइ॥९७॥

१. मुक्त पुरुषों का २. चौरासी लाख योनियों का बन्धन ३. निराकार
 ४. इष्ट लोक में वास नाक मुक्ति ५. इष्ट के समीप वास नामक मुक्ति
 ६. इष्ट का रूप धारण करना ७. इष्ट में लय नामक मुक्ति ८. धर्म-
 अर्थ-काम-मोक्ष ९. दौव १०. चाहने वाले ११. अग्नि

(दादू) करम करम काटे करमें करम न जाइ।
करमें करम छूटै नहीं, करमें करम बँधाइ॥६८॥

६. चितावणी कौ अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह।
वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह॥१॥

(दादू) जे साहिब कूँ भावै नहीं, सो हमथैं जिनि होइ।
सतगुर लाजे आपणों, साध न मानै कोइ॥२॥

(दादू) जे साहिब कूँ भावै नहीं, सो सब परहरि प्रॉण।
मनसा—वाचा—क्रमनों, जे तूँ चतुर सयॉण॥३॥

(दादू) जे साहिब कूँ भावै नहीं, सो जीव न कीजी रे।
परहरि विषै—बिकार सब, अमृत रस पीजी रे॥४॥

(दादू) जे साहिब कूँ भावै नहीं, सो बाट न बूझी रे।
सॉई सौँ सनमुख रही, इस मन सौँ झूझी रे॥५॥

रॉम कहे सब रहत है, नख—सख सकल सरीर।
रॉम कहे बिन जात है, समझो मनवों बीर॥६॥

रॉम कहे सब रहत है, लाहा—मूल सहेत।
रॉम कहे बिन जात है, मूरख मनवों चेत॥७॥

रॉम कहे सब रहत है, आदि—अंत ल्यौलाइ।
रॉम कहे बिन जात है, यहु मन बहुरि न आइ॥८॥

रॉम कहे सब रहत है, जीव—बह्य की लार।
रॉम कहे बिन जात है, रे मन ! होउ हुसियार॥९॥

दादू अचेत न टोइए, चेतनि सौ चित लाइ।
मनवों सूता नींद भरि, सॉई सेंगि जगाइ॥१०॥

दादू अचेत न होइए, चेतन सौँ करि चित।
ए अनहद जहाँथै ऊपजे, तहाँ ही नित॥११॥

(दादू) जन कछू चेत करि, सौदा लीजी सार।
निखर कमाई न छूटनों, अपने जीव विचार॥१२॥

(दादू) करि सॉई की चाकरी, एहरि नाँव न छोड़ि।
जाणा है उस देस कौँ, प्रीति पिया सौँ जोड़ि॥१३॥

आपा—पर सब दूरि करि, रामनाम रसलागि ।
 दादू औसर जात है, जागि सकै तो जागि ॥१४॥
 बार—बार यहु तन नहीं, नर नाराईण देह ।
 दादू बहुरि न पाईये, जनम अमोलिक एह ॥१५॥
 दुख दरिया संसार है, सुख का सागर रॉम ।
 सुख सागर चलि जाइये, दादू तजि बेकॉम ॥१६॥
 एका एकी रॉम सौं, कै साधु कौ सँग ।
 दादू अनत न जाइये, और काल (कौ) अंग ॥१७॥
 (दादू) तनमन के गुण छाड़ि सब, जब होई निनारा ।
 अपने नैनौ देखिए, प्रगट पीव प्यारा ॥१८॥
 (दादू) झॉती^१ पाये पसु^२ पिरी^३, अंदरि सो आहे ।
 हाँणी^४ थाणें^५ बिचि मैं, मिहरी^६ न लाहे^७ ॥१९॥
 दादू झॉती पाये खसु पिरी, हाणे लाइ म बेर ।
 सथ^८ सभोई^९ हलियो^{१०}, पोइ^{११} पसंदौ^{१२} केर^{१३} ॥२०॥

१०. मन कौ अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ॥१॥
 (दादू) यहु मन बरजी बावरे, घट में राखी घेरि ।
 मन—हस्ती माता बहे, अँकुस दे—दे फेरि ॥२॥
 हस्ती छूटा मन फिरै, क्यूँ ही बंध्या^{१४} न जाइ ।
 बहुत महावत पचि गए, दादू कछू न बसाइ ॥३॥
 जहाँ थे मन उठि चलै, फेरि तहाँ ही राखि ।
 तहाँ दादू लै लीन करि, साध कहें गुर साखि ॥४॥
 दादू थोरै-थोरै^{१५} हटकिए^{१६}, रहो ल्यो लाइ ।
 जब लागा उनमन सौं, तब मन कहीं न जाइ ॥५॥

१. झॉकी, खिड़की २. दर्शन ३. प्रियतम का ४. अब ५. आप
 ६. कृपा ७. छोड़ेगा ८. साथी ९. सभी १०. चल दिये
 ११. बाद में १२. पसंद करेगा १३. कौन (सिंधी) १४. बॉधा
 १५. थोड़ा १६. रोकिये

आडा दे दे रॉम कूँ, दादू राखे मन ।
 साखी दे असथिर करे, सोई साधू जन ।।६।।
 सोई सूर जे मन गहै, निमख न चलणें देइ ।
 जब ही दादू पग भरै, तब ही पाकड़ि लेइ ।।७।।
 (दादू) जेती लहरि समंद की, ते ते मनह मनोरथ मारि ।
 वैसैं सब संतोष करि, गहि आतम येक बिचारि ।।८।।
 (दादू) जे मुख मॉहै बोलता, श्रवणों सुनता आइ ।
 नैनों माहैं देखता, सो अंतरि उरझाई ।।९।।
 दादू चंबक देखि करि, लोहा लागै आइ ।
 (यों) मन-गुण-यंद्री एक सौं, दादू लीजे लाइ ।।१०।।
 मन का आसण जे लीव जाणैं, तौ ठौर ठौर सब सूझै ।
 पंचौ आँणि एक घरि राखै, तब अगम निगम सब बूझै ।।११।।
 बैठे सदा एक रस पीवै, निरबैरी कत झूझै ।
 आतम राम मिलै जब दादू, तब अंगि न लागे दूजे ।।१२।।
 जब लग यह मन थिर नहीं, तब लग परस न होइ ।
 दादू मनवाँ थिर भया, सहजि मिलेगा सोइ ।।१३।।
 (दादू) बिन अवलंबन क्यूँ रहै, मन चंचल चलि जाय ।
 इस्थिर मनवाँ तौ रहै, सुमिरण सेती लाइ ।।१४।।
 हरि सुमिरण सौं हेत करि, तब मन निहचल होइ ।
 दादू बेध्या प्रेम-रस, बीख न चाले सोइ ।।१५।।
 जब अंतरि उरझया एक सौं, तब थाके सकल उपाइ ।
 दादू निहचल थिर भया, तब चलि कहीं न जाइ ।।१६।।
 दादू कउवा वोहिथ वैसि करि, मंझि समंदा जाइ ।
 उड़ि-उड़ि थाका देखि तब, निहचल बैठा आइ ।।१७।।
 यहु मन कागज की गुड़ी, ऊड़ि चढ़ी आकास ।
 दादू भीगी प्रेमजल, तब आइ रही हम पास ।।१८।।
 दादू खीला^१ गारि^२ का, निहचल थिर न रहाइ ।
 दादू प नहीं साच के, भरमै दह दिसि जाइ ।।१९।।
 तब सुख आनंद आतमों, मन थिर मेरा होइ ।
 दादू निहचल रॉम सौं, जे करि जाणों कोइ ।।२०।।

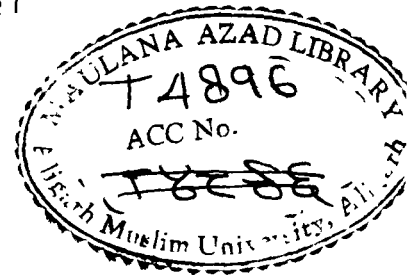
मत नृमल तन होत है रौम नौम आनंद ।
 दादू दरसन पाइए, पूरण परमानंद ॥१२१॥
 (दादू) फूटे थैं सारा भया, संधे संधि मिलाइ ।
 बाहुडि विषै न भूचिए, तौ कबहूँ फूटि न जाइ ॥१२२॥
 (दादू) यह मन भूला सो गली, नरकि जौण के घाट ।
 इब मन अविगत नाथ सौँ, गुरु दिखाई बाट ॥१२३॥
 (दादू) मन सुध स्याबति^१ आपणों, निहचल होवै हाथि ।
 तौ इहाँ ही आनंद है, सदा निरंजन साथि ॥१२४॥
 मन निहचल करि लीजे नौम, दादू कहै तहीं है रौम ॥१२५॥
 जब मन लागै राम सौँ, तब अनत काहे कौँ जाइ ।
 दादू पौणी लूण ज्युँ, ऐसे रहै समाइ ॥१२६॥
 (दादू) ज्यौँ जल वैसे दूध मैं, त्यों पौणी मैं लूण ।
 ऐसे आतम राम सौँ, मन हठ साधै कौण ॥१२७॥
 मन का मस्तक मूँडिए, काम-क्रोध के केस ।
 दादू विषै-विकार सब, संत गुर के उपदेस ॥१२८॥
 क्या मुख ले हँसि बोलिए, दादू दीजै रोइ ।
 जनम अमोलिक आपणों, चले अक्यारथ खोइ ॥१२९॥
 सो कुछ हम थैं ना भया, जापर रीझै रौम ।
 दादू इस संसार मैं, हम आये बेकौम ॥१३०॥
 जा करणि जगि जीजिए सो पद हिरदे नौहि ।
 दादू हरि की भगति बिण, धृग^२ जीवण कलि मॉहि ॥१३१॥
 कीया मन का भावता, मेरी आग्याकार ।
 क्या ले मुख दिखलाईए, दादू उस भरतार ॥१३२॥
 इंद्री स्वारथि सब कीया, मनि मॉग्या सो दीन्ह ।
 जा कारणि जगि सिरजिया, सो दादू कछू न कीन्ह ॥१३३॥
 कीया था इस काम कौँ, सेवा कारणि साज ।
 दादू भूला बंदगी, सर्या न एको काज ॥१३४॥
 दादू विषै विकार सौँ, जब लग मन राता ।
 तब लग चीति न आवई, त्रिभुवण पति दाता ॥१३५॥

(दादू) का जौनों कब होइगा, हरि-सुमिरण इकतार ।
 का जौनों कब छाड़िहैं, यहु मन बिषै-बिकार ॥३६॥
 वादि ही जनम गमाईया, कीए बहुत विकार ।
 यहु मन अस्थिर ना भया, जहाँ दादू निज सार ॥३७॥
 (दादू) जिनि विस पीवै बावरे, दिन-दिन बाढै रोग ।
 देखत ही मरि जायगा, तजि बिसया रस-भोग ॥३८॥
 आपा पर सब दूरि कर, रॉम नॉम रस लागि ।
 दादू औसर जात है, जागि सकै तो जागि ॥३९॥
 दादू सब कुछ बिलसतों^१, खातों पीतों होइ ।
 दादू मन का भावता, कहि समझावै कोइ ॥४०॥
 दादू मन का भावता, मेरी कहै बलाइ ।
 साच राम का भावता, दादू कहै सुनि आइ ॥४१॥
 ए सब मन का भावता, जे कुछ कीजै ऑन ।
 मन गहि राखै एक सौं, दादू साध सुजौन ॥४२॥
 जे कछु भावै राम कौं, सो तत कहि समझाइ ।
 दादू मन का भावतों, सबको कहै बणाइ ॥४३॥
 (दादू) पेड़ै^२ पग चालै नहीं, होइ रह्या गलियार^३ ।
 राम-रथि निबहै नही, खैवे कूँ हँसियार ॥४४॥
 दादू का परमोधि^४ आन कूँ आपुण वहिया जात ।
 औरों कूँ अमृत कहै, आपन ही विष-खात ॥४५॥
 (दादू) पँचूँ ये परमोधि लै, इनहीं को उपदेस ।
 यहु मन अपणों हाथि करि, तौ चेला सब देस ॥४६॥
 (दादू) पँचूँ का मुख मूल है, मुख का मनवों होइ ।
 यह मन राखै जतन करि, साध कहावै सोइ ॥४७॥
 (दादू) जब लग मन के दोइ गुण, तब लग निपनों^५ नाहिं ।
 दोइ गुण मन के मिटि गए, तब निपनों मिलि मॉहि ॥४८॥
 काचा-पाका जब लगै, तबलग दूजा होइ ।
 काचा-पाका दूरि करि, दादू एकै सोइ ॥४९॥
 सहज रूप मन का भया, जब द्वै-द्वै मिटि तरंग ।
 ताता सीला संमि भयों, तब दादू एकै अंग ॥५०॥

१. प्रसन्न होता २. पग ३. गलिया पशु/घोड़ा ४. प्रसन्न करे
 ५. बिना पानी का, शुद्ध

बहुरूपी मन तब लगे, जब लग माया रँग।
 जब मन लागा रॉम सौं, तब दादू एकै अँग॥५१॥
 हीरा मन परि राखिए, तब दूजा चढ़ै न रंग।
 दादू यौं मन थिर भया, अविनासी कै संग॥५२॥
 सुख-दुख सब झॉई पड़ै, जब लग काचा मन।
 दादू कछु व्यापे नहीं, तब मन भया रतन॥५३॥
 दादू थाका मन डोले नहीं, निहचल रहै समाइ।
 काचा मन दह दिसि फिरै, चँचल चहुँदिसि जाइ॥५४॥
 सीप सुधारस ले रहै, पीवै न खारा नीर।
 मॉहैं मोती नीपजै, दादू बंद सरीर॥५५॥
 दादू मन पंगुल भया, सब गुण गए बिलाइ।
 है काया नौजोवनी^१ मन बूढ़ा होइ जाइ॥५६॥
 (दादू) कछिब अपने करि लीए, मन-इंद्री निज ठौर।
 नॉइ निरंजन लागि रहु, प्राणी परहरि और॥५७॥
 दादू मन यंद्री ऑधा कीया, घट मैं लहरि उपाइ।
 सॉई सतगुर छाड़ि करि, देखि दिवॉनों जाइ॥५८॥
 (दादू) रॉम विना नर रँक है, जाचै तीन्यूँ लोक।
 जब मन लागा राम सौं, तब भागे दालिद दोष॥५९॥
 इंद्री का आधीन मन, जीव-जंत सब जॉचै।
 तिणे-तिणे के आगैं दादू, तिहूँ लोक फिरि नाचै॥६०॥
 यंद्री अपणै बसि करै, सो काहे जाचण जाइ।
 दादू असथिर आतमॉ, आसणि बैसे आइ॥६१॥
 (दादू) मन-मनसा दून्यू मिले, तब जीव कीया भॉड़^२।
 पँचूँ का फेर्या फिरै, माया नचावै रॉड़॥६२॥
 (दादू) नकटी आगैं नकटा नाचे, नकटी ताल बजावै।
 नकटी आगैं नकटा गावे, नकटी नकटा भावै॥६३॥
 पंचौ यंद्री भूतहैं, मनवा खेत्रपाल।
 मनसा देवी^३ पूजिए, दादू तीन्यूँ काल॥६४॥
 जीवत लूटैं जगत सब, मृतक लूटै देव।
 दादू कहां पुकारिए, करि करि मूए सेव॥६५॥

दादू पीला गारिका, निहचल थिर न रहाइ ।
 पग नहीं पूरे साच के, भ्रमैं दह दिसि जाइ ॥६६॥
 (दादू) अगनि धोम ज्युं नीकलै, देखत सबै बिलाइ ।
 त्यूं मन बिछुडया राम सौं, दह दिसि बीखरि^१ जाइ ॥६७॥
 घर छाड़े जबका गया, मन बहुरि न आया ।
 दादू अगनि कै धोम ज्युं, खुर खोज न पाया ॥६८॥
 (दादू) सबकाहू के होत है, तन-मन पसरै जाइ ।
 अैसा कोई एक है, उलटा मॉहिं समाइ ॥६९॥
 क्यूं करि उलटा आणिए, पसरि गया मन फेरि ।
 दादू डोरी सहज की, यौं आणै घरि घेरि ॥७०॥
 (दादू) साध सबद सौं मिलि रहै, मन राखे बिलैवाइ ।
 साध सबद बिन क्यूं रहै, तब ही बीखरि जाइ ॥७१॥
 एक निरंजन नॉव सौं, साधू संगति मॉहिं ।
 दादू मन बिलंवाइए, दूजा कोई नॉहिं ॥७२॥
 चंचल चहुं दिसि जात है, गुरवाइक सौं बंधि ।
 दादू संगति साध की, पारबह्म सौं संधि ॥७३॥
 तन में मन आवै नहीं, निस दिन बाहरि जाइ ।
 दादू मेरा जीव दुखी, रहै न राम समाइ ॥७४॥
 तन में मन आवै नहीं, चंचल चहुं दिसि जाइ ।
 दादू मेरा जीव दुखी, रहै नहीं ल्यौं लाइ ॥७५॥
 (दादू) कोटि जतन करि करि मूए, यहु मन चहुं दिसि जाइ ।
 रॉम नॉइ रोक्या रहै, नॉही ऑन उपाइ ॥७६॥
 (दादू) बिन अवलंबन क्यूं रहै, मन चंचल चलि जाइ ।
 अस्थिर मनवों तो रहै, सुमिरण सेती लाइ ॥७७॥
 यहु मन वहु बकबाद सौं, बाइ भूत होइ जाइ ।
 दादू बहुत न बोलिए, सहजै रहै समाइ ॥७८॥
 (दादू) भूला भूंदू^२ फेरि मन, मूरिख मुगध गंवार ।
 सुमिरि संनेही आपणों, आतम का आधार ॥७९॥
 मन माणिक मूरिख राखि रे, जण-जण हाथि म देहु ।
 दादू पारिख जौहरी, राम साध दोइ लेहु ॥८०॥



(दादू) मारयों विन मानै नहीं, यहु मन हरि की आँण।
ग्यों खडग गुरदेव का, ता सेंगि सदा सुजॉण॥८१॥

मन मृघा^१ मारै सदा, ताका मीठा मास।
दादू खाइबे कूँ हिल्या, ताथैं आँन उदास॥८२॥

कह्या हमारा मॉनि मन, पापी परहरि कॉम।
विखिया का सेंग छाड़ि दे, दादू कहि रे रॉम॥८३॥

(दादू) केता कहि संमझाइया, मॉनै नहीं निलज।
मूरिख मन समझै नही, कीये काज अकज॥८४॥

तब ही कारा होत है, हरि बिन चितवत आन।
क्या कहिए समझै नहीं, दादू सिखत ज्ञान॥८५॥

मन ही मंजन कीजिए, दादू दरपन देह।
मॉहैं मूरति देखिए, इहि औसरि करि लेह॥८६॥

(दादू) पॉणी धोवे बावरे, तन का मैल न जाइ।
मन नृमल तब होइगा, जब हरि के गुण गाइ॥८७॥

(दादू) ध्यान धरें क्या होत है, जे मन का मैल न जाइ।
बग मीनी का ध्योंन धरि, पसू बिचारे खाइ॥८८॥

(दादू) काले थैं धौला भया, दिल दरिया में धोइ।
मालिक सेती मिलि रह्या, सहजैं नृमल होइ॥८९॥

(दादू) जिसका द्रपन ऊजला, सो दरसन देखै मॉहि।
जिसकी मैली आरसी, सो मुख देखै नॉहि॥९०॥

दादू नृमल सुध मन, हरि रेंगि राता होइ।
दादू कंचन करि लीया, काच कहै नहीं कोइ॥९१॥

यहु मन अपणा थिर नहीं, करि नही जाणै कोइ।
दादू नृमल देव की, सेवा क्यों करि होइ॥९२॥

(दादू) यहु मन तीन्यूँ लोक मैं, अरस-परस सब होइ।
देही की रख्या करैं, हम जिनि भीटे कोइ॥९३॥

(दादू) देह जतन करि राखिए, मन राख्या नहीं जाइ।
उत्तिम मधिम वासनों, भलाँ-बुरा सब खाइ॥९४॥

दादू हाडौँ मुख भरया, काम रह्या लपटाइ।
माहें जिभ्या मास की, ताही सेती खाइ॥९५॥

नऊ दुबारे न्रक (नरक) निसदिन बहै बलाइ ।
 सुचि कहौ लौं राखिए, राम सुमरि गुण गाइ ॥६६॥
 प्रॉणी तनमन मिलि रह्या, यंद्री सकल विकार ।
 दादू ब्रह्मा सुद्र घरि, कहौ रहै आचार ॥६७॥
 दादू जीवै पलक मैं, मरतौ कलप बिहाइ ।
 दादू यहु मन तसकरा, जिनि कोई पतियाइ ॥६८॥
 (दादू) मूबा मन हम जीबत देख्या, जैसे मड़हटि^१ भूत ।
 मूबा पीछैं उठि उठि लागे, ऐसा मेरा पूत ॥६९॥
 निहचल करतौ जुग गए, चंचल तब ही होइ ।
 दादू पसरै पलक मैं, यह मन मारै मोहि ॥६९॥
 दादू यहु मन मीड़का, जल सौं जीवै सोइ ।
 दादू यहु मन रमंद^२ है, जिनि र पतीजै कोइ ॥७०॥
 (दादू) माहै सूखिम है रहै, बाहरि पसारै अँग ।
 पवन लागि पोढा^३ भया, काला नाग भुवँग ॥७०१॥
 (दादू) सुपिना तबलग देखिए, जबलग चंचल होइ ।
 जब निहचल लागा राम सौं तब सुपिना नौही कोइ ॥७०२॥
 जागत जहाँ जहाँ मन रहै, सोवत तहाँ तहाँ जाइ ।
 दादू जे जे मनि बसे, सोई सोई देखे आइ ॥७०३॥
 दादू जे जे चिति वसे, सोइ सोइ आवै चीति ।
 बाहरि भीतरि देखिए, जाही सेती प्रीति ॥७०४॥
 सावणि हरिया देखिए, मन—चित ध्यान लगाइ ।
 दादू केते जुग गए, तौ भी हस्या न जाई ॥७०५॥
 (दादू) जिसकी सुरति जहाँ रहै, तिसका तहाँ विश्रॉम ।
 भवै माया — मोह मैं, भावै आतम रॉम ॥७०६॥
 जहाँ मन राखै जीवतौ, मरतौ तिस घरि जाइ ।
 दादू वासा प्रॉण का, जहाँ पहली रह्या समाइ ॥७०७॥
 जहाँ सुरति तहाँ जीव है, जहाँ नाहीं तहाँ नौहि ।
 गुण—नृगुण जहाँ राखिए, दादू घर बन मॉहि ॥७०८॥
 जहाँ सुरति तहाँ जीव है, आदि अंति असथॉन ।
 माया—ब्रह्म जहाँ राखिए, दादू तहाँ विश्राम ॥७०९॥

जहां सुरति तहां जीव है, जीवण-मरण जिस ठौर ।
 विष-अमृत जहाँ राखिए, दादू नॉही और ॥११०॥
 जहाँ सुरति तहाँ जीव है, जहाँ जॉणैं तहाँ जाइ ।
 गम-अगम जहाँ राखिए, दादू तहाँ समांइ ॥१११॥
 मन-मनसा का भाव है, अंति फलेगा सोइ ।
 जब दादू बाँणिक बण्यो, तब आसै आसण होइ ॥११२॥
 जप-तप करणी करि गए, श्रगि (सरगि) पहुँते^१ जाइ ।
 दादू मन की वासनों, न्रकि (नरकि) पड़े फिरि आइ ॥११३॥
 पाका-काचा है गया, जीत्या-हारै डाव ।
 अंति कालि गाफिल भया, दादू फिसले पाव ॥११४॥
 यहु मन पँगुल पंच दिन, सब काहू का होइ ।
 दादू उतरि अकास तैं, धरती आया सोइ ॥११५॥
 औसा कोई एक मन, मरै सु जीव नॉहिं ।
 दादू ऐसे बहुत हैं, फिरि आवै कलि मॉहिं ॥११६॥
 देखादेखी सब चले, पारि न पहुँच्या जाइ ।
 दादू आसणि पहल कै, फिरि फिरि वैसे आइ ॥११७॥
 बरतणि येकै भॉति सब, दादू संत असंत ।
 भाव-भिनि अंतर घणों, मनसा तहाँ गछेंत ॥११८॥
 (दादू) यहु मन मारै मोमिनो^२, यहु मन मारै मीर^३ ।
 यहु मन मारै साधिका यहु मन मारै पीर^४ ॥११९॥
 (दादू) मनि मारै मनियर मुए, सुरनर कीए सँधार ।
 ब्रह्मा विस्न महेश सव, राखे सिरजन हार ॥१२०॥
 मनि वॉहै मनियर बड़े, ब्रह्मा-बिश्न-महेश ।
 सिध-साधिक-जोगी-जती, दादू देस-बदेस ॥१२१॥
 पूजा मॉनि बड़ाईया, आदर मॉगै मन ।
 राम गहै सब परहरै, दादू सोई जंन ॥१२२॥
 (दादू) जहाँ जहाँ आदर पाईए, तहाँ तहाँ जीव जाइ ।
 बिन आदर दीजे राम-रस, छाड़ि हलाहल खाइ ॥१२३॥
 करणी किरका^५ को नहीं, कथणी अनंत अपार ।
 दादू यो क्यूँ पाईए, रे मन मूढ़-गँवार ॥१२४॥

१. पहुँचे २. मोमिन ३. मीर ४. पीर ५. रेत बराबर

(दादू) इव मन नृभै (त्रिभै) घरि नहीं, भै में बैठा आइ।
नृभै(त्रिभै) संग थैं बीछुड्या, तब काइर होइ जाइ॥१२५॥

जब मन मृतक है रहै, यंद्री बल भागा।
काया के सब गुण तजै, निरंजनि लागा॥१२६॥

(दादू) आदि-अंति मधि येक रस, टूटै नहीं धागा।
दादू एकै रहि गया, तब जाणी जागा॥१२७॥

दादू मन के सीस-मुख, हस्त पोंव है जीव।
श्रवन-नेत्र-रसना रटे, दादू पाया पीव॥१२८॥

(दादू) जहाँ के नवाए सब नवै, सोई सिर करि जाणि।
जहाँ के बुलाए बोलिऐ, सोई मुख, परवॉणि॥१२९॥

जहाँ के सुणौए सब सुणै, सोई श्रवण समौण।
जहाँ के दिखाए देखिए, सोई नैन सुजौण॥१३०॥

(दादू) मन हीं सों मल ऊपजे, मन हीं सों मल धोइ।
सीख चली गुर-साध की, तो तू त्रिमल होइ॥१३१॥

दादू मन ही माया ऊपजे, मन ही माया जाइ।
मन ही राता रोंम सों, मन ही रह्या समौइ॥१३२॥

दादू मन ही मरण ऊपजे, मन ही मरणों खाइ।
मन अविनासी होइ रह्या, साहिब सों ल्यौ लाइ॥१३३॥

(दादू) मन ही सनमुख नूर है, मन ही सनमुख तेज।
मन ही सनमुख जोति है, मन ही सनमुख सेज॥१३४॥

मन हीसों मन थिर भया, मन ही सों मन लाइ।
मन ही सों मन मिलि रह्या, दादू अनंत न जाइ॥१३५॥

११. सूखिम^१ जनमा कौ अंग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह।
वंदनं श्रब साधवा, प्रणामं पारंगतह॥१॥

दादू चौरासी लख जीव की, परकीरति घट मॉहिं।
अनेक जनम दिन के करै, कोई जाणै नॉहिं॥२॥

(दादू) जेते गुण व्यापै जीव कै, तेते ही औतार।
 आवागवन यहु दूरि करि, संम्रथ सिरजनहार॥३॥

सब गुण सब ही जीव के, दादू व्यापै आइ।
 घट मोंहै जामै-मरै, कोई न जॉणै ताहि॥४॥

जीव जनम जॉणों नहीं, पलक पलक मैं होइ।
 चौरासी लख भोगवै, दादू लखै न कोइ॥५॥

अनेक रूप दिन के करै, यहु मन आवै जाइ।
 आवागवन मन का मिटै, दादू रहै संमाइ॥६॥

निस-वासुरि यहु मन चलै, सूखिम जीव सँघार।
 दादू मन थिर कीजिए, आतम लेहु उबारि॥७॥

(दादू) कबहू पावक कबहूँ पौणी, धर-अंबर गुण वाइ।
 कबहूँ कुँजर कबहूँ कीड़ी, नर-पसुवा होइ जाइ॥८॥

सूकर स्वान सियाल सिंघ, सर्प रहै घट मोंहिं।
 कुँजर कीड़ी जीव सब, पौंडै जाणै नॉहिं॥९॥

१२. माया कौ अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह।
 वंदनं श्रब साधवा, प्रणामं पारंगतह॥१॥

साहिब है परि हम नहीं, सब जगु आवै जाइ।
 दादू सुपिनो देखिए, जागत गया बिलाइ॥२॥

(दादू) माया का सुख पँच दिन, गरव्यौ कहा गँवार।
 सुपिनै पाया राजधन, जात न लागै बार॥३॥

दादू सुपिनै सूता प्राणियो, कीए भोग-बिलास।
 जागत झूठा ह्वै गया, ताकी कैसी आस॥४॥

(दादू) यौ माया का सुख मन करै, सेज्या सुंदरि पास।
 अंत काल आया गया, तार्थें होइ उदास॥५॥

जे नाही सो देखिए सूता सुपिनै मोंहिं।
 दादू झूठा है गया, जागै तो कुछ नॉहिं॥६॥

यहु सब माया मृघ (भ्रग) जल, झूठा झिलिमिलि होइ।
 दादू चिलका देखि करि, सति करि मान्या सोइ॥७॥

झूठा झिलिमिली मृ^(मृग)घ जल, पॉणी करि लीया ।
 दादू जुग प्यासा मरै, पसु प्राणी पीया ॥८॥

छलावा छलि जाइगा, सुपिना बाजी होइ ।
 दादू देखि न भूलिए, यहु निज रूप न होइ ॥९॥

(दादू) सुपिने सब कुछ देखिए, जागे तो कुछ नॉहिं ।
 ऐसा यहु संसार है, समझि देखि मन मॉहिं ॥१०॥

(दादू) ज्यूं कछु सुपिणै देखिए, तैसा यहु सेंसार ।
 ऐसे आया जाणिए फूल्यौ कहा गेंवार ॥११॥

(दादू) जतन—जतन करि राखिए, दिढ गहि आतम मूल ।
 दूजा दिष्टि न देखिए, सब ही सेंबल फूल ॥१२॥

(दादू) नैनहु भरि नहीं देखिए, सब माया का रूप ।
 तहों ले मन कूँ राखिए, जहों है तत अनूप ॥१३॥

(दादू) हस्ती है वर^१ धन देखि करि, फूल्या अंगि न माइ ।
 भरि—दमामा एक दिन, सब ही छाँड़े जाइ ॥१४॥

दादू माया बिहंडे देखतों, काया सेंगि न जाइ ।
 कृतम बिहंडे बावरे, अजरावर^२ ल्यौ लाइ ॥१५॥

दादू माया का बल देखि करि, आया अति अहँकार ।
 अंध भया सूझै नहीं, का करिहै सिरजनहार ॥१६॥

मन—मनसा माया—रती, पंच तत प्रकास ।
 चवदह तीन्हूँ लोक सब, दादू होइ उदास ॥१७॥

माया देखे मन खुसी, हिरदै होइ बिगास ।
 दादू यहु गति जीव की, अंति न पूजे आस ॥१८॥

मन की मूँठि न मॉडिए, माया के नीसॉण ।
 पीछें ही पछिताहुगे, दादू खूटै बॉण ॥१९॥

कछु खातों कछु खेलतों, कछू सोवत दिन जाइ ।
 कछू विखिया—रस बिलसतों, दादू गए बिलाइ ॥२०॥

भाखण मन—पॉहण भया, माया—रस पीया ।
 पॉहण मन भॉखण भया, रॉमरस लीया ॥२१॥

(दादू) माया सौं मन बीगड्या, ज्यों काँजी^३ करि दूध ।
 है कोई संसार मैं, मन करि देवे सूध ॥२२॥

१. घोड़े २. अकाल पुरुष ३. काँजी, दूध फाड़ने में प्रयुक्त एक कसैला पदार्थ

गंदी सो गंदा भया, यों गंदा सब कोइ ।
 दादू लागे खूब सों, तो खूब सरीखा होइ ॥२३॥
 माया सों मन रत भया, विखे रसि माता ।
 दादू साचा छाड़ि करि, झूठे रँगि राता ॥२४॥
 माया के संगि जे गए, ते बहुरि न आए ।
 दादू माया डाकनी, इनि केते खाए ॥२५॥
 दादू मोट बिकार की, कोई न सकई डारि ।
 बहि-बहि मूए बापुड़े, गए बहुत पचि हारि ॥२६॥
 (दादू) रूप-राग-गुण अणसरे, जहाँ माया तहाँ जाइ ।
 विद्या-अखिर-पंडिता, तहाँ रहे घर छाड़ि ॥२७॥
 साध न कोई पग भरे, कबहूँ राज-दुवारि ।
 दादू उलटा आपमें, बैठा ब्रह्म-विचारि ॥२८॥
 दादू अपणैं अपणैं घरि गए, आपा अँगि बिचारि ।
 सहकामी माया मिले, निहकामी ब्रह्म संभारि ॥२९॥
 (दादू) माया मगन जु है गए, हम से जीव अपार ।
 माया मॉही ले रही, बूड़े काली धार ॥३०॥
 (दादू) विखे के कारने रूप राते रहैं, नैन नापाल यों कीन्ह भाई ।
 बदी की बात सुणंत सारा दिन, श्रवन नापाक यों कीन्ह जाई ॥३१॥
 स्वाद के कारणे लुवधि लागी रहे, जिभ्या नापाक यों कीन्ह खाई ।
 भोग के कारणें भूख लाखीं रहै, अंग नापाक यों कीन्ह लाई ॥३२॥
 दादू नगरी चैन तब, जब इकराजी होइ ।
 दोई रजा दुख-दंद मैं, सुखी न वैसे कोइ ॥३३॥
 इकराजी आनंद है, नगरी निहचल वास ।
 राजा-प्रजा सुखि बसै, दादू जोति-प्रकास ॥३४॥
 जैसे कुंजर काम बसि, आप बंधाणा आइ ।
 औसैं दादू हम भए, क्यों करि निकस्या जाइ ॥३५॥
 जैसे प्रकट जीभवसि, आप बंधाणा अंध ।
 औसे दादू हम भए, क्यों करि छूटै फँध ॥३६॥
 ज्यूँ सूवा सुख कारणैं, बंध्या मूरिख मॉहिं ।
 औसैं दादू हम भए, क्यों ही निकसै नॉहिं ॥३७॥
 जैसे अंध अग्यान-गृह, बंध्या इंद्री स्वादि ।
 औसैं दादू हम भए, जनम गँवाया बादि ॥३८॥

(दादू) बूढ़ि रह्या रे वापुरे, माया गृह के कूप।
मोह्या कर्नेक र कौमणी, नाना विधि के रूप।।३६।।

दादू स्वादि लागि संसार सब, देखत परलै जाइ।
इंद्री स्वारथ साच तजि, सबै बंधाने आइ।।४०।।

विष सुख मॉहै रमि रहे, माया हित-चित लाइ।
(दादू) सोई संत जन ऊबरै, स्वाद छौंड़ि गुण गाइ।।४१।।

दादू झूठी काया झूठ घर, झूठा यहु परिवार।
झूठी माया देखि करि, फूल्यौ कहा गँवार।।४२।।

झूठा संसार, झूठा परिवार, झूठा घर-वार,
झूठा नर-नारि तहाँ मन मानै।
झूठा कुल-जात, झूठा पित-मात, झूठा बंधभ्रात,
झूठा तन-गात सत्ति करि जानै।
झूठा सब धंध, झूठा सब कंध, झूठा सब अंध,
झूठा जा चंध, कहा मधु छाने।
दादू भागि, झूठ सब त्यागि, जागि रे जागि देखि दिवानै।।४३।।

दादू जनम गया सब देवतों, झूठी के सँग लागि।
साचे प्रीतम कौं मिले, भागि सकै तौ भागि।।४४।।

(दादू) झूठे तन कै कारनै, कीए बहुत विकार।
गृह दारा धन संपदा, पूत कटूंब परिवार।।४५।।

ता कारणि हति आत्मा, झूठ-कपट अहंकार।
सो माटी मिलि जाइगा, विसर्या सिरजनहार।।४६।।

दादू गतं ग्रहं, गतं धनं, गतं दारा सुंत जोवनं (योवनं)।
गतं माता (मातृ), गतं पिता (पितृ) गतं बंधू सजनं (सज्जनं)।
गतं आपा (आत्मन्), गतं परह (परः), गतं संसार कत (कियत) रंजनं।
भजिसि भजिसि रे मन, परब्रह्म, निरंजन।।४७।।

जीयौं मांहे जीय रहै, अइसा माया-मोह।
सौई सूधा सब गया, दादू नहीं अंदोह।।४८।।

दादू माया मगहर खेत खर, सद्गति कदे न होइ।
जे वंचहि ते देवता, रौम सरीखे सोइ।।४९।।

कालरि^१ खेत न नीपजे^२, जे बाहै सौ वार।
दादू हानों बीज का, क्या पचि मरै गँवार।।५०।।

दादू इस संसार सों, निमख न कीजै नेह ।
जामण-मरण अबटणों, छिन-छिन दाझै देह ॥५१॥

दादू मोह संसार कौं, तन मन बिहरै प्राण ।
दादू छूटे ग्यौनकरि, कोई साधू संत सुजौण ॥५२॥

मन हरती माया हस्तणी, सघन बन संसार ।
तामैं त्रिमै है रह्या, दादू मुग्ध गेंवार ॥५३॥

(दादू) काम कठिन घरि चोरहै, भूसे भरे भंडार ।
सोवत ही ले जाइगा, चेतनि पहरै चार ॥५४॥

ज्यूँ घुण लागे काठ कूँ, लोहे लागे काट ।
कामि कीया घट जाजरा^१, दादू बारहवाट ॥५५॥

दादू राह गिले ज्यूँ चंद कूँ, गहण गिले ज्यूँ सूर ।
करम गिले यूँ जीव कूँ, नखसख लागे पूर ॥५६॥

(दादू) चंद गिलै जब राह कौं, गहण गिलै जब सूर ।
जीव गिले जब करम कौं, राम रह्या भरपूर ॥५७॥

दादू करम कुहाड़ा अँग वन, काटन बारंबार ।
अपने हाथों आपकूँ, काटत है संसार ॥५८॥

(दादू) आपे मारै आपकौं, यहु जीव बिचारा ।
साहिब राखणहार है, सो हितू हमारा ॥५९॥

(दादू) आपे मारै आपकौं, आप आपकूँ खाइ ।
आपै अपणा काल है, दादू कहि समझाई ॥६०॥

(दादू) मरिबे की सब ऊपजै, जीवे की कछु नॉहि ।
जीवे की जौणे नहीं, मरिबे की मनमॉहि ॥६१॥

बंध्या बहुत बिकार सौं, सकल पाप का मूल ।
ढाहै सब आकार कौं, दादू यहु असथूल ॥६२॥

(दादू) यहु तौ दोजग देखिए, काम-क्रोध-अहंकार ।
राति-दिवस जरिबो करै, आपा अगनि-विकार ॥६३॥

विषै हलाहल खाइ करि, सब जग मरि-मरि जाइ ।
दादू मुहरा नॉव ले, हिरदै राखि ल्यौ लाइ ॥६४॥

दादू जेती विषिया बिलिसिए, तेती हत्या होइ ।
प्रतिखि मॉणस मारिए, सकल सिरोमणि सोइ ॥६५॥

(दादू) विषिया का रस मद भया, नर-नारी का मॉस ।
माया माते मद पीया, कीया जनम का नॉस ॥६६॥

(दादू) भावे साखित भगत है, विषै हलाहल खाइ ।
तहाँ जन तेरा रामजी, सुपिनै कदे न जाइ ॥६७॥

खाड़ाबूजी^१ भगति है, **लोहट बाड़ा^२** मॉहिं ।
परगट **पैड़ाइत^३** बसै, तहाँ संत काहे कौं जॉहिं ॥६८॥

सॉपणि इक सब जीव कौं, आगे पीछे खाइ ।
दादू कहि उपगार करि, कोइ जन उबरि जाइ ॥६९॥

दादू खाए सॉपणी, क्यौंकरि जीवें लोग ।
राम-मंत्र जन गारडू, जीवें इहि सेंजोग ॥७०॥

दादू माया कारनि जग मरै, पीव के कारनि कोइ ।
देखौ ज्यौं जग प्रजलै, जिन खन न्यारा होइ ॥७१॥

काल कनक अर कौमनी, परहरि इनका सेंग ।
दादू सब जग जलि मूवा, ज्यौं दीपक-जोति-पतंग ॥७२॥

(दादू) जहाँ कनक अर कौमनी, तहाँ जीव पतंगे जॉहिं ।
आगि अनंत सूझै नहीं, जलि-जलि मूए मॉहिं ॥७३॥

(दादू) घट मॉहै माया घणी, बाहरि त्यागी होइ ।
फाटी कंथा पहरि करि, चिहन करै सब कोइ ॥७४॥

काया राखै बंद दे, मन दह दिसि खेलै ।
दादू कनक र कौमनी, माया नहीं मेल्लै ॥७५॥

(दादू) मनसौं मीठी मुखसौं खारी, माया त्यागी कहैं बाजारी ॥७६॥

(दादू) माया मंदिर मीच का, तामैं पैठा धाइ ।
अंध भया सूझै नहीं, साध कहै समझाइ ॥७७॥

(दादू) केते जलि मुए, इस जोगी की आगि ।
दादू दूरैं बचिए, जोगी के संगि लागि ॥७८॥

ज्यौं जल मैणी मंछली, तैसा यहु संसार ।
माया माते जीव सब, दादू मरत न बार ॥७९॥

दादू माया फोड़े नैन द्वै, राम न सूझै काल ।
साध पुकारै **मेर^४** चढ़ि, देखि अगनि की **झाल^५** ॥८०॥

१. गढ़े में छिपाई, धोखे या कपट की २. चोरों के गाँव

३. पाड़ देने वाली, दुष्ट प्राणी ४. सुमेरा पर्वत ५. ज्वाला

बिना भुवंगम हम डसे, बिन जल बूड़े आइ।
 बिन ही पावक ज्यू जले, दादू कछु न वसाइ॥८१॥
 अमृत रूपी रॉम है, और सबै विष-झाल।
 राखणहारा रॉम है, दादू दूजा काल॥८२॥
 (दादू) बाजी चिहर^१ रचाइ करि, रह्या अप्रछन होइ।
 माया^२ पट पड़दा कीया, ताथैं लखै न कोइ॥८३॥
 दादू वाहे देखतों ढिग ही ढोरी लाइ।
 पीव पीव करते (करत) सब गए, आपा देन दिखाइ॥८४॥
 हम चाहैं सो ना मिलै, साहिब का दीदार।
 दादू बाजी बहुत है, नाना रँग अपार॥८५॥
 हम चाहैं सो ना मिलै, और बहुतेरा आइ।
 दादू मन मानैं नहीं, केता आवै जाइ॥८६॥
 बाजी मोहे जीव सब, हमकूँ झुरकी वाहि।
 दादू कैसी करि गया, आपण रह्या छिपाइ॥८७॥
 दादू सौई सति है, दूजा भरम विकार।
 नाँव निरंजन नृमला (त्रिमला), दूजा घोर अंधार॥८८॥
 दादू सो धन लीजिए, जे तुम सेती होइ।
 माया के बंधे केते मुए, पूरा पड्या न कोइ॥८९॥
 (दादू) जे हम छाड़े हाथ तैं, सो तुम लीया पसारि।
 जे हम देवै प्रीति सौं, सो तुम दीया डारि॥९०॥
 (दादू) हीरा पग हाँ ठेलि करि, कँकर कूँ कर लीन्ह।
 पार ब्रह्म कूँ छाड़ि करि, जीवनि सौं हित कीन्ह॥९१॥
 (दादू) सबको बनिजै खार खलि, हीरा कोई न लेइ।
 हीरा लेगा जोहरी, जे माँगै सो देइ॥९२॥
 दडी^३ दोट^४ ज्यू मारिए, तिहूँ लोक मैं फेरि।
 धुरि^५ पहुँचे संतोष है, दादू चढिवा मेर॥९३॥
 अनल पँखि आकास कूँ, माया मेर उलँघि।
 दादू उलटै पंथ चढ़ि, जाइ बिलंवे अँगि॥९४॥
 (दादू) ऊभा सारं बैठा विचारं, संभारं, जागत सूता।
 तीनि लोक तत जाल बिडारण, तहाँ जाइगा पूता॥९५॥

१. केश २. निवर्तवादी, अविद्या माया ३. गेंद ४. प्रहार, आघात
 ५. सीधी, गन्तव्य स्थान पर

दादू माया आगै जीव सब, ठाढ़ै हैं कर जोरि ।
 जिनि सिरजे जल बूँद सौं, तासौं बैठे तोड़ि ॥६६॥
 मोरा-मोरी देखि करि, नाचै पेंख पसारि ।
 यौं दादू घर आँगणै, हम नाचै कै बार ॥६७॥
 दादू सुर-नर-मुनियर वसि कीए, ब्रह्मा-विश्न-महेस ।
 सकल लोक कै सिरि खड़ी, साधू कै पग हेठि ॥६८॥
 (दादू) माया चेरी संत की, दासी उस दरबार ।
 ठकुराणी सब जगत की, तीन्यौ लोक मझोरि ॥६९॥
 (दादू) माया दासी संत की, साखित की सिरताज ।
 साखित सेती भंडणी, संतों सेती लाज ॥७०॥
 (दादू) चारि पदारथ मुक्ति वापुडी, अठसिधि नौनिधि चेरी ।
 माया दासी ताकैं आगैं, जहाँ भगति निरंजन तेरी ॥७१॥
 (दादू) ज्यों आवै त्यों जाइ विचारी बिलसीवितड़ी माधैमारी ॥७२॥
 (दादू) माया सब गहले कीए, चौरासी लख जीव ।
 तिनका चेरी क्या करै, जे रँगि राते पीव ॥७३॥
 (दादू) माया बैरिणि जीव की, जिनि को लावै प्रीति ।
 माया देखे नरक करि, यहु संत की रीति ॥७४॥
 माया मन चकचाल करि, चँचल कीए जीव ।
 माया माते मद पीया, दादू बिसर्या पीव ॥७५॥
 (दादू) जणें-जणें की राम की, घर-घर की नारी ।
 पति भरता नही पीव की, सो माथै मारी ॥७६॥
 जण-जण कै उठि पीछें लागै, घरि-घरि भ्रमत डोलै ।
 ताथैं दादू खाइ तमाचै^१, मादल^२ दहु मुख बोलै ॥७७॥
 जे नर कौमणि परहरैं, ते छूटे ग्रभवास^३ ।
 दादू औंधे मुखि नहीं, सदा निरंजन पास ॥७८॥
 रोक न राखै झूठ न भाखै, दादू खरचै खाइ ।
 नदी-नीर प्रवाह ज्युं, माया आवै जाइ ॥७९॥
 सदिका सिरजनहार का, केता आवै जाइ ।
 दादू धन सौंचै नहीं, सदा खुलावै^४ खाइ ॥८०॥

१. हथेली की चोट, तमाचा २. पखावज ३. आवागमन
 ४. पुलाव, पकौड़े

(दादू) जोगणि है जोगी गहे, सोकणि^१ है करि सेख ।
भगतणि है भगता गहे, करि करि नाना भेख ॥१११॥

(दादू) बुधि-बंवेक बल हरनि, त्रिया तनि ताप उपावनि ।
आँगे अगनि प्रजालि, जीव घरबार नचावनि ।
नाना विधि के रूप धरि, सब बंधे भौमनि ।
जग बिटवि परलै कीया, हरि नाँव भुलावनि ॥११२॥

बाजीगर की पूतली ज्यों भ्रकट मोह्या ।
दादू माया राम की, सब जगत बिगोया ॥११३॥

मोरा मोरी देखि करि, नाचै पँख पसारि ।
यों दादू घर आँगणौ, हम नाचे कै बारि ॥११४॥

(दादू) जिस घट दीपक रॉम का, तिस घर तिमर न होइ ।
उस उजियारे जोति के, सब जग देखै सोइ ॥११५॥

जिहिं घटि ब्रह्म न प्रगटै, तहाँ माया मँगल गाइ ।
दादू जागै जोति जब, तब माया भ्रम बिलाइ ॥११६॥

(दादू) जोति चमकै तिखरै, दीपक देखै लोइ ।
चंद्र-सूर चाँदिणों, पगार छलाना होइ ॥११७॥

दादू दीपक देह का, माया प्रगट होइ ।
चौरासी लख पंखिया, तहाँ पड़ै सब कोइ ॥११८॥

यहु घट दीपक साध का, ब्रह्म जोति प्रकास ।
दादू पंखी संत जन, तहाँ परै निज दास ॥११९॥

दादू मन मृतक भया, यंद्री अपणै हाथ ।
तौ भी कदे न कीजिए, कनक कौमनी साथ ॥१२०॥

जाँणें बूझै सब, त्रिया पुरिख का अँग ।
आपा पर भूला नहीं, दादू कैसा सँग ॥१२१॥

माया के घट साजि द्वै, त्रिया पुरिख धरि नाँव ।
दून्हूँ सुंदरि खेलै दादू, राखि लेहु बलि जाँव ॥१२२॥

वह न वीर सब देखिए, नारी अर भरतार ।
परमेस्वर के पेट, दादू सब परिवार ॥१२३॥

परघर परहरि आपणी, सब येकै उणहार ।
पसु प्राँणी समझै नहीं, दादू मुगध गँवार ॥१२४॥

पुरिख पलटि बेटा भया, नारि माता होइ ।
 दादू को समझै नहीं, बड़ा अचंभा मोहि ।।१२५।।
 माता-नारी पुरिख की, पुरिख नारी का पूत ।
 दादू ग्योंनि विचारि करि, छाडि गए अवधूत ।।१२६।।
 ब्रह्मा-विश्व महेश लौं, सुर-नर उरझाया ।
 विष का अमृत नौव धरि, सब किनही खाया ।।१२७।।
 जीव गहला जीव बावला, जीव दिवानों होइ ।
 दादू अमृत छाडि करि, विष पीवै सब कोइ ।।१२८।।
 माया मैली गुणमई, धरि-धरि उजल नौव ।
 दादू मोहै सबनि कों, सुरनर सब ही ठौव ।।१२९।।
 विष का अमृत नौव धरि, सब कोई खावै ।
 दादू खारा ना कहै, यहु अचिरज आवै ।।१३०।।
 (दादू) जे विषजोरै खाइ करि, जिनि मुखि मैं मेलै ।
 आदि अंति परलै^१ गए, जे विष सौं खेलै ।।१३१।।
 जिनि विषि खाया ते मुए, क्या मेरा-तेरा ।
 आगि पराई आपणी, सब करै नबेरा ।।१३२।।
 दादू वासी पौंणी पीवतों, ब्याधी होइ विकार ।
 सेझ^२ का जल पीवतों, प्रॉन सुखी सुध सार ।।१३३।।
 (दादू) जिन विष पीवै बावरे, दिन-दिन बाढ़ै रोग ।
 देखत ही मरि जाइगा, तजि विषिया रसभोग ।।१३४।।
 अपणों-पराया खाय विष, देखत ही मरि जाइ ।
 दादू को जीवै नहीं, इहि भेले जिनि खाइ ।।१३५।।
 ब्रह्म सरीखा होइ करि, माया सौं खेलै ।
 दादू दिन-दिन देखतों, अपणै गुणि मेले ।।१३६।।
 (दादू) माया मारै लात सों, हरि कूँ घालै हाथ ।
 सँग तजै सब झूठ का, गहे साच का साथ ।।१३७।।
 (दादू) के मारे वन के मारे, मारे श्रग^३ (स्रग) पयाल^४ ।
 सूखिम मोटा गूँथि करि, मॉड्या माया जाल ।।१३८।।
 मुए सरीखे है रहे, जीवण की क्या आस ।
 दादू रॉम बिसारि करि, बॉछें भोग-विलास ।।१३९।।

माया रूपी राम कौं, सब कोई ध्यावै ।
 अलख आदि-अनादि है, सो दादू गावै ॥१४०॥
 (दादू) ब्रह्मा का वेद विष्ण की मूरति, पूजै सब सँसार ।
 महादेव की सेवा लागे, कहों है सिरजनहार ॥१४१॥
 (दादू) माया का ठाकुर^१ कीया, माया की महामाई^२ ।
 ऐसे देव अनंत करि, सब जग पूजण जाइ ॥१४२॥
 (दादू) माया बैठी राम है, कहै मैं ही मोहन राइ ।
 ब्रह्मा -विष्ण-महेश लों, जोणी आवैं जाइ ॥१४३॥
 (दादू) माया बैठी राम है, ताकूँ लखै न कोइ ।
 सब जग मानै सतिकरि, बड़ा अचंभा मोहि ॥१४४॥
 (दादू) अंजन कीया निरंजना, गुण नृगुण (त्रिगुण) जानैं
 धर्या दिखावै अधर करि, कैसे मन मानैं ॥१४५॥
 निरंजन की बात कहि, आवौ अंजन मोहि ।
 दादू मन मोंने नहीं, श्रग (स्रग) रसातलि जांहि ॥१४६॥
 दादूकहणी और कछु करणी करै कछु और ।
 तिनथैं मेरा मन डरै, जिनके ठिक न ठौर ॥१४७॥
 कामधेन के पटंतरै, करै काठ की गाइ ।
 दादू दूध दूझै^३ नहीं, मूखि देइ बहाइ ॥१४८॥
 च्यंतामणि कँकर कीया, मोंगे कछु न देइ ।
 दादू कँकर डारि दे, चिंतामणि कर लेइ ॥१४९॥
 पारस कीया पखाण का, कंचन कदे न होइ ।
 दादू आतम रँम बिन, भूलि पड्या सब कोइ ॥१५०॥
 सूरिज फटक पखाण का, तासौं तिमर न जाइ ।
 साचा सूरिज प्रगटै, दादू तिमिर नसाइ ॥१५१॥
 मूरति घड़ि पाखाँण की, कीया सिरजनहार ।
 दादू साच सूझे नहीं, यौं बूड़ा संसार ॥१५२॥
 पुरिख बदेस^४ कॉमण कीया, उस ही की उणहारि^५ ।
 कारिज को सीझै नहीं, दादू माथै मारि ॥१५३॥
 कागद का मॉणस कीया, छत्रपति सिरिमौर ।
 राजपाट साधै नहीं, दादू परहरि और ॥१५४॥

सकल भुवन भौनै घड़ै, चतुर चलावणहार ।
 दादू सो सूझै नहीं, जिसका वार न पार ।।१५५।।
 (दादू) पहिली आप उपाइ करि, न्यारा पद निर्वाण ।
 ब्रह्मा बिस्नु महेस मिलि, बंधया सब बंधाण ।।१५६।।
 नाँव नीति अनीति सब, पहली बाँधे बंध ।
 पसू न जाणें पारधी, दादू रोपे कंध ।।१५७।।
 दादू बांधे वेदविधि, भरम—करम उरझाइ ।
 भ्रजादा माँहैं रहै, सुमिरण कीया न जाइ ।।१५८।।
 माया मीठा बोलणी, निंबि-निंबि^१ लागे पाइ ।
 दादू पैसे पेट में, काटि कलेजा खाइ ।।१५९।।
 नारी नागणि राकसी, बाघणि बड़ी बलाइ ।
 दादू जे नर रत भए, तिनका श्रवस (सर्बस) खाइ ।।१६०।।
 नारी नागणि जे उसे, ते नर मुए निदान ।
 दादू को जीवे नहीं, पूछो सबे सयान ।।१६१।।
 दादू नारी नैन न देखिए, मुख सौं नाँव न लेइ ।
 काँनूँ काँमणि जिनि सुणें, यहु मन जाँण न देइ ।।१६२।।
 सुंदर खाए साँपणी, केते इहि कलि माँहिं ।
 आदि—अंति इनि सब डसे, दादू चेतै नाँहिं ।।१६३।।
 दादू पैसे पेट में, नारी नागणि होइ ।
 दादू प्राणी सब डसे, काढ़ि न सकै कोइ ।।१६४।।
 माया साँपणि सब डसे, कनक कामणी होइ ।
 ब्रह्मा—बिश्न—महेस लों, दादू वंचै न कोइ ।।१६५।।
 माया मारे जीव सब, खंड—खंड करि खाइ ।
 दादू घट का नास करि, रोवै जग पतियाइ ।।१६६।।
 दादू बाबा बाबा कहि गिलै, भाई कहि कहि खाइ ।
 पूत पूत कहि पी गई, पुरिखा जिनि पतियाइ ।।१६७।।
 दादू खाये जीव सब, जिनि र पतीजै^२ कोइ ।
 माया बहुरूपी नटणी नाचै, सुर नर मुनि कूँ मोहै ।।१६८।।
 ब्रह्मा—विश्न—महेस की, नारी माता होइ ।
 दादू खाए जीव सब, जिनि र पतीजै कोइ ।।१६९।।

(दादू) माया पासी हाथि करि, बैठी गोपि छिपाइ ।
 जे कोई घीजै प्रॉणियों, ताहीकै गलि वाहि ।।१७०।।
 दादू पुरिखा पासी हाथि करि, कामणि कै गलि बाहि^१ ।
 कामणि कटारी कर गहे, मारि पुरिख कौं खाइ ।।१७१।।
 नारी वैरणि पुरिख की, पुरिखा बैरी नारि ।
 अंतकालि दून्युं गए, दादू देखि बिचारि ।।१७२।।
 नारि पुरिख कूँ ले मुई, पुरिखा नारी साथि ।
 दादू दून्युं पचि गए, कछू न आया हाथि ।।१७३।।
 (दादू) भँवरा लुबधीवास का, कवँलि बंधाणों आइ ।
 दिन दस मॉहैं देखतों, दून्युं गए बिलाइ ।।१७४।।
 नारी पीवै पुरिख कौं, पुरिख नार कूँ खाइ ।
 दादू गुर के ग्यॉन विन, दुन्युं गए बिलाइ ।।१७५।।
 (दादू) माया बैरणि जीव की, जिनि को लावै प्रीति ।
 माया देखै त्रक (नर्क) करि, यहु संतों की रीति ।।१७६।।

१३. साच कौ अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रब साधवा, प्रणामं पारंगतह ।।१।।
 (दादू) दया जिन्हूके दिल नहीं, बहुरि कहावें साध ।
 जे मुख उनका देखिए, तौ लागै बहु अपराध ।।२।।
 (दादू) मिहरि महवति मनि नहीं, दिल के वज्रकठोर ।
 काले काफिर ते कहिए, मोमिन मालिक और ।।३।।
 (दादू) लेंगर लोग लोभ सौं लागे, बोलैं सदा उन्हूँ की भीर ।
 जोर जुलंम बीचि बटपारे, आदि—अंति उनहीं सौं सीर ।।४।।
 तन—मन मारि रहे साँई सौं, तिनकौं देखि करैं ताजीर^२ ।
 ए बड़ी बूझि कहौं तैं पाई, ऐसी कजा^३ औलिया पीर ।।५।।
 दादू कोई काहू जीव की, करै आतमों घात ।
 साच कहौं संसै नहीं, ते प्रॉणी दोजग^४ जात ।।६।।

१. गल—बॉहे २. दण्ड, सजा, ईर्ष्या ३. मृत्यु ४. नरक

(दादू) नाहर सिंघ सियाल सब, केते मुसलमॉन ।
मॉस खाय मोमिन^१ भए, बड़े मीयों^२ का ग्योंन ॥७॥

दादू मास अहारी जे नरा, ते नर सिंघ-सियाल ।
बग मजार^३ सुनहों सही, ये ते प्रतखि काल ॥८॥

मुई मार मॉणस घणे, ते प्रतखि जंम-काल ।
मिहरि दया नहीं सिंघ दिल, कूकर काग-सियाल ॥९॥

मांस अहारी मदु खीवें, विखै-विकारी सोइ ।
दादू आतम रॉम विन, दया कहाँ थी होइ ॥१०॥

(दादू) दुनिया सों दिल बंधि करि, बैठे दीन गवॉइ ।
नेकी नॉउ बिसारि करि, करद कमाया खाइ ॥११॥

दादू गल काटैं कलमों भरैं, अईया विचारा दीन ।
पंचौं वखत निवाज गुजारैं, स्यावति नहीं अकीन ॥१२॥

दुनियों के पीछें पड्या, दौड्या जाइ ।
दादू जिनि पैदा कीया, ता साहब कौं छिटकाइ ॥१३॥

दादू वे मिहर गुम्राह गाफिल, गोस्त खुरदनी ।
बेदिल बदकार आलम, हईयात मुर्दनी ॥१४॥

छल करि बल करि धाइ करि, मारै जेहि तेहिं फेरि ।
दादू ताहि न धीजिए, परणै सगी पतेरि ॥१५॥

कुफर जे के मनि मैं, मीयों मुसलमान ।
दादू पेआ झंग^४ मैं, बिसारे रहिमान ॥१६॥

आपन कूँ मारे नहीं पर कूँ मारण जाइ ।
दादू आपा मारे बिना, कैसे मिलै खुदाइ ॥१७॥

दादू भतीर दुंदरि भरि रहे, तिनकूँ मारै नॉहि ।
साहिबकी अरवहि कूँ, ताकूँ मारण जॉहि ॥१८॥

(दादू) मुए कूँ क्या मारिए, मीयों मुई मार ।
आपस कूँ मारे नहीं ओरों कूँ हुसियार ॥१९॥

जिसका था तिसका हूवा, तौ कहे का दोस ।
दादू बंदा-बंदगी, मीयों न करि रोस ॥२०॥

सेवग सिरजनहार का, साहिब का बंदा ।
दादू सेवा-बंदगी, दूजा क्या धंधा ॥२१॥

दादू काफ़िर जे बोले काफ़ दिल आपणी नहीं राखै साफ़।
 साँई कूँ पहिचाणै नाहिं, कूड़ कपट सब उसही मॉहि॥१२२॥
 (दादू) साँई का फुरमाण^१ न मानै, कहाँ पीव अैसे करि जाने।
 मन अपनै में समझत नाही, निरखत चले अपणी छौही॥१२३॥
 (दादू) जोर करे मसकीन^२ संतावे, दिल उसकी मैं दरद न आवे।
 साँई सेती नौही नेह, ग्रब करै (अति) अपणी देह॥१२४॥
 (दादू) इन बातनि क्यूँ पाइए पीव, परधन ऊपरि राखै जीव।
 जोर जुलम करि कटुंब सौं खाइ, सो काफ़िर दोजग में जाइ॥१२५॥
 (दादू) जाकूँ मारण जाइए, सोई फिरि मारै।
 जाकूँ तारण जाइए, सोई फिरि तारे॥१२६॥
 (दादू) फस नौव सों मारिए, गोसमाल दे पंद।
 दुई है सो दूरि करि, तब घट मैं आनंद॥१२७॥
 दादू मुसलमॉण जुराखै माण, साँई का मानै फुरमॉण।
 सारौं कौ सुखदाई होइ, मुसलमान करि जौणों सोइ॥१२८॥
 दादू मुसलमान मिहरि गहि रहै, सबहूँ सुख कि सही नहीं दहै।
 मूवा न खाइ जीव नहीं मारे, करै बंदगी राह संवारै॥१२९॥
 (दादू) सो मोमिन मन मैं करि जाणि, संत सवूरी वैसे आंणि।
 चालै साच सँवारै वाट, तिनकू खुले भिस्त के पाट॥१३०॥
 (दादू) सो मोमिन मोम दिल होइ, साँई कूँ पहिचानै सोइ।
 जोर न करै हराम न खाइ, सो मोमिन भिस्ति मैं जाइ॥१३१॥
 (दादू) जे हम नहीं गुजारते, तुम्हकूँ क्या भाइ।
 सीर नहीं कछू बंदगी कहि क्यूँ फुरमाइ॥१३२॥
 दादू अपने अमलूँ छूटिए, काहू के नौहीं।
 सोई पीड़ पुकारिसी, जा दूखै मॉहीं॥१३३॥
 दादू खाइ अघाइ करि, भूखे क्यूँ भरिए।
 खूटी पूगी^३ आनकी, आपण क्यूँ मरिए॥१३४॥
 दादू फूटी नौव समंद में, सब बूडण लागे।
 अपणों अपणों जीव ले, सब कोई भागे॥१३५॥
 दादू सिरि सिरि लागी आपणै, कहि कौण बुझावै।
 अपणा अपणा साच दे, साँई कूँ भावै॥१३६॥

साचा नाँव अलाह का, सोह सति करि जाँणि ।
 निहचल करि ले बंदगी, दादू सो परबॉणि ॥३७॥
 आवट कूटा^१ होत है, औसर बीता जाइ ।
 दादू करि ले बंदगी, राखणहार खुदाइ ॥३८॥
 इस कलि केते हवै गये, हिन्दु मुसलमान ।
 दादू साचा बंदगी, झूठा सब अभिमान ॥३९॥
 पोथी अपणा प्यंड करि, हरि जस मॉहै लेख ।
 पंडित अपणा प्राँण करि, दादू कथौ अलेख ॥४०॥
 (दादू) काया हमारी कतेव बोलिए, लिखि राख्या रहिमॉन ।
 मन हमारा भुला बोलिए, सुरता है सुबहॉन ॥४१॥
 (दादू) अलिफ एक अलाह का, जे पढ़ि जाणै कोइ ।
 कुराण कतेवा इलम सब, पढ़ि करि पूरा होइ ॥४२॥
 (दादू) काया महल मैं निवाज गुजारं, तहां और न आवण पावै ।
 मन मणिके करि तसवी फेरौ, तब साहिब कैं मनि भावै ॥४३॥
 दादू दिल दरिया में गुसल हमारा, उजू करि चित नाजैं ।
 साहिब आगैं करों बंदगी, बेर बेर बलि जाजैं ॥४४॥
 (दादू) सोभा कारणि सब करैं, रोजा वेंग निवाज ।
 मूवा न एकै आहि सो, जे तुझ साहिब सेती काज ॥४५॥
 (दादू) हर रोज हजूरी होइ रहु, काहे करै कलाप ।
 मुलों तहां पुकारिए, जहाँ अरस इलाही आप ॥४६॥
 (दादू) हरदम हाजरि हूणों बाबा, जब लग जीवै बंदा ।
 दौंइम दिल सांई स्यौं स्यावति, पंच वखत का धंधा ॥४७॥
 दादू आठौ पहर संभालौं साँई, तनमन तौ सुख पाजैं ।
 प्रेम पियाला पीवजी देवै, कलमों ए ले लाजैं ॥४८॥
 दादू हींदू मारग कहें हमारा, तुरक कहैं रह मेरी ।
 कौण पंथ है कहो अलख का, तुम तौ औसी हेरी ॥४९॥
 दादू दुई दरोग लोग कौं भावै, साँई साच पियारा ॥
 कौण पंथ हम चलै कहौ धौं, साधो करौ विचारा ॥५०॥
 खंड-खंड करि ब्रह्म कूँ, पखि पखि लीया बाँटि ।
 दादू पूरण ब्रम्ह तजि, बंधे भ्रम की गॉटि ॥५१॥

जीवत दीसैं रोगिया, कहैं मूवों पीछें जाइ।
 दादू दहू के पाठ मैं, अँसी दारु लाइ॥५२॥
 सो दारु किस कौम की, जाते दरद न जाइ।
 दादू काटै रोग कों सो दारु ले लाइ॥५३॥
 दादू अनभै काटै रोग कों अनहद उपजे आइ।
 सेझे का जल नृमला (त्रिमला), पीवैं रुचि ल्यो लाइ॥५४॥
 (दादू) सोई अनभै सोई ऊपजी, सोई सब ततसार।
 सुणतौही साहिब मिलै, मन के जांहि विकार॥५५॥
 वोखद खाइ न पछि रहे, विषम ब्याधि क्यूँ जाइ।
 दादू रोगी बावरा, दोष बेद कूँ लाइ॥५६॥
 एक सेर का ठौवड़ा^१, क्यूँ ही भर्या न जाइ।
 भूख न भागी जीव की, दादू केता खाइ॥५७॥
 पसुवा की नौई भरि भरि खाई, व्याधि घणेरी बधती जाइ।
 पसुवा की नाई करै अहार, दादू बाढ़े रोग अपार।
 राम रसाइण भरि—भरि पीवे, दादू जोगी जुगि—जुगि जीवे॥५८॥
 दादू चारै चित दीया, च्यंतामणि कों भूलि।
 जनम अमोलिक जा हे, बैठे मोंझी फूलि॥५९॥
 भरी अघौड़ी भावडी^२, बैठा पेट फुलाइ।
 दादू सूकर स्वान ज्यों, ज्यों आवै त्यों खाइ॥६०॥
 दादू खाटा मीठा खाइ करि, स्वादि चित दीया।
 इनमें जीव बिलंबिया, हरि नौव न लीया॥६१॥
 भगति न जाणैं राम की यंद्री का आधीन।
 दादू बंध्या स्वाद सौं, तातैं नौव न लीन॥६२॥
 (दादू) अपनानी का राखिये, मैं मेरा दीया बहाइ।
 तुझ अपनैं सेती काज है, मैं मेरा भवै तीधरि^३ जाइ॥६३॥
 जे हम जाण्योँ एक करि तौ काहे लोग रिसाइ।
 मेरा था सो मैं लीया, लोगोँ का क्या जाइ॥६४॥
 दादू द्वै—द्वै पदकीए, साखी भी द्वै चारि।
 हमकोँ अनभै ऊपजी, हम ग्योंनी सँसारि॥६५॥

(दादू) सुणि—सुणि परचे ग्यान के, साखी सबदी होइ ।
तब ही आपा ऊपजै, हम साऔर न कोइ ।।६६।।

(दादू) सो उपजी किस काम की, जे जण—जण करै कलेस ।
साखी सुणि समझै साध की, ज्यों रसना रस सेस ।।६७।।

(दादू) पद जोड़ै साखी कहै, विषे न घाड़ै जीव ।
पानी घालि बिलोइये, (तौ) क्यों कर निकसै घीव ।।६८।।

(दादू) पद जोड़े क्या पाईए, साखी कहें क्या होइ ।
सति सिरोमसनि साईयो, तत न चीन्हों सोइ ।।६९।।

दादू कहिबे सुनिबे मनखुसी, करिबा औरै खेल ।
बातों तिमर न भाजई, दीबा—बाती—तेल ।।७०।।

दादू करिबेवाले हम नहीं, कहिबे कूँ हम सूर ।
कहिबा हम थैं निकटि है, करिबा हम थैं दूर ।।७१।।

(दादू) कहें कहें क्या होत है कहे न सीझै कौम ।
कहें कहें क्या पाईए, जब लग हिरदे न आवै रौम ।।७२।।

दादू राम कहों ते जोड़िवा, राम कहूँते साखि ।
राम कहूँ ते गाइबा, राम कहूँ ते राखि ।।७३।।

दादू सुरता^१ घरि नहीं, वकता बकै सुवादि ।
बकता—सुरता एकरस, कथा कहावै आदि ।।७४।।

वकता—सुरता घरि नहीं, कहै—सुणै कौं राम ।
दादू यहु मन थिर नहीं, बादि बकै बेकाम ।।७५।।

दादू अंतरि सुरझे समझि करि फिरि न अरुझे जाइ ।
बाहरि सुरझे देखतों, बहुरि अरुझे आइ ।।७६।।

आतम लावैं आपसों, साहब सेती नाहिं ।
दादू को निपजै नहीं, दून्यू। त्रिफल जाहिं ।।७७।।

(तू) झुझौं मोटा कहै, हूँ तुझै बड़ा ईमान ।
सौई कूँ समझै नहीं, दादू झूठा ग्योंन ।।७८।।

सदा समीप कहै सँग सनमुख, दादू लखै न गूझ ।
सुपनैं ही समझै नहीं, क्यों करि लहै अबूझ ।।७९।।

दादू भगत कहावै आपकों भगति न जाणै भेव ।
सुखिणे हूँ समझै नहीं, कहाँ वसै गुरदेव ।।८०।।

१. श्रोता, सुनने वाला

दादू सेवग नाँव बुलाइए, सेवा सुपिणैं नाँहि ।
 नाँव घराएं क्या भया, जे येक नहीं मनमाँहि ॥८१॥
 नाँव धरावे दास का, दासातन थैं दूरि ।
 दादू कारिज क्युँ सरै, हरि सौं नही हजूरि ॥८२॥
 भगत न होवै भगति बिन, दासातन बिन दास ।
 बिन सेवग सेवानहीं, दादू झूठी आस ॥८३॥
 दादू राम भगति भावै नहीं, अपणी भगति का भाव ।
 राम भगति मुख सौं कहै, खेले अपणा डाव^१ ॥८४॥
 भगति निराली रहि गई, हम भूलि पड़े वन माँहि ।
 भगति निरंजन रॉम की, दादू पावै नाँहि ॥८५॥
 दादू दसा कतहूँ गई, जिहि दिसि पहुँचे साध ।
 मैं तें मूरिख गहि रहे लोभ बड़ाई वाद ॥८६॥
 दादू राम विसार करि, कीए बहु अपराध ।
 लाजौं मारै संत सब, नाँम हमारा साध ॥८७॥
 (दादू) मनसा के पकवान सौं, क्योँ पेट भरावै ।
 ज्युँ कहिए त्युँ कीजिए, तब ही वनि आवै ॥८८॥
 दादू मिसरी मिसरी कीजिए, मुख मीठा नाँही ।
 मीठा तब ही होइगा, छिटकावै माँही ॥८९॥
 बातौं ही पहुँचै नही, घर दूरि पर्योना ।
 मारग पंथी उठि चलै, दादू सोई सय्योना ॥९०॥
 दादू बातौं सब कुछ कीजिए, अंति कछू न देखै ।
 मनसा — वाचा — क्रमनां, तब लागैं लेख ॥९१॥
 (दादू) कासौं कहि समझाइये, सब को चतुर सुजान ।
 कीड़ी कुंजर आदि दै, नाहिन कोई अजान ॥९२॥
 (दादू) सूकर स्वॉन सियाल सिंघ, श्रप (सर्प) रहै घट माँहि ।
 कीड-कुंजर जीव सव, पंडित जाणैं नाँहि ॥९३॥
 (दादू) रूनाघट सोधी नहीं, पंडित ब्रह्मापूत ।
 आगम नीगम सब कथै, घर में नाचै भूत ॥९४॥
 पढ़ें न पावै पर्म (प्रम) गति, पढ़े न लंघे पार ।
 पढ़े न पहुँचै प्राणियों दादू पीड़ि पुकार ॥९५॥

(दादू) पंडित निबरे नाँव विन, झूठे कथै गियान।
 बैठे सिर खालीं करै, पंडित वेद पुरांन॥६६॥
 दादू केते पुस्तक पढ़ि मुए, पंडित वेद पुरांन।
 केते ब्रह्मा कथि गए, नांहीन रांम समांन॥६७॥
 दादू सब हम देख्या सोधि करि, वेद पुराणौं माँहि।
 जहां निरंजन पाईए सो देस दूरि इत नाँहि॥६८॥
 पढ़ि पढ़ि थाके पंडिता, किनहुँ न पाया पाइ।
 कथि कथि थाके मुनि जनों, दादू नाँई अधार॥६९॥
 दादू काजी कजा न जाणहीं, कागद हाथि कतेव।
 पढ़तां पढ़तां दिन गए, भीतरि नाही भेद॥७०॥
 मसि कागद कै आसिरै, क्यूं छूटै संसार।
 रांम बिना सूझै नहीं, दादू भरम विकार॥७१॥
 कागद काले करि मुए, केते वेद पुरांन।
 एकै अखिर पीव का, दादू पढ़ै सुजान॥७२॥
 दादू अखिर प्रेम का, कोई पढ़ैगा एक।
 दादू पुस्तक प्रेम विन, केते पढ़ै अनेक॥७३॥
 दादू पाती प्रेम की, बिरला वांचै कोई।
 वेद पुरांन पुस्तक पढ़ै, प्रेम बिना क्या होई॥७४॥
 कहतां कहतां दिन गए, सुणतौं सुणतौं जाइ।
 दादू ऐसा को नहीं, कहि सुणि रांम संमाइ॥७५॥
 मोनि गहैं ते बावरे, वोलेँ खरे अयान।
 सहजै राते राम सौं, दादू सोई सयान॥७६॥
 कहतौं सुणतौं दिन गये, हवै कछु न आका।
 दादू हरि की भगती बिन, प्राणी पछितावा॥७७॥
 दादू कहणी और कछू करणी करै कछु और।
 तिनथैं मेरा मन डरै, जिनकै ठिक न ठौर॥७८॥
 अंतरगति औरै कछू, मुख रसना कछू और।
 दादू करणी और कछु, तिनकूं नांही ठौर॥७९॥
 दादू रांम मिलण की कहत हैं, करत कछू औरै।
 ऐसें पीव क्यूं पाईए, समझि मन बौरै॥८०॥
 दादू बगनी भेंगा खाइ करि, मतिवाले माँझी।
 पैका नांही गंठड़ी, पातिसाही खोजी॥८१॥

दादू टोटा^१ दालदी^२, लाखौं का व्यौपार।
पैका नॉही गांठड़ी, सिरै साहूकार॥११२॥

दादू ए सब किसके पंथ में, धरती अर असमॉन।
पॉणी पवन दिन राति का, चंद सूर रहिमॉन॥११३॥

दादू ब्रह्मा विश्न महेस का, कौण पंथ गुरदेव।
साई सिरजनहार तूँ, कहिए अलख अभेव॥११४॥

(दादू) महँमुंद^३ किसके दीन मैं, जबराइल किस राह।
इनके मुरसिद पीर की, कहिए एक अलाह॥११५॥

(दादू) ए सब किसके है रहे, यहु मेरे मन मॉहि॥
अलख इलाही जगतगुर, दूजा कोई नॉहि॥११६॥

(दादू) औरै^४ ही औला^५ तकै^६, थीयाँ^७ सदा बियंनि^८।
सो तूँ मीयाँ^९ ना घुरै^{१०} जो मीयाँ मियंनि^{११}॥११७॥

(दादू) आई रोजी ज्यूँ गई, साहिब का दीदार।
गहला^{१२} लोगौं कारणै, देखै नहीं गवॉर॥११८॥

दादू सोई सेवग राम का, जिसही न दूजी चीत।
दूजा को भावै नहीं, एक पियारा मीत॥११९॥

अपणी—अपणी जाति सौं, सबकों बेसै पॉति।
दादू सेवग रॉम का, ताकै नहीं भँराति॥१२०॥

चोर अन्याई मसकरा, सब मिलि बैसै पॉति।
दादू सेवग राम का, तिन सौ करै भराँति^{१३}॥१२१॥

दादू लीला राजा रॉम की, खेलै सबही संत।
आपा पर येकै भएँ, छूटी सबै भरंत॥१२२॥

अपणा पराया खाइ बिस, देखत ही मरि जाइ।
दादू को जीवै नहीं, यहिं भोर^{१४} जिनि खाइ॥१२३॥

(दादू) भावै साकत भगत हवै, बिसै हलाहल खाइ।
तहँ जन तेरा राम जी, सुपिनै कदै न जाइ॥१२४॥

साप गया सहिनाँण^{१५} कों, सब मिलि मारै लोक।
दादू अैसे देखिए कुल का डगरा फोक॥१२५॥

१. टोटा, गरीबी २. दरिद्री ३. मोहम्मद ४. औरों को ५. बड़ा
६. देखे ७. बना रहता है ८. दूसरों का ९. मालिक १०. देखता,
घूरता ११. मियाओं का मियाँ, मालिकों का मालिक १२. बढ़ोत्तरी
१३. दुविधा १४. भूल से १५. लीक

दादू सूप बजायों क्यूँ टलै, घर मैं बड़ी बलाइ^१।
काल-झाल^२ इस जीव का, बातनि हीं क्यूँ जाइ।।१२६।।

दादू दून्यूँ भरंम हैं, हिंदू – तुरक गँवार।
जे दहुबॉतैं रहत हैं, सो गहि तत विचार।।१२७।।

अपणों अपणों करि लीया, भंजन मॉहैं वाहि।
दादू एकै कूपजल, मन का भरंम उठाइ।।१२८।।

(दादू) पॉणी के वहु नांव धरि, नाना विधि की जाति।
बोलणहारा^३ कोंण है, कहौं धौं कहा समाति।।१२९।।

जब पूरन ब्रह्म विचारिये, तब सकल आतमा एक।
काया के गुन देखिये, तौ नाना बरन अनेक।।१३०।।

(दादू) भाव भगति उपजै नहीं, साहिब का परसंग^४।
विषे-विकार छूटै नहीं सो कैसा सतसंग।।१३१।।

दादू बासण विषे विकार को जिनकों आदरमान।
सँगी सिरजनहार के, तिनसौं ग्रव गुमान।।१३२।।

अंधे कूँ दीपक दिया, तौ भी तिमर न जाइ।
सोधी नहीं सरीर की, तासनि का समझाइ।।१३३।।

(दादू) कास्यौं कहि समझाईये, सबको चतुर सयॉन।
कीड़ी-कुंजर आदि दे, नाहिन कोई अयॉन।।१३४।।

(दादू) कहिए कछु उपगार कौं, मानैं औगुण दोष।
अंधे-कूप वताईया, सति न मॉनै लोक।।१३५।।

दादू अंधे कूँ दीपक दीया, तौभी तिमर न जाइ।
सोधी नहीं सरीर की, तासनि क्या समझाइ।।१३६।।

जिनि कँकर-पथर सेविया, सो अपणा मूल गँवाइ।
अलख देव अंतरि बसे, क्या दूजी जागह^५ जाइ।।१३७।।

दादू पथर पीवै धोइ करि, पथर पूजैं प्रॉन।
अंतकालि पथर भए वहु बूड़े इहि ग्यॉन।।१३८।।

कँकर बंध्या गॉठडी, हीरे के बेसास।
अंतकालि हरि जौहरी, दादू सूत कपास।।१३९।।

(दादू) पहिली पूजे ढूँढसी^६, अब ही ढूँढस बाणि^७।
आगै ढूँढस होइगा, दादू सत करि जाणि।।१४०।।

१. दीवाली के दूसरे दिन दिन निकलने से पहले बलाय भगाने के लिए सूप बजाते हैं २. काल रूपी ज्वाला ३. बोलने वाला ४. चर्चा
५. जगह ६. ढूँढ़ता है ७. आदत

(दादू) पैड़े पाप कै, कदे न दीजै पाव ।
 जिहि पैड़े (मेरा) पीबवसै, तिहि पैड़े का चाव ॥१४१॥
 दादू सुकिरत मारगि चालतौ, बुरा न कबहूँ होइ ।
 अमृत खातौ प्राणियों, मूवा न सुणिए कोइ ॥१४२॥
 (दादू) कछू नॉही का नॉव क्या, जे धरिए सो झूठ ।
 सुर-नर-मुनि-जन बंधिया, लोका आवट फूट ॥१४३॥
 (दादू) कछू नॉही का नॉव धरि, भराया सब संसार ।
 साच झूठ समझैं नहीं, नां कुछ कीया विचार ॥१४४॥
 दादू केई दौड़े द्वारिका, केई कासी जाँहि ।
 केई मथुरा कौ चलै, साहिब घटही माँहि ॥१४५॥
 पूजणहारे पासि हैं, देही माँहै देव ।
 दादू ताकूँ छाड़ि करि, वाहरि माँडी सेव ॥१४६॥
 ऊपरि आलम सब करै, साधूजन घट माँहि ।
 दादू एता अंतरा, तातैं बणती नॉहि ॥१४७॥
 दादू सबथे येक के, सो एक न जौना ।
 जणै^१ जणें का हैगया, यहु जगत दिवौना ॥१४८॥
 दादू जे को ठेलैं साच कूँ, तौ साचा रहै समाइ^२ ।
 कौड़ी वरकौं दीजिये, जनम अमोलिक जाइ ॥१४९॥
 साचे साहिब कौं मिलै, साचे मारग जाइ ।
 साचे सौं साचा भया, तब साचे लिये बुलाइ ॥१५०॥
 (दादू) झूठा साचा करि लीया, विष-अम्रित जौना ।
 दुखकूँ सुख सबको कहैं, ऐसा जगत दिवौना ॥१५१॥
 सूधा मारग साच का, साचा होइ सुजाइ ।
 झूठा कोई ना चलै, दादू दीया दिखाइ ॥१५२॥
 साहिब सौं साचा नहीं, यहु मन झूठा होइ ।
 दादू झूठे बहुत हैं साचा बिरला कोइ ॥१५३॥
 दादू साचा अँग न ठेलिए, साहिब मानैं नॉहि ।
 साचा सिर परि राखिए, मिलि रहिए ता माँहि ॥१५४॥
 दादू झूठा बदलिए, साच न बदल्या जाइ ।
 साचा सिर परि राखिए, साध कहैं समझाइ ॥१५५॥

साच न सूझै जब लगै, तब लग लोचन अंध ।
 दादू मुकता छाड़ि करि, गलि मैं, घाल्या फंध ।।१५६।।
 साच न सूझै जब लगे, तब लग लोचन नॉहि ।
 दादू त्रिबंध छाड़ि करि, बंधे दोइ पख मॉहि ।।१५७।।
 झूठा परगट साचा थानै, तिनकी दादू रॉम न मानै ।।१५८।।
 कहैं आसिक अल्लाह के, मारै अपने हाथ ।
 कहैं आलम औजूद सौं, कहैं जबों की बात ।।१५९।।
 (दादू) साचे का साहिब घणी, सॅम्रथ सिरजनहार ।
 पाखंड कीयहु, पृथमी (प्रिथमी), ऋषंघ का संसार ।।१६०।।
 (दादू) जे साहिब सिरजै नहीं, (तौ) आपै क्यों करि होइ ।
 जे आपै ही ऊपजै, (तौ) मरि करि जीवै कोइ ।।१६१।।
 कर्म फिरावै जीव कूँ, कर्मों कूँ करतार ।
 करतार कूँ कोई नहीं, दादू फेरनहार ।।१६२।।
 जे यहु करता जीव था, संकट क्यूँ आया ।
 कर्मों के बसि क्यूँ भया, क्यूँ आप बंधाया ।।१६३।।
 क्यूँ सब जोनि जगत मैं, घरबार नचाया ।
 क्यूँ यह करता जीव है, पर हाथि विकाया ।।१६४।।
 दादू कृत्तम काल बसि, बंध्या गुण मॉहि ।
 उपजै बिनसै देखतौ, यहु करता नॉहि ।।१६५।।
 (दादू) साचा साहिब कूँ मिलै, साचै मारगि जाइ ।
 साचै सौं साचा भया, तब साचा रह्या समाइ ।।१६६।।
 दादू साचा साहिब सेविए, साची सेवा होइ ।
 साचा दरसन देखिए, साचा सेवग सोइ ।।१६७।।
 (दादू) पाखंडि पीव न पाईए, जे अंतरि साच न होइ ।
 ऊपरतैं क्यूँ ही रहौ, भीतर के मल धोइ ।।१६८।।
 साच अमर जुगि—जुगि रहै, दादू बिरला कोइ ।
 झूठ बहुत संसार मैं, उतपति परलै होइ ।।१६९।।
 एक साच सूगह गही जीवन मरन निबाहि ।
 दादू दुखिया रॉम विन, भावे तीधरि जाहि ।।१७०।।
 (दादू) भावै तहाँ छिपाइये, साच न छाना होइ ।
 सेस रसातल गगन धू, परगट कहिये सोइ ।।१७१।।

छॉनें छॉनें कीजिए, चोड़े प्रगट होइ।
 दादू पैसि पयाल में, बुरा करै जिनि कोइ।।१७१।।
 अन किया लागै नहीं, कीयै लागै आइ।
 साहिब के दरि न्याव है, जे कुछ रँभरजाइ।।१७२।।
 सोई जन साधू सिध सो, सोई सतवादी सूर।
 सोई मुनियर दादू बड़े, सनमुष रहणि हजूर।।१७३।।
 (दादू) सोई जन साचे सो सती, सोई साधिक सुजाण।
 सोई ग्योंनी सोई पंडिता, जे रते भगवान।।१७४।।
 (दादू) सोई जोगी सोई जंगमा^१, सोई सन्यासी सोई सेख।
 सोई सोफी^२ सेवडे^३, जिहिकै एक अलेख।।१७५।।
 (दादू) सोई काजी सो भुलॉ, सोई मोमिन मुसलमॉन।
 सोई सयाने सब भले, जे रते रहिमॉन।।१७६।।
 राम नाँव कौं वणिजन बैठे, ताथैं माँड्या^४ हाट।
 सोई सों सौदा करें, दादू खोलि कपाट।।१७७।।
 विचके सिर खाली करें, पूरे सुख संतोष।
 दादू सुधबुध आतमॉ, ताहि न दीजे दोष।।१७८।।
 सुधबुध सौं सुख पाईए, कै साध बमेकी होइ।
 दादू ए बिचके बुरे, दाधे भूगे सोइ।।१७९।।
 (दादू) जिनि कोई हरि नाँव मै, हमकूँ हॉनाँ बाहि।
 तातैं तुमतैं डरत हैं, क्यूँ ही टले बलाइ।।१८०।।
 जे हम छाडैं राम कूँ, तो कौन गहेगा।
 दादू हम नहि उच्चरैं, तौ कौन कहेगा।।१८१।।
 एक रॉम छॉडै नहीं, छाड़े सकल विकार।
 दूजा सहजै होइ सब, दादू का मत सार।।१८२।।
 जे तूँ चाहे राम कूँ, तौ एक मना आराध।
 दादू दूजा दूरि करि, मन—इंद्री करि साध।।१८३।।
 कबीर विचारा कहि गया, बहुत भांति समझाइ।
 दादू दुनिया बावरी, ताके सँगि न जाइ।।१८४।।
 पावेंगे उस ठोरकूँ, लँघैगे यहु घाट।
 दादू क्या कहि बोलिये, अजहूँ बिचिही बाट।।१८५।।

साचा राता साच सौं, झूठा राता झूठ ।
 दादू न्याव नॅवेरिये सब साधूँ कूँ पूछि ॥१८६॥
 दादू जे पहुँचे ते पूछिए, तिनकी एकै बात ।
 सब साधौँ का एक मत, ए विचके बाहर वाट ॥१८७॥
 दादू जे पहुँचे ते कहि गए, तिनकी एकै बात ।
 सबै सयाणे ये कमत, उनकी एकै जात ॥१८८॥
 सबै सयाणे कहि गए, पहुँचे का घर एक ।
 दादू मारग माँहिजे, तिनकी बात अनेक ॥१८९॥
 सूरज सन्मुख आरसी, पावक किया प्रकास ।
 दादू साई साध बिच, सहजै निपजै दास ॥१९०॥
 (दादू) सूरज साखीभूत है, साच करै प्रकास ।
 चोर डरै चोरी करै, रैणि तिमर का नास ॥१९१॥
 दादू चोरन भावे चोदिणों, जिनि उजियारा होइ ।
 सूते का सब धन हड़ौं, मुझे न देखै कोइ ॥१९२॥
 घटि घटि दादू कहिं समझावे, जैसा करे सु तैसा पावे ।
 को काहू का सीरी^१ नाहिं, साहिब सब घटि देखै माँहि ॥१९३॥

१४. भेख कौ अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रब साधवा, प्रणामं पारंगतह ॥१॥
 दादू बूड़े ग्यौन सब, चतुराई जलि जाइ ।
 अंजन-मंजन छाड़ि दै, रहौ राम ल्यौ लाइ ॥२॥
 रॉम बिना सब फीक लागै, करणी-कथा-गियान ।
 सकल अवृथा कोटि करि, दादू जोग धिर्यौन ॥३॥
 ग्यौनी-पंडित बहुत हैं, दाता-सूर अनेक ।
 दादू भेख अनंत हैं, लागि रह्या सो येक ॥४॥
 कोरा कलस अवाह का, ऊपरि चित्र अनेक ।
 क्या कीजै दादू बस्त बिन, औसै नौनों भेख ॥५॥

बाहरि दादू भेख बिन, भीतरि बस्त अगाध ।
 सो ले हिरदै राखिए, दादू सनमुख साध ॥६॥
 (दादू) भांडा भरि धरि वस्त सौं, ज्यूँ महँगे मोल बिकाइ ।
 खाली भांडा वस्त बिन, कौड़ी बदले जाइ ॥७॥
 (दादू) कनक कलस विष सौं भर्या, सो आवे किहि काम ।
 सो धनि कूटा चोम का^१, जामै अमृत रॉम ॥८॥
 दादू देखै वस्त कौ, बासण देखे नॉहिं ।
 दादू भतरि भरि धर्या, सो मेरे मन मॉहिं ॥९॥
 दादू जे तूँ समझै तौ कहों, साचा येक अलेख ।
 डाल-पॉन तजि मूल गहि, क्या दिखलावै भेष ॥१०॥
 दादू सब दिखलावै आपकों, नॉनों भेष बनाइ ।
 जहाँ आपा मेटण हरि भजण, तिहि दिसि कोइ न जाई ॥११॥
 सो दिसा कतहूँ रही, जेहि दिसि पहुँचै साध ।
 मैं-तैं मूरिख गरि रहे, लोभ बड़ाई वाद ॥१२॥
 भेष बहुत संसार मैं, हरिजन बिरला कोइ ।
 हरिजन राता राम सौं, दादू एकै होइ ॥१३॥
 हीरै रीझै जौहरी, खलि रीझै संसार ।
 स्वॉंगि साध यहु अंतरा, दादू सति बिचार ॥१४॥
 (दादू) स्वॉंगि साधु बहु अंतरा, जेता धरनि-अकास ।
 साधू राता रॉम सौं, स्वॉंग जगत की आस ॥१५॥
 (दादू) स्वॉमी सब संसार है, साधू बिरला कोइ ।
 जैसे चंदन बावनों^२, बनि-बनि कहीं न होइ ॥१६॥
 (दादू) स्वॉगी सब संसार है, हरिजन कोई एक ।
 हीरा देस दिसंतरा, कंकर और अनेक ॥१७॥
 (दादू) स्वॉगी सब संसार है, साध समंदा पार ।
 अनल पॉखि कहां पाईए, पॉखी कोटि हजार ॥१८॥
 स्वॉगी सब सेंसार है, साधू सोधि सुजॉण ।
 पारस परदेसौं भयों, दादू बहुत पखॉण ॥१९॥
 दादू चंदन बन नहीं, सूरन के दल नॉहिं ।
 सकल समंद हीरा नहीं, त्यूँ साधू जग मॉहिं ॥२०॥

१. चमड़े का कुप्पा २. बौना चन्दन, चन्दनों में विशेष सुगन्धित होता है

जे सॉई का है रहै, सॉई तिसका होई ।
 दादू दूजी बात सब, भेषि न पावै कोई ।।२१।।
 स्वॉंग सगाई कुछ नहीं, रॉम सगाई साच ।
 दादू नाता नॉव का, दूजे रॅंगि न राच ।।२२।।
 दादू एकै आतमों, साहिब है सब मॉहि ।
 साहिब के नाते मिलै, भेष पंथ के नॉहि ।।२३।।
 (दादू) माला तिलक सौं कुछ नहीं, काहू सेती कॉम ।
 अंतरि मेरै येक है, अहनिसि हरि का नॉम ।।२४।।
 (दादू) भगत भेष धरि मिथ्या बोलै, निंघा पर अपवाद ।
 साचे कूँ झूठा गहैं, लागै बहु अपराध ।।२५।।
 (दादू) कबहूँ कोई जिनि मिलै, भगत भेष सौं आइ ।
 जीव जनम का नास है, कहै अमृत विष खाइ ।।२६।।
 (दादू) पहुँचे पूत बटाउ होइ करि, नट ज्यौं काछ्या भेष ।
 खँवरि न पाई खोज की, कहै हमकौं मिला अलेख ।।२७।।
 (दादू) माया कारनि मूँड मुँडाया, यहु तौ जोग न होइ ।
 पारब्रह्म सौं परचा नाही, कपटि न सीझै कोई ।।२८।।
 पीव न पावै बावरी, रचि-रचि करै स्यंगार ।
 दादू फिरि फिरि जगत सौं करैगी बिभचार ।।२९।।
 प्रेम प्रीति संनेह बिन, सब झूठे स्यंगार ।
 दादू आतमरत नहीं, क्यूँ मानै भरतार ।।३०।।
 (दादू) जग दिखलावै बावरी, रचि-रचि करै स्यंगार ।
 तहों न सँवारै आपकों, जहों भीतरि भरतार ।।३१।।
 सुध-बुध जीवधि जाइ करि, माला सँकल वाहि ।
 दादू माया ग्यॉन सौं, स्वॉमी बैठा खाइ ।।३२।।
 जोगी-जंगम-सेवड़े, बोध संन्यासी सेख ।
 खट दरसन दादू रॉम बिन, सबै कपट के भेष ।।३३।।
 दादू सेख मसाइक ओलिया पैगंबर अरू पीर ।
 दरसन सौं परसन नहीं, अजहू वेली तीर ।।३४।।
 नाना भेष बनाइ करि, आपा दे न दिखाइ ।
 दादू दूजी दूरि करि, साहिब सौं ल्यौ लाइ ।।३५।।
 दादू देखा देखी लोक सब, केते आवैं जॉहिं ।
 रॉम - सनेही ना मिलै, जे निज देखै मॉहिं ।।३६।।

(दादू) झूठा राता ~~राम~~ सैं साचा राता सांच ।
 एता अंध न जानहिं, कहैं कंचन कहैं कांच ।।३७।।

दादू सब देखैं असथूल कैं, यहु ऐसा आकार ।
 सूखिम सहज न सूझई, निराकार—निरधार ।।३८।।

(दादू) बाहर का सब देखिए, भीतरि लख्या न जाइ ।
 बाहरि दिखावा लोक का, भीतरि रॉम दिखाइ ।।३९।।

(दादू) झूठा राता झूठ सौं, साचा राता साँच ।
 एता अंध न जानहीं, कहों कंचन कहों काँच ।।४०।।

दादू यहु परख सराफी ऊपिली,^१ भीतरि की यहु नॉहि ।
 अंतर की जाँगै नही, ताथें खोटा^२ पॉहि ।।४१।।

(दादू) सच बिन साँई ना मिले, भावे भेष बनाइ ।
 भावे करवत उरधमुखि, भावे तीर्थि जाइ ।।४२।।

(दादू) साचा हरि का नॉव है, सो ले हिरदे राखि ।
 पाखंड—परपंच दूरि करि, सति सबद यहु साखि ।।४३।।

(दादू) हिरदै की हरि लेइगा, अंतरजॉमी राइ ।
 साच पियारा राम कौं, कोटिक करि दिखलाइ ।।४४।।

दादू मुख की नॉ गहै, हिरदै की हरि लेइ ।
 अंतरि सूधा येक सौं, तौ बोल्यो दोस न देइ ।।४५।।

सब चतुराई देखिए, जे कछु कीजे आँन ।
 मन गहि राखे येक सौं, दादू साध—सुजॉन ।।४६।।

सबद—सुई सुरति—धागा, काया—कंथा लाइ ।
 दादू जोगी जुगि—जुगि पहरै, कबहूँ काटि न जाइ ।।४७।।

ग्योंन गुरु का गूदड़ी, सबद गुरु का भेष ।
 अतीत हमारी आतमों, दादू पंथ अलेख ।।४८।।

इसक अजब अवदाल^३ है, दरदबंद दरवेस ।
 दादू सिका^४ सबर है अकलि पीर उपदेस ।।४९।।

(दादू) सतगुर माला तन दिया, पवन सुरति सैं पोइ ।
 विन हाथों निस दिन जपै, परम जाप यूँ होइ ।।५०।।

१५. साध कौ अँग

दादू न्मो न्मो नरंजन, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ॥१॥
 (दादू) निराकार मन—सुरति सौं, प्रेम—प्रीति सौं सेव ।
 जे पूजै आकार कौं, तौ साधू प्रतखि देव ॥२॥
 ज्यौं यहु काया जीव की त्यों सौई के साध ।
 दादू सब संतोषिए मॉहैं आप अगाध ॥३॥
 दादू भोजन दीजै देह कौं, लीया मनि बिश्रॉम ।
 साधू कै मुखि मेलिए, पाया आतम रॉम ॥४॥
 ज्यौं यहु काया जीव की, त्यों साई के साध ।
 दादू सब संतोखिये, माहैं आप अगाध ॥५॥
 साधूजन संसार में, भौजल बोहिथ अँग ।
 दादू केते ऊधरे, जेते बैठे सँग ॥६॥
 साधूजन संसार मैं, सीतल चंदन—वास ।
 दादू केते ऊधरे, जे आए उन पास ॥७॥
 साधूजन संसार मैं, हीरे जैसा होइ ।
 दादू केते ऊधरे, सँगति आए सोइ ॥८॥
 साधू जन संसार मैं, पारस प्रगट गाइ ।
 दादू केते ऊधरे, जेते परसे आइ ॥९॥
 रुख वृष बनराइ सब, चंदन पासै होइ ।
 दादू बास लगाइ करि, कीए सुगंधे सोइ ॥१०॥
 जहाँ इरंड अरु आक^१ था, चंदन उग्या मॉहि ।
 दादू चंदन करि लीया, आक कहै को नॉहि ॥११॥
 साध नदी जल रॉमरस, तहाँ पखाले अँग ।
 दादू नृमल मल गए, साधूजन के सँग ॥१२॥
 साधू वरिखै रॉमरस, अमृत वाणी आइ ।
 दादू दरसन देखतों, त्रिविध ताप तनि जाइ ॥१३॥
 (दादू) संसार बिचारा जात है, बहिया लहरि—तरँग ।
 मेरे बैठा ऊबरै, सति साधों के सँग ॥१४॥

दादू नेड़ा^१ प्रम पद, साधू जन के साथि ।
 दादू सहजै पाईए, प्रम पदारथ हाथि ।।१५।।
 साध मिलै तब ऊपजै, हिरदै हरि का भाव ।
 दादू संगति साध की, जब हरि करै पसाव ।।१६।।
 साध मिलै तब ऊपजै, हिरदै हरि का हेत ।
 दादू-संगति साध की, कृपा करै तब देत ।।१७।।
 साध मिलै तब ऊपजै, प्रेम-भगति रुचि होइ ।
 दादू संगति साध की, दया करि देवै सोइ ।।१८।।
 साध मिलै तब ऊपजै, हिरदै हरि की प्यास ।
 दादू संगति साध की अबिगति पुरवै आस ।।१९।।
 साध मिलै तब हरि मिलै, सब सुख आनंद मूर ।
 दादू संगति साध की, राम रह्या भरपूर ।।२०।।
 परम कथा उस एक की, दूजा नॉही आँन ।
 (दादू) तन मन जाइ करि, सदा सुरति रस-पान ।।२१।।
 (दादू) परम कथा हरि की कहैं, करैं भगति ल्यौ लाइ ।
 पीवैं-पिलावैं राम-रस, सो जन मिलबो आइ ।।२२।।
 (दादू) पीवे-पिलावै राम-रस, प्रेम भगति गुण गाइ ।
 निन प्रति कथा हरि की करै, हेत सहित ल्यौ लाइ ।।२३।।
 आन कथा संसार की, हमतिं सुणावैं आइ ।
 तिस का मुख दादू कहै, दर्ई न दिखाई ताहि ।।२४।।
 (दादू) मुख-दिखलाई साध का जे तुमही मिलवै आइ ।
 तुम्ह मॉहैं अंतर करै, दर्ई न दिखावै ताहि ।।२५।।
 (दादू) कहै जब दरबौ तब दीजियौ, तुमपै मॉगैं येह ।
 नित प्रति दरसन साध का, प्रेम-भगति दिढ देह ।।२६।।
 (दादू) साध सपीड़ा मन करै, सतगुर सबद सुणाइ ।
 मीराँ मेरा मिहरि करि, अंतर विरह उपाइ ।।२७।।
 ज्यौ-ज्यौ हौवै त्यौ कहै, घटि-बधि कही न जाइ ।
 दादू सो सुध आतमॉ, साधू परसै आइ ।।२८।।
 साहिब सौं सनमुख रहै, सत-संगति मैं आइ ।
 दादू साधू सब कहैं, सो क्यौ नृफल (त्रिफल) जाइ ।।२९।।

ब्रह्म गाइ त्रिय लोक मैं, साधू अस्थन-पौन ।
 सुख मारग अमृत झरै, कत ढूँढैं दादू आन ॥३०॥
 दादू पाया प्रेमरस, साधू संगति मॉहिं ।
 फिरि फिरि देखै लोक सब, यहु रस कतहूँ नॉहिं ॥३१॥
 (दादू) जिस रस कौं मुनियर मरैं, सुरनर करैं कलाप ।
 सो रस सहजै पाईये, साधू-संगति आप ॥३२॥
 संगति बिन सौझै नहीं, कोटि करै जे कोइ ।
 दादू सतगुर साध बिन, कबहूँ सुध न होइ ॥३३॥
 दादू नेड़ा दूरि थैं, अविगत के आराध ।
 मनसा-वाचा-क्रमनॉ, दादू-संगति साध ॥३४॥
 श्रगि (स्रगि) न सीतल होइ मन, चंद न चंदन पास ।
 सीतल संगति साध की, कीजै दादू दास ॥३५॥
 दादू सीतल जल नहीं, हेम न सीतल होइ ।
 दादू सीतल संत जन, रॉम सनेही सोइ ॥३६॥
 दादू चंदनि कदि कह्या, अपना प्रेम प्रकास ।
 दह दिसि प्रकट हवे रह्या, सीतल गंध सुवास ॥३७॥
 दादू पारसि कदि कह्या, मुझ थी कंचन होइ ।
 पारस परगट हवे रह्या, साच कहै सब कोई ॥३८॥
 (दादू) तन नहीं भूला मन नहीं भूला, पंच न भूला प्रॉन ।
 साध सबद क्यूँ भूलिए, रे मन मूढ़ अजॉन ॥३९॥
 रतन पदारथ माणिक मोती, हीरौ का दरिया ।
 च्यंतामणि चित राम-धन, घट अमृत भरिया ॥४०॥
 संग्रथ सूरा साध सो, मणि मस्तकि धरिया ।
 दादू दरसन देखतॉ, सब कारिज सरिया ॥४१॥
 धरती अंबर राति-दिन, रवि-ससि नॉवहि सीस ।
 दादू बलि-बलि वारणैं, जे सुमिरैं जगदीस ॥४२॥
 चंद-सूर सिजदा करैं, नॉव अलह का लेइ ।
 दादू जिमी असमान सब, उन पौऊ सिरि देइ ॥४३॥
 जे जन राते रॉम सौं, तिनकी मैं वलि जॉउ ।
 दादू उनपरि वारणैं^१, जे लागे हरि नॉउ ॥४४॥

(दादू) जे जन हरि के रँग, ^{सो} रँग कदे न जाइ ।
सदा सुरँगे संतजन, रँग मैं रहे समाइ ॥४५॥

दादू राता रँग का, अविनासी रँग मॉहि ।
सब जग धोबी धोइ मरै, तौभी खूटै नॉहि ॥४६॥

साहिब कीया सु क्यूँ मिटै, सुंदर शोभा-रँग ।
दादू धोवे बावरे, दिन-दिन होइ सुरँग ॥४७॥

(दादू) परमारथ कौं सब किया, आप सुवारथ नॉहि ।
परमेस्वर परमारथी कै, साधू कलि मॉहि ॥४८॥

(दादू) पर उपगारी संत सब, आए इहि कलि मॉहि ।
पीवै पिलावै रँगमरस, आप सुवारथ नॉहि ॥४९॥

(दादू) पर उपगारी संतजन, साहिब जी तेरे ।
जाती देखी आतमों, रँग कहि टेरे ॥५०॥

चंद-सूर पावक-पवन, पॉणी का मत सार ।
धरती-अंबर राति-दिन, तरवर फलैं अपार ॥५१॥

छाजन भोजन प्रमारथी, आतम देव आधार ।
साधू सेवग राम के, दादू पर उपगार ॥५२॥

जिसका तिसकों दीजिए, सुकित पर उपगार ।
दादू सेवग सो भले, सिरि नहीं लेवे भार ॥५३॥

परमारथ कौं राखिए, कीजै पर-उपगार ।
दादू सेवग सो भला, निरंजन-निरकार ॥५४॥

सेवा-सुकित सब गया, मैं मेरा मन मॉहि ।
दादू आपा जब लगैं, साहिब मॉनैं नॉहि ॥५५॥

साध सिरोमणि सोधि लै, नदी पूरि परि आइ^१ ।
संजीवनी साम्हों^२ चढ़ै, दूजा बहिया नाइ ॥५६॥

(दादू) जिसकै मस्तकि मणि बसै, सो सकलसिरोमणि अँग ।
जिसके मस्तकि मणि नहीं, ते विष भरे भुवँग ॥५७॥

दादू इस संसार मैं, ए द्वै रहैं लुकाइ ।
राम-सनेही साधजन और बहुतेरा आहि ॥५८॥

दादू इस संसार मैं, ए दोइ रतन अमोल ।
इक सौई इक संतजन, इनका मोल न तोल ॥५९॥

१. (मछली) नदी की उल्टी धारा में चढ़ जाती है। २. सामने

सगे हमारे साध हैं, सिर परि सिरजनहार ।
 दादू सतगुर सो सगा, दूजा धंध-विकार ॥६०॥
 तिनकैं हिरदै हरि बसै, सदा निरंतरि नॉव ।
 दादू साचे साध की, मैं बलिहारी जॉव ॥६१॥
 (दादू) साचा साध दयाल घट, साहिब का प्यारा ।
 राता-माता रॉम का, सॉ प्रॉन हमारा ॥६२॥
 (दादू) फिरता चाक कुंमार का, यों दीसै संसार ।
 साधूजन निहचल भए, जिनके राम अधार ॥६३॥
 जलती बलती ऑतमॉ, साध सरोवर जाइ ।
 दादू पीवै रॉम-रस, सुख मैं रहै समॉइ ॥६४॥
 दादू कौंजी मॉहै मेलि करि, पीवै सब सँसार ।
 करता केवल नृमला (त्रिमला) को साधू पीवणहार ॥६५॥
 (दादू) असाध मिलै अंतर पड़े, भाव-भगति रस जाइ ।
 साध मिलै सुख ऊपजै, आनंद अंगि न माइ ॥६६॥
 (दादू) साधू संगति पाइए, रॉम अमी-फल होइ ।
 संसारी-संगति पाइए, विष-फल देवै सोइ ॥६७॥
 दादू सभा संत की, सुमसति ऊपजै आइ ।
 साखित^१ की सभा बेसतों^२, ग्यान काया तै जाइ ॥६८॥
 (दादू) सब जग दीसै, एकला सेवग स्वामी दोइ ।
 जगत दुहागी रॉम विन, साधु सुहागी होइ ॥६९॥
 (दादू) साधूजन सुखिया भए, दुनियाँ कूँ बहु दंद ।
 दुनिया दुखी हम देखतों, साधनि सदा अंनद ॥७०॥
 दादू देखत हम सुखी, सॉई कै सँगि लागि ।
 यों सो सुखि होइगा, जाके मोटे भाग ॥७१॥
 मीठा पीवै राम-रस, सो भी मीठा होइ ।
 सहजै ँड़वा मिटि गया, दादू नृविख खोइ ॥७२॥
 (दादू) अंतरि येक अनंद सॉ, सदा निरंतरि प्रीति ।
 जिहि प्रॉणी प्रीतम बसै, सो बैठा त्रिभुवन जीति ॥७३॥
 (दादू) मैं दासी तिहि दास की, जिहि सँगि खेलै पीव ।
 बहुत भॉत करि वारै, तापरि दीजै जीव ॥७४॥

(दादू) लीला राजा रॉम की, खेलें सबही संत ।
 आपा-पर येकै, भया, छूटी सबै भरंत ॥७५॥
 (दादू) आनंद सदा अडोल सौं रॉम सनेही साध ।
 प्रेमी-प्रीतम कौं मिले, यहु सुख अगम-अगाध ॥७६॥
 यहु घट दीपक साध का, ब्रह्मजोति प्रकास ।
 दादू पंखी संतजन, तहाँ पड़े निज दास ॥७७॥
 घर-वन मॉहै राखिए, दीपक-जोति जगाइ ।
 दादू प्रॉन-पतंग सब, जहाँ दीपक तहाँ जाइ ॥७८॥
 घर-वन मॉहै राखिए, दीपक जलता होइ ।
 दादू प्रॉन-पतंग सब, आइ मिले सब कोई ॥७९॥
 घर-वन मॉहैं राखिए, दीपक प्रगट प्रकास ।
 दादू प्रॉन-पतंग सब, आइ मिले उस पास ॥८०॥
 घर-वन मॉहै राखिए, दीपक-जोति सहेत ।
 दादू प्रॉन-पतंग सब, आइ मिले उस हेत ॥८१॥
 जिहिं घटि प्रगट रॉम है, सो घट तज्या न जाइ ।
 नेनों माहैं राखिए, दादू आप नसाइ ॥८२॥
 (दादू) जिहिं घटि दीपक रॉम का तिहिं घटि तिमर न होइ ।
 उस उजियारे जाति कै, सब जग देखै सोइ ॥८३॥
 कबहूँ न विहड़ै सो भला, साधू दिढ़ मत होइ ।
 दादू हीरा येकरस, बाँधि गाठड़ी सोइ ॥८४॥
 गरंथ न बाँधै गाँठड़ी नहीं नारी सौं नेह ।
 मन इंद्री असथिर करै, छाड़ि सकल गुण देह ॥८५॥
 निराकार सौं मिलि रहे, अखंड भगति करि लेह ।
 दादू क्यूँ करि पाईए, उन चरनों की खेह^१ ॥८६॥
 साध सदा सँजमि रहै, मैला कदे न होइ ।
 दादू पँक परसै नहीं, कर्म न जानै कोइ ॥८७॥
 साहिब का उनहार सब, सेवग मॉहैं होइ ।
 दादू सेवग साध सौं, दूजा नाहीं कोइ ॥८८॥
 (दादू) जब लग नैन न देखिए, साध कहैं ते अँग ।
 तब लग क्यूँ करि मानिए, साहिब का परसँग ॥८९॥

(दादू) सोइ जन साधू सिध सो, सोई सकल सिरमौर।
जिहकै हिरदै हरि बसै, दूजा नॉही और॥६०॥

औगुण छाड़े गुण गहै, सोई सिरोमणि साध।
गुण-औगुण थैं रहत है, सो निज ब्रह्म अगाध॥६१॥

(दादू) सीधव फटक पखाण का, ऊपरि येकै रँग।
पौंणी मॉहैं देखिए, न्यारा-न्यारा अँग॥६२॥

(दादू) सीधव कै आपा नहीं, नीर-~~खीर~~ परसँग।
आपा फटक पखाण कै, मिले न जल कै सँग॥६३॥

(दादू) सब जग फटक पखाण है, साधू सीधव होइ।
सीधव येकै है रह्या, पाणी-पथर दोइ॥६४॥

को साधू जन उसदेस का, आया इहि संसार।
दादू उसकों पूछिए, प्रीतम कै संमाचार॥६५॥

संमाचार सति पीव कै, कोई साध कहैगा आइ।
दादू सीतल आतमों, सुख मैं रहै समाइ॥६६॥

साध-सबद-रस वरिखि है, सीतल होइ सरीर।
दादू अंतरि आतमों, पीवै हरि-जल नीर॥६७॥

दादू दत दरबार का, कोई साधू बॉटै आइ।
तहों रामरस पाईए, जहों साधू तहों जाइ॥६८॥

(दादू) सुरता सनेही रॉम का, सो मुझ मिलबी ऑणि।
तिस आगै हरि गुण कथौं, सुणत न करई कौणि^१॥६९॥

सबही मृतक समान है, जीया तबहीं जौणि।
दादू छौंटा अमी का, कोई साधू बाहै ऑणि॥७०॥

सबही मृतक है रहे, जीवै कोण उपाइ।
दादू अमृत रॉमरस, को साधू सींचै आइ॥७१॥

सबही मृतक समान हैं क्यूँकरि जीवैं सोइ।
दादू साधू प्रेमरस, ऑणि पिलावै कोइ॥७२॥

सबही मृतक देखिए, किहि विधि जीवै जीव।
साध-सुधारस ऑणि करि, दादू बरिखै पीव॥७३॥

हरि-जल बरिखै बाहिरा, सूके काया खेत।
दादू हरिया होइगा, सींचणहार सुचेत॥७४॥

गंगा-जमुना-सुरसती, मिलें जब सागर मॉहि ।
 खारा-पॉणी है गया, दादू मीठा नॉहि ।।१०५।।
 रादू रॉम न छाडिए, गहिला तजि सँसार ।
 साधू-सँगति सोधि लै, कुसँगति सँग निवारि ।।१०६।।
 (दादू) कुसँगति सब परहरी, मात-पिता कुल कोइ ।
 सजन सनेही बंधवा, भावै आपा होइ ।।१०७।।
 दादू अग्यॉन-मूरिख-हितोकारी, सजनो समो रिपुह ।
 ग्यात्वा तजंतिते, निरामई मनोजितह ।।१०८।।
 दादू अज्ञानी-मूर्ख-हितकारी, सज्जनस्सयो रिपुः ।
 सात्वा तजंतीते निरामयी मनोजितः ।।१०९।।
 कुसँगति केते गए, जिनका नॉव न ठॉउ ।
 दादू तेक्यूँ ऊधरै, साध नहीं जिस गॉव ।।११०।।
 भाव-भगति का भँगकरि, वटपारे भारै बाट ।
 दादू द्वारा मुकति का, खोले जड़ै कपाट ।।१११।।
 दादू साध-संगति अंतर पड़ै, तौ भाजैगा किस ठौर ।
 प्रेम-भगति भावे नहीं, यहु मन का मत और ।।११२।।
 (दादू) राम-मिलन कै कारनै, जे तूँ परा उदास ।
 साधू-सँगति साधि लै, रॉम उन्हूँ के पास ।।११३।।
 (दादू) सोई सेवग राम का जिसही न दूजी चीत ।
 दूजा को भादै नहीं, येक पियारा मीत ।।११४।।
 ब्रह्मा-संकर-संस-मुनि, नारद धू सुखदेव ।
 सकल साध दादू सही, जे लागे हरि सेव ।।११५।।
 साध कँवल हरि वासनों, संत भँवर तहाँ आइ ।
 दादू परमल ले चले, मिले राम कूँ जाइ ।।११६।।
 (दादू) सहजें मेला होइगा, हम-तुम हरि के दास ।
 अंतरगति तौ मिलि रहे, फुनि प्रगट प्रकास ।।११७।।
 दादू आँतम मॉहैं रॉम है, पूजा ताकी होइ ।
 सेवा-बंदन-आरती, साध करैं सब कोइ ।।११८।।
 दादू अविचल आरती, जुगि-जुगि देव अनंत ।
 सदा अखंडित एकरस, सकल उतारै संत ।।११९।।
 संत उतारैं आरती, तन मन मँगल चार ।
 दादू बलि बलि बारणै, तुम परि सिरजनहार ।।१२०।।

दादू ममसिरि मोटे भाग, साधौं का दरसण कीया ।
 कहा करै जम-काल, रॉम रसायण भरि पीया ॥१२१॥
 दादू एता अविगत आपथै, साधौं कौं अधिकार ।
 चौरासी लख जीव का, तन-मन फेरि सँवार ॥१२२॥
 (दादू) विष का अँमृत करि लीया, प्रावक का पौंणी ।
 वॉका सूधा करि लीया, सो साध बिनौंणी ॥१२३॥
 दादू ऊरा पूरा^१ करि लीया, पारा मीठा होइ ।
 फूटा सारा करि लीया, साध बमेकी सोइ ॥१२४॥
 बंध्या मुकता करि लीया, उरभया सुरभया समौन ।
 बैरी मीता करि लीया, दादू उतिम ग्यौन ॥१२५॥
 झूठा साचा करि लीया, काचा कँचन सार ।
 मैला नृमल करि लीया, दादू ग्यौन विचार ॥१२६॥
 (दादू) काया करम लगाइ करि, तीरथि धोवै आइ ।
 तीरथ मॉहैं कीजिए, सो कैसैं करि जाइ ॥१२७॥
 (दादू) जहाँ तिरिए तहां डूबिए, मन मैं मैला होइ ।
 जहाँ छूटै तहाँ बंधिए, कपटि न सीझै कोइ ॥१२८॥
 दादू जब लग जीविए, सुमिरण सँगति साथ ।
 जग मैं साधू रॉम बिन, दादू सब अपराध ॥१२९॥

१६. मधि कौ अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ॥१॥
 (दादू) द्वै पख रहता सहज सो, दुख-सुख एक समौन ।
 भरे न जीवै सहज सों, पूरा पद नृवौण ॥२॥
 सहजरूप मन का भया, जब द्वै-द्वै मिटी तरँग ।
 ताता सीला समि भयौ, तब दादू एकै अँग ॥३॥
 सुख-दुख मनि मॉन नहीं, रॉम रॉग राता ।
 दादू दूजा छाड़ि सब, प्रेमरसि माता ॥४॥

मति मोटी उस साध की, द्वै पख रहत समौन ।
 दादू आपा मेटि करि, सेवा करि सुजौन ॥५॥
 (दादू) सुख दुख समि मॉनें नहीं, आपा—पर सम भाइ ।
 सो भन सम करि सेविए, सब पूरण ल्यो लाइ ॥६॥
 कछू न कहावे आपकूँ काहूँ सँगि न जाइ ।
 दादू नृपण ह्व रहै, साहिब स्यौ ल्यो लाइ ॥७॥
 ना हम छौंड़ै ना गहँ, अँसा ग्यौन विचार ।
मधि भाइ^१ सेवे सदा, दादू मुकति दुवार ॥८॥
 (दादू) सहज सुनि मन राखिए, इन दून्यौं के मॉहि ।
 ले समाधि रस पीजिए, तहौं काल भे नॉहि ॥९॥
 आपा मेटै मृत का, आपा धरै अकास ।
 दादू जहौं—जहौं द्वै नहीं मधि निरंतर वास ॥१०॥
 (दादू) इस आकार थें, दूजा सूखिम लोक ।
 तिसर्थें आगै और हे, **जहुवौं**^२ हरिख न सोक ॥११॥
 दादू हद छाड़ी बेहद मैं, त्रिभे त्रिपख होइ ।
 लागि रहे उस एक सौं, जहौं न दूजा कोइ ॥१२॥
 दादू दूजे अंतर होत है, जिनि आणें मन मॉहि ।
 तहां ले मन कूँ राखिए, जहौं कछू दूजा नॉहि ॥१३॥
 जब निराधार मन रहि गया, आतम के आनंद ।
 दादू पीवै रामरस, भेटे परमानंद ॥१४॥
 निराधार घर कीजिए, जहौं नाहीं धरनि अकास ।
 दादू निहचल राखिए नृगुण के बेसास ॥१५॥
 मन चित मनसा आतमां, सहज सुरति ता मॉहि ।
 दादू पंचौ पूरिले, जहौं धरती अंबर नॉहि ॥१६॥
 अधर चाल कबीर की, **आसंधी**^३ नहीं जाइ ।
 दादू **डाकै**^४ मृग ज्युँ उलटि पड़े भैं आइ ॥१७॥
 दादू रहणि कबीर की, कठिन विषम यहु चाल ।
 अधर येक सौं मिलि रह्या, जहां न झंपै काल ॥१८॥
 निराधार निज भगति करि, निराधार निज सार ।
 निराधार निज नॉवले, निराधार निरकार ॥१९॥

निराधार निज रॉमरस, कोई साधू पीवणहार।
 निराधार निरमल रहै, दादू ग्यॉन विचार॥१२०॥
 दुहु विचि रॉम अकेला आपै, आवण-जाण न देई।
 जहाँ के तहाँ ले राखे दादू, पारि पहुँते सेई॥१२१॥
 चल दादू तहाँ जाईए जहाँ मरै न जीवै कोइ।
 आवा-गवन भै को नहीं, सदा एकरस होइ॥१२२॥
 चल दादू तहाँ जाईए, जहाँ चंद सूर नहीं जाइ।
 राति-दिवस का गमि नहीं, सहजै रहे समाइ॥१२३॥
 चल दादू तहाँ जाईए, माया-मोह तैं दूरि।
 सुखदुख को व्यापै नहीं, अविनासी घर-पूरि॥१२४॥
 चल दादू तहाँ जाईए, जहाँ जम जोरों^१ की नॉहि।
 काल-मीच लागै नहीं, मिलि रहिए ता मॉहि॥१२५॥
 एक देस हम देखिया, तहाँ रूति नहीं पलटे कोइ।
 हम दादू उस देस के, जहाँ सदा एकरस होइ॥१२६॥
 एक देस हम देखिया, तहाँ बसती ऊजड़ नॉहि।
 हम दादू उस देस के, सहज रूप ता मॉहि॥१२७॥
 एक देस हम देखिया, नहीं नेड़ै नही दूरि।
 हम दादू उस देस के, रहे निरंतर पूरि॥१२८॥
 एक देस हम देखिया, तहां निसदिन नाहीं घॉम।
 हम दादू उस देस के, जहाँ निकटि निरंजन रॉम॥१२९॥
 बारहमासी नीपजै, तहाँ कीया परवेस।
 दादू सूका ना पड़ै, हम आए उस देस॥१३०॥
 (दादू) जहाँ वेद-कुराण को गम नहीं, तहाँ कीया परवेस।
 तहाँ कछू अचिरज देखिया, यहु कछु औरै देस॥१३१॥
 ना घरि रह्या न बनि गया, ना कछू कीया कलेस।
 दादू मन ही मन मिल्या, सतगुर के उपदेस॥१३२॥
 काहे दादू घरि रहे, काहे बाहरि जाइ।
 घर-बन रहिता रॉम है, ताही स्यों ल्यौ लाइ॥१३३॥
 (दादू) जिनि प्राणी करि जॉणियाँ, घर-बन एक समॉन।
 घर मॉहें बन ज्यौ रहै, सोई साध सुजॉन॥१३४॥

सब जग मॉहैं एकला, देह निरंतर वास ।
 दादू कारणि रॉम कै, घर-वन मॉहि उदास ॥३५॥
 घर-बन मॉहै सुख नहीं, सुख है सॉई पास ।
 दादू तासों मन मिल्या, इनथैं भया उदास ॥३६॥
 नॉ घर भला न वन भला, जहों नहीं निज नॉव ।
 दादू उनमनि मन रहै, भला त सोई ठाँव ॥३७॥
 वैरागी बनमैं वसै, घर-वारी घर मॉहिं ।
 रॉम निराला रहि गया, दादू इनमों नॉहिं ॥३८॥
 (दादू) दीन-दुनी सदिकै करौं, टुक देखण दे दीदार ।
 तनमन भी छिन-छिन करौं, भिस्ति दोजग भी वार ॥३९॥
 दादू जीवन-मरन का, मुझ पछितावा नॉहिं ।
 मुझ पछितावा पांव का, रह्या न नैनौं मॉहिं ॥४०॥
 श्रग-त्रक सुख-दुख तजे, जीवन मरन नसाइ ।
 दादू लोभी रॉम का, को आवै को जाइ ॥४१॥
 दादू श्रग-त्रक सेंसै नहीं, जीवन-मरन भे नॉहिं ।
 राम विमुख जे दिन गए, सो सालै मन मॉहिं ॥४२॥
 दादू हीदू^१ तुरक न होइवा, साहिब सेती कौम ।
 खट दरसन कै सेंगि न जाइबा, नृपख कहिबा रॉम ॥४३॥
 खद दरसन दून्यौं नहीं, निरालंब निज बाट ।
 दादू येकै आसिरै, लेंघै ओघट घाट ॥४४॥
 दादू नॉ हम हिंदू हूंहिंगे, नॉ हम मुसलमान ।
 खद दरसन में हम नहीं, हम रते रहिमॉन ॥४५॥
 जोगी जंगम सेवड़े, बोध सन्यासी सेख ।
 खट दरसन दादू रॉम बिन, सबै कपट के भेख ॥४६॥
 न तहों हिंदू देहुरा, न तहों तुरक मसीति^२ ।
 दादू आपे आप है, नहीं तहों रहैति ॥४७॥
 दादू अलह रॉम का, द्वै पख तैं न्यारा ।
 रहिता गुण आकार का, सो गुरु हमारा ॥४८॥
 मेरा तेरा बावरे, मैं-तैं की तजि बाँणि ।
 जिनि यहु सब कछु सिरजिया करि ताही का जौणि ॥४९॥

दादू करणी हिंदू तुरक की, अपणी अपणी ठौर।
 दुहुँ विचि मारग साध का, यहु संतों की रह और॥५०॥
 दादू हिंदु-तुरक का, दोइ पख पंथ निवारि।
 संगति साचे साध की, साँईको संभारि॥५१॥
 दादू हिंदु लागे देहुरा, मुसलमान मसीति।
 हम लागे येक अलेख सौं, सदा निरंतर प्रीति॥५२॥
 दादू यहु मसीति यहु देहुरा, सतगुरि दीया दिखाइ।
 भीतरि सेवा बंदगी, बाहरि काहे जाइ॥५३॥
 दून्यौ हाथी है रहे, मिलि रस पीया न जाइ।
 दादू आपा मेटि करि, दून्यौ रहे समाइ॥५४॥
 भैभीत भयानक है रहे, देख्या त्रिपख अंग।
 दादू एकै लें रह्या, दूजा चढ़ै न रँग॥५५॥
 जौणें-बूझे साच है, सबको देखण धाइ।
 चाल नही संसार की, दादू गह्या न जाइ॥५६॥
 दादू पौख काहू के नौ मिलै, त्रिपख नृमल नौव।
 साँई सौं सनमुख सदा, मुकता सबही ठौव॥५७॥
 दादू जबतैं हम त्रिपख भए, सवै रिसाणे लोक।
 सतगुर के प्रसाद तें, मेरे हरिख न सोक॥५८॥
 (दादू) नृपख है करि पख गहे, त्रकि पड़ेगा सोइ।
 हम नृपख लागै नौव सौं, करता करै सु होइ॥५९॥
 दादू पखि काहू के ना मिलै, निहकामी नृपख साध।
 एक भरोसे रौम कै, खेले खेल अगाध॥६०॥
 (दादू) द्वै पख दूरि करि, त्रिपख नृमल नौव।
 आपा मेटै हरि भजे, ताकी मैं बलि जौउ॥६१॥
 दादू पखापखी संसार सब, त्रिपख बिरला कोइ।
 सोई त्रिपख होइगा, जाके नाव निरंजन होइ॥६२॥
 अपने अपने पंथ की, सबको कहै बनाइ।
 ताथें दादू एकसौं, अंतरगति ल्यौ लाइ॥६३॥
 (दादू) तजि संसार सब, रहै निराला होइ।
 अबिनासी के आसिरे, काल न लागे कोइ॥६४॥
 काला मुँह संसार का, नीले कीये पाव।
 दादू तीनि तलाक दे, भावै तीधरि जाव॥६५॥

(दादू) भाव हीण जे पृथमीं, दया बिहुणों देस।
 भगति नहीं भगवंत की, तहाँ केसा परबेस॥६६॥

जे बोलों तौ चुप कहैं, चुप तौ कहैं पुकार।
 दादू क्यूँ करि छूटिए अैसा यहु संसार॥६७॥

न जॉणों हॉजी चुप्प गहि, मेटि अग्नि की झाल^१।
 सदा सजीवन समिरिये, दादू बंचे काल॥६८॥

कलिजुग कूँकर कलमुहां उठि-उठि लागे धाइ।
 दादू क्यूँकरि छूटिए, कलिजुग बड़ी बलाइ॥६९॥

(दादू) पथिं चलै ते प्रॉणियों, तेता कुलि ब्यौहार।
 नृपख साधू सा सही, जिनके येक अधार॥७०॥

दादू पंथौ पडि गए, बपुड़े बारह बाट।
 इनके संगि न जाइए उलटा अविगत घाट॥७१॥

(दादू) जागे कूँ आया कहैं, सूते कौ कहैं जाइ।
 आँवण जाणों झूठ है, जहाँ का तहाँ समाइ॥७२॥

१७. सारग्राही को अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह॥१॥

दादू साधू गुण गहै, औगुण तजै बिकार।
 मान सरोवर हँस ज्यूँ छाड़ि नीर गहि सार॥२॥

हंस गियानी सो भला, अंतरि राखै एक।
 विष मों अम्रित काढि ले, दादू बड़ा वमेक॥३॥

पहली न्यारा मन करै, पीछै सहज सरीर।
 दादू हंस विचार सौं, न्यारा कीया नीर॥४॥

आपैं आप प्रकासिया, नृमल ग्यौन अनील।
 पीर नीर न्यारा कीया, दादू भजि भगवंत॥५॥

पीर नीर का संत जन, न्याव नवेरै आइ।
 दादू साधू हंस बिन, भेल समैले^२ जाइ॥६॥

दादू मन-हंसा मोती चुगै कंकरदीया डारि।
 सतगुरि कहि समझाईया, पाया भेद-विचारि॥७॥
 दादू हंस मोती चुगै, मानसरोवर जाइ।
 बगुला छीलरि^१ बापुड़ा, चुणि-चुणि मछली खाइ॥८॥
 दादू हंस मोती चुगै, मानसरोवर न्हाइ।
 फिरि-फिरि बैसे बापुड़ा, काग करंका^२ आइ॥९॥
 दादू हंस परखिए, उतिम करणी चाल।
 बगुला वैसे ध्यों धरि, प्रतखि कहिए काल॥१०॥
 ऊजल करणी हंस है, मेली करणी काग।
 मधिम करणी छाड़ि सब, दादू उतिम भाग॥११॥
 (दादू) नृमल करणी साध की, मैली सब संसार।
 मैली मधिम है गए, त्रिमल सिरजनहार॥१२॥
 (दादू) करणी ऊपरि जाति है, दूजा सोच निवारि।
 मैली मधिम है गए, ऊजल ऊँच बिचारि॥१३॥
 ऊजल करणी रॉम है, दादू दूजा धंध।
 का कहिए समझे नहीं, चारयूँ लोचन^३ अंध॥१४॥
 दादू गऊ-बछ का ग्यों गहि, दूध रहै ल्यौ लाइ।
 सींग-पूछ पग परहरै असथनि लागे धाइ॥१५॥
 (दादू) कॉम गाइ के दूधसौं, हाड़ चाम सौं नॉहि।
 दादू अमृत पीजिए, साधू के मुख मॉहि॥१६॥
 जाके हिरदै जैसी होइगी, सो तैसी ल जाइ।
 दादू तूँ नृदोख रहु, नॉव निरंतरि गाइ॥१७॥
 (दादू) साध सबै करि देखणा, असाध न दीसै कोइ।
 जाकै हिरदे हरि नहीं, ता तनि टोटा^४ होइ॥१८॥
 जब साधू-संगति पाईए, तब दूंदर दूरि नसाइ।
 दादू बोहिथ बेसि करि, डूँडै निकटि न जाइ॥१९॥
 (दादू) जब परम पदारथ पाईए, तब कंकर दीया डारि।
 दादू साचा सो मिलै, तब कूड़ा काच निबारि॥२०॥
 जब जीवनिमूरी पाईए, तब मरिबा कौं न बिसाहि।
 दादू अमृत छाड़ि करि, कौन हलाहल खाइ॥२१॥

१. तलैया २. सूखा चमड़ा ३. दो बाह्य, एक आन्तरिक (शिव नेत्र),
 एक सहस्रदल कमल के समीप काल चक्षु ४. घाटा

जब मान सरोवर पाईये तब छीलर^१ कौ छिटकाइ ।
 दादू हंसा हरि मिलै, तब कागा गए बिलाइ ॥२२॥
 जहाँ निसकर तहाँ दिन नहीं, निस तहाँ दिनकर नॉहि ।
 दादू एकै द्वै नहीं, साधून के मत मॉहि ॥२३॥
 (दादू) एकै घोडैं चढ़ि चलै, दूजा कोतिल^२ होइ ।
 दहु घोड़ा चढ़ि चालतौ, पारि म पहुँच्या कोइ ॥२४॥

१८. विचार कौ अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ॥१॥
 (दादू) जलमें गगन गगन मैं जल है फुनि वे गगन निरालं ।
 ब्रह्म जीव इहि विधि रहै, अँसा भेद विचारं ॥२॥
 द्रपन मैं मुख देखिए पॉणी मैं प्रतिबिंब ।
 अँसैं आतम रॉम है, दादू सबही सँग ॥३॥
 जब द्रपन मॉहैं देखिए तब अपना सूझै आप ।
 द्रपन बिन सूझै नही, दादू पुनि यरू पाप ॥४॥
 दादू जीए तेल तिलनि मैं, जीए गंध फुलनि ।
 जीए मखण खीर में ईए रबु रहनि ॥५॥
 ईए रबु रहनि मैं, जीएँ रूह रगनि ।
 जोये जेरौ^३ सूर मैं, ठंडो चंद बसनि ॥६॥
 (दादू) यहु दिल जिनि मंदिर कीया, दिल मंदिर मैं सोइ ।
 दिल मॉहैं दिलदार है, और न दूजा कोइ ॥७॥
 भीत तुम्हारा तुम्ह कनै^४ तुमही लेहु पिछौणि ।
 दादू दूरि न देखिए प्रतिबिंब ज्यूँ जॉणि ॥८॥
 (दादू) नाल कँवल जल ऊपजै, क्यूँ जुदा जल मॉहिं ।
 चंदा हित-चित प्रीतडी, यौं जलसेती नॉहि ॥९॥
 दादू एक विचार सौं, सबतैं न्यारा होइ ।
 मॉहै है परि मनि नही, सहजि निरंजन सोइ ॥१०॥

(दादू) गुण—नृगुण मन मिलि रह्या, क्यूँ बेगर होइ जाइ।
जहाँ मन नाहीं सो नहीं, जहाँ मन चेतनि सो आहि॥११॥

दादू सबही व्याधि का, वोखद^१ एक विचार।
समझैं थे सुख पाईए, कोइ कछू कहौ गंवार॥१२॥

(दादू) इक नृगुण इक गुणमई, सब घटि ए द्वे ग्योंन।
काया का माया मिलै, आतम ब्रह्म समौन॥१३॥

दादू कोटि आचारीन एक बिचारी, तऊ न सरभरि होइ।
आचारी सब जग भर्या, बिचारी बिरला कोइ॥१४॥

दादू घट मैं सुख आनंद है, तब सब ठाहर होइ।
घट मैं सुख आनंद बिन, सुखी न देख्या कोइ॥१५॥

(दादू) काया लोक अनंत सब, घट मैं भारी भीर।
जहां जाइ तहां संगि है, दरिया पैली तीर^२॥१६॥

काया माया है रही, जोधा बहु बलिवंत।
दादू दूतर क्यूँ तिरै, काया लोक अनंत॥१७॥

मेटी माया तजि गए, सूखिम लीया जाइ।
दादू को छूटै नहीं, माया बड़ी बलाइ॥१८॥

दादू सूखिम मॉहिले, तिनका कीजै त्याग।
सब तजि राताराम सौं, दादू यहु बैराग॥१९॥

गुण अतीत सो दरसणी, आपा धरै उठाइ।
दादू नृगुण राम गहि, डोरी लागा जाइ॥२०॥

प्यंड मुकति सब को करै, प्राण मुकति नहीं होइ।
प्राण मुकति सतगु करै, दादू बिरला कोइ॥२१॥

(दादू कहै) खुध्या त्रिखा क्यूँ भूलिए, सीत तपति क्यूँ जाइ।
क्यूँ सब छूटे देह गुण, सतगुर कहि समझाइ॥२२॥

मॉहै थी मन काढ़ि करि, ले राखै निज ठौर।
दादू भूले देह गुण, विसरि जाइ सब और॥२३॥

नांव भुलावै देह गुण, जीव दसा सब जाइ।
दादू छोंड़ै नाँव कौ, तो फिरि लागै आइ॥२४॥

(दादू) दिन—दिन राता रॉम सौं, दिन—दिन अधिक संनेह।
दिन—दिन पीवै रामरस, दिन—दिन द्रपन देह॥२५॥

(दादू) दिन-दिन भूलै देह गुण, दिन-दिन इंद्री नास ।
 दिन-दिन मन-मनसा मरै, दिन-दिन होइ प्रकास ।।२६।।
 देह रहै संसार मैं, जीव ब्रह्म के पास ।
 दादू कछु ब्यापै नहीं, काल-झाल दुख त्रास ।।२७।।
 काया की संगति तजे, बैठा हरिपद मॉहि ।
 दादू नृभै है, रहे, कोइ गुण ब्यापै नॉहि ।।२८।।
 काया मॉहैं भे घणा, सब गुण ब्यापैं आइ ।
 दादू नृभै घर कीया, रहे नूर मैं जाइ ।।२९।।
 (दादू) खडगधार विष ना मरै, कोई गुण ब्यापै नॉहि ।
 राम रहे त्यों जन रहै, काल-झाल जल मॉहि ।।३०।।
 सहज विचार सुखमै रहै, दादू बड़ा बमेक ।
 मन-इंद्री पसरै नहीं, अंतरि राखै एक ।।३१।।
 मन-इंद्री पसरे नहीं, अहनिसि एकै ध्यौन ।
 पर उपगारी प्रॉणिया, दादू उतिम ग्यौन ।।३२।।
 (दादू) मैं नाहीं तब नॉव क्या कहा कहावे आप ।
 साधौ कहो बिचारि करि, मेटो तन की ताप ।।३३।।
 (दादू) जब समभया तब सुरझिया उलटि समौना सोइ ।
 कछू कहावे जब लगै, तब लग समझि न होइ ।।३४।।
 जब समझया तब सुरझिया, गुरमुखि ग्यौन अलेख ।
 उर्ध कॅवल मैं आरसी, फिरि करि आया देख ।।३५।।
 प्रेम-भगति दिन-दिन बधै, सोई ग्यौन बिचार ।
 दादू आतम सोधि करि, मथि करि काढ्या सार ।।३६।।
 (दादू) जिहि बरियों (यहु) सबकछू भया, सोंकछु करौ विचार ।
 काजी-पंडित बावरे, क्या लिखि बंधे भार ।।३७।।
 जब यहु मनही मन मिल्या, तब कछू पाया भेद ।
 दादू लेकरि लाईए, क्या पढ़ि मरिए वेद ।।३८।।
 पौण पावक पावक पौणी, जौणैं नही अजण ।
 आदि-अंति विचार करि, दादू जौण-सुजौण ।।३९।।
 सुख मॉहैं दुख बहुत है, दुख मॉहैं सुख होइ ।
 दादू देखि विचारि करि, आदि-अंति फल दोइ ।।४०।।
 मीठा खारा खारा मीठा, जौणै नहीं गॅवार ।
 आदि-अंति गुण देखि करि, दादू कीया विचार ।।४१।।

कोमल कठिन कठिन है कोमल, मूरिख मरम न बूझे ।
 आदि—अंति विचार करि, दादू सब कुछ सूझे ॥४२॥
 पहली प्रॉन विचार करि, पीछें पग दीजे ।
 आदि—अंति गुण देखि करि, दादू कछु कीजे ॥४३॥
 पहली प्रॉण विचार करि, पीछें चलै साथ ।
 आदि—अंति गुंण देखि करि, दादू घाली हाथ ॥४४॥
 पहली प्रॉन विचार करि, पीछें कछू कहिए ।
 आदि—अंति गुंण देखि करि, दादू निज गहिए ॥४५॥
 पहली प्रॉन विचार करि, पीछें आवे जाइ ।
 आदि—अंति गुण देखि करि, दादू रहै समाइ ॥४६॥
 (दादू) सोचि करै सो सूरमा, करि सोचै को कूर ।
 करि सोच्यो मुख स्याम ह्वै, सोच कर्यो मुख नूर ॥४७॥
 जे मति पीछे ऊपजे, सो मति पहली होइ ।
 कबहुँ न होवे जीव दुखी, दादू सुखिया सोइ ॥४८॥
 आदि—अंति गाहन^१ कीया, माया—ब्रह्म बिचार ।
 जहां का तहां ले दे धर्या, दादू देत न बार ॥४९॥

१६. बेसास कौ अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ॥१॥
 (दादू) सहजै सहजै होइगा, जे कुछ रचिया रॉम ।
 काहेको कलपै — मरै, दुखी होत बेकॉम ॥२॥
 (दादू) साई कीया सु है रह्या, जे कछु करै सु होइ ।
 करता करै सु होइगा, काहे कलपै कोइ ॥३॥
 दादू कहै, जे तें कीया सु है रह्या, जे कछु करै सु होइ ।
 करन करावन येक तूँ, दूजा नॉही कोइ ॥४॥
 सोई हमारा साईयो, जे सबका पूरणहार ।
 दादू जीवण—मरण का, ताकै हाथि बिचार ॥५॥

(दादू) श्रग-भवन पाताल मधि, आदि-अंति सब सिस्ट ।
सिरजि सवन कूँ देत है, सोई हमारा इस्ट ॥६॥

करनहार करता पुरिख, हमकूँ केसी चीत ।
सब काहू की करत है, सो दादू का मीत ॥७॥

(दादू) मनसा-वाचा-क्रमनां, साहिब का बेसास ।
सेबग सिरजनहार का, करै कौन की आस ॥८॥

सुरम न आवे जीव कौं, अण कीया सब होइ ।
दादू मारग मिहरि का, बिरला बूझै कोइ ॥९॥

(दादू) उदिम औगुण को नहीं, जे करि जाँणै कोइ ।
उदिम मैं आधार है, जे साँई सेती होइ ॥१०॥

दादू पूरणहारा पूरिसी, जे चित रहसी ठाँउ ।
अंतर थें उमंगिसी, सकल निरंतरि रॉम ॥११॥

(दादू) पूरि क पूरापासि है, नाही दूरि गवॉर ।
सब जानत हैं बावरे, देवे कौं हुसियार ॥१२॥

दादू च्यंता राम कूँ, संग्रथ सब जाँणै ।
दादू रॉम संभालिए, च्यंता जिणि आँणै ॥१३॥

(दादू) च्यंता कीया कुछ नहीं, च्यंता जीय कूँ खाइ ।
हूणों है सो है रह्या, जाँण है सो जाइ ॥१४॥

(दादू) जिनि पहुँचाया प्राण को, उदर उरध मुखि खीर ।
जठर अगनि मैं राखिया, कोमल काया सरीर ॥१५॥

सो संग्रथ सँगी सँगी है विकट घाट घट भीर ।
सो साँई सू सूगहगही^१, जिनि भूलै मन बीर ॥१६॥

गोविंद के गुण चिति कारि, नैन-बैन पग सीस ।
जिनि मुख दीया कौन कर, प्राननाथ जगदीस ॥१७॥

तनमन साँज सवॉरि सब, राखे बिसवा बीस ।
सो साहिब सुमिरै नहीं, दादू भौनि हदीस ॥१८॥

सो साहिब जिनि बीसरै, जिनि घटि दीया जीव ।
ग्रभवास में राखिया, पालै पोसै पीव ॥१९॥

हिरदै रॉम संभालि ल्यौ, मन राखौ बेसास ।
दादू संग्रथ साईयाँ, सबकी पूरै आस ॥२०॥

(दादू) राजिक^१ रिजक^२ लीया खड़ा, देवै हाथौं हाथ ।
पूरिक पूरा पासि है, सो सदा हमारे साथ ॥२१॥

दादू सांई सवनिकों, सेवग है सुख देइ ।
अया मूढ़ मति जीव की, तौभी नाव न लेइ ॥२२॥

दादू सिरजनहारा सबनिका साई है संग्रथ ।
सोई सेवग है रह्या, जहाँ सकल पसारै हथ ॥२३॥

धनिधनि साहिब तूँ बड़ा, कौन अनूपम रीति ।
सकल लोकसिरि साँईया, है करि रह्या अतीत ॥२४॥

दादू हौं बलिहारी सुरतिकी, सबकी करै संभाल ।
कीड़ी-कुंजर पलक में, करता है प्रतिपाल ॥२५॥

दादू छाजन^३ भोजन सहज में, साँई देइ सुलेइ ।
तार्थे अधिका और कछु, सो तूँ काहे करेइ ॥२६॥

दादू टूका सहज का, संतोषी जन खाइ ।
मिरतक भोजन गुरमुखी, काहे कलपै जाइ ॥२७॥

दादू भाडा^४ देह का जता सहजि विचार ।
जेता हरि बिचि अंतरा, तेता सवै निवारि ॥२८॥

दादू जलदल राम का, हम लेवै परसाद ।
संसार का समझै नहीं अविगति भाव अगाध ॥२९॥

परमेशुर के भाव का, एक कणूका खाइ ।
दादू जेता पाप था, भरम-करम सब जाइ ॥३०॥

(दादू) कौण पकावै कौण पीसै, जहाँ-तहाँ सीधा ही दीसै ॥३१॥

(दादू) जे कछु खुसी खुदाइ की, होवैगा सोई ।
पचि-पचि कोई जिनि मरै, सुणि लीज्यौ लोई ॥३२॥

(दादू) छूटि खुदाइ कहीं को नाँही, फिरिहूँ प्रिथ्वी सारी ।
दूजी दहणि दूरि करि बोरै, साधनि सबद बिचारी ॥३३॥

(दादू) बिन राम कही को नाँही, फिरिहूँ देस-बदेसा ।
दूजी दहणि दूरि करि बोरै, सुणि यह साध संदेसा ॥३४॥

(दादू) सिदक सबूरी साच गहि, स्याबति राखि अकीन ।
साहिब सौं दिल लाइ रहु, मुरदा है मसकीन ॥३५॥

(दादू) अणवंचित^१ टूका खात हैं, मरभहि लागा मन ।

नांव निरंजन लेत है, यूँ नृमल साधू जंन ।।३६।।

दादू अणवंच्या आगें पड़े, खिर्या^२ विचारि रखाइ ।

दादू फिरै न तोड़ता, तरवर ताकि न जाइ ।।३७।।

अणवंच्या आगे पड़े पीछें लेहि उठाइ ।

दादू के सिरि दोस यहू, जे कछु रॉम रजाइ ।।३८।।

अणबंधी^३ अजगैब^४ की, रोजी गगन गिरास ।

दादू सति करि लीजिए, सो साई के पास ।।३९।।

मीठे का सब मीठा लागै, भावै विष भरि देइ ।

दादू कड़वा ना कहै, अमृत करि-करि लेइ ।।४०।।

बिपति भली हरि नॉव सौं, काया कसौटी दुख ।

रॉम बिना किस कॉम की, दादू संपति सुख ।।४१।।

दादू येक बिसास बिन, जियरा चंचल डावॉडोल ।

निकटि निधि दुख पाईये, च्यंतामणी अमोल ।।४२।।

(दादू) बिन बेसासी जीयरा, चंचल नॉही ठौर ।

निहचे निहचल नॉ रहे, कछू और की और ।।४३।।

(दादू) हूँगा था सो है रह्या, जिनि वॉछै सुख दुख ।

सुख मॉंगे दुख आइसी, पै पीव न बिसारी मुख ।।४४।।

दादू हूँगा था सो है रह्या, श्रग न वॉछी धाइ ।

त्रक कहैथी नॉ डरी, हूबा स होसी आइ ।।४५।।

(दादू) हूँगा था सो है रह्या, जे कछु कीया पीव ।

पल बधे न छिन घटै, ऐसी जाणी जीव ।।४६।।

(दादू) हूँगा था सो होइ रह्य, और न होवै आइ ।

लेणा था सो ले रह्या, और न लीया जाइ ।।४७।।

(दादू) ज्यूँ रचिया त्यूँ होइगा, काहे कौं सिरि लेइ ।

साहिब ऊपरि राखिए, देखि तमासा एह ।।४८।।

ज्यूं जाणै त्यूं राखियौं, तम सिरि ढाली राइ ।

दूजा को देखें नहीं, दादू अनंत न जाइ ।।४९।।

ज्यूँ तुम भावै त्यूँ खुसी, हम राजी उस बात ।

(दादू) के दिल सिदक सौं, भावे दिन कूँ रात ।।५०।।

(दादू) करणहारि जे कुछ कीया, सोई हूँ करि जाँणि ।
 जे तूँ चतुर सयौण जाणराइ, तौ याही परवाँणि ।।५१।।

(दादू) करणहारि जे कुछ कीया, सो बुरा न कहणा जाइ ।
 सोई सेवग संतजन, रहवा रॉम रजाइ ।।५२।।

दादू करता हम नहीं, करता ओरै कोइ ।
 करता है सो करैगा, तूँ जिनि करता होइ ।।५३।।

कासी तजि मगहर गया, कबीर भरोसे रॉम ।
 संदेही साँई मिल्या, दादू पूरे काँम ।।५४।।

दादू रोजी राम है, राजिक रिजक हमार ।
 दादू उस परसाद सौँ, पोख्या सब परिवार ।।५५।।

पंच सतोखे येक सौँ, , मन मतिवाला माँहि ।
 दादू भागी भूख सब, दूजा भावै नाँहि ।।५६।।

दादू साहिब मेरे कपड़े, साहिब मेरा खौण ।
 साहिब सिर का नाजहै, साहिब प्यंड पराँण ।।५७।।

साँई सत संतोष दे, भाव भगति बेसास ।
 सिदक सबूरी साच दे, माँगे दादू दास ।।५८।।

२०. पीव पिछौणण कौ अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ।।१।।

सारौं के सिरि देखिए, उस परि कोई नाँहि ।
 दादू ग्यान विचार करि, सो राख्या मन माँहि ।।२।।

सब लालौं सिरि लाल है, सब खूबूँ सिरि खूब ।
 सब पाकौं सिरि पाक है, दादू का महबूब ।।३।।

पर ब्रम्ह परापरं, सो मम देव निरंजनं ।
 निराकारं त्रिमलं तस्य दादू बंदनं ।।४।।

येक तत ता ऊपरि इतनी, तीनि लोक ब्रह्मंडा ।
 धरती गगन पवन अरु पाँणी, सपत दीप नव खंडा ।।५।।

यह सूर चौरासी लख दिन अरु रैणि, रचि ले सपत समंदा ।
सवालाख मेरगिर प्रवत, अठारह भार तीरथ वुत ताऊपरि मंडा ।
चौदहलोक रहै सब रचनां, दादू दास तात घरि बंदा ॥६॥

(दादू) जिनि यहु येती येती करि धरी, थंभ बिन राखी ।
सो हमकूँ क्यों बीसरै, संत जन साखी ॥७॥

(दादू) जिनि प्राण—प्यंड हमकूँ दीया, अंतरि सेवैं ताहि ।
जे आवैं औसाण सिरि, सोई नॉव सबाहि ॥८॥

दादू जिनि मुझकौँ पैदा कीया, मेरा साहिब सोइ ।
मैं बंदा उस रॉम का, जिनि सिरजे सब कोइ ॥९॥

(दादू) एक सगा संसार मैं, जिनि हम सिरजे सोइ ।
मनसा—वाचा—क्रमनौँ, और न दूजा कोइ ॥१०॥

जो था कंत कबीर का, सोइ । वर वरिहूँ ।
मनसा—वाचा—क्रमनौँ, मैं और न करिहूँ ॥११॥

सबका साहिब येक है, जाका प्रगट नॉव ।
दादू साहिब सोंधि ले, ताकी मैं बलि जॉउ ॥१२॥

साचा सॉई सोधि करि, साचा राखी भाव ।
दादू साचा नॉव ले साचै मारगि आव ॥१३॥

साचा सतगुर सोधि ले, साचा लीजे साध ।
साचा साहिब सोधि करि, दादू भगति अगाध ॥१४॥

(दादू) जामै मरै सुजीव है, रमिता रॉम न होइ ।
जामण—मरण तै रहत हो, मेरा साहिब सोइ ॥१५॥

दादू उठै न बैठै एक रस, जागै सोवै नॉहि ।
मरै न जीवै जगत गुर, सब उपजि खये उसमॉहि ॥१६॥

ना बहु जामै ना मरै, ना आवै गर्भ वास ।
दादू ऊँधे मुख नहीं, नर्क कुंड दस मास ॥१७॥

किरतम नहीं सो ब्रह्म है, घटै—बधै नहिं जाइ ।
पूरण निहचल एक रस, जगति न नाचै आइ ॥१८॥

उपजै विनसै गुण धरै, यहु माया का रूप ।
दादू देखत विर नहीं, खिण घॉही खिण धूप ॥१९॥

जे नाहीं सो ऊपजै, है सो उपजै नॉहि ।
अलख आदि अनादि है, उपजै माया मॉहि ॥२०॥

(दादू) जे यहु करता जीव था, संकुटि^१ क्यूँ आया।

करमौं कै बसि क्यूँ भया, क्यूँ आप बंधाया॥१२१॥

क्यों सब जोनी जगत में, घर-बार नचाया।

क्यूँ यहु करता जीव होइ, पर हाथि बिकाया॥१२२॥

दादू कृतम काल-बसि, बंध्या गुण मॉहीं।

उपजै-चिनसै देखतौ, यहु करता नॉहीं॥१२३॥

दादू जाती^२ नूर अलाह है, सफाती^३ अरवाह।

सफाती सिजदा करै, जाती बेपरवाह॥१२४॥

खंड-खंड निज ना भया, इकलस येकै नूर।

ज्यूँ था त्योंही तेज है, जोति रही भरपूर॥१२५॥

त्रिसंध नूर अपार है, तेजपुंज सब मॉहिं।

दादू जोति अनंत है, आगौं-पीछौं नॉहिं॥१२६॥

वार-पार नहीं नूर का, दादू तेज अनंत।

कीमति नहीं करतार को, अैसा है भगवंत॥१२७॥

दादू अलख अलाह का, कहूँ कैसा है नूर।

दादू बेहद हद नहीं, सकल रह्या भरपूर॥१२८॥

प्रम तेज प्रकास है, प्रम नूर निवास।

प्रम जोति आनंद मैं, हंसा दादू दास॥१२९॥

प्रम तेज परांपर, जोति परमेश्वरं।

स्वयं ब्रह्म सदई सदा, दादू अबिचल अस्थिरं॥१३०॥

आदि संत आगैं रहै, एक अनूपम देव।

निराकार निज निर्मला, कोइ न जाणै भेव॥१३१॥

अबिनासी अपरंपरा, बार-पार नहिं छेव।

सो तूँ दादू देखिलै, उर-अंतरि करि सेव॥१३२॥

(दादू) अविनासी साहिब सति है, जे उपजै-बिनसै नॉहिं।

जेता कहिए कालमुखि, सो साहिब किस मॉहिं॥१३३॥

सॉई मेरा सति है, निरंजन निरकार।

दादू विनसै देखतां, झूठा सब आकार॥१३४॥

(दादू) रॉम रटणि छाड़े नहीं, हरि लै लागा जाइ।

बीचै ही अटकै नहीं, जे कला कोटि दिखलाइ॥१३५॥

उरैही^१ अटकै नहीं, जहाँ, राम तहाँ जाइ।
 दादू पावै परम सुख, बिलसै बस्त अघाइ॥३६॥
 उरै ही अटके घणे, मुए गल दे पास।
 अैन अंग जहां आप था, तहां गए निजदास॥३७॥
 सेवा का सुख प्रेमरस, सेज सुहागन देइ।
 दादू बाहै दास कौं, कहै दूजा सब लेह॥३८॥
 पर पुरिछा सब परहरै, सुंदरि देख जागि।
 अपणा पीव पिछौणि करि, दादू रहिए लागि॥३९॥
 आँन पुरिछ हौं बहनडी^२, परम पुरिछ भरतार।
 हूं अवला समझौं नहीं, तू जाणै करतार॥४०॥
 लोहा माटी मिली रह्या, दिन-दिन काई खाइ।
 दादू पारस रांम बिन, कतहूँ गया बिलाइ॥४१॥
 लोहा पारस परसि करि, पलटै अपनों रँग।
 दादू कंचन है रहै, अपनैँ साँई सँग॥४२॥
 (दादू) जिहि परसे पलटै प्रॉणियाँ, सोई निज करि लेह।
 लोहा कंचन है गया, पारस का गुण एह॥४३॥
 आपा नॉही बल मिटै, त्रिविधि तिमर नहीं होइ।
 दादू यहु गुण ब्रह्म का, सुंनि समाना सोइ॥४४॥
 (दादू) माया का गुण बल करै, आपा उपजै आइ।
 राजस-तामस-सातिगी, मन चंचल है जाइ॥४५॥
 (दादू) दहदिसि फिरै सु मन है, आवै जाइ सु पव्न।
 राखणहारा प्राण है, देखणहारा ब्रह्म॥४६॥

२१. संग्रथाई कौ अंग

दादू न्मो न्मो नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ॥१॥

दादू करता करै त निमख मैं, कीड़ी कुँजर होइ ।
 कुँजर कौ कीड़ी करै, तौ मेटि न सकै कोइ ॥२॥

(दादू) करता करै त निमख मैं, राई मेर समौन ।
 मेर कौ राई करै, तौ को मेटे फुरमौन ॥३॥

(दादू) करता करै त निमिख मैं, जल मॉहैं थल थाप ।
 थलहर मैं जलहर करै, अैसा सम्रथ आप ॥४॥

(दादू) करता करै त निमख मैं, डाली भरै भंडार ।
 भरिया गहि ठाली^१ करै, अैसा सिरजनहार ॥५॥

(दादू) धरती कौ अंबर करै, अंबर धरती होइ ।
 निस-अंधियारी दिन करै, दिन कौ रजनी सोइ ॥६॥

(दादू) मृतक काढि मसाण^२ थैं, कहि कौण चलावै ।
 अविगति गति नही जॉनिए, जगि आँणि दिखावै ॥७॥

(दादू) गुपत गुण प्रगट कीए, प्रगट गुपत समाइ ।
 पलक मॉहि भानै घड़ै, ताका लखी न जाइ ॥८॥

(दादू) सोई सही स्याबति हूवा, जा मस्तकि कर देइ ।
 गरीब निवाजै देखतां, हरि अपना करि लेइ ॥९॥

(दादू) सबही मारग साईयों, आगैं एक मुकौम ।
 सोई स्यावति करि लीया, जाही सेती कौम ॥१०॥

मीरा मुझसौं मिहरि करि, सिर परि दीया हाथ ।
 दादू कलिजुग क्या करै, सांई मेरा साथ ॥११॥

(दादू) सम्रथ सब बिधि साईयों, ताकी मैं बलि जॉव ।
 अंतरि येक जु सो बसै, ओरै चिन्ह न लॉव ॥१२॥

दादू मरग मिहरि का, सुखी सहज सौं जाइ ।
 भौसागर थैं काढि करि, अपने लीए बुलाइ ॥१३॥

दादू जो हम चिंतवैं सो कछू न होवै आइ ।
 सोइ करता सति है, कछू औरै करि जाइ ॥१४॥

येकौं लेइ बुलाइ करि, एकौं देह पठाइ।
 दादू अदबुद साहिबी, क्यूँ ही लखी न जाइ॥१५॥
 (दादू) ज्यूँ राखै ज्यूँ रहेंगे, अपणै बलि नॉहीं।
 सबै तुम्हारे हाथि है, भाजि कत जॉहीं॥१६॥
 (दादू) डोरी हरि के हाथि है, गल मांहै मेरे।
 बाजीगर का बांदरा, भावै त्यूँ फेरै॥१७॥
 (दादू) ज्यूँ राखै त्यूँ रहेंगे, मेरा क्या चारा।
 हुकमी^१ सेवग रॉम का, बंदा बेचारा॥१७॥
 (दादू) साहिब राखै तौ रहै, काया मॉहै जीव।
 हुकमी बंदा उठि चलै, जबही बुलावै पीव॥१८॥
 खंडखंड प्रकास है, जहाँ तहाँ भरपूर।
 दादू करता करि रह्या, अनहद बाजै तूर॥१९॥
 दादू दादू कहत है, आपै सब घट मॉहिं।
 अपणी रूचि आपै कहै, दादू थैं कुछ नॉहिं॥२०॥
 हम तैं हमवा न होइगा, नॉ हू करणै जोग।
 ज्यूँ हरि भावै त्यूँ करै, दादू कहैं सब लोग॥२१॥
 दादू दूजा क्यूँ कहै, सिर परि साहिब येक।
 सो हमकूँ क्यूँ बीसरै, जो जुग जॉहि अनेक॥२२॥
 आप अकेला सब करै, औरों के सिरि देइ।
 दादू सोभा दास कौं, अपणा नॉव न लेइ॥२३॥
 आप अकेला सब करै, घट मैं लहर उठाइ।
 दादू सिरि दे जीव कै, यौं न्यारा है जाइ॥२४॥
 (दादू) ज्यूँ यहु समझै, त्यूँ कहै यहु जीव अग्यानी।
 जेती बातें तैं कही, कहि येक न मानी॥२५॥
 परचा मॉगै लोक सब, कहैं (हमकौं) कुछ दिय लाइ।
 संग्रथ मेरा साईयों, ज्यूँ समझैं त्यूँ समझाइ॥२६॥
 दादू तनमन लाइ करि, सेवा दिढ करि लेइ।
 ऐसा संग्रथ राम है, जे मॉगै सो देइ॥२७॥
 संग्रथ सो सेरी समझाइ नैं, करि अणकरता होइ।
 घटि—घटि व्यापक पूरि सब, रहै निरंतरि सोइ॥२८॥

रहै निराला सब करै, काहू लिपति न होइ ।
 आदि अति भौने घड़े, दादू संग्रथ सोइ ॥१२६॥
 दादू सुरम नहीं सब कुछ करै, यौ कल धरी बणाइ ।
 कौतिगहारा है रह्या, सब कछू होता जाइ ॥१३०॥
 लिपै-दिमै नहीं सब करै, गुण नहीं ब्यापै कोइ ।
 दादू निहचल येक रस, सहजै सब कुछ होइ ॥१३१॥
 बिन गुण ब्यापै सब कीया, संग्रथ आपै आप ।
 निराकार न्यारा रहै, दादू पुनि न पाप ॥१३२॥
 समिता कै धरि सहज मैं, दादू दुबध्या नॉहिं ।
 सौई संग्रथ सब कीया, समझि देखि मन मॉहिं ॥१३३॥
 पैदा कीया घाट घड़ि, आपै आप उपाइ ।
 हिकमति हूनर कारीगरी, दादू लखी न जाइ ॥१३४॥
 जंत्र बजावा साजि करि, कारीगर करतार ।
 पँचौ का रस नाद है, दादू बोलणहार ॥१३५॥
 दादू पंच उपना सबद तैं, सबद पंच तैं होइ ।
 साँई मेरे सब कीया, बूझै बिरला कोइ ॥१३६॥
 दादू है तौ रती नहीं तौ नाही, सब कुछ उतपति होइ ।
 हुकमैं हाजरि सब कीया, बूझै विरला कोइ ॥१३७॥
 दादू नही तहोंतैं सब कीया, आपै आप उपाइ ।
 निज तत न्यारा नॉ कीया, दूजा आवै जाइ ॥१३८॥
 नहीं तहोंतैं सब कीया, फिरि नॉही है जाइ ।
 दादू नॉही होइ रह्या, साहिब स्यौ ल्यौ लाइ ॥१३९॥
 दादू खालिक खेलै खेल करि, बूझै बिरला कोइ ।
 ले करि सुखिया नॉ भया, दे करि सुखिया होइ ॥१४०॥
 दादू देवे की सब भूख है लेवे की कुछ नॉहिं ।
 सौई मेरे सब कीया, समझि-देखि मन मॉहिं ॥१४१॥
 (दादू) जे साहिब सिरजे नहीं, तौ आपै क्यूँ करि होइ ।
 जे आपैही ऊपजै, तौ मरि करि जीवै कोइ ॥१४२॥
 करम फिरावै जीव कौं, करमौं कौं करतार ।
 करतार कौं कोई नहीं दादू फेरणहार ॥१४३॥

२२. सबद कौ अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
वंदनं श्रव साधवा, प्रणांमं पारंगतह ॥१॥

(दादू) सबदै बंध्या सब रहे, सबदै ही सब जाइ ।
सबदै ही सब ऊपजे, सबदै सबै समाइ ॥२॥

(दादू) सबदै ही सच पाईये, सबदै ही संतोष ।
सबदै ही अस्थिर भया, सबदै भागे सोक ॥३॥

(दादू) सबदै ही सूखिम भया, सबदै सहजि समान ।
सबदै ही त्रिगुण मिले, सबदै त्रिमल प्रांन ॥४॥

(दादू) सबदै ही मुकता भया, सबदै सुरझै प्रांन ।
सबदै ही सूझै सवै, सबदै समझै जाण ॥५॥

(दादू) वो ऊँकार थै ऊपजै, अरस-परस संजोग ।
अँकुर बीज दोऊ पाप-पुंनि, इहि विधि जोग र भोग ॥६॥

वो ऊँकार थै ऊपजै, बिनसै बहुत बिकार ।
भाव-भगति लै थिर रहै, दादू आतम सार ॥७॥

पहली कीया आपथै, उत्पति वो ऊँकार ।
वो ऊँकार थै ऊपजै, पंच तत आकार ॥८॥

पंच तत तैं घट भया, बहुविधि सब बिस्तार ।
दादू घट थैं उपजै, मैं – तैं बरन-बिचार ॥९॥

(दादू) एक सबदि सब कुछ कीया, अँसा संम्रथ सोइ ।
आगे पीछै तौ करे, जो बलहीणां होइ ॥१०॥

निरंजन निराकार है, वो ऊँकार आकार ।
(दादू) सब रंग रूप सब, सब कछू सब बिस्तार ॥११॥

आदि सबद वो ऊँकार है, बोले सब घट मॉहिं ।
दादू माया बिस्तरी, परम तत यहु नॉहिं ॥१२॥

पैदा कीया घाट घड़ि, आपै आप उपाइ ।
हिकमत हूनर कारीगरी, दादू लखी न जाइ ॥१३॥

जंत्र बजाया साजि करि, कारीगर करतार ।
पंचों का रस नाद है, दादू बोलणहार ॥१४॥

पंच अपनों सबद थैं, सबद पंच सौं होइ ।
साई मेरे सब किया, बूझै बिरला कोइ ॥१५॥

(दादू) येक सबद सौं ऊनवै^१, बरसण लागे आइ।
 एक सबद सौं बीखरै^२, आप आपकू जाइ॥१६॥

(दादू) साध सबद सौ मिलि रहै, मन राखे बिलमाइ।
 साध सबद बिन क्यूँ रहै, तबही बीखरि जाइ॥१७॥

(दादू) सबद जरै सु मिलि रहै, येक रस पूरा।
 दादूर भाजै जीव ले, पग मोंडैं सूर।॥१८॥

सबद बिचारै करणी करै, रॉम नॉम निज हिरदै धरै।
 काया मोंहैं सोधै सार, दादूकहे लहे सो पार॥१९॥

(दादू) काहे कोड़ि खरचिए, जे येके सीझै कॉम।
 सबदौं कारिज सिध भया, तो सुरम^३ न दीजे रॉम॥२०॥

(दादू) सबद बॉण गुर साध के, दूर दिसंतर जाइ।
 जिहि लागे सो ऊबरे, सूते लीये जगाइ॥२१॥

(दादू) राम रिदै रस भेलि करि, कों साधू सबद सुणाइ।
 जॉणों कर दीपक दीया, भरम तिमर सब जाइ॥२२॥

दादू वाणी प्रेम की, कँवल बिगासै होइ।
 साध सबदि माता रहै, (तिनि) सबदौं मोह्या मोहि॥२३॥

(दादू) हरि भुरकी^४ बाणी साध की, सो पड़ियौ मेरे सीस।
 छूटे माया मोह तैं, प्रेम—भजन जगदीस॥२४॥

दादू झुरकी राम है, सबद कहे गुर ग्यॉन।
 तिनि सबदौं मन मोहिया, उनमनि लागा ध्यॉन॥२५॥

दादू वाणी ब्रम्ह की, अनभै घटि प्रकास।
 राम अकेला रहि गया, सबद निरंजन पास॥२६॥

सबदौं मोंहैं रामधन, जे कोई लेइ बिचारि।
 दादू इस संसार में, कबहू न आवै हारि॥२७॥

(दादू) रॉम रसाइण भरि धर्या, साधनि सबद संझारि।
 को पारिख पीवै प्रीति सों, समझे सबद बिचारि॥२८॥

सबद सरोवर सूभर भरिया, हरिजन नृमल नीर।
 दादू पीवै प्रीतिसों, तिनके अखिल सरीर॥२९॥

सबदौं मोंहैं रामरस, साधौं भरि दीया।
 आदि अंति सब संत मिलि, यौं दादू पीया॥३०॥

पाणी मॉहें राखिए, कनक कलंक न जाइ।
 दादू साचा सबद दे, नाइ अगनि में बाहि॥३१॥
 कारिज को सीझे नहीं, मीठा बोले बीर।
 दादू साचे सबद बिन, कटै न तन की पीर॥३२॥
 (दादू) गुण तजि त्रिगुण बोलिए, तेतौ बोल-अबोल।
 गुण गहि आपा बोलिए, तेंतौ कहिए बोल॥३३॥
 साचा सबद कबीर का, मीठा लागै मोहि।
 दादू सुणतौ परम सुख, केता आनंद होइ॥३४॥

२३. जीवत मृतक कौ अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह।
 वंदनं श्रब साधवा, प्रणामं पारंगतह॥१॥
 धरती मत आकास का, चंद सूरका लेइ।
 दादू पौणी पवन का, रौम नौम कहि देइ॥२॥
 दादू धरती है रहै, तजि कूड़ कपट अहंकार।
 साँई कारनि सिरि सहै, ताके प्रतखि सिरजनहार॥३॥
 जीवत माटी मिलि रहै, साँई सनमुख होइ।
 दादू पहिली मरि रहै, पाछैं तो सबकोइ॥४॥
 (दादू) आपा अब गुमान तजि, मद मछर अहंकार।
 गहे गरीबी बंदगी, सेवै सिरजनहार॥५॥
 मद मछर आया नहीं, कैसा ग्रब गुमोन।
 सुपिने ही समझैं नहीं, दादू क्या अभिमोन॥६॥
 झूठा ग्रब गुमान तजि, तजि आपा अभिमोन।
 दादू दीन गरीब होइ, पाया पद नृबोन॥७॥
 (दादू) भावभगति दीनता अंगि, प्रेमप्रीति सदा तिहि सेंगि॥८॥
 दादू सिदक सबूरी साच गहि, स्यावति राखि अकीन।
 साहिब सौं दिल लाइ रहु, मुरदा है मसकीन॥९॥
 तब साहिब कौं सिजदा कीया, जब सिर धर्या उतारि।
 यौं दादू जीवत-मरै, हिरस हवा कौं मारि॥१०॥

राव रंक सब मरहिंगे, जीवै नांही कोइ ।
 दादू सोई जीवता, जे मरजीवा होइ ।।११।।
 दादू मेरा बैरी मैं मूवा, मुझे न मारे कोइ ।
 मैं ही मुझको मारता, मैं मरजीवा होइ ।।१२।।
 दादू आपा जब लगै, तब लग दूजा होइ ।
 जब यहु आपा मिटि गया, तब दूजा नॉही कोइ ।।१३।।
 बैरी मारे मरि गए, चित थैं बिसरे नॉहिं ।
 दादू अजहूँ सालहै, समझि देखि मन मॉहिं ।।१४।।
 (दादू) तो तूँ पावै पीव कौं, जे जीवत-मृतक होइ ।
 आप गवॉए पीव मिलै, (यौं) जानत है सब कोइ ।।१५।।
 (दादू) तौ तूँ पावै पीव कौं, जे आपा कछू न जॉणि ।
 आपा जिसतैं ऊपजै, सोई सहज पिछॉणि ।।१६।।
 दादू तौ तूँ पावै पीवकौं, मैं — मेरा सब खोइ ।
 मैं — मेरा सहजै गया, तब केवल दरसन होइ ।।१७।।
 मैं ही मेरे मोट सिरि, मरिए ताकै भारि ।
 दादू गुर प्रसाद तैं, सिर थैं धरी उतारि ।।१८।।
 मेरै आगैं मैं खड़ा, ताते रह्या लुकाइ ।
 दादू प्रतखि पीव है, जे यहु आपा जाइ ।।१९।।
 (दादू) जीवत मृतक होइ करि, मारग मॉहैं आव ।
 पहली सीस उतारि करि, पीछै धरिए पाव ।।२०।।
 (दादू) मृतक तबही जॉणिए, जब गुण यंद्री नॉहिं ।
 जब मन आपा मिटि गया, तब ब्रह्म समांना मॉहिं ।।२१।।
 दादू मारग साधु का, खरा दुहेला जॉणिं ।
 जीवत मृतक है चलै, राम नांम नीसॉण ।।२२।।
 दादू मारग कठिन है, जीवत चलै न कोइ ।
 सोइ चलिहै बापुड़ा, जे जीवत मृतक होइ ।।२३।।
 मृतक होवै सो चले, निरंजन की बाट ।
 दादू पावै पीव कौं, लँघै औघट घाट ।।२४।।
 (दादू) जीवत ही मरि जाईए, मरि मॉहै मिलि जाइ ।
 सॉई का सँग छाड़ि करि, कौण सहै दुख आइ ।।२५।।
 (दादू) आपा कहा दिखाईए, जे कछु आपा होइ ।
 यहु तौ जाता देखिए, रहतौ चीन्हौं सोइ ।।२६।।

दादू आप छिपाइए, जहाँ न देखै कोइ।
 जीव कौं देखि दिखाइए, त्यों त्यों आनंद होइ॥२७॥
 अंतरगति आपा नहीं, मुख तैं मैं तैं होइ।
 दादू दोस न दीजिए, यौं मिलि खेलैं दोइ॥२८॥
 जे जन आपा मेटि करि, रहे राम ल्यौ लाइ।
 दादू सबही देखतौ, साहिब सौं मिलि जाइ॥२९॥
 मैं हौं मेरी जब लगैं, तब लग बिलसै खाइ।
 मैं नहीं मेरी मिटै, (तब) दादू निकटि न जाइ॥३०॥
 (दादू) मना मनी सब ले रहे, मनी न मेटी जाइ।
 मना मन सब मिटि गई, तबही मिलै खुदाइ॥३१॥
 दादू मैं-मैं जालि दे, मेरें लागौं आगि।
 मैं-मैं मेरी दूरि करि, सौई कै संगि लागि॥३२॥
 दादू खोई आपणी, सज्या कुल की कार।
 मानि बढ़ाई पति गई, तब सनमुखु सिरजनहार॥३३॥
 (दादू) मैं नहीं तब येक है, मैं आइ तब दोइ।
 मैं-तैं पड़दा मिटि गया, तब ज्यौं था त्योंही होइ॥३४॥
 नूर सरीखा है रह्य, बंदौ का बंदा।
 दादू दूजा को नहीं मुझ सरीखा गंदा॥३५॥
 (दादू) सीख्यौं प्रेम न पाईये, सीख्यौं प्रीति न होइ।
 सीख्यौं दरद न ऊपजै, जब लग आप न कोइ॥३६॥
 कहिबा-सुणिबा गत भया, आपा पर का नास।
 दादू मैं-तैं मिटि गया, तब पूरण ब्रम्ह प्रकास॥३७॥
 सौई कारणि मॉस का, लोही^१ पाँणी होइ।
 सूकै आटा अस्त^२ का, दादू पावै सोइ॥३८॥
 तन मन मैंदा पीसि करि, छॉणिछॉणि ल्यौ लाइ।
 यौं बिनि दादू जीव का, कबहूँ साल^३ न जाइ॥३९॥
 पीसे ऊपरि पीसिए, छॉणों ऊपरि छॉणि।
 तौ आतम कण ऊबरै, दादू औसी जॉणि॥४०॥
 पहली तन-मन मारिए, इनका मरदे मॉन।
 दादू काढ़ै जंत्र मैं, पीछैं सहजि समॉन॥४१॥

१. लहू २. अस्थि ३. शल्य, काँटा

काटे ऊपरि काटिए, दाधे कौ दौं^१ लाइ।
 दादू नीर न संचिए, तौ तरवर वधता जाइ॥४२॥
 (दादू) सबको संकट येक दिन, काल गहैगा आइ।
 जीवत मृतक है रहे, ताके निकटि न जाइ॥४३॥
 (दादू) सारा गहला है, अंतरजामी जॉणि।
 तौ छूटे संसार तैं, रस पीवै सारेंगपॉणि^२॥४४॥
 दादू जीवत मृतक है रहे, सबको बिक्रत होइ।
 काढौ-काढौ सब कहै, नॉव न लेवै कोइ॥४५॥
 जीवत-मृतक साध की, बॉणी का प्रकास।
 दादू मोहै रॉमजी, लीन भए सब दास॥४६॥
 (दादू) जे तूँ मोटा मीर है, सब जीयौं मैं जीव।
 आपा देखि न भूलिए खरा दुहेला पीव॥४७॥
 आपा मेटि समाइ रहु, दूजा धंधा बादि।
 दादू काहे पचि मरै, सहजैं सुमिरॅण साधि॥४८॥
 (दादू) आपा मेटै येक रस, मन असथिर लैलीन।
 अरस-परस आणंद करै, सदा सुखी सो दीन॥४९॥
 दादू है को भै घणों, नॉहीं कूँ कुछ नॉहिं।
 दादू नांही होइ रहु, अपणें साहिब मॉहिं॥५०॥
 मैं नांही तहों मैं गया, येकै दूसर नॉहिं।
 नाहीं कौ ठाहर घणी, दादू निज घर मॉहिं॥५१॥
 जहॉ राम तहों मैं नहीं, मैं तहों नाही रॉम।
 दादू महल बारीक है, द्वै कू नाहीं ठॉम॥५२॥
 बिरह-अगनि का दाग दे, जीवत — मृतक गोर।
 दादू पहले घर कीया, आदि हमारी ठौर॥५३॥
 नहीं तहों थैं सब किया, फिर नाहीं है जाइ।
 दादू नाहीं होइ रहु, साहिब सौं ल्यौ लाइ॥५४॥
 हमौं हमारा करि लीया, जीवत करणी सार।
 पीछै संसा को नहीं, दादू अगम अपार॥५५॥

माटी माहें ठौर करि, माटी माटी माँहि ।
दादू सम करि राखिये, द्वै पख दुविधा नॉहिं ।।५६।।

२४. सूरतन कौ अंग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ।।९।।

साचा सिर सौं खेल है, यहु साधूजन का कौम ।
दादू मरणा आसँगे, सोई कहैगा रौम ।।१२।।

रौम कहैं ते मरि कहैं, जीवत कहा न जाइ ।
दादू अँसैं रौम कहि, सती सूर संमि भाइ ।।१३।।

जब दादू मरिबा गहै, (तब) लोगौं की क्या लाज ।
सती रौम साचा कहै, सब तजि पति सौं काज ।।१४।।

(दादू) हम काइर कडूँवा^१ करि रहे, सूर निराला होइ ।
निकसि खड़ा मैदान में, त समि और न कोइ ।।१५।।

(दादू) मड़ा न जीवै (तौ) सँगी जलै, जीवै तौ घरि आँणि ।
जीवण-मरणौ रौम सौं, सोई सति करि जौणि ।।१६।।

जनम लगैं बिभचारणी, नख-सख भरी कलैंक ।
पलक येक सनमुख जली, दादू धोए अँक ।।१७।।

स्वॉग सती का पहरि करि, करै कुटंब का सोच ।
बाहरि सूर देखिए, दादू भीतरि पोच^२ ।।१८।।

दादू सती त सिरजनहार सौं, जलै बिरह की झाल ।
नॉ बहु मरै न जलि बुझै, अँसैं सँगि दयाल ।।१९।।

(दादू) जे मुझ होते लखसिर, तौ लखौं देती वारि ।
सहु मुझ दीया येक सिर, सोई सौंपै नारि ।।२०।।

(दादू) सती जलि कोइला भई, मुए मड़े की नार ।
यौं जे जलती रौम सौं, साचे सँगि भरतार ।।२१।।

(दादू) मुये मड़े सों हेत क्या, जे जीव की जाणै नॉहिं ।
हेत हरी सौं कीजिए, जे अंतरजामी माँहिं ।।२२।।

सूरु चढ़ि संग्राम कौ, पाछा पग क्यूँ देइ।
 साहिब लाजै भाजतौ, धृग जीवण दादू तेह॥१३॥
 सेवग सूरु रॉम का, सोई कहेगा — रॉम।
 दादू सूरु सनमुख रहै, नहीं कायर का कौम॥१४॥
 कायर कौमि न आवई, यहु सूरु का खेत।
 तन-मन सौंपे रॉम कौ, दादू सीस सहेत॥१५॥
 (दादू) जब लग लालच जीव का, तब लग त्रिभै हूवा न जाइ।
 काया-माया तन तजै, तब चौड़े रहे बेजाइ॥१६॥
 दादू चौड़े में आणंद हो, नॉव धरुया रिणजीत।
 साहिब अपणों करि लीया, अंतरगति की प्रीति॥१७॥
 (दादू) जे तुझ कौम करीम सौं, तौ चौहटै चढ़ि करि नाच।
 झूठा है सो जाइगा, निहचै रहसी साच॥१८॥
 राम कहैगा येक को, जीवत मृतक होइ।
 दादू दूँदै पाईए, कोटे मधे कोई॥१९॥
 सूरु पूरा संजन, सौई कौ सेवै।
 दादू साहिब कारणै, सिर अपणों देवै॥२०॥
 सूरु झूझै खेत में, सौई सनमुख आइ।
 सूरु कौ सौई मिले, दादू काल न खाइ॥२१॥
 मरिबे ऊपरि येक पग, करता करै सु होहि।
 दादू साहिब कारणै, तालाबेली मोहि॥२२॥
 दादू अँग न खंचिए, कहि समझाऊ तोहि।
 मोहि भरसो रॉम का, बैका बाल न होइ॥२३॥
 बहुत गया थोड़ा रह्या, अब जीव सोच निवारि।
 दादू मरणों माड़ि रहु, साहब कैं दरबारि॥२४॥
 जीऊँ का संसा पड्या, को काको तारै।
 दादू सोई सूरिवॉ, जे आप उबारै॥२५॥
 जे निकसै संसार थें, सौई की दिसि धाइ।
 जे कबहूँ दादू बाहुडै, तौ पीछें मासु जाइ॥२६॥
 (दादू) कोई पीछै हेला जिनि करै, आगैं हेला आव।
 आगे येक अनूप है, नहीं पीछें का भाव॥२७॥
 पीछें कौ पग ना भरे, आगे कूँ पग देइ।
 दादू यहु मत सूरु का, अगम ठौर कूँ लेइ॥२८॥

आधा चलि पीछा चलै, ताका मुँह म^१ दीठ ।
 दादू देखै दोइ दल, दे करि भागै पीठ ।।२६।।
 दादू मरणों मॉडि करि, रहै नहीं ल्यौ लाइ ।
 काइर भाजै जीव ले, आरणि छाड़े जाइ ।।३०।।
 सूरा होइ सु मेर उल्लै, सब गुण बंध्या छूटै ।
 दादू नृभै है रहै, काइर तिणों^१ न तूटै ।।३१।।
 श्रप केसरि काल कुंजर बहु जोध मारग मांहि ।
 कोटि मैं को येक सूरा मरण आसंधि माहि ।।३२।।
 दादू जब भागैं तब मारिए, बैरी जीव के साल ।
 मनसा डाईणि काम रिप, क्रोध महाबलि काल ।।३३।।
 पंचचोर चितवत रही, माया—मोह विष झाल ।
 चेतनि पहरै आपणैं करगहि खड़ग संभाल ।।३४।।
 काया कबज कर्मोण करि, सार सबद करि तीर ।
 दादू यहु सर साधि करि, मारे मोटे मीर ।।३५।।
 काया कठिन कर्मोण है, पैचै बिरला कोइ ।
 मारै पौचौ मृगला, दादू सूरा सोइ ।।३६।।
 (दादू) जे हरि कोप करै इन ऊपरि, तौ काम कटक दल जाहिं कहौ ।
 लालच लोभ क्रोध कत भाजै, प्रगटि रहे हरि जहाँ तहाँ ।।३७।।
 तब साहिब कौं सिजदा कीया, जब सिर धर्या उतारि ।
 यौं दादू जीवत मरै हिरस हवा कौं मारि ।।३८।।
 (दादू) तन—मन—कौंम करीम कें, आवै तो नीका ।
 जिसका तिसकौं सौंपिए, सोच क्या जीय का ।।३९।।
 (जो) सिर सौंप्या राम कौं, सो सिर भया सनौथ ।
 दादू दे ऊरणि भया, जिसका तिसकैं हाथ ।।४०।।
 जिसका है तिसकौं चढे, दादू ऊरणि होइ ।
 पहली देवे सो भला, पीछैं तो सब कोइ ।।४१।।
 साँई तेरे नौव परि, सिर जीव करौं कुरबोण ।
 तन मन तुम परि वारणै, दादू प्यंड परौण ।।४२।।
 अपणें साँई कारणैं, क्या—क्या नहीं कीजै ।
 दादू सब संसार तजि, अपना सिर दीजै ।।४३।।

सिर कै साटें लीजिए, साहिब जी का नौउ ।
 खैलै सीस उतारि करि, दादू मैं बलि जौउ ॥४४॥
 खेले सीस उतारि करि, अधर येक सौं जाइ ।
 दादू पावै प्रेम-रस, सुख मैं रहै समाइ ॥४५॥
 (दादू) मरणें थी तूँ मति डरै, सब जग मरता होइ ।
 मिलि करि मरता रॉम सौं, तौ कलि अजरावर होइ ॥४६॥
 (दादू) मरणें थी तूँ मति डरै, मरणों अंति निदान ।
 रे मन मरणा सिरजिया, कहि ले केवल रॉम ॥४७॥
 (दादू) मरणै थी तूँ मति डरै, मरण पहुँच्या आइ ।
 रे मन मेरा रॉम कहि, बेगा वार लाइ ॥४८॥
 (दादू) मरणें थी^१ तूँ मति डरे, मरणा आजि कि काल्हि ।
 मरणा मरणा क्या करै, बेगा राम संभालि ॥४९॥
 दादू मरणा खूब है, निपट बुरा बिभचार ।
 दादू पति कौ छाड़ि करि, आन भजै भरतार ॥५०॥
 दादू तन थैं कहा डराइए, (जै) बिनसि जाइ पल वार ।
 काइर हूवा न छूटिए, रे मन हो हुसियार ॥५१॥
 दादू मरणा खूब है, मरि माहैं मिलि जाइ ।
 साहिब का संग छाड़ि करि, कौण सहै दुख आइ ॥५२॥
 माहैं मन सौं झूझ करि, औसा सूरा वीर ।
 इंद्री अरिदल भानि सव, यौं कलि हूवा कबीर ॥५३॥
 सौँई कारणि सीस दे, तन-मन सकल सरीर ।
 दादू प्राँणी पंचदे, यौं हरि मिल्या कबीर ॥५४॥
 सबै कसौटी सिरि सहै, सेवग सौँई काज ।
 दादू जीवनि क्यूँ तजै, भागे हरि कौं लाज ॥५५॥
 साई कारणि सब तजै, जन का औसा भाव ।
 दादू राम न छाड़िए, भावै तन मन जाव ॥५६॥
 दादू सेवग सो भला, सेवै तन-मन लाइ ।
 दादू साहिब छाड़ि करि काहू संगि न जाइ ॥५७॥
 पतिभरता पति पीव कौं सेवै दिन अरु रात ।
 दादू पति कौं छाड़ि करि काहू संगि न जात ॥५८॥

(दादू) मरिबौ एक जु वार, अमर झुकेड़े^१ मारिए।
 तौ तिरिए संसार, आतम कारिज सारिए।।५६।।

(दादू) जे तूँ प्यासा प्रेम का, (तौ) जीवण की क्या आस।
 सिर के साटै पाईए, भरि भरि पीवो दास।।६०।।

मन मनसा जीते नहीं, पंच न जीते प्राण।
 दादू रिप जीते नहीं, कहैं हम सूर सुजाण।।६१।।

मन मनसा मारै नहीं, काया मारण जाहि।
 दादू बंबई मारिए, आप मरै क्यूं मांहि।।६२।।

दादू पाखरि पहरि करि, सबको झूझण जाइ।
 अंगि उघाड़े सूरिवों, चोट मुंहे मुहि खाइ।।६३।।

जब झूझे तब जाणिए, काछि खड़े क्या होइ।
 चोट मुंहे मुहि खाइगा, दादू सूरा सोइ।।६४।।

दादू सूरा तन सहजैं सदा, साच सेल हथियार।
 साहिब के वलि झूझतों^२ केते कीए सुमार।।६५।।

दादू जब लग जीव लागे नहीं, प्रेम प्रीति के सेल।
 तब लग पीव क्यूं पाईए, नहीं बाजीगर का खेल।।६६।।

(दादू) जे तूँ प्यासा प्रेम का, तौ किस कौं सैंतैं^३ जीव।
 सिर के साटे लीजिए, जे तुझ प्यारा पीव।।६७।।

(दादू) महा जोध मोटा बली, सो सदा हमारी भीर।
 सब जग बैरी क्या करै, जहाँ तहाँ रिणधीर^४।।६८।।

दादू रहते पहते रांम जन, तिन भी मांड्या झूझ।
 साचा मुंह मोड़े नहीं, अरथ इताही बूझ।।६९।।

दादू काँधै सबल कै, त्रिबाहैगा ओड़^५।
 आसणि अपणै ले चल्या, दादू निहचल ठोड़।।७०।।

(दादू) क्या बल कहा पतंग का, जलत न लागे वार।
 वल तौ हरि वलवंत का, जीवै जिहि आधार।।७१।।

राखणहारा रॉम है, सिर ऊपरि मेरे।
 दादू केते पचि गए, बैरी बहुतेरे।।७२।।

१. झूले की पेंग २. लड़ता ३. बचाकर रखे ४. रणधीर
 ५. और, अन्य

(दादू) बलि तुम्हारै बाप जी, गिणत न रॉणा—राव ।
मीर मलिक परधान पति, तुम विन सबही बाव ।।७३।।

दादू राखी रॉम परि, अपणी आप निबाहि ।
दूजा को देखौ नहीं, ज्यू जाणै त्यू त्रिबाहि ।।७४।।

(तुम्ह) बिन मेरे को नहीं, हमकूँ राखणहार ।
जे तूँ राखै साँईयाँ (तौ) कोई न सकै मारि ।।७५।।

(दादू) सब जग छाड़े हाथ तें, तुम जिनि छाडौ रॉम ।
नहीं कछु कारिज जगत सौं, तुम ही सेती^१ कौम ।।७६।।

(दादू) जाते जीवतैं तो डरौं, जे जीव मेरा होइ ।
जिनि यहु जीव उपाईया, सार करैगा सोइ ।।७७।।

(दादू) जिनकूँ साँई पधरा, तिन बंका नाहीं कोइ ।
सब जग रूठा क्या करै, राखणहारा सोइ ।।७८।।

(दादू) साच्चा साहिब सिर ऊपरै, तती लागै बाव ।
चरन कवल की छाया रहै, कीये बहुत पसाव ।।७९।।

दादू जे तूँ राखै साँईयाँ, तौ मारि न सकै कोइ ।
बाल न बंका करि सकै, जे जग बेरी होइ ।।८०।।

दादू राखणहारा राखै, तिसै कौण मारे ।
उसै कौण डबौवै, जिसे साँई तारे ।
कहै दादू सो कबहूँ न हारै, जे जन साँई संभारे ।।८१।।

त्रिभै बैठा राम जपि, कबहूँ काल न खाइ ।
जब दादू कुंजरि चढ़े, तब सुनहा झखि जाइ ।।८२।।

कायर कूकर कोटि मिलि, भूकै अरु भागे ।
दादू गरवा गुरमुखी, हस्ती नही लागै ।।८३।।

२५. काल कौ अँग

दादू न्मो न्मो नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ॥१॥
 काल न सूझै कंध परि, मन चितवै बहु आस ।
 दादू जीव जाँणै नहीं, कठिन काल की बात ॥२॥
 दादू काल हमारै कंधि चढ़ि, सदा बजावै तूर ।
 काल-हरन करता पुरिख, क्यूँ न संभालै सूर ॥३॥
 जहां जहां दादू पग धरै, तहाँ काल का कंध ।
 सिर ऊपरि सँधि खड़ा, अजहूँ न चेते अंध ॥४॥
 दादू काल गरासन क्या कहिए, काल रहत कहि सोइ ।
 काल रहत सुमिरण सदा, बिना गिरासन होइ ॥५॥
 दादू मरिए राम बिन, जीजे रॉम संभालि ।
 अमृत पीवै आतमों, यों साधू बंचै काल ॥६॥
 (दादू) यहु घट काचा जल भर्या, विनसत नॉही वार ।
 यह घट फूटा जल गया, समझत नहीं गँवार ॥७॥
 फूटी काया जाजरी, नौ ठाहर, कौंणी ।
 तामैं दादू क्यों रहै, जीव सरीखा पौंणी ॥८॥
 बाव भरी इस खाल का, झूठा ग्रब गुमान ।
 दादू विनसै देखतां, तिसका क्या अभिमान ॥९॥
 (दादू) हम तौ मूए मॉहि हैं, जीवण कार भरंम ॥
 झूठे का क्या गारबा पाया मुझ मरंम ॥१०॥
 यहू बन हरिया देखि करि, फूल्या फिरै गँवार ।
 दादू यहु मन मृगला, काल अहेड़ी लार ॥११॥
 सबही दीसै कालमुखि, आपै गहि करि दीन्ह ।
 विनसै घट आकार का, दादू जे कछु कीन्ह ॥१२॥
 काल कीट तन काठ कौ, जुरा जनम कौं खाइ ।
 दादू दिन दिन जीव की, आव घटंती जाइ ॥१३॥
 काल गरासै जीव कौं, पल-पल सौंसै सौंस ।
 पग-पग मॉहै दिन घड़ी दादू लखै न नौंस ॥१४॥
 पग पलक की सुधि नहीं, सास सबद क्या होइ ।
 कर मुख मांहै मेलतां, दादू लखै न कोइ ॥१५॥

दादू काया कारवी^१, देखत ही चलि जाइ।
 जब लग सास सरीर मैं, रॉम नॉम ल्यौ लाइ॥१६॥
 दादू काया कारवी, मोहि भरोसा नॉहि।
 आसण कुंजर छत्र सिरि, यिनसि जाइ छिन मॉहि॥१७॥
 दादू काया कारवी, पड़त न लागै वार।
 बोलनहारा महल मैं, सोभी चालनहार॥१८॥
 (दादू) काया कारवी कदे न चालै सॅग।
 कोटि बरस जे जीवणों, तऊ होइला भॅग॥१९॥
 कहतों सुणतों देखतों, लेता-देता प्रॉण।
 दादू सो कतहूँ गया, माटी धरी मसॉण॥२०॥
 सींगी नाद न बाजई, कत गए स जोगी।
 दादू रहते मढी मैं, करते रस भोगी॥२१॥
 दादू जियरा जाइगा, यहु तन माटी होइ।
 जे उपज्या सो बिनसिहै, अमर नहीं कलि कोइ॥२२॥
 दादू देही देखतों, सब किसही की जाइ।
 जब-लग सास सरीर मैं, गोब्यंद के गुण गाइ॥२३॥
 दादू देही पाहुणी, हंस बटाऊ मॉहिं।
 का जाणौं कब चालिरती, मोहिं भरोसो नाहिं॥२४॥
 दादू सबको पाहुणों, दिवस चार सॅसारि।
 ओसरि-ओसरि सब चले, हम भी इहै विचार॥२५॥
 (दादू) सबको बैठे पंथसिरि, रहे बटाऊ होइ।
 जे आए ते जॉहिगे इहि मारगि सब कोइ॥२६॥
 बेगि बटाऊ पंथसिरि, इब विलंब न कीजै।
 दादू बैठा क्या करै, रॉम जपि लीजै॥२७॥
 संझया चले उतावला, बटाऊ बनखंड मॉहिं।
 बरियोँ नाहीं ढील की, दादू बेगि घर जॉहिं॥२८॥
 (दादू) करह पलाणि करि, को चेतनि चढि जाइ।
 मिलि साहिब दिन देखतों, सॅझ पड़ै जिनि आइ॥२९॥
 पंथ दुहेला दूरि घर, संग न साथी कोइ।
 उस मारगि हम जॉहिगे, दादू क्यूँ सुखि सोइ॥३०॥

(दादू) लंघण^१ के लक^२ घणां, कपर^३ चादी^४ चीह^५।
अला^६ पांथी^७ पंथ में बिहंदौ^८ आहीन॥३१॥

दादू हंसतों रोबतों पाहुणों, काहू संगि न जाइ।
काल खड़ा सिर ऊपरैं, आवणहारा आइ॥३२॥

(दादू) जौरा वैरी काल हैं, सो जीव न जाँणैं।
सब जग सूता नींदडी, इस ताणै-वाँणै॥३३॥

दादू करणी काल की, सब जग परलै होइ।
रॉम विमुख सब मरि गए, चिंति न देखै कोइ॥३४॥

साहिब कौं सुमिरै नही, बहुत उठावैं भार।
दादू करणी काल की, सब परलै संसार॥३५॥

सूता काल जगाइ करि, सब पैसे^९ मुख माहि।
दादू अचिरज देखिया, कोई चेतै नाहि॥३६॥

(दादू) जीव बिसाहै^{१०} काल कौ, करि-करि कोटि उपाइ।
साहिब कौं सुमिरै नही, यों परलै होइ जाइ॥३७॥

दादू कारणि काल कै, सकल सँवारै आप।
मीच बिसाहै मरण कूं, दादू सोग संताप॥३८॥

दादू अमृत छाड़ि करि, विषै हलाहल खाइ।
जीव बिसाहै काल कूं, मूढा मरि-मरि जाइ॥३९॥

नृमल नाँव बिसार करि, दादू जीव जंजाल।
नहीं तहाँ तै करि लीया, मनसा माँहै काल॥४०॥

(दादू) सब जग छेली काल कसाई, करद लीये कंठ काटै।
पंच तत की पंच पंखुणी, खंड खंड करि बाँटै॥४१॥

(दादू) सब जग सूता नींद भरि, जागै नाँही कोइ।
आगैं पीछैं देखिए, प्रतखि परलै होइ॥४२॥

ए सजण दुरिजण भए, अंतकाल की बार।
दादू इनमै को नहीं, विपति बचावणहार॥४३॥

संगी सजण अपणों, साथी सिरजनहार।
दादू दूजा को नहीं, इहि कलि इहि संसार॥४४॥

१. पार करना, लॉघना २. हल पर पार होने योग्य नदी के भाग ३. घाटा

४. चढ़ाई ५. ऊँची ६. अल्लाह ७. पथिक ८. बैठा

९. प्रवेश करें १०. खरीदता है

(दादू) ए दिन बीते चलि गए, वै दिन आए घाइ ।
 रॉम नॉम बिन जीव कौं, काल गरासे आइ ॥४५॥
 जे ज्यज्या सो बिनसिहै, जे दीसै, सो जाइ ।
 दादू नृगुण नाम जपि, निहचल चित लगाइ ॥४६॥
 जे उपज्या सो बिनसिहै, कोई थिर न रहाइ ।
 दादू बारी आपणी, जे दीसै सो जाइ ॥४७॥
 (दादू) सब जग मरि-मरि जात है, अमर उपावणहार^१ ।
 रहिता रमता रॉम है, वहता सब संसार ॥४८॥
 दादू कोई थिर नहीं, यहु सब आवै जाइ ।
 अमर पुरिस आपै रहै, कै साधू ल्यौ लाइ ॥४९॥
 यहु जगु जाता देखि करि, दादू करी पुकार ।
 घड़ी महूरत चालणों, राखै सिरजनहार ॥५०॥
 दादू विष-सुख मॉहै खेलतों, काल पाहुँच्या आइ ।
 उपजै विनसै देखतां यहु जगु यों ही जाइ ॥५१॥
 राम — नाम बिन जीवजे, केते मुए अकाल ।
 मीच बिना जे मरत है, ताथैं दादू साल ॥५२॥
 श्रप स्यंघ हस्ती घणों, राकस भूत परेत ।
 तिस बन मैं दादू पड्या, चेतै नहीं अचेत ॥५३॥
 पूत पिता थैं बीछुज्या, भूलि पड़्या किस ठौर ।
 मरै नहीं उर फाटि करि, दादू बड़ा कठोर ॥५४॥
 जो दिन जाइ सो बहुरि न आवै, आय घटै तन छीजै ।
 अंत काल दिन आइ पहुँता, दादू ढील न कीजै ॥५५॥
 दादू औसर चलि गया, वरियाँ गई बिहाइ^२ ।
 कर छिटकें कत पाईए, जनम अमोलिक जाइ ॥५६॥
 दादू गाफिल है रह्या, गहला हूवा गँवार ।
 सो दिन चीति न आवई, सोवै पाव पसारि ॥५७॥
 दादू काल हमारा कर गहैं, दिन दिन खँचत जाइ ।
 अजहूँ जीव जागै नहीं, सोवत गई बिहाइ ॥५८॥

सूता आवै सूता जाइ, सूता खेलै सूता खाइ।
 सूता लेवै सूता देवै, दादू सूता जाइ॥५६॥
 दादू देखत ही भया, स्योम बरन सौं सेत।
 तन-मन जोवन सब गया, अजहूँ न हरि सौं हेत॥६०॥
 दादू झूठे के घर देखि करि, झूठे पूछे जाइ।
 झूठे झूठा बोलते, रहे मसांणे आइ॥६१॥
 (दादू) प्रॉण पयाणों करि गया, माटी धरी मसॉण।
 जालणहारे देखि करि, चेतै नहीं अजॉण॥६२॥
 केई जाले केई जालिए, केई जालण जॉहिं।
 केई जालेंण की करै, दादू जीवण नॉहिं॥६३॥
 केई गाड़े केई गाड़िए, केई गाडण जॉहिं।
 केई गाडण की करै, दादू जीवण नॉहिं॥६४॥
 (दादू) उठिरे प्रॉणी जागि जीव, अपणा सजण संभालि।
 गाफिल नींद न कीजिए, आइ पहुँता काल॥६५॥
 संम्रथ का सरणा तजै, गहै आन की बोट।
 दादू बलिवंत काल की, क्यों करि बंचै चोट॥६६॥
 अबिनासी कै आसिरे, अजरॉवर को ओट।
 दादू सरणै साच कै, कदै न लागै चोट॥६७॥
 मूँसे भागा मरण थैं, जहाँ जाइ तहाँ गोर।
 दादू सरग पयाल मैं, कठिन काल का सोर॥६८॥
 सब मुख मॉहै काल कै, मॉड्या माया-जाल।
 दादू गोर मसॉण मैं, झंखै श्रग-पयाल॥६९॥
 दादू मड़ा मसॉण का, केता करे डफॉण^१।
 मृतक मुरदा गोर का, बहुत करै अभिमॉन॥७०॥
 राजा राणा राव मैं, मैं खानौ सिरि खॉन।
 माया-मोह पसारै एता सब धरती असमॉन॥७१॥
 पंचतत का पूतला, यहु प्यंड सेंवारा।
 मंदिर माटी मास का, बिनसत नहीं वारा॥७२॥
 हाड-चाम का प्यंजरा, बिचि बोलणहारा।
 तामैं दादू पैसि करि, बहु कीया पसारा॥७३॥

बहुत पसारा करि गया, कुछ हाथि न आया ।
 दादू हरि की भगति बिन, प्रॉणी पछिताया ॥७४॥
 माणस जल का बुदबुदा, पॉणी का पोटा ।
 दादू काया कोट मैं, मैवासी मोटा ॥७५॥
 बाहरि गढ नृभै करैं, जीवै कै नॉई ।
 दादू मॉहैं काल है, सो जाणै नॉही ॥७६॥
 (दादू) साचै मतै साहिब मिलै, कपटि मिलैगा काल ।
 साचै प्रम-पद पाईए, कपट काया मैं साल ॥७७॥
 मनही मॉहै मीच है, सारौं कै सिरि साल ।
 जे कुछ व्यापै रॉम बिन, दादू सोई काल ॥७८॥
 (दादू) जेती लहरि विकार की, काल कॅवल में सोइ ।
 प्रेम-लहरि सोपीव की, भिनि-भिनि यौं होइ ॥७९॥
 दादू कालरूप मॉहैं बसै, कोई न जाँणै ताहि ।
 एकूड़ी^१ करणी काल है, सब काहू कौं खाइ ॥८०॥
 (दादू) विष-अमृत घट मैं बसै, दून्यौं एकैठौं ।
 माया विषै-विकार सब, अंम्रित हरि का नॉव ॥८१॥
 (दादू) कहाँ स महमुद पीर था, सब नबियौं सिरिताज ।
 सो भी मरि माटी हूवा, अमर अलह का राज ॥८२॥
 केते मरि माटी हूए, बहुत बड़े बलिवंत ।
 दादू केते है गए, दाना देव अनंत ॥८३॥
 (दादू) धरती करते एक डग, दरिया करते फाल ।
 हाकौं प्रबत फाड़ते, ते भी खाए काल ॥८३॥
 (दादू) सब जग कंपे काल तैं, ब्रम्हा बिशन महेस ।
 सुर-नर-मुनि-जन लोक सब, श्रग रसातल सेस ॥८४॥
 चंद-सूर-धर-पवन-जल ब्रह्मांड खँड परवेस ।
 सो काल डरै करतार थैं, जै-जै तुम आदेस ॥८५॥
 दादू पवना पॉणी धरती अंबर, बिनसै रवि ससि तारा ।
 पंच तत सब माया बिनसै, मॉनिख कहा बिचारा ॥८६॥
 दादू बिनसै तेज के, माटी के किस मॉहिं ।
 अमर उपावनणहार है, दूजा कोई नॉहिं ॥८७॥

प्रॉण पवन ज्यूँ पतला, काया करै कमाइ ।
 दादू सब संसार मैं, क्यूँ ही गह्या न जाइ ॥८८॥
 नूर तेज ज्यूँ जोति है, प्रॉण प्यंड यौं होइ ।
 दिष्टि—मुष्टि आवै नहीं, साहिब के बसि होइ ॥८९॥
 मनहीं—मॉही है मरै, जीवै मनही मॉहिं ।
 साहिब साखीभूत है, दादू दूसण नॉहिं ॥९०॥
 आपैं मारे आपकों आप आपकों खाइ ।
 आपै आपण काल है, दादू कहि समझाइ ॥९१॥
 दादू आपै मारै आपकों, यहु जीव विचारा ।
 साहिब राखणहार है, सो हितू हमारा ॥९२॥
 दीसै माणस प्रत्यख काल ।
 ज्यौं करि त्यों करि दादू टाल ॥९३॥

२६. सजीवनि कौ अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रब साधवा, प्रणांमं पारंगतह ॥९४॥
 दादू जेतूँ जोगी गुरमुखी, तौ लीणों तत बिचारि ।
 गहि आवध गुर—ग्यॉन का, काल—पुरिस कौं मारि ॥९५॥
 नाद ब्यंद सौ घट भरै सो जोगीं जीवै ।
 दादू काहै कूँ मरै, रॉम रस पीवै ॥९६॥
 साधू जन की बासनों, सबद रहै संसार ।
 दादू आतम ले मिले, अमर उपावन हार ॥९७॥
 रॉम सरीखे है रहे, यहु नॉही उणहार ।
 दादू साधू अमर है, बिनसै सब संसार ॥९८॥
 जे कोई सेवै रॉम कौं, तौ रॉम सरीखा होइ ।
 दादू नाम कबीर ज्यूँ, साखी बोलैं सोइ ॥९९॥
 अरथि न आया सो गया, आया सो क्यूँ जाइ ।
 जिसका था तिसको मिल्या, दादू रह्या समाइ ॥१००॥
 पहली था सो अब भया, अबसो आगैं होइ ।
 दादू तीन्यूँ ठैड़ की, बिरला बूझै कोइ ॥१०१॥

जे जन बेधे प्रीति सौं, ते जन सदा सजीव ।
 उलटि समाने आप मैं, अंतर नॉही पीव ॥६॥
 (दादू कहै) सब रंग तेरे तैं रंगे, तू ही सब रँग मॉहिं ।
 सब रँग तेरे तैं किये, दूजा कोइ नॉहिं ॥१०॥
 छुटै दंद तौ लागे बंद, लागै बंद तो अमर कंद ।
 अमर कंद दादू आनंद ॥११॥
 दादू कहा **जमजौंरा**^१ भंजिए, कहा काल को डंड ॥
 कहा मीच कौं मारिए, कहा जुरा सत खंड ॥१२॥
 अमर ठौर अविनासी आसण, तहा निरंजन लागि रहे ।
 दादू जोगी जुगि-जुगि जीवै, काल-ब्याल सब सहजि गए ॥१३॥
 रोम-रोम लै लाइ धुनि, अैसे सदा अखंड ।
 दादू अविनासी मिलै, तौ जम कौ दीजै डंड ॥१४॥
 दादू जुरा-काल जॉमण-मरण, जहॉ-जहॉ जिव जाइ ।
 भगति पराइन लीन मन, ताकू काल न खाइ ॥१५॥
 मरणों भागा मरण तैं, दुखैं भागा दुख ।
 दादू भै सों भै गया, सुखैं छूटा सुख ॥१६॥
 जीवत मिलै सु जीवते, मुए मिलै मरि जाइ ।
 दादू दून्युं देखि करि, जहां जॉण तहॉ लाइ ॥१७॥
 दादू साधन सब कीया, जब उनमनि लागा मन ।
 दादू असथिर आतमों, यौं जुगि जुगि जीवै जंन ॥१८॥
 रहते सेती लागि रहु, तो अजरावर होइ ।
 दादू देखि विचारि करि जुदा न जीवै कोइ ॥१९॥
 जेती करणी काल की, तेती परहरि प्रॉण ।
 दादू आतमराम सौं, जे तूँ खरा सुजॉण ॥२०॥
 दादू विष अमृत घट मैं बसै, बिरला जॉणै कोइ ।
 जिन विष खाया ते मुए, अमर अभी सौं होइ ॥२१॥
 दादू सबही मरि रहे, जीवै नॉही कोइ ।
 सोई कहिए जीवतों, जे कलि अजरावर होइ ॥२२॥
 आगहु लागहु रॉम सौं, रैनि विहानीं जाइ ।
 सुमिर सनेही आपणों, दादू काल न खाइ ॥२३॥

देह रहै संसार मैं जीव रॉम कै पास ।
 दादू कछू व्यापै नहीं, काल-झाल दुख-त्रास ॥२४॥
 काया की संगति तजै, बैठा हरिपद मॉहिं ।
 दादू नृभै है रहै, कोई गुण व्यापै नॉहिं ॥२५॥
 दादू तजि संसार सब, रहै निराला होइ ।
 अविनासी कै आसिरै, काल न लागै कोइ ॥२६॥
 जागहु लागहु रॉम सौं, छाड़हु विषै विकार ।
 पीवहु जीवहु रॉम-रस, आतम-साधन सार ॥२७॥
 मरै त पावै पीव कूँ, जीवै त बंचै काल ।
 दादू नृभै नॉव ले, दून्यू हाथि दयाल ॥२८॥
 दादू जाता देखिए, लाहा, मूल गँवाइ ।
 साहिब की गति अगम है, सो कछू लखी न जाइ ॥२९॥
 दादू मरणै कूँ चल्या, संजीवनि कै साथ ।
 दादू लाहा मूल सौं, दून्यू आए हाथि ॥३०॥
 साहिब मिलै त जीविए, नहीं त जीवै नॉहिं ।
 भावै अनंत उपाइ करि, दादू मूए मॉहिं ॥३१॥
 सॉई सनमुख जीवतों, मरतों सनमुख होइ ।
 दादू जीवण-मरण का, सोच करै जिनि कोइ ॥३२॥
 (दादू) जे जन बेधे प्रीति सौं, सो जन सदा सजीव ।
 उलटि समॉना आप मैं, अंतर नार्ही पीव ॥३३॥
 संजीवनि साधै नहीं, ताथैं मरि-मरि जाइ ।
 दादू पीवै रामरस, सुखमैं रहै समाइ ॥३४॥
 दिन-दिन लहुड़े^१ हूँहि सब, काहै मोटा होता जाइ ।
 दादू दिन-दिन ते बड़े, जे रहे रॉम ल्यौ लाइ ॥३५॥
 न जॉणौ हॉजी चुप गहि, मेटि अगनि की झाल ।
 सदा सनेही सँवरिए, दादू बंचै काल ॥३६॥
 दादू जीवत छूटै देह गुण, जीवत मुकता होइ ।
 जीवत काटै करम सब, मुकति कहावै सोइ ॥३७॥
 जीवतही तर^२ तिरै, जीवत लंघै पार ।
 जीवत पाया परमगुर, दादू ग्यॉन विचार ॥३८॥

जीवत जगपति कौं मिले, जीवत आतम रॉम ।
 जीवत दरसन देखिया, दादू मन विश्रॉम ॥३६॥
 जीवत पाया प्रेमरस, जीवत पीया अघाइ ।
 जीवत पाया स्वाद सुख, दादू रहे समाइ ॥४०॥
 जीवत भागे भरम सब, छूटे करम अनेक ।
 जीवत—मुकति सदगति भए, दादू दरसन एक ॥४१॥
 जीवत मेला ना भया, जीवत परस न होइ ।
 जीवत जगपति ना मिले, दादू बूड़े सोइ ॥४२॥
 जीवत दूतर ना तिरे, जीवत लॅघे न पार ।
 जीवत नृभे नॉ भए, दादू ते संसार ॥४३॥
 जीवत प्रगट नॉ भया, जीवत परचा नॉहि ।
 जीवत न पांवै पीव कौं बूड़े भौजल मॉहि ॥४४॥
 जीवत पद पाया नहीं, जीवत मिले न जाइ ।
 जीवत जे छूटे नहीं, दादू गए बिलाइ ॥४५॥
 दादू छूटै जीवतों, मूवों छूटै नॉहि ।
 मूवों पीछै छूटिए, (तौ) सब आए उस मॉहि ॥४६॥
 मूवों पीछै मुकति बतावैं, मूवों पीछै मेला ।
 मूवों पीछै अमर अभैपद, दादू भूले गेला ॥४७॥
 मूवों पीछै वैकुंठि वासा, मूवों श्रगि पठावैं ।
 मूवों पीछै सदगति होवै, दादू जग वौरावैं ॥४८॥
 मूवों पीछै पद पहुँचावैं, मूवों पीछै तारैं ।
 मूवों पीछै सदगति होवै, दादू जीवत मारै ॥४९॥
 मूवों पीछै भगति वतावै, मूवों पीछै सेवा ।
 मूवों पीछै संजमि राखैं, दादू दोजकि देवा ॥५०॥
 (दादू) धरती क्या साधन किया, अंबर कौण अभ्यास ।
 रवि—ससि किस आरंभ थैं, अमर भए निज दास ॥५१॥
 साहिब मारे ते मुए, कोई जीवे नॉहि ।
 साहिब राखे ते रहे, दादू निज घर मॉहि ॥५२॥
 जे जन राखे रामजी, अपणै अँगि लगाइ ।
 दादू कछू व्यापै नहीं, जे कोटि काल झखि जाइ ॥५३॥

२७. पारिखि कौ अंग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।

वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ॥१॥

मन चित आतल देखिए, लागा है किस ठौर ।

जहाँ लागा जैसा जाणिए, क्या देखै दादू और ॥२॥

दादू साध परखिए, अंतरि आतम देख ।

मन माँहै माया रहै, कै आपै आप अलेख ॥३॥

(दादू) मन की देखि करि, पीछे धरिए नौउ ।

अंतरगति की जे लखैं, ताकी मैं बलि जौउ ॥४॥

(दादू) बाहर का सब देखिए, भीतरि लख्या न जाइ ।

बाहरि दिखावा लोक का, भीतरि रौम दिखाइ ॥५॥

(दादू) यहु परख सराकी ऊपिली, भीतर की यहु नौहि ।

अंतर की जाणै नहीं, तातैं खोटा खौहि ॥६॥

(दादू) जे नौही सो सब कहैं, हैं सो कहैं न कोइ ।

खोटा खरा परखिए, जब ज्युँ था त्यूँ ही होइ ॥७॥

(दादू) दहदिसि फिरै सु मन है, आवै जाइ सु पवन ।

राखणहारा प्राण है, देखणहारा ब्रह्म ॥८॥

घट की भौनि^१ अनीति सब, मन की मेटि उपाधि ।

दादू परहरि पेंच की, रौम कहैं ते साध ॥९॥

अरथ आया तब जौणिए, जब अनरथ छूटै ।

दादू भांडा भरम का पड़ि चौड़े फूटै ॥१०॥

(दादू) दूजा कहिबे कूँ रह्या, अंतर डास्या धोइ ।

ऊपर कीए सब कहैं, माँहि न देखै कोइ ॥११॥

(दादू) जैसै माँहै जीव रहै, तैसी आवै वास ।

मुखि बोलै तब जौणिए, अंतर का प्रकास ॥१२॥

दादू ऊपरि देखि करि, सबको राखै नौव ।

अंतरगति की जे लखैं, तिनकी मैं बलि जौउ ॥१३॥

तनमन आतम एक है, दूजा सब उनहार ।

दादू मूल पाया नहीं, दुबध्या भरंम बिकार ॥१४॥

काया कै सबगुणि बंधे, चौरासी लख जीव ।
 दादू सेवग सो नही, जे रँगि राते पीव ॥१५॥
 काया कै बसि जीव सब, है गए अनत अपार ।
 दादू काया बसि करै, निरंजन निराकार ॥१६॥
 (दादू) जब पूरण ब्रम्ह विचारिए, तब सकल आतम एक ।
 काया के गुण देखिए, (तौ) नाना वरण अनेक ॥१७॥
 मति बुधि ग्योन विचार बिन, मॉणस पसू समान ।
 समझाया समझै नहीं, दादू परम गियान ॥१८॥
 सब जीव प्राणी भूत है, साध मिलै तब देव ।
 ब्रम्ह मिलै तब ब्रम्ह हैं, दादू अलख अभेव ॥१९॥
 दादू बंध्या जीव है, छूटा ब्रह्म समान ।
 दादू दुन्यै देखिए, दूजा नॉही आन ॥२०॥
 करमों कै बसि जीव है, करम रहत सो ब्रह्म ।
 जहाँ आतम तहाँ परआतमों, दादू भागा भरँम ॥२१॥
 काचा उछलै ऊफणै, काया हॉडी मॉहिं ।
 दादू पाका मिलि रहै, जीव ब्रह्म द्वै नॉहिं ॥२२॥
 (दादू) बॉधे सुर न बाजे बाजै, एहवा सोधि रू लीज्यौ ।
 राम-सनेही साधू हाथैं, बेगा मोकलि दीन्यौ ॥२३॥
 प्रॉण पारखू जौहरी, मन खोटा लै आभै ।
 खोटा मनके माथै मारै, दादू दूरि उड़ावै ॥२४॥
 (दादू) श्रवना हैं नैनों, ताथैं खोटा खॉहि ।
 ग्योन विचार न ऊपजै, साच-झूठ समझॉहि ॥२५॥
 दादू साचा लीजिए, झूठा दीजै डारि ।
 साचा सनमुख राखिए, झूठा नेह निवारि ॥२६॥
 साचे कौं साचा कहै, झूठा कौं झूठा ।
 दादू दुविधा को नहीं, ज्यौं था त्यौं दीठा ॥२७॥
 हीरे कूँ कँकर कहैं, मूरिख लोग अजॉण ।
 दादू हीरा हाथि ले, परखे साध सुजॉण ॥२८॥
 हीरा कौड़ी नॉ लहै, मूरिख हाथि गवार ।
 पाया पारिख जौहरी, दादू मोल अपार ॥२९॥
 अंधे हीरा परखिया, कीया कौड़ी मोल ।
 दादू साधू जौहरी, हीरे मोल न तोल ॥३०॥

(दादू) सगुरा निगुरा परखिए, साध कहैं सब कोइ ।
 सगुरा साचा निगुरा झूठा, साहिब के दरि होइ ॥३१॥

(दादू) सगुर सति संजमि रहे, सनमुख सिरजनहार ।
 निगुरा लोभी लालची, भूँचै^१ विषै विकार ॥३२॥

खोटा खरा परखिए, दादू कसि कसि लेई ।
 साचा है सो राखिए, झूठा रहण न देइ ॥३३॥

(दादू) खोटा खरा करि देवे पारिख, तौ केसै बनि आवे ।
 खरे खोटे का न्याव नवेरै, साहिब के मन भावे ॥३४॥

(दादू) जिन्हैं ज्यों कही, तिन्हैं त्यों मानी ज्ञान विचार न कीन्हा ।
 खोटा खरा जीव परखि न जाँणे, झूठ-साच करि लीन्हा ॥३५॥

जो निधि कहीं न पाईए, सो निधि घरि-घरि आहि ।
 दादू मँहगे मोल विन, कोई न लेवै ताहि ॥३६॥

खरा कसौटी कीजिए, बाँनी^२ बधती^३ जाइ ।
 दादू साचा परखिए, मंहगे मोल विकाइ ॥३७॥

(राम) कहे सेवग खरा, कदे न मोड़े अँग ।
 (दादू) जब लग रॉम है, तब लग सेवग सँग ॥३८॥

दादू कसि-कसि लीजिए, यहु ताते परवाँनि ।
 खोटा गॉंठि न बाँधिए, साहिब के दीवाँनि^४ ॥३९॥

(दादू) खरी कसौटी पीव की, कोई बिरला पहुँचणहार ।
 जे पहुँचे ते ऊबरे, ताइ^५ कीए, ततसार ॥४०॥

दुर्बल देही निर्मल बाँणी ।
 दादू-पंथी ऐसा जाँणी ॥४१॥

(दादू) साहिब कसे सेवग खरा, सेवग कों सुख होइ ।
 साहिब करे सु सब भला, बुरा न कहिए कोइ ॥४२॥

दादू ठग आँवै रमैं, साधों सौं कहियौ ।
 हम सरगाई रॉम की, तुम नीके रहियौ ॥४३॥

(दादू) औगुण छाड़े गुण गहे, सोई सिरोवणि साध ।
 गुण-औगुण तैं रहत है, जो निज ब्रह्म अगाध ॥४४॥

२८. उपजणि को अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ॥१॥
 आपा नॉही बल मिटै, त्रिविध तिमर नहीं होइ ।
 दादू यहु गुण ब्रह्म का, सुनि समाना सोइ ॥२॥
 (दादू) माया का गुण बल करै, आपा उपजे आइ ।
 राजस-तामस-सातिगी, मन चंचल है जाइ ॥३॥
 आपा नाहीं बल मिटै, त्रिविधि तिमर नहीं होइ ।
 दादू यहु गुण ब्रह्म का, सुनि समौना सोइ ॥४॥
 (दादू) अनभै उपजी गुणमई, गुण ही पै जाइ ।
 गुण ही ज्यूँ ले बंधिया, छूटै कौण उपाइ ॥५॥
 द्वै पख उपजी परहरै, नृपख अनभै सार ।
 एक रॉम दूजा नहीं, दादू लेहू बिचार ॥६॥
 दादू काया ब्यावरि गुणमई, मनमुखि उपजे ग्यौन ।
 चौरासी लख जीव कौं, इस माया का ध्यौन ॥७॥
 आतम मॉहैं ऊपजै, दादू पॅगुल ग्यौन ।
 किरतिम जाह उलॅधि करि, जहौं निरंजन थौन ॥८॥
 आतमबोध बंझ का बेटा, गुरमुखि उपजै आइ ।
 दादू पॅगुल पंच बिन, जहौं रॉम तहौं जाइ ॥९॥
 आतम उपजि अकास की, सुणि धरती की बाट ।
 दादू मारग गैब का, कोई लखै न घाट ॥१०॥
 आतमबोधी अनभई, साधू नृपख होइ ।
 दादू राता रॉम सौं, रस पौवेगा सोइ ॥११॥
 प्रेम-भगति जब ऊपजै, निहचल सहज समाधि ।
 दादू पीवै रॉम-रस, सतगुर के प्रसादि ॥१२॥
 प्रेम-भगति जब ऊपजे, निहचल ग्यौन विचार ।
 दादू हरिरस पाईए, छूटे सकल बिकार ॥१३॥
 (दादू) भगति निरंजन राम की, अविचल अविनासी ॥
 सदा सजीवनि आतमों, सहजें प्रकासी ॥१४॥
 (दादू) बंझ बियाई आतमों, उपज्या आनंद भाव ।
 सहज सील संतोष सत, प्रेम-भगन मन राव ॥१५॥

(दादू) जब हम ऊझड़ चालते, तब कहते मारग मॉहि ।
 दादू पहुँते पंथि चलि, कहै यहु मारग नॉहि ।।१६।।
 पहली हम सब कुछ कीया, भरंम करंम संसार ।
 दादू अनभै ऊपभै ऊपजी, राते सिरजनहार ।।१७।।
 पारब्रह्म कह्या प्रॉण सौं, प्रॉण कह्या घट सोइ ।
 दादू घटि सब सौं कह्या, विष अमृत गुंण दोइ ।।१८।।
 (दादू) मालिक कह्या अरवाह सौं, अरवाह कह्या औजूद ।
 औजूद आलम सौं कह्या, हुकम खवर मौजूद ।।१९।।
 (दादू) अनभै थैं आनंद भया, पाया त्रिभै नॉव ।
 निहचल नृमल त्रिवॉण पद, अगम—अगोचर ठांव ।।२०।।
 (दादू) अनभै बॉणी अगम कौं, ले गई सॅंगि लगाइ ।
 अगह गहै अकह कहै, अभेद भेद लहाइ ।।२१।।
 जे कुछ वेद कुराण थैं, अगम—अगोचर बात ।
 सो अनभै साचा कहैं, यहु दादू अकह कहात ।।२२।।
 दादू जैसा ब्रह्म है, तैसी अनभै उपजी होइ ।
 जैसा है तैसा कहै, दादू बिरला कोइ ।।२३।।

२६. दया-त्रिवैरता कौ अंग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणांमं पारंगतह ।।१।।
 आपा मेटे हरि भजै, तन—मन तजे बिकार ।
 त्रिवेरी सब जीव सौं, दादू का मत सार ।।२।।
 त्रिवेरी सब जीव सौं, संत जन सोइ ।
 दादू एके आतमों, बैरी नहीं कोइ ।।३।।
 त्रिवेरी निज आतमों, साधन का मत सार ।
 दादू दूजा रांम विन, बैरी मंझि विकार ।।४।।
 (दादू) सब हम देख्या सोधि सब, दूसर नांही आंन ।
 सब घटि एकै आतमों, क्या हींदू मुसलमांन ।।५।।
 (दादू) नारि पुरिष का नॉव धरि, इहि संसे भ्रमि भुलॉन ।
 सब घटि येकै आतमों, क्या हींदू मुसलमांन ।।६।।

(दादू) दून्युं भाई हाथ-पग, दून्युं भाई कौन ।
 दून्युं भाई नैन द्वै, हींदू मुसलमौन ॥७॥
 दादू के दूजा नहीं, एकै आतम रौम ।
 सतगुर सिर परि साध सब, प्रेम-भगति बिश्रौम ॥८॥
 (दादू) सब रंग रंगि रह्या, दूजा कोई नौहिं ।
 सब रंग तेरे तैं रंगे, तू ही मौहिं ॥९॥
 दादू संसा आरसी, देखत दूजा होइ ॥
 भरंम दुबध्या मिटी, तब दूसर नौही कोइ ॥१०॥
 (दादू) किस सौं बैरी द्वै रह्या, दूजा कोई नौहिं ।
 जिसके अंग तैं ऊपजै, सोई है सब मौहिं ॥११॥
 (दादू) सब घटि एकै आतमौं, जौणें सो नीका ।
 आपा-पर में चीन्हि ले, दरसन है पीय का ॥१२॥
 काहे कूँ दुख दीजिए, घटि-घटि आतम रौम ।
 दादू सब संतोखिए, यहु साधू का कौम ॥१३॥
 काहे कौं दुख दीजिए, सौई है सब मौहिं ।
 दादू एकै आतमां, दूजा कोई नौहिं ॥१४॥
 साहिब जी की आतमौं, दीजै सुख-संतोष ।
 दादू दूजा को नहीं, चौदह तीन्युं लोक ॥१५॥
 (दादू) जब प्रौण पिछांणै आपकौं, आतम सब भाई ।
 सिरजनहारा सबनि का, तास्यौं ल्यौं लाई ॥१६॥
 आतम-रौम बिचारि करि, घटि-घटि देव दयाल ।
 दादू सब संतोषिए, सब जीऊँ प्रतिपाल ॥१७॥
 पूरण ब्रह्म बिचारि ले, दुती भाव करि दूरि ।
 सब घटि साहिब देखिए, रौम रह्या भरपूरि ॥१८॥
 दादू मंदिर काच का, म्रकट^१ सुनहा^२ जाइ ।
 दादू एक अनेक है, आप आप कौं खाइ ॥१९॥
 आतम भाई जीव सब, येक पेट परिवार ।
 दादू मूल विचारिए, तौ दूजा कोण गवांर ॥२०॥
 तनमन आतम येक है, दूजा सब उणहार ।
 दादू मूल पाया नहीं, दुबध्या भरंम विकार ॥२१॥

काया कै बसि जीव सब, है गए अनत अपार ।
 दादू काया वसि करै, निरंजन-निकार ॥२२॥
 घट-घट के उनहार सब, प्रॉण-परसि है जाइ ।
 दादू एक अनेक है, बरतै नाना भाइ ॥२३॥
 आए एकंकार सब, सौई दीए पठाइ ।
 दादू न्यारा नौव धरि, भिनि-भिनि है जाइ ॥२४॥
 आए एकंकार सब, सौई दीए पठाइ ।
 आदि-अंति सब एक है, दादू सहजि समाइ ॥२५॥
 दादू आँतम-देव अराधिए, बिरोधिए न कोइ ।
 आराधे सुख उपजै, विरोधें दुख होइ ॥२६॥
 ज्यों आपै देखै आप कौं, यों जे दूसर होइ ।
 तौ दादू दूसर नहीं, दुख न पावै कोई ॥२७॥
 दादू संमि करि देखिए, कुंजर-कीट समौन ।
 दादू दुबध्या दूरि करि, तजि आपा अभिमौन ॥२८॥
 (दादू) पूरण ब्रह्म विचारिए, तब सकल आतमा येक ।
 काया के गुण देखिए (तौ) बौना-बरण अनेक ॥२९॥
 दादू अरस खुदाइ का, अजरावर का धौन ।
 दादू सो क्यूँ ढाहिए, साहिब का नीसौण ॥३०॥
 (दादू) आप चिणौवैं देहरा^१ तिसका करहि जतन ।
 प्रतखि परमेस्वरि कीया, (सो) भाँनै जीव रतन ॥३१॥
 (दादू) मसीति सँवारी मॉणसौं, तिसकों करहि सलाम ।
 अैन आप पैदा कीया, सो ढाहैं मुसलमौन ॥३२॥
 (दादू) काला मुँह करि करद^२ का दिल थैं दूरि निवारि ।
 सब सूरति सुबहान की, मुलौं मुगध गँवार ॥३३॥
 (दादू) गला गुसे का काटिए, मीयों मनी कूँ मारि ।
 पंचौ बिसमिलि^३ कीजिए, ये सब जीव उबारि ॥३४॥
 (दादू) दुनियाँ सौं दिल बंधि करि, बैठे दीन गँवाइ ।
 नेकी नौव बिसारि करि, करद कमाया खाइ ॥३५॥

(दादू) मिहरि महवति मनि नहीं, दिलके बजर कठोर।
 काले काफिर ते कहिए, मोमिन मालिक और॥३६॥
 (दादू) दया जिन्हों के दिलि नहीं, बहुरि कहावें साध।
 जो मुख उनका देखिए, (तौ) लागै बहु अपराध॥३७॥
 मास—अहारी मद पीवै, विषै—बिकारी सोइ।
 दादू आतमरॉम बिन, दया कहाँ थी होइ॥३८॥
 बैर विरोधैं आतमों, दया नहीं दिल मॉहिं।
 दादू मूरति रॉम की, बाकौं मारण जॉहिं॥३९॥
 जँगल मॉहें जीव जे, जग थें रहें उदास।
 भैभीत भयानक रात दिन, निचल नाही बास॥४०॥
 बाचा बंधी जीव सब, भोजन पांणी घास।
 आतम ग्यॉन न ऊपजे, दादू करें बिनास॥४१॥
 (दादू) मास अहारी जे नरा, ते नर स्यंघ—सियाल।
 बग—मंजार सुनटों सही, ते प्रतखि जमकाल॥४२॥
 दादू बेमिहर गुम्राह गाफिल, गोस्त खुरदनीं।
 बेदिल बदकार आलम, हयात मुर्दनी॥४३॥
 दादू कुलि आलम^१ इके दीदम, अरवाहे इकलास^२।
 वद—अमल बदकार दुई, खाक यारों पास॥४४॥
 दयाध्रम का रूखड़ा, सत सौं बधता जाइ।
 संतोष सौं फूलै, दादू अमर फल खाइ॥४५॥
 (दादू) भावहीण जे प्रिथमी^३, दया—बिहूणा देस।
 भगति नहीं भगवंत की, तहाँ केसा परवेस॥४६॥
 (दादू) बुरान बाछे जीव का, सदा सजीवनि सोइ।
 परले विषे—विकार सब, भाव भगति रत होइ॥४७॥
 काल—झाल मैं काढि करि आतम ऑंगि लगाइ।
 जीव दया यहु पालिए, दादू अमृत खाइ॥४८॥
 (दादू) जे साहिब लेखा लीया, तौ सीस काटि सूली दीया।
 मिहरि मया करि फिल कीया, तौ जीयें जीयें करि जीया॥४९॥
 तुमकों भावे और कछु, हम कछु कीया और।
 मिहरि करौ तौ छूटिए, नहीं तो नॉही ठौर॥५०॥

३०. सुंदरि कौ अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ॥१॥
 आरतीवंती सुंदरी, पल-पल चाहे पीव ।
 दादू कारनि कंत के तालाबेली जीव ॥२॥
 रतिवंती आरति करै, रौम-सनेही आव ।
 दादू ओसरि इब मिलै, यहु विरहनि का भाव ॥३॥
 काहे न आवहु कंत घरि, क्यों तुम रहे रिसाइ ।
 दादू सुंदरि सेज पर, जन्म अमोलिक जाइ ॥४॥
 आतम अंतरि आव तूँ, यहु है तेरी ठौर ।
 दादू सुंदरि पीव तूँ, दूजा नाही और ॥५॥
 (दादू) पीव न देखा नैन भरि, कंठि न लागी धाइ ।
 सूती नहीं गलि-वॉह दे, विचि ही गई बिलाइ ॥६॥
 सुरति पुकारै सुंदरी, अगम-अगोचर जाइ ।
 दादू बिरहनि आतमों, उठि-उठि आतुर धाइ ॥७॥
 सौई कारनि सेज सँवारी, सब थें सुंदर ठोर ।
 दादू नारी नाह बिन, आँणि बेठाए और ॥८॥
 कोई एक औगुण मनि बस्या, चित थें धरी उतारि ।
 दादू पति बिन सुंदरी, हौं^१ धरि-धरि वारि ॥९॥
 प्रेम लहरि की पालिकी, आतम बेसे आइ ।
 दादू खेले पीव सौँ, यहु सुख कह्या न जाइ ॥१०॥
 (दादू) हौँ सुखि सूती सुंदरी, जागै मेरा पीव ।
 क्यों करि मेला होइगा, जागै नांही जीव ॥११॥
 दादू सुखी न खेले सुंदरी, अपने पीव सौँ जागि ।
 स्वाद न पाया प्रेम का, रही नहीं उरि लागि ॥१२॥
 (दादू) जागत जे आणंद करे, सो पावे सुख स्वाद ।
 सूतें सुख न पाईए, प्रेम गँवाया वादि ॥१३॥
 पंच-दिहाड़े^२ पीव सौँ, मिलि काहे न खेले ।
 दादू गहली सुंदरी, क्यों रहे अकेले ॥१४॥

(दादू) सखी सुहागनि सब कहैं, मैं र दुहागनि आहि ।
 पीव का महल न पाईए, कहाँ पुकारौं जाइ ॥१५॥
 दादू सखी सुहागनि कब कहैं, कंत न बूझै बात ।
 मनसा-वाचा-क्रमनौ, मुरछि-मुरछि जीव जात ॥१६॥
 (दादू) सखी-सुहागनि सब कहैं, पीव सौं परस न होइ ।
 निस-बासुरि दुख पाइए, यहु विथा न जौणै कोइ ॥१७॥
 (दादू) सखी-सुहागनि सब कहैं, प्रगट न खेलै पीव ।
 सेज-सुहाग न पाईए, दुखिया मेरा जीव ॥१८॥
 पर पुरिछा सब परहरै, सुंदरि देखै जागि ।
 अपणों पीव पिछौणि करि, दादू रहिए लागि ॥१९॥
 (दादू) पुरिख पुरातन छाड़ि करि, चली आँन के साथ ।
 सो भी सँग थैं बीछुड्या, खड़ी मरोडै^१ हाथ ॥२०॥
 सुंदरि कबहूँ कंत का, मुख सौं नाँव न लेइ ।
 अपणें पीव के वारणें, दादू तन-मन देइ ॥२१॥
 नैन-बैन करि वारणें, तनमन प्यंड परौण ।
 दादू सुंदरि बलि गई, तुम परि कंत सुजौण ॥२२॥
 तन भी तेरा मन भी तेरा, तेरा प्यंड परौण ।
 सब कछू तेरा तूँ है मेरा, यहु दादु का ग्यौन ॥२३॥
 (दादू) पंच अभूखन पीव करि, सोलह सब हीं ठाउ ।
 सुंदरि यहु सिंगगार करि, ले-ले पीव का नांव ॥२४॥
 यहु व्रत सुंदरि ले रहै, तौ सदा सुहागनि होइ ।
 दादू भावै पीव कौं, ता समि और न कोई ॥२५॥
 ज्यौं सुंदरि मोहै पीव कों, बहुत भौंति भरतार ।
 त्यों दादू रिझवे रौम कौं, अनंत कला करतार ॥२६॥
 नीच ऊँच कुल सुंदरी, सेवा सारी होइ ।
 सोई सुहागनि कीजिए, रूप न पीजे धोइ ॥२७॥
 नदिया नीर उलंघि करि, दरिया पैली पार ।
 दादू सुंदरि सो भली, जाइ मिलै भरतार ॥२८॥
 प्रेम-लहरि गहि ले गई, अपणें प्रीतम पास ।
 आतम सुंदरि पीव कौ, बिलसै दादू दास ॥२९॥

सुंदरि कौ सौई मिल्या, पाया सेज सुहाग।
 पीव सौ खेले प्रेम-रस, दादू मोटे भाग॥३०॥
 दादू सुंदरि देह मैं, सौई कूँ सेवे।
 राती अपणे पीव सौ, प्रेमरस लेवे॥३१॥
 दादू त्रिमल सुंदरी, त्रिमल मेरा नौह।
 दून्तू त्रिमल मिलि रहे, त्रिमल प्रेम निवाह॥३२॥
 तेजपुंज की सुंदरी, तेजपुंज का कंत।
 तेजपुंज की सेज परि, दादू वण्या बसंत॥३३॥
 दादू सुंदरि सेज परि, सदा एक-रस होइ।
 दादू खेले पीव सौ, ता समि और न कोइ॥३४॥
 दादू पुरिष हमारा एक है, हम नारी बहु अंगि।
 जे-जे जैसी ताहि सौ, खेलै तिसही सँगि॥३५॥

३१. किसतूरिया म्रिग कौ अंग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह॥१॥
 दादू घटि किसतूरी मृग के, भ्रमत फिरै उदास।
 अंतरगति जाँणै नहीं, ताते सूँघे घास॥२॥
 (दादू) सब घट में गोब्यंद है, सँगि रहे हरि पास।
 किस्तूरी म्रिग में बसै, ताते सूँघत डोलै घास॥३॥
 (दादू) जीव न जाँणै रॉम कौ, रॉम जीव के पास।
 गुर के सबदौ बाहिरा, ताथें फिरै उदास॥४॥
 (दादू) जा कारणि जग ढूँढियो, सो तो घट ही माँहि।
 मैं-तैं पड़दा भ्रम का, ताथें जानत नौहि॥५॥
 (दादू) दूरि कहैं ते दूरि हैं, राम रह्या भरपूरि।
 नैनों बिन सूझे नहीं, तातैं रवि कत दूरि॥६॥
 दादू ओढी^१ हूवो पाँण^२ खैं न लधाऊँ^३ मंझ^४।
 नँ जाताऊँ^५ पाँण मैं, ताई^६ क्याऊँ^७ मंझ॥७॥

१. वहाँ २. आप ३. पाया ४. मध्य ५. जाना ६. तिन्हों ने
 ७. किया

(दादू) सब घट मॉहे रमि रह्या, बिरला बूझे कोइ।
 सोई बूझे रॉम कौ, जे रॉम सनेही होइ॥८॥

सदा समीप रहे सेंगि सनमुख, दादू लखै न गूझ।
 सुपिणे ही समझे नहीं, क्यूँ करि लहे अबूझ॥९॥

(दादू) जड़मति जीव जॉणै नहीं, परम स्वाद सुख जाइ।
 चेतनि समझे स्वाद सुख, पीवे प्रेम अघाइ॥१०॥

(दादू) जागत जे आनंद करै, सो पावे सुख स्वाद।
 सूतें सुख न पाईए, प्रेम गवॉया वादि॥११॥

(दादू) जिसका साहिब जागणों^१, सेवग सदा सुचेत।
 सावधान सनमुख रहे, गिरि गिरि पड़े अचेत॥१२॥

दादू सॉई सावधान, हम ही भए अचेत।
 प्रॉणी राखि न जाणियाँ, तार्थें त्रिफल खेत॥१३॥

(दादू) गोबिंद के गुण बहुत हैं, कोई न जॉणें जीव।
 अपणो बूझे आप गति, जे कुछ कीया पीव॥१४॥

३२. निंदा कौ अंग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह।
 वंदनं श्रब साधवा, प्रणामं पारंगतह॥१॥

साधू त्रिमल मल नहीं, रॉम रमें संमि भाइ।
 दादू औगुण काढि करि, जीव रसातलि जाइ॥२॥

(दादू) जबही साध सताईए, तबही ऊँध-पलट^२।
 आकास धंसै धरती खिसै, तीन्यूँ लोक गरक^३॥३॥

(दादू) जिहि घरि निंदा साध की, सो घर गए समूल।
 तिनकी नीवं न पाईए, नॉव न ठॉव न धूल॥४॥

(दादू) निंदा नॉव न लीजिए, सुपिने ही जिनि होइ।
 नॉ हम कहें न तुम सुनौं, हम जिनि भाखै कोइ॥५॥

(दादू) निंदा कीए नरक है, कीट पड़े मुख मॉहिं।
 रॉम विमुख जॉमै-मरै, भग मुखि आवै जॉहिं॥६॥

१. जागृत २. औंधा पलट ३. डूब जाये

(दादू) न्यंदक पुड़ा जिनि मरे, पर उपगारी सोइ ।
हमकौ करता उजला, आपण मैला होइ ॥७॥

(दादू) जिहि विधि आतम ऊधरै, परसै प्रीतम प्रॉन ।
साध-सबद कौ नीदनों, समझै चतुर सुजॉन ॥८॥

(दादू) अणदेख्या अनरथ कहें, कलि पृथिमी का पाप ।
धरती-अंबर जब लगैं, तब लग करै कलाप^१ ॥९॥

(दादू) अणदेख्या अनरथ कहें, अपराधी संसार ।
जदि तदि लेखा लेइगा, संम्रथ सिरजनहार ॥१०॥

दादू डरिए लोक थैं, कैसी धरै उठाइ ।
अणदेखी अजगैब की, ऐसी कहे बनाइ ॥११॥

साचे कौ झूठा कहें, झूठा-साच समॉन ।
दादू अचिरज देखिया, यहु लोगौ का ग्यॉन ॥१२॥

झूठ न कहिए साच कौ, साच न कहिए झूठ ।
दादू साहिब मॉने नहीं, लागै पाप-अखूट ॥१३॥

दादू झूठ दिखावे साच कौ, भयानक भैभीत ।
साचा राता साच सौं, झूठ न आँणै चीत ॥१४॥

(दादू) अमृत कौ विष विष कौ अमृत, फेरि धरे सब नाँव ।
त्रिमल मैला त्रिमल, जॉहिगे किस ठाँव ॥१५॥

दादू साचे कौ झूठा कहें, झूठे कौ साचा ।
राम दुहाई काड़िए, कँठभैबाचा ॥१६॥

दादू ज्युँ ज्युँ नीदै लोग विचारा ।
त्युँ त्युँ छीजै रोग हमारा ॥१७॥

साधन सब घटि रहै समाई, झूठा जगत झूठ हवै जाई ॥१८॥

३३. निगुणा कौ अंग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ॥१॥
 दादू चंदन बावनो, बसे बटाऊ आइ ।
 सुख दाई सीतल कीए, तीन्हीं ताप^१ नसाइ ॥२॥
 काल कुहाड़ा हाथि लें, काटण लागा ढाहि ।
 ऐसा यहु संसार है, डाल मूल ले जाइ ॥३॥
 सतगुर चंदन बावना, लागे रहें भुवंग ।
 दादू विष छाड़े नहीं, कहा करे सतसंग ॥४॥
 (दादू) कीड़ा नरक का, राख्या चंदन मॉहिं ।
 उलटि अपूठा नरक में, चंदन भावै नॉहिं ॥५॥
 सतगुर साध सुजाण है, सिख का गुण नहीं जाइ ।
 दादू अमृत छाड़ि करि, विषै हलाहल खाइ ॥६॥
 कोटि बरस लौं राखिए, बंसा चंदन पास ।
 दादू गुण लीए रहे, कदे न लागे बास ॥७॥
 कोटि बरस लौं राखिए, पथर पौंणी मॉहिं ।
 दादू आड़ा अंग है, भीतरि भेदे नॉहिं ॥८॥
 कोटि बरस लौं राखिये, लोहा पारस सेंग ।
 दादू रोम का अंतरा, पलटै नार्हीं अंग ॥९॥
 कोटि बरस लौं राखिए, जीव-ब्रह्म सेंगि दोइ ।
 दादू मॉहैं, बासनों, मेला कदे न होइ ॥१०॥
 मूसा जला देखि करि, दादू हंस दयाल ।
 मानसरोवर ले चल्या, पंखा काटे काल ॥११॥
 सब जीव भुवंगम कूप में, साधू काढ़े आइ ॥
 दादू विसहर बिसि भरे, फिरि ताही कूँ खाइ ॥१२॥
 दादू दूध पिलाईए, बिसहर विस करि लेइ ।
 गुण का औगुण करि लीया, ताही कूँ दुख देइ ॥१३॥
 विनही पावक जलि मूवा, जवासा जल मॉहिं ।
 दादू सूके सीचता, जलं कूँ दूखण नॉहिं ॥१४॥

१. दैहिक, दैविक, भौतिक ताप

सुफल विरख परमारथी, सुख देवे फलफूल।
 दादू उपरि वैसि करि, निगुणों काटै मूल॥१५॥
 दादू सगुण गुण करै, निगुणों मानै नॉहि।
 निगुणा मरि त्रिफल भया सगुण साहिब मॉहि॥१६॥
 निगुण गुण मॉनै नहीं, कोटि करै जे कोइ।
 दादू सब कुछ सौपिए, सो फिरि बैरी होइ॥१७॥
 दादू सगुणा लीजिए, निगुण दीजै डारि।
 सगुणा सनमुख राखिए, निगुणा नेह निवारि॥१८॥
 सगुण गुण केते करै, निगुण न मानै एक।
 दादू साधू सब कहै, निगुणे नरक अनेक॥१९॥
 सगुण गुण केते करै, निगुणा नाखै खाहि।
 दादू साधू सब कहैं, निगुणा निरफल जाइ॥२०॥
 सगुणा गुण केते करै, निगुणा न मानै कोइ।
 दादू साधू कहैं, भला कहों थी^१ होइ॥२१॥
 सगुणा गुण केते करै, निगुणा न मॉनै नीच।
 दादू साधू सब कहै, निगुणें के सिरि मीच॥२२॥
 साहिब जी सब गुण करै, सतगुरु कैं घटि होइ।
 दादू काढ़ै काल मुखि, निगुणों न मानै कोइ॥२३॥
 साहिबजी सब गुण करै, सतगुर मॉहे आइ।
 दादू राखै जीव दे, निगुणा मेटे जाइ॥२४॥
 साहिब जी सब गुण करै, सतगुर का दे सँग।
 दादू परलै राखि ले, निगुणा पलटै अँग॥२५॥
 साहिबजी सब गुण करै, सतगुर आड़ा देइ।
 दादू तारे देखतों, निगुणा गुण नहीं लेइ॥२६॥
 सतगुरि दीया रामधन, रहे सुबुधि बताइ।
 मनसा-बाचा-क्रमणों, विलसै बितड़ै खाइ॥२७॥
 कीया कित मेटे नहीं, गुण ही मॉहि समाइ।
 दादू बधै अनंत धन, कबहू कदे न जाइ॥२८॥

३४. बीनतो कौ अँग

दादू न्मो न्मो नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह ।

वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह ॥१॥

दादू बहुत बुरा कीया, तुमही न करणा रोस ।

साहिब समाई का धणी, बंदे कौ सब दोस ॥२॥

(दादू) बहुत बुरा सब हम कीया, सो मुखि कहा न जाइ ।

निरमल मेरा सौईयों, ताकू दासे न लाइ ॥३॥

सौई सेवा चोर, में अपराधी — बंदा ।

दादू दूजा को नहीं, मुझ सरीखा गंदा ॥४॥

दादू तिल-तिल का अपराधी तेरा रती रती का चोर ।

पल-पल का मैं गुनही तेरा, बकसो औगुन मोर ॥५॥

दादू महा अपराधी एक मैं सारे इहि संसार ।

औगुण मेरे अति घणें, अंत न आवै यार ॥६॥

वे म्रजादा मिति नहीं, ऐसे कीए अपार ।

मैं अपराधी बापजी, मेरे तुमही एक अधार ॥७॥

दोष अनेक कलंक सब, बहुत बुरा मुझ मॉहि ।

मैं कीए अपराध सब, तुम तैं छानां नॉहि ॥८॥

गुनहगार अपराधी तेरा, भाजि कहां हम जॉहि ।

दादू देख्या सोधि सब, तुम बिन कहीं न समॉहि ॥९॥

आदि-अंति लौं आइ करि, सुक्रित कछू न कीन ।

माया-मोह मद-मंछरा, स्वाद सबै चित दीन्ह ॥१०॥

काम-क्रोध संसै सदा, कबहूँ नाँव न लीन्ह ।

पाखंड-परपंच-पाप में, दादू औसै खीन ॥११॥

दादू बहु बंधन करि, बंधिया, येक विचारा जीव ।

अपनै वलि छूटै नहीं, छोड़नहारा पीव ॥१२॥

दादू वंदीवान हो, तू बदि छोड़ि दिवान ।

अब जिनि राखै बंदि में, मीराँ मिहरबान ॥१३॥

दादू अंतरि कालिमौ, हिरदै बहुत बिकार ।

प्रगति पूरा दूरि करि, दादू करै पुकार ॥१४॥

सब कछु व्यापै रॉम जी, कछु दादू नॉहीं ।

तुमतैं कहाँ छिपाईए, सब देखौ मॉहीं ॥१५॥

सबल साल मन में रहै, रॉम बिसरि क्यूँ जाइ।
 यहु दुख दादू क्यूँ सहै, सौई करौ सहाइ॥१६॥
 राखणहारा राखि तूँ, यहु मन मेरा राखि।
 तुम विन दूजा को नहीं, साधू बोले साखि॥१७॥
 दादू माया विष-विकार थैं, मेरा मन भागै।
 सोई कीजै सौईयों तूँ मीठा लागै॥१८॥
 (दादू) सौई दीजै सो रती, तूँ मीठा लागे।
 दूजा खारा होइ सब, सूता जीव जागै॥१९॥
 जे साहिब कौं भावै नहीं, सो हम थैं जिनि होइ।
 सतगुर लाजै आपणों, साध न मानै कोइ॥२०॥
 ज्युं आपै देखै आप कौं, सो नैना दे मुझ।
 मीरां मेरा मिहरि करि, दादू देखै तुझ॥२१॥
 दादू पछितावा रह्या, सके न ठाहर लाइ।
 अरथि न आया रॉम कै, यहु तन यौं ही जाइ॥२२॥
 कहता-सुणतों दिन गए, कछू होइ न आया।
 दादू हरि की भगति विन, प्राणी पछिताया॥२३॥
 (दादू) कहे दिनदिन नौतम भगति दे, दिनदिन नौतम नौऊ।
 दिन-दिन नौतम नेह दे, मैं बलिहारी जौऊ॥२४॥
 सौई सत-संतोष दे, भाव-भगति बेसास।
 सिदक सबूरी साच दे, माँगै दादू दास॥२५॥
 (दादू) कहे सँसे दूरि करि, करि सँक्या का नास।
 भौनि-भरंम दुबध्या दुख-दारण, समिता-सहजि प्रकास॥२६॥
 (दादू) माया प्रगट है रही, यौं जे होता रॉम।
 अरस परस मिलि खेलते, सब जीव सबहीं ठौव॥२७॥
 (दादू) नौही प्रगट है रह्या, है सो रह्या लुकाइ।
 सईयों पड़दा दूरि करि, तूँ है प्रगटि आइ॥२८॥
 दया करै तब अँगि लगावे, भगति अखंडित देवै।
 दादू दरसन आप अकेला, दूजा हरि सब लेवै॥२९॥
 (दादू) साध सिखावै आतमों, सेवा दिढ़ करि लेहु।
 पार ब्रह्म सौं बीनती, दया करि दरसन देहु॥३०॥
 साहिब साध दयाल है, हम ही अपराधी।
 दादू जीव अभागिया, अविद्या साधी॥३१॥

दादू जीव तोड़े राम सौं, पै राम न तोड़े ।
 दादू काचे ताग ज्यूँ, तूटे त्यूँ जोड़े ॥३२॥
 फूटा फेरि सर्वोरि करि, ले पहुँचावै ओड़^१ ।
 ऐसा कोई ना मिल, दादू गई बहोड़^२ ॥३३॥
 (दादू) ऐसा कोई ना मिले, तन फेरि सँवारै ।
 बूढे थैं बाला क्यूँ खै काल निवारै ॥३४॥
 गले विले करि बीनती, एकमेक अरदासि ।
 एकमेक करुणों करै, तब दरवे दादू दास ॥३५॥
 सौई तेरे डरि डरौं, सदा रहौं भैभीत ।
 अजा स्यँध ज्यूँ भे घण, दादू लीया जीत ॥३६॥
 (दादू) पलक मॉहि प्रगट सही, जे जन करै पुकार ।
 दीन दुखी तब देखि करि, अति आतुर तिहिं वार ॥३७॥
 आगैं—पीछैं सँगि रहै, आप उठाए भार ।
 साध दुखी तब हरि दुखी, असा सिरजनहार ॥३८॥
 सेवग की रख्या करै, सेवग की प्रतिपाल ।
 सेवग की बाहर^३ चढ़ै, दादू दीनदयाल ॥३९॥
 काया नाँव समंद मैं, औघटि बूड़े आइ ।
 इहि औसरि येक अगाध बिन, दादू कोण सहाइ ॥४०॥
 यहु तन भेरा^४ भौजला, क्यूँ करि लंघै तीर ।
 खेवट बिन कैसै तिरैं, दादू गहर गंभीर ॥४१॥
 स्यंघ परोहन^५ स्यंघ जल, भौसागर संसार ।
 राम बिना सूझै नहीं, दादू खेवनहार ॥४२॥
 यहु घट बोहिथ^६ धार मैं, दरिया बार न पार ।
 भैभीत भयानक देखि करि, दादू करी पुकार ॥४३॥
 कलिजुग घोर अंधार है, तिसका वार न पार ।
 दादू तुम बिन क्यूँ तिरै संम्रथ सिरजनहार ॥४४॥
 काया कै वसि जीव है कसि—कसि बंध्या मॉहिं ।
 दादू आतम रॉम बिन, क्यूँ ही छूटै नॉहिं ॥४५॥

दादू प्रॉणी बंध्या पेंच सौ, क्यूँ ही छूटै नॉहिं।
 नीधणि आया मारिए, यहू जीव काया मॉहिं॥४६॥
 तुम विन धर्णी न धोरी^१ जीवका यौही आवै जाइ।
 जे तूँ सॉई सति है, तौ बेगों प्रगटि आइ॥४७॥
 नीधणि आया मारिए, धणी न धोरी कोइ।
 दादू सो क्यूँ मॉरिए, साहिब सिर परि होइ॥४८॥
 (दादू) रॉम विमुख जुगि-जुगि दुखी, चौरासी लख जीव।
 जॉमे-मरे जगि आवटै, राखनहारा पीव॥४९॥
 संप्रथ सिरजनहार है, जे कछु करै सु होइ।
 दादू सेवग राखि ले, काल न लागै कोइ॥५०॥
 साई सॉचा नॉव दे, काल झाल मिटि जाइ।
 दादू नृभै है रहे, कबहूँ काल न खाइ॥५१॥
 कोइ नहीं करतार बिन, प्रॉण उधारणहार।
 जीयरा दुखिया रॉम विन, दादू इहि संसार॥५२॥
 जिनकी रख्या तूँ करै, ते उबरे करतार।
 जे तैं छाड़े हाथ तैं, ते बूड़े संसार॥५३॥
 राखनहारा एक तूँ, मारनहार अनेक।
 दादू के दूजा नहीं, तूँ आपै ही देख॥५४॥
 (दादू) जुग-ज्वाला जंमरूप है, साहिब राखनहार।
 तुम विचि अंतर जिनि पड़ै, तॉथैं करौं पुकार॥५५॥
 जहॉ-तहॉ विषे-विकार तैं, तुम ही राखनहार।
 तनमन तुमकों सौंपिया, साचा सिरजनहार॥५६॥
 (दादू) कहे गरक रसातलि जात हैं, तुम विन सब संसार।
 कर गहि करता काढि ले, दे अवलंबन आधार॥५७॥
 (दादू) दौ लागी जग प्रजले, घटि-घटि सब संसार।
 हमतैं कछू न होत है, तूँ बरसि बुझावणहार॥५८॥
 (दादू) आतम जीव अनाथ सब, करतार उबारै।
 रॉम निहारा कीजिए, जिनि काहू मारै॥५९॥
 अरस जिमी ओजूद में, तहॉ तपै अफताब।
 सब जग जलता देखि करि, दादू पुकारे साध॥६०॥

(दादू) सकल भवन सब आतमों, त्रिविख करि हरि लेइ ।
परदा है सो दूरि, कुसमल रहण न देइ ॥६१॥

तन-मन त्रिमल आतमों, सब काहू की होइ ।
दादू विषै-विकार की बात न पूछे कोइ ॥६२॥

संग्रथ धोरी कंध धरि, रथ ले ओड़ निवाहि ।
मारग माहि न मेलिहए, पीछे विड़द लजाइ ॥६३॥

दादू गगन गिरै तब को धरै, धरती धर छँडै ।
जे तुम छाड़ो रॉम-रथ, कंध को मँडै ॥६४॥

(दादू) ज्यूं वे व्रत गगन तैं तूटै, कहा गगन कहाँ ठॉम ।
लागी सुरति अँग थैं छूटै, सो कत जीवै रॉम ॥६५॥

अंतरजॉमी एक तूँ, आतम के आधार ।
जे तुम छाड़ौ हाथ तैं, तौ कौण सँवॉहणहार ॥६६॥

तेरा सेवग तुम लगै, तुम ही माथै भार ।
दादू डूबत रॉम जी, वेगि उतारौ पार ॥६७॥

सत छूटा सूरतन गया, बल पोरिख भागा जाइ ।
कोई धीरज नॉ धरै, काल पहुँता आइ ॥६८॥

सँगी थाके सँग के, मेरा कुछ न बसाइ ।
भाव-भगति धन लूटिए, दादू दुखी खुदाइ ॥६९॥

दादू जियरै जक नहीं, विश्रॉम न पावै ।
आतम पॉणी लूण ज्यूँ, ऐसे होइ न आवै ॥७०॥

तेरी खूबी खूब हे, सब नीका लागे ।
सुंदरि सोभा काढि ले, सब कोई भागे ॥७१॥

तुम हौ तैसी कीजियौ, तौ छूटेंगे जीव ।
हम है ऐसी जिनि करौ, सदिकें जाऊँ पीव ॥७२॥

अनाथैं का आसिरा, निरधारैं आधार ।
निरधन के धन रॉम है, दादू सिरजनहार ॥७३॥

साहिब दरि दादू खड़ा, निसदिन करे पुकार ।
मीरॉ मेरा मिहरि करि, साहिब दे दीदार ॥७४॥

साहिब सौं मिलि खेलते, होता प्रेम संनेह ।
दादू प्रेम सनेह बिन, खरो दुहेली देह ॥७५॥

दादू प्यासा प्रेम का, साहिब रॉम पिलाइ ।
प्रगट प्याला देऊ भरि, मृतक लेहु जिलाइ ॥७६॥

(दादू) अलह आले नूर का, भरि-भरि प्याला देहु।
 हमकूँ प्रेम पिलाइ करि, मतिवाला करि लेहु।॥७७॥
 तुमको हमसे बहुत हैं, हमकूँ तुम सा नांहि।
 (दादू) कों जिनि परहरौ, तू रह नैनो मांहि।॥७८॥
 तुँम थें तबही होइ सब, दरस-परस दरहाल।
 हम तै कबहूँ न होइगा, जे बीचें जुग काल।॥७९॥
 तुमही थें तुम कूँ मिलै, एक पलक मैं आइ।
 हमथे कबहूँ न होइगा, कोटि कलप जे जाइ।॥८०॥
 तुमकों भावै ओर कछु, हम कछु कीया ओर।
 मिहरि करौ तो छुटिए, नहीं त नाहीं ठोर।॥८१॥
 मुझ भावे सो मैं कीया, तुझ भावे सो नाँहि।
 दादू गुनंहगार है, मैं देख्या मन माँहि।॥८२॥
 खुसी तुम्हारी त्यों करौ, हम तौ मानी हारि।
 भावै बंदा बकसिये, भावै गहि करि मारि।॥८३॥
 दादू जे साहिब लेखा लीया, तौ सीस काटि सूली दीया।
 मिहरि मया करि फिल^१ कीया, तौ जीए जीए करि जीया।॥८४॥

३५. साखीभूत कौ अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह।
 वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह।॥९॥
 सब देखणहारा जगत का, अंतरि पूरै साखि।
 दादू स्याबति सोस ही, दजा ओर न राखि।॥१०॥
 माँहै थी मुझकौं कहै, अंतरजामी आप।
 दादू दूजा धंध है, साचा मेरा जाप।॥११॥
 करता है सो करैगा, दादू साखीभूत।
 कोतिगहारा है रह्या, अणकरता अवधूत।॥१२॥

आप अकेला सब करे, घट में लहरि उपाइ ।
 दादू सिरि दे जीव कै, यौ न्यारा है जाइ ॥५॥
 (दादू) जूवा खेले जौण राइ ताकूँ लखे न कोइ ।
 सब जग बैठा जीति करि, काहू लिपति न होइ ॥६॥
 आप अकेला सब करै, ओरौँ कै सिरि देइ ।
 दादू सोभा दास कौँ अपणों नौव न लेइ ॥७॥
 (दादू) ब्रह्म जीव हरि आतमों, खेलैं गोपी कान्ह ।
 सकल निरंतरि भरि रह्या, साखीभूत सुजौण ॥८॥
 दादू राजस करि उत्पति करै, सातिग करि प्रतिपाल ।
 तामस करि परले करै, त्रिगुण कौतिगहार ॥९॥
 दादू जौमण मरणों सौनि करि, यहु प्यँड उपाया ।
 सौई दीया जीव कूँ ले जग में आया ॥१०॥
 विष अभ्रित सब पावक पाणी, सतगुरि समझाया ।
 मनसा-बाचा-क्रमनों, सोई फल पाया ॥११॥
 (दादू) जौणें बूझें जीव सब गुण ओगुण कीजे ।
 जौणि बूझि पावक पड़े, देई दोस न दीजै ॥१२॥
 दादू मनही मॉही है मरै, जीवै मनही मॉहि ।
 साहिब साखीभूत है, दूसण दीजै नॉहि ॥१३॥
 करता है करि कछू करै, उस मॉहि बँधावे ।
 दादू उसकौँ पूछिए, ऊतर नहीं आवे ॥१४॥
 सेवा सुकृत सब गया, मैं मेरा मन मॉहि ।
 दादू आपा जब लगे, साहिब मानें नॉहि ॥१५॥
 दादू केई उतारैं आरती, केई सेवा मॉहि ।
 केई आइ पूजा करै, केई खुलावैं खॉहि ॥१६॥
 केई सेवग है रहे, केई साधू सँगति मॉहि ।
 केई आइ दरसन करै, हम थें होता नॉहि ॥१७॥
 नॉ हम करैं करावैं आरती, नॉ हम पीवै पिलावैं नीर ।
 करै करावैं सौइयों, दादू सकल सरीर ॥१८॥
 करै करावै साइयों, जिनि दीया औजूद ।
 दादू बंदा बीचि है, सोया कूँ मौजूद ॥१९॥
 देवै लेवै सब करै, जिन सिरजे सब लोइ ।
 दादू बंदा महल में, सोभा करै सब कोइ ॥२०॥

(दादू) जूवा खेलै जाणराइ, ताकौं लखे न कोइ।
सब जग बैठा जीति करि, काहू लियत न होइ॥२१॥

३६. बेली कौ अंग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह।
वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह॥१॥

अमृत रूपी नाँव ले, आतम तत पोखै।
सहजै सहज समाधि मै, धरणी जल सोखै॥२॥

पसरै तीन्हू लोक मै, लिखति नहीं धोखै।
सो फल लागे सहज मै, सुंदरि सब लोकै॥३॥

दादू वेली आतमों, सहज फूल फल होइ।
सहजि सहजि सतगुर कहे, बूझै बिरला कोइ॥४॥

जे साहिब सींचै नहीं, तौ बेली कुमिलाइ।
दादू सींचै साँईयों, तौ बेली बधती जाइ॥५॥

हरि तरवर तत आतमों, वेली करि विस्तार।
दादू लागै अमर फल, का साधू सींचनहार॥६॥

दादू सूका रूखड़ा, काहे न हरिया होइ।
आपै सींचै अमीरस, सूफल फलिया सोइ॥७॥

कदे न सूखे रूपड़ा, जे अमृत सीच्या आप।
दादू हरिया सो फलै कछु न ब्यापै ताप॥८॥

जे घट रोपे रामजी, सींचे अमी अधाइ।
दादू लागे अमी फल, कबहुँ सूकि न जाइ॥९॥

हरि जल बरखें बाहिरा, सूके काया खेत।
दादू हरिया होइगा, सींचणहार सुचेत॥१०॥

(दादू) अमर बेलि है आतमों, पार समंदा मॉहिं।
सूके खारे नीर सों, अमर फल लागै नाँहि॥११॥

(दादू) बहु गुणवंती बेलि है ऊगी कालर^१ मॉहिं।
सींचै खारे नीर सों तातें निपजे नाँहि॥१२॥

(दादू) बहु गुणवंती बेलिहै, मीठी धरती मॉहिं।
मीठा पौंणी सीचिए, दादू अमर फल खॉहिं॥१३॥

दादू अँमृत बेली बाहिए, अँमृत का फल होइ।
अँमृत का फल खाइ करि, मुवा न सुणिए कोइ॥१४॥

(दादू) विष की बेली बाहिए, विष ही का फल होइ।
विष ही का फल खाइ करि, अमर नहीं कलि कोइ॥१५॥

तरवर साख मूल बिन, धरती पर नॉहिं।
अविचल अमर अनंत फल, सो दादू खॉहिं॥१६॥

तरवर साखा मूल बिन, धर-अंबर न्यारा।
अविनासी आनंद-फल, दादू का प्यारा॥१७॥

तरबर साखा मूल बिन, रज-वीरज रहिता।
अजरा अमर अनंत फल, सो दादू गहिता॥१८॥

तरवर साखा मूल बिन, उत्तपति परले नॉहिं।
रहिता रमिता रॉम फलं, दादू नैनहु मॉहिं॥१९॥

प्राण तरवर सुरति जड़, ब्रह्म भोमि ता मॉहिं।
रस पीवे फूले फले, दादू सूकै नॉहिं॥२०॥

सतगुर सँगति नीपजे, साहिब सींचनहार।
प्रॉण विरख पीवै सदा, दादू फले अपार॥२१॥

दया भ्रम का रूँखड़ा, सत सौं बधता जाइ।
संतोष सौं फूले फलें, दादू अमर फल खाइ॥२२॥

३७. अविहड़ कौ अँग

दादू न्मो न्मौ नरंजनं, नमसकार गुरदेवतह।
वंदनं श्रव साधवा, प्रणामं पारंगतह॥१॥

दादू संगी सोई कीजिए, जे कलि अजरावर होइ।
नॉं बहु मरै न बीछुडै, नॉं दुख व्यापै कोइ॥२॥

(दादू) संगी सोई कीजिए, जे अस्थिर इहि सँसार।
नॉं बहु खिरै न हम खपै, ऐसा लेहु विचार॥३॥

संगी सोई कीजिए, सुख दुख का साथी।
दादू जीवण-मरणका, सो सदा सँगाती॥४॥

दादू सेंगी सोई कीजिए, जे कबहूँ पलटि न जाइ।
आदि—अंति बिहड़े नहीं, ता सनि यहु मन लाइ॥५॥

(दादू) माया बिहड़े देखतों, काया सेंगि न जाइ।
क्रितम बिहड़ै, अजरावर ल्यौ लाइ॥६॥

दादू अबिहड़ आप है, अमर उषोंवनहार।
अविनासी आपे रहे, विनसे सब संसार॥७॥

दादू अबिहड़ आप है, साचा सिरजनहार।
आदि—अंति बिहड़े नहीं, विने सब आकार॥८॥

दादू अबिहड़ आप है, अवचिल रह्या समाइ।
निहचल रहिता रॉम है, जे दीसे सो जाइ॥९॥

दादू अबिहड़ आपहै, कबहूँ बिहड़े नॉहिं।
घटै—बधै नहीं एकरस, सब उपजि खए उस मॉहिं॥१०॥

(दादू) अबिहड़ अँग बिहड़े नहीं, अपलट पलटि न जाइ।
दादू अघट एकरस, सबमें, रह्या समाइ॥११॥

कबहूँ न बिहड़े सो भला, साधू दिढ़ मत होइ।
दादू हीरा एकरस, बंधि गाठड़ी सोई॥१२॥

जेते गुण न्यायै जीव कौं, तेते तैं भजि रे मन।
साहिब अपने कारणैं, भलो निवाहयौ पण॥१३॥

3. उपसंहार

संत दादूदयाल मध्ययुगीन सन्त परम्परा के सशक्त सन्त हैं। सन्त कबीर की परम्परा को आगे बढ़ाने में उनका विशेष योगदान रहा है। संत कबीर के महाप्रयाण के कुछ ही समय बाद गुजरात में पैदा हुए इनकी साधना-स्थली नराणा रही है। इनका जन्म फागुन सदी = बृहस्पतिवार, संवत् १६०१ (सन् १५४४ ई०) और मृत्यु जेट बदी = शनिवार, संवत् १६६० (सन् १६०३ ई०) को हुयी है। भारतीय इतिहास में ये काल सांस्कृतिक और भाषिक संक्रमण का काल रहा हैं सन्तों की जम्बी परम्परा में यदि पड़े लिखे संत देखे जायें तो दो नाम स्पष्टतः उभरकर आते हैं - १. संत दादूदयाल और २. संत तुलसीदास।

सन्त दादूदयाल बहुश्रुत सन्त थे इन्होंने गुजरात, राजस्थान, पंजाब, सिंध आदि प्रदेशों की यात्रा की थी यही कारण है कि इनकी भाषा में इन सभी क्षेत्रों की भाषा की बानगी देखने का मिलती है। ये बड़े दयालु सन्त थे और इसके आधार पर इन्हें दादूदयाल कहा जाता था। ऐसा बताया जाता है कि जब ये मरे तब इन्होंने अपने शिष्यों को आदेश दिया था कि इनकी ज़ाश जंगल में फेंक दी जाये जिससे कम से कम कुछ जंगली जानवरों का पेट तो भरे।

ऐसे महान सन्त की वाणी के संकलन और सम्पादन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम नहीं उठाये गये जबकि इनके शिष्यों और मठों की एक लम्बा परम्परा पूरे भारत में दिखाई पड़ती है। इनकी वाणी के प्रकाशित और अप्रकाशित श्राव्यों को ध्यान में रखकर विचार करने से पता लगता है कि इनकी वाणी का सम्पादन करते समय इनके दर्शन और भाषा ज्ञान का ध्यान नहीं रखा गया। इनके काव्य के उपलब्ध पांडुलिपियों में भी पाठान्तरों की भरमार है। प्रस्तुत सम्पादन में मैंने उस सम्पूर्ण सामग्री का उपयोग किया है जो प्रकाशित या अप्रकाशित दोनों रूपों में उपलब्ध है। सम्पादन के दौरान विशेष न किसी आधार प्रति की आवश्यकता होती है। मैंने अपने तर्कों के आधार पर ये देखा कि वेल्वेडियर प्रेस, इलाहाबाद की प्रति काव्य शास्त्रीय इवम् भाषाई दृष्टि से अधिक वैज्ञानिक है।

परशुराम वतुर्वेदी द्वारा सम्पादित पाठ से पाठान्तरों की मिलान की सुविधा तो मिल गयी किन्तु भाषा और काव्य शास्त्रीय प्रमाणिकता की दृष्टि से ये पाठ अधिक वैज्ञानिक नहीं है। इस पाठ में कहीं-कहीं रूप संशोधन में लापरवाही के कारण पाठ भ्रष्ट हो गया है।

संत वाक्यों को आधार ग्रंथों के रूप में स्वीकार करते हुए मैंने वेल्वेडियर प्रेस की प्रति को

प्राथमिकता दी है। सम्पादन के दौरान निम्नलिखित प्रकाशित ग्रंथ एवं अप्रकाशित पांडुलिपियां देखने को मिली जिनमें से लगभग सभी का कुछ न कुछ उपयोग हमने अपने संपादन में किया है।

सर्वप्रथम संस्करण सन् १९०४ ई० अर्थात् सं० १९६१ में ज्ञान सागर प्रेस बम्बई से प्रकाशित हुआ था। किन्तु यह संस्करण आज उपलब्ध नहीं है। दूसरा संस्करण 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' का सुधाकर द्विवेदी द्वारा सम्पादित नागरी प्रचारिणी ग्रंथ माला सीरीज सं० ११ एवं सं० १४ के रूप में क्रमशः १९०६ ई० (सं० १९६३) तथा सन् १९०७ ई० (सं० १९६४) में प्रकाशित हुआ। सं० १९६४ में 'वैदिक मंत्रालय' अजमेर से पं० चंदिका प्रसाद त्रिपाठी द्वारा संपादित संस्करण प्रकाशित हुआ। दूसरी प्रति चानसेण छावनी की है जिसका लिपिकाल सं० १९०८ है। शेष तीन के लिपिकाल क्रमशः १९०९, सं० १८८५ तथा १९३४ है। दादू बानी का चौथा प्रकाशित संस्करण सं० १९७५ में 'जेलप्रेस' जयपुर का है। इसके संपादक का नाम अज्ञात है। संस्करण के अन्त में छपे कुछ दोहों से प्रतीत होती है कि 'सरजनदल जंग सिंध' ने उसे 'लेखगदोश निवार' करके प्रकाशित कराया है; छठा एवं सटीक 'अनभैवाणी' ग्रंथ जयपुर के स्वामी जीवानंद भारत भिक्षु द्वारा सम्पादित एवं 'श्री दादूसेवक प्रेस, जयपुर' से सं० २००३ प्रकाशित है इसके तीन खंड हैं। लाहौर से प्रकाशित किसी पुस्तक का भी उल्लेख मिलता है। किन्तु वह आज अनुपलब्ध है।

सबसे प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपि दादू द्वारा नराणा की है इसका आकार है १०" X ६" X २"। इस पर चमड़े की जिल्द है। पुष्पिका में लिपिकाल नहीं दिया गया है। प्रति के लिपिकार के गुरु स्मरणादि से भी कुछ अधियता पता नहीं चलता है। दादू दयाल जी के प्रसिद्ध ५२ शिष्यों में से मोहनदास भजनीक, मोहनदास दफ्तरी मोहनदास मेवाडा तथा मोहनदास दरियाई नामक चार मोहनदासों के उल्लेख हैं।

'दादू महाविद्यालय, जयपुर' से प्राप्त पांडुलिपि भी प्राचीनता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसका आकार है : ६" X ५ 1/4" X २" है पुरानी दफती लगी और कपड़े से मढ़ी है। दादूवाणी की तीसरी प्रति नागरी प्रचारिणी सभा, (सं० १४०६) से उपलब्ध हुई है इसका स्थान उदयपुर है। इसका आकार ११" X ६" X २" है। संभवतः इस प्रति का लिपि-काल सं० १७६७ (सन् १७४० ई०) बैशाख बदी ७, मंगलवार है। लिपिकार का नाम मनसाराम है जो बाबा साधू के शिष्य है।

चौथी प्रति नागरी प्रचारिणी सभा (१३६४ संख्या) की यह छोटे से गुटके के आकार में है इसका आकार प्रकार ५ 1/2" X ३ 1/2" X २" है। उपलब्ध हस्तलिखित प्रतियों में पौंचवी पांडुलिपि भी नागरी प्रचारिणी

है। सभा की इस पर १६११ संख्या दी है। यह प्रति पिछली प्रति से कुछ बड़ी और अधिक मोटी है। इसका आकार है ६" x ४½" x २½" है।

नागरी प्रचारणी सभा से प्राप्त '१३६३ क' अंक की प्रति है। प्रतिका गुटके के आकार की है। इसका आकार ६" x ३" x ३" है। प्रयोग किया गया कागज पीलापन लिए हुए है। एक अन्य हस्तलिखित नागरी प्रचारिणी सभा से प्राप्त १७५६ संख्या वाली है। प्रति गुटके की शक्ल में ६½" x ४½" x २" आकार की है। मोटी दफती है।

हस्तलिखित प्रतियों में लिपि नागरी होने पर भी लिखावट में विलक्षणता है। इसमें इसका कारण संभवतः राजस्थानी, गुजराती, सिंधी एवं पंजाबी की प्रमुख विशेषताएँ हैं। प्रायः 'सधुक्कड़ी' है संयुक्त शब्दों को सरल करने के प्रयत्न स्वरूप अपभ्रंश काल में हुए रूपों का भी दादूदयाल की भाषा में प्रयोग है : अधिकांश शब्द अरबी, फ़ारसी के हैं तथा बहुत कम तुरकी के।

मौजूद, ख़बर, अरवाह, मुक़ाम, हस्त, दादनी, सजूद, नफ़्स, ग़ालिब,

उन्होंने अपने काल में सिंधी, पंजाबी तथा गुजराती का प्रयोग भी अनेक स्थानों पर किया है। संत दादू दयाल का राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी, फारसी भाषाओं पर अपूर्व अधिकार था। इस दृष्टि से उन्हें मध्ययुगीन संतों में सर्वोपरि स्थान दिया जा सकता है।

संत दादू दयाल का विचार है कि ब्रह्म—सम्बन्धी अनुभूति भी ब्रह्म के समान ही होनी चाहिए जिससे ब्रह्म का यथार्थ—अनुभूत वर्णन किया जा सके।

जब घटि अनभै उपजै, तब किया करम का नाम।

भै भ्रम भागै सबै, पूरण ब्रह्म प्रकास॥

वह सर्वव्यापी निरंजन और निराकार है। वह परम ज्योति रूप है।

जीव सांसारिक विषय—वासनाओं में लिप्त होकर उसी में जल—भुनकर नष्ट हो जाते हैं। वे अनंत की अग्नि नहीं देख पाते। जीव सांसारिक बंधन में रहता है जबकि ब्रह्म उससे मुक्त है। दादू माया को 'मृगजाल' मानते हैं जिसकी झिलमिलाहट, उनके अनुसार झूठी है। इसी झूठी झिलमिलाहट या चिलक—चमक को देखकर उसे सत्यवत् समझा जाता है। माया का अविद्या माया के रूप में विकास शंकराचार्य के पश्चात् अनेक प्राचार्य द्वारा विशिष्टाद्वैत, शुद्धद्वैत, द्वैत व द्वैताद्वैत आदि सिद्धान्तों का प्रतिपादन

करते हुए हुआ। संतों ने माया को सांसारिक प्रलोभन माना है। साधारण जीव इन प्रलोभनों में लिप्त होता जाता है। इसी कारण वह आवागमन के चक्र से मुक्त नहीं हो पाता। दादू मानते हैं कि क्षणिक माया को पाकर गर्व करना अनुचित है। माया का सुख वस्तुतः कुछ ही दिनों का होता है। गृह, धन, दारा, सूत, जोबन, माता, पिता, बन्धु, सज्जन, आपा-पर भेद-भाव को त्यागकर परब्रह्म निरंजन का स्मरण व भजन उचित है। वे जगत् की इस उत्पत्ति का कारण सौँई की परमार्थ-भावना मानते हैं। वे कहते हैं कि उस सौँई ने परमार्थ के लिए ही सब कुछ किया, अपने स्वार्थ के लिए कुछ नहीं किया। वह सृष्टा जगत् की क्रीड़ा को रचकर स्वयं क्रीड़ा करता है।

सम्पादन कार्य अत्यन्त श्रम साध्य और कठिन होता है। सम्पादन के दौरान सम्पादक की दृष्टि पाठ के भाषाई रूप और इसमें निहित अर्थ चेतना की ओर बराबर रहता है।

पांडुलिपि के लिपिगत रूप और भाषा की वर्तमान लिपि के बीच के भाषाई विकास को देखना भी आवश्यक होता है। सम्पादन के दौरान हमने इन सभी बातों की ओर ध्यान रखा है। हमारा बराबर ये प्रयास रहा है कि प्रस्तुत पाठ प्रमाणिकता की दृष्टि से हेय न रहे।

मुझे पूर्ण आशा एवं विश्वास है कि दादू वाणी का प्रस्तुत सम्पादित पाठ इस महान सन्त की अर्चना का एक फूल बन सकेगा। और विद्वानों का आशीर्वाद प्राप्त कर सकेगा।

आधार एवं सहायक ग्रन्थ

आधार ग्रन्थ :

१. दादूदयाल की वाणी (भाग एक, साखी), वेलवेडियर प्रेस, प्रयाग, सन् १९६३ ई०
२. दादूदयाल ग्रन्थावली, सं० परशुराम चतुर्वेदी, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सं० २०२३

सहायक ग्रन्थ :

१. चतुर्वेदी, परशुराम, संत साहित्य की भूमिका
२. मंगलदास स्वामी, सम्पादित, दादूदयाल की वाणी
३. प्रो० शाण्डिल्य, शिवकुमार, मध्ययुगीन प्रमुख सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों की भाषा, मंगला प्रकाशन, नई दिल्ली, १९६४
४. शास्त्री, मंगलदेव, भारतीय संस्कृति का विकास
५. शेरिंग, बनारस, दी सेक्रेड सिटी ऑफ हिन्दुज
६. अरब और भारत के सम्बन्ध, हिन्दुस्तानी ऐकेडमी, इलाहाबाद
७. इलियट, एम०एम०, हिस्ट्री ऑफ इंडिया एज टोल्ड बाय इट्स हिस्टोरियन्स
८. चतुर्वेदी, परशुराम, हिन्दी साहित्य का वृत्त इतिहास
९. रज्जबदास कृत सरबंगी, संपादक धर्मपाल मैनी
१०. शर्मा, वासुदेव, संत कवि और पंथ
११. डॉ० मोतीलाल मेनारिया, राजस्थान का पिंगल इतिहास
१२. चतुर्वेदी, परशुराम, उत्तरी भारत की संत परम्परा
१३. दादूदयाल की वाणी, सं० श्री मंगलदास स्वामी, जयपुर, सन् १९५१ ई०
१४. संत काव्य (संग्रह), चतुर्वेदी परशुराम, इलाहाबाद, किताब महल, प्रथम संस्करण, १९५२ द्वितीय १९६१, तृतीय १९६७
१५. दादू जन्मलीला परची, जयपुर, श्री जनगोपाल स्वामी, जयपुर : श्री स्वामी लक्ष्मीराम ट्रस्ट, प्रथम संस्करण, सं० २००६
१६. संत कवि दादू, दवे, कृष्णवल्लभ, दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९८३
१७. हिन्दी साहित्य की परिभाषित शब्दावली, पाण्डेय, चन्द्रकला, इलाहाबाद : अनामिका प्रकाशन
१८. उत्तर भारत के निर्गुण पंथ साहित्य का इतिहास, राकेश, विष्णुदत्त, इलाहाबाद, साहित्य भवन प्रा० लिमिटेड, १९७५

२०. दादूदयाल, रामबृक्ष, दिल्ली : साहित्य अकादमी, १९८५
२१. सन्त कवि दादू और उनका पंथ, डॉ० वासुदेव शर्मा, शोध प्रबन्ध प्रकाशन, दिल्ली
२२. सन्त काव्य, डॉ० रामकुमार वर्मा, भारतीय भंडार प्रकाशन, प्रयाग
२३. हिन्दी सन्त साहित्य, डॉ० त्रिलोकी नारायण दीक्षित, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
२४. संत साहित्य, डॉ० सुदर्शन मजीठिया, रूपकमल प्रकाशन, दिल्ली
२५. संत साहित्य पुर्नमूल्यांकन, सिंह राजदेव — नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो
२६. सन्त साहित्य की भूमिका — सिंह, राजदेव, नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो
२७. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल — काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
२८. सन्त दादू और उनका काव्य, डॉ० भगवत मिश्र — दिनेश प्रकाशन, अलीगढ़
२९. मध्यकालीन धर्म साधना, डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी
३०. सन्त साहित्य की सामाजिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि, डॉ० सावित्री शुक्ल
३१. सरबंगी के अल्पज्ञात — अज्ञान संत — प्रो० शाण्डिल्य, शिवकुमार , मंगला प्रकाशन, नई दिल्ली — २२
३२. महामानव रैदास — प्रो० शाण्डिल्य, शिवकुमार, मंगला प्रकाशन, नई दिल्ली — २२
३३. तुलसी काव्य की अरबी-फारसी शब्दावली : एक सांस्कृतिक अध्ययन, डॉ० शैलेश जैदी, यूनीवर्सिटी पब्लिशिंग हाउस, अलीगढ़
३४. हिन्दी के कतिपय मुसलमान कवि, डॉ० शैलेश जैदी, यूनीवर्सिटी पब्लिशिंग हाउस, अलीगढ़